सेठिया जैन ग्रन्थालय-पुस्तक नं ३८

श्री प्रकरण संग्रह—भाग २ जो.

[स्वर्गस्थ पं मुनिराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए संशोधीने तैयार करेला २७ थोकडानो संग्रह.]

प्रकाशक,
धर्मचंद्रजी तत्पुत्र भैरोंदानजी तत्पुत्र जेठमल सेठिया
बीकानेर-निवासी.

प्रथम आवृत्ति   प्रत २०००   संवत १९८०   इ. स १९२४   वीर संवत २४५०

श्री "वीर-शासन प्रिन्टींग प्रेस" मां शा केशवलाल दलसुखभाईए छाप्युं ठे. काळुपुर टंकशाळ-अमदावाद.

मूल्य रु. १ सेठिया ग्रन्थालयनी तरफथी भेट.

प्रस्तावना.

श्रीमत्पार्श्वजिनं नत्वा, स्मृत्वा च गुरुदेवनाम् ।
प्रकरणानि संगृह्य, ग्रन्थोऽयं लिख्यते मुदा ॥

स्वर्गस्थ पंडित महाराज श्री उत्तमचन्द्रजी स्वामीए प्रकरण संग्रहना बीजा भागना लेखनकार्यनो प्रारंभ करतां उपर आपेला श्लोकवडे मंगलाचरण करेलुं हतुं, परन्तु एज मंगलाचरणवडे प्रारंभेला ग्रंथने प्रकाशमां आवेलो तेओ श्री जोई न शक्या. आजे तेमना अप्रकट ग्रंथने प्रकट करी तेनो लाभ लेवा इच्छनारा मुमुक्षुओनी समीपे तेने रजु करी, स्वर्गस्थ पंडित महाराजश्रीनुं स्मरण करवानुं प्रकाशकने माटे अवशिष्ट रह्युं छे. कालनी गति गहन छे.

उत्तराध्ययन सूत्रना २८ मा अध्ययनमां मोक्षना चार अंग कहेलां छेः (१) ज्ञान, (२) दर्शन, (३) चारित्र अने (४) तप. आ चार मोक्षमार्गना हेतुओमां दशवैकालिक सूत्रमां "पढमं नाणं तओ दया" ए शब्दोवडे ज्ञानने प्रथम पंक्तिमां मूकवामां आव्युं छे, अने ते यथार्थ ज छे. ज्ञानवडे ज हेय ज्ञेय उपादेय पदार्थोनी समज मनुष्यमां आवी शके छे, अने ए रीते ते चारित्रशील बनी जीवननुं साफल्य करे छे. ज्ञाननुं आटलुं बधुं माहात्म्य छे.

द्रव्यगुणपर्यायना ज्ञानवडे करीने मनुष्य इहलोकमां तथा परलोकमां पोतानी परिस्थितिनुं भान प्राप्त करे छे. ज्यांसुधी मन वैराग्यथी रंगित थतुं नथी त्यांसुधी मोक्षनी श्रेणीपर आत्मा चडी शकतो नथी अने ज्यांसुधी द्रव्यगुणपर्यायनुं ज्ञान मनुष्यने प्राप्त थतुं नथी त्यांसुधी वैराग्यनी स्फुरणा पण थती नथी. द्रव्य-गुणपर्यायनो विस्तार जैन सिद्धान्तोमां मोटा प्रमाणमां आपवामां आवेलो छे, परन्तु ए सिद्धान्तोनुं सम्यक्

प्रकारे ज्ञान मेळववानुं सौ कोईने एकसरखुं सुलभ होतुं नथी. आवा जिज्ञासुओने माटे जैनागमोमांथी प्रकरणो
छूटां पाडीने आपवामां आवे छे तो तेनो लाभ सारा प्रमाणमां लेवामां आवे छे. आ प्रकरणो थोडा वखतमां
द्रव्य-गुणपर्यवनुं ज्ञान प्राप्त करवा माटे घणां उपयोगी पुरवार थया छे अने तेथी जूदा जूदा प्रकाशको तरफथी
तेना जूदा जूदा संग्रहो प्रसिद्ध थया छे. एवी ज रीते आ एक वधु संग्रह पण प्रसिद्ध करवामां आवे छे.

स्व. पंडित महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए तैयार करेलो अने स्व. पूज्य महाराज श्री लाधाजी स्वामीए
सुधारेलो प्रकरण संग्रहनो पहेलो भाग घणा वर्षो अगाउ प्रसिद्ध थयो हतो अने त्यारपछी सुधारावधारा साथे
तेनी पांच आवृत्तिओ प्रसिद्ध थई छे. आवा संग्रहोनी लोकप्रियता ए उपरथी मालूम पडी आवे छे. आ संग्रह
पण स्व. महाराजश्रीए लखावी सुधारीने तैयार करी राखेलो हतो, परन्तु तेमना अवसानथी ते अप्रकट दशामां ज
रह्यो हतो. १९७२ ना चातुर्मासमां पंडित महाराजश्री गुलाबचंद्रजी स्वामी, मुनि श्री वीरजी स्वामी, पंडित
श्री रत्नचंद्रजी स्वामी इत्यादि साधुवर्योना दर्शनार्थे अमदावाद मुकामे जतां अने आ संग्रह मुनि श्री खुशालचंद्रजी
पासे जोवामां आवतां ते प्रसिद्ध करीने मुमुक्षुओने तेनो लाभ आपवानी उत्कंठा मने थई आवी; परन्तु ए
ग्रंथनो हस्तलेख छापखानामां मोकली आपवा जेटलो शुद्ध अने सगवडभर्यो नहोतो, एटले तेनी नवी नकल
करावी तेने सुधारी आपवा मे महाराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामीने विनति करी. महाराजश्रीए पोतानी नादुरस्त
तबीयत छतां ते सुधारी आपवानी अने छेवटनां प्रुफो तपासी आपवानी कृपा करी छे, ते तेओश्रीनो मारा पर
परम उपकार थयो छे तेमनी एटली कृपाने परिणामे आजे आ ग्रंथ आटला सारा स्वरूपमां तैयार थई शक्यो छे.

प्रकरण संग्रहना प्रथम भाग करतां आ भागमां लेखनशैली वधारे सुगम्य राखी छे. जे वखते ते प्रथम प्रसिद्ध

पणो ते रचना करवा मध्ये भाषा–व्याकरणमां गुजराती भाषा आगळ वधी छे अने जूनी ढबनां रूपाणो आधुनिक वाचकोने केटलीक वार दुर्गम पण लागे छे. आ संग्रहमां पण जैन परिभाषा तो वापरी ज छे, परन्तु शब्दरूपना आदिनो अने अर्थावतरणना बनी तेटली वधारे स्पष्टता करी छे अने ए कार्यनो श्रम प. मुनिराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामीए लीधो छे.

पुस्तको सारा कागळमां अने मोटा अक्षरमां छपाववानो हेतु तेना वाचनमां सरलता थाय ए प्रकारनो छे. आवा ज्ञाननां उपकरणो तो जेम बने तेम विनामूल्ये वहेंचाय तेमां ज लाभ रहेलो छे, परन्तु विनामूल्ये वहेंचाती वस्तुओ केटलीक वार अनधिकारीना हाथमां पण जाय छे अने तेथी ज्ञाननी आशातना थाय छे. आ कारणथी आ पुस्तकनुं मूल्य राख्युं छे खरुं परन्तु ते पडतर करतां पण ओछुं राख्युं छे अने ते द्रव्य ज्ञानप्रचारमां ज वापरवामां आवशे. जिज्ञासुओ तेनो यथोचित लाभ ले तो मारा आ प्रयासने हुं सफळ थएलो मानीश.

पंडित महाराज श्री उदयचंद्रजी स्वामीना शब्दोमां ज गुरुस्तुति करीने आ प्रस्तावना पूरी करुं छुं.

शार्दूल ॥ वंदे सद्गुरुवर्गमेनमधुना लालाजिसंज्ञं मुदा।
सद्धिशाणिरमार्यशीलमरसं सौजन्यरत्नाकरम् ॥
यत्पादार्चनतोऽजडोऽप्यलमहो जातोऽस्मि विद्यां सुधी ।
सोऽयं शास्त्रविशारदोत्तमपुरश्चंद्राभिधानो मुनिः ॥

बीकानेर }
१९८०

भैरोंदान जेठमल.

स्व. मुनि महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीनो जीवनपरिचय.

॥ शार्दूल ॥

उत्कृष्टं विमलं त्रिकालविषय ज्ञान यदीयं स्फुटं ।
तत्त्वव्याप्तवचो, विबाधरहितः ख्यातो यदीयागमः ॥
म याऽगम्यग तिर्गरिष्ठमहिमा व्याप्तोहि लोकत्रये ।
चन्द्रोज्ज्वल् गतरिष्ठशासनपतिर्नस्स्यात्स भद्रंकरः ॥

स्व. मुनि महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए 'प्रकरण संग्रह' ना प्रथम भागमां जे स्तुतिनो श्लोक रचीने अंतर्लापिकामां पोताना नामनी रचना करी हती, ते ज श्लोकवडे प्रभुस्तुति करीने तेमना संक्षिप्त जीवन-परिचय अत्र आलेखुं छुं.

कुटुंबपरिचय.

श्री उत्तमचंद्रजीना पिता श्री जगजीवन रुघनाथ न्याते भावसार सुरतमां सगरामपुरामां मुठीया कुवा पासेना चोगानमां रहेता. श्री उत्तमचंद्रजीनो जन्म विक्रम संवत् १९१० मां थयो हतो. तेमनी मातानुं नाम दिवाळीबाई हतुं. बाल्यावस्थामां गुजराती सात धोरण अने अंग्रेजी पांच धोरणनो अभ्यास तेमणे कर्यो हतो. तेमना पिता रंगारानो धंधो

हता हता, परन्तु श्री उत्तमचंद्रजी तो विद्याभ्यासथी निवृत्त थई मदनागीरीनी नोकरीमां जोडाई गया हता. कर्मसंयोगे एक दस्मान अने हृदयनी सरळता तेमने साधुसमागममां प्रेरती अने तेथी साधुओनो परिचय तेमने हमेशां रहेवा लाग्युं. तेमने बे बहेनो हती जेमनां नाम माणेकबाई तथा नंदकोरबाई हतां. बेउ बहेन तेमनां लग्न थया बाद गुजरी गयां हतां. तेमना एक मोटा भाई फकीरदास तो केवळ नानी वयमां गुजरी गया हता. तेमना पिताजी संवत् १९२३ मां गुजरी गया. ते वखते श्री उत्तमचंद्रजीनी वय मात्र १३ वर्षनी हती.

साधुत्व.

साधुसमागमनी विशेषताथी श्री उत्तमचंद्रजीना हृदयक्षेत्रमां वैराग्यनां बीज वपातां हतां, ते बीजना अंकुरो संवत् १९२८ मां फूट्या. ते वखते तेमना मातुश्री वृद्ध हतां तथापि धर्मपरायण अने पुत्रना कल्याणनी इच्छावाळां होवाथी दीक्षा लेवाने आज्ञा आपी तेथी पूज्य श्री मघाजी स्वामी पासे ए वर्षना चैत्र मासनी सुदी ने शनिवारे श्री उत्तमचंद्रजीए सुरतमां पोतानी फोईना दिकरा दलीचंद माणेकचंदने घेरथी दीक्षा ग्रहण करी. ए दीक्षामहोत्सव वखते सुरतमां सारो उत्साह व्याप्यो हतो अने मुंबई, कठोर वगेरे गामना संघो सुरतमां आव्या हता. उत्सवनो सारो जमणवार पण थया हता श्री. उत्तमचंद्रजीनी दीक्षातिथि—चैत्र सुद ८—नी पाखी पाळवानो ठराव ते वखते त्यांना भावसारज्ञातिमां थयो हतो जे अत्यारसुधी पळाय छे एवुं जाणवामां आव्युं छे. दीक्षा पछीनुं १ले चोमासुं श्री उत्तमचंद्रजीए स्वामीए पोताना गुरुमहाराज श्री मघाजी स्वामीनी साथे सुरत पासेना कठोर गाममां कर्युं.

अभ्यास.

दीक्षा ग्रहण कर्या पछी श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए सूत्रज्ञान, तेमज संस्कृत भाषाना अभ्यासनो प्रारंभ कर्यो. व्याकरण, काव्य, अलंकार न्याय आदिनो तेमनो अभ्यास सारो हतो अने तेथी तेमां पारंगत थया पछी संस्कृत भाषामां श्लोको तथा गद्य विवरणो लखवामां ते बहु उत्साह दाखवता. आ प्रकारनुं तेमनुं लेखन केवळ प्रकीर्ण हतुं थोडुं अंग्रेजी तथा उर्दू भाषानुं ज्ञान पण तेमणे प्राप्त कर्युं हतुं. केटलांक सूत्रो तेमणे मुखपाठ कर्यां हतां. तेमनी उत्तर अवस्थामां केटलाक नवदीक्षित साधुओ सूत्रज्ञान तेमनी पासेथी पण ग्रहण करता. जैनेतर मतमतांतरोनो अभ्यास पण तेमणे सारो कर्यो हतो एम तेमना केटलाक प्रकीर्ण लेखो उपरथी आजे मालूम पडे छे. पूज्य श्री श्रीलालजी महाराजे ज्यारे काठीयावाडमां पहेली ज वार विहार कर्यो हतो, त्यारे श्री. उत्तमचंद्रजी महाराज तेमना परिचयमां आव्या हता. तेमना सूत्रज्ञानना संबंधमां पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज जणावता के तेमनुं सूत्रज्ञान उत्तम प्रकारनुं हतुं अने केटलीक बाबतोना सूत्र संबंधी खुलासा तेमने श्री उत्तमचंद्रजी महाराज पासेथी मेळवीने संतोष थयो हतो. तेमना ए ज्ञाननी पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज अनेक प्रसंगे प्रशंसा पण करता.

लेखनप्रवृत्ति.

लेखनप्रवृत्ति तेमने अत्यंत रुचिकर जणाती हती. ज्यारे ज्यारे समय मळे त्यारे त्यारे ते कांईक ने कांईक लखवानुं काम करता. तेमना प्रसिद्ध थएला ग्रंथोमां प्रकरण संग्रहना बे विभागो सिवाय बीजुं कांई नथी परन्तु तेमनां लखाणोनो अप्रसिद्ध संग्रह मोटो छे. केटलाक नाना मोटा ग्रंथो जेवा के ज्योतिष करडक पइन्नानुं गुजराती

भाषांतर, तेमणेनी रचनां (संस्कृत श्लोकोमां), चार छेदसूत्रोनां गुजराती भाषांतर, इत्यादि तेमणे पूरां करेलां छे; ते उपरांत सूत्रोमांथी करवामां आवेलां स्तोक दोहन, थोकडाओनो, प्रकीर्ण उतारा, नवा जोडेला स्तवनो प्रकीर्ण संस्कृत श्लोको इत्यादि संग्रह अव्यवस्थित स्थितिमां पडेलो छे. आ संग्रहने तपासीने, अने विषयवार गोठवीने जो व्यवस्थित करवामां आवे तो तेमांथी स्हेलाइथी मोटा ग्रंथो बने तेवो संभव छे. स्वामीश्रीना तीव्र उत्साहने लीधे तेमणे जे काई लख्युं छे तेमांनुं घणुंखरुं कागळना नाना मोटा गमे तेवा टुकडाओ उपर लखेलुं छे. लखवानो उत्साह स्फुरे ते वखते पोतानी निकटमां नानो कागळनो टुकडो होय, किंवा एक बाजुए छापेलुं अने बीजी बाजुए कोरुं कोई हेन्डबील होय अथवानो पाना आकारना कोई मोटा नाना कागळोना कटका पडेला होय तो जेवो हाथमां आवे तेवो कागळ लईने लखवा बेसी जवुं एवो तेमनो नियम हतो. आ ज कारणथी तेमना प्रकीर्ण लेखोनो संग्रह कोई विचित्र प्रकारनो पत्रसमुदाय होय एम जणाय छे. आ संग्रहमांथी सीधो सारो उपयोगी भाग छुटो पाडीने प्रसिद्ध करवामां आवे तो घणा मुमुक्षुओने लाभ थवा पामे एवो संभव छे.

चातुर्मासो.

महाराजश्री उत्तमचन्दजी स्वामीए सं. १९२८ मां दीक्षा ग्रहण करीने ते वर्षे कठोरमां पूज्य श्री लालजी स्वामीनी साथे ज चातुर्मास कर्युं. बीजुं सं. १९२९ नुं चातुर्मास तेमणे पोताना गुरुवर्यनी साथे लींबडीमां कर्युं. त्यार पछी १९३० मां मोरबी, १९३१ मां थोराजी, १९३२ मां अमदावाद, १९३३ मां मुन (कच्छ), १९३४ मां

१९३६ मां सुरत, १०३७ मां जेनपुर, १९३८ मां लींबडो, १९३९ मां जामनगर,
(कच्छ), १९३५ मां अमदावाद, १९३६ मां सुरत, १०३७ मां जेनपुर, १९३८ मां लींबडो, १९३९ मां जामनगर,
१९४० मां वांकानेर, १९४१ तथा ४२ मां सुरत, १९४३ मां अमदावाद, १९४४ मां मांडवी (कच्छ), १९४५
मां मुद्रा, १०४६ मां रापर (कच्छ–वागड), १९४७ मां सुरत, १९४८ मां जेतपुर, १९४९ मां अंजार (कच्छ), १९५०
मां मुद्रा, १९५१ मां वढवाण शहेर, १९५२ मां लींबडी, १९५३ मां मोरवी, १९५४ मां सायला, १९५५ मां
अंजार (कच्छ), १९५६ मां मांडवी (कच्छ), १९५७ मां मोरवी, १९५८ मां गुंदाला (कच्छ), १९५९ मां
वढवाण केम्प, १९६० मां सुरत, १९६१ मां मुंबई, १९६२ मां लींबडी, १९६३ मां अमदावाद, १९६४ मां लींबडी,
१९६५ मां वढवाण केम्प, १९६६ मां वढवाण शहेर, १९६७ मां लींबडी, १९६८ मां जेतपुर, १९६९ मां मांडवी
(कच्छ), १९७० मां गुंदाला (कच्छ), १९७१ मां रापर (कच्छ–वागड), १९७२ मां मोरवी, १९७३ मां सुरत,
१९७४ मां जामनगर अने छेल्लु १९७५ नी सालनुं चातुर्मास अमदावादमां कर्युं. संवत् १९७४ नुं चातुर्मास
करवा जामनगर जता हता, त्यां रस्तामां राजकोट मुकामे तेमने लकवानुं दर्द लागु पड्युं हतुं पण तेनी बहु असर
न्होती जेथी उपचार करवां उपरथी आराम जणायो हतो. तेथी राजकोटथी विहार करी जामनगर चोमासुं
पहोंच्या. चोमासुं सारी रीते पसार थयुं. जोके दर्दनी अंदरखाने असर हती तेथी अशक्ति वधती जती हती
तोपण पोते उत्साही हिम्मतवान् अने धैर्यबळवाळा हता तेथी शारीरिक अशक्ति जणावा न देतां चोमासुं उतर्ये
तुरत जामनगरथी विहार करी लींबडी पहोंच्या. लींबडीना श्रावकोए शरीरनी अशक्ति जाणी लींबडी रोकावा
घणो आग्रह कर्यो पण पोताना जन्मदेश–गुजरात तरफ एक वखत चोमासुं करी आववानी तेमने उमेद हती तेथी

भलावारुं चोमासुं करान्युं. चोमासी पछी विहार करी अमदावाद आववां रस्तामां फरी ते दर्दनो हुमलो थयो अने मामराना विहारमां हरकत आवता थोडी मोघम मनोरथने परिणामे चोरवडोदरामुकी पहोंच्या. त्यां थोडो वखत रोकाई मारवाडीना उपचार करवां कंई ठीक थयु एटले अमदावाद पहोंच्या. लकवानी असर मगज उपर थवी. डोक्टर नीतराजभाई तथा केशवलालभाई वगेरे दरी लागणीथी उपचार करता हता पण एकंदर रीते शरीर घसातुं चाल्युं. तेमना एक शिष्य माणेकचंदजी मुनि अने बीजा त्रण साधुओ तेमनी सारवार करवामां मारी दरकार लेता हता. तेमना एक शिष्य मुन्नालालजी मुनि कठोर चोमासुं हता. तेमने मांदगी वधवाना खबर मळतां महाराज श्री शिवजी स्वामीनी साथे लांबा लांबा विहार करी थोडा दिवसमां कठोरथी अमदावाद आवी पहोंच्या अने थोडा दिवस गुरुसेवानो लाभ लीधो. केटलाएक दिवसो उपरथी पू. श्री उत्तमचंदजी महाराजने जणायुं के हवे आ मांदगी मटवाना नथी एटले पोते आहार पाणी तजी संथारानो विचार जणाव्यो. तेवा खबर लींबडी वगेरे स्थळे पहोंचतां केटलाक भाविक श्रावको कठोर सुरत लींबडी वगेरे स्थळेथी आवी पहोंच्या हता अने केटलाक तेमनी सारवार माटे त्यां रोकाया हता. छेवट आलोवी पडिकमी संथारो करी तेओश्री आसो वद ११ ने रविवारे पोहरमां बे वागे ४८ वर्ष मयम पाळी एकंदर ६६ वर्षनुं आयुष्य भोगवी काळधर्मने पाम्या.

गुणमीमांसा.

महाराज श्री उत्तमचंदजी अत्यंत दयाळु, सरल दिलना अने ज्ञानमारथी नम्र बनी गएला हृदयना मायभोळ स्वभावना हता. तेमना जीवनना प्रसंगोने कोई ने कोई प्रसंगे तेमना ए गुणोनो भास आप मनुष्य भाविना रहेतो नहि.

लींबडी सम्प्रदायनां बधां साधु–साध्वी तेमनाथी मोटां होय के नानां तथापि पूर्ण मानदृष्टिथी तेमने जोतां. तेमना समागममां रही अभ्यास करवानुं घणा साधुओने गमतुं कारणके तेमनी शिक्षणपद्धतिमां पारावार भरेलो प्रेम मालूम पडतो. अन्य सम्प्रदायना साधुओ पण तेमनी साथे रहीने ज्ञानप्राप्ति करवाने हमेशां उत्सुक रहेता. तेमने एकंदरे ४ शिष्यो थया हता. तेमांना खेतशी तथा नाराचंदजी संप्रदायनी मर्यादामां रहीने वर्तवामां शिथिल मालूम पड्या हता. महाराजश्रीए तेमने केटलीक वार शिखामणो आपी वार्या हता, परन्तु ए सरल दिलना गुरुवर्यनी परवा नहि करनार शिष्योने छेवटे गुरुवर्य पोते ज साधुवेश उतरावीने रजा आपी दीधी हती. त्रीजा शिष्य खुशालचंद्रजी हाल विद्यमान छे. चोथा शिष्य भाईचंद्रजीए वनवास स्वीकार्यो छे. तेओश्री एकाकीपणे पर्वतोनी कंदराओमां वसे छे अने शांतियुक्त स्थानोमां यथेच्छ पर्यटन करी कालनिर्गमन करे छे.

शास्त्रीय ज्ञान.

पंडित श्री उत्तमचंद्रजी महाराजनुं शास्त्रीय ज्ञान अत्युत्तम हतुं. जैन आगमोनो भाव तो तेमना मगजमां शृंखलाबद्ध गोठवाई रह्यो हतो, तेनुं कारण ए के एक एक आगम केटलीए वार तेमना वांचवामां आवतो, ते उपरथी एटला बधा हता के नवरा बेसवुं तो तेमने गमतुं ज न्होतुं. कोई वांचनार होय तो तेने वंचावता अने ते न होय तो पोते वांच्या करता. टीकाओ वांचवानो तेमने बहु शोख हतो. ते वांचता विचारता अने उपयोगी भाग लखी लेता. लिंबडी संप्रदायमां तेमना समयमां तेमनी व्याख्यानशैली शास्त्रीय ज्ञानथी भूषित थएल होवाने लीधे बहु वखणाती हती. घणां साधुसाध्वीओ पण तेमनं व्याख्यान सांभळवाने उत्सुक रहेता हता. शास्त्रोक्त भांगा संबंधीनुं गणितज्ञान पण तेमनामां उच्च

पडार्यु हतुं. पं. श्री रत्नचंद्रजी महाराज अने तेमना शिष्य गुणचंद्रजी मुनिने गंगीयाना भांगा तेमणे ज शीखव्या हता के जे थोडा वरसमां पुस्तक रूपे बहार पाडवामां आवनार छे.

चर्चाशक्ति.

आप मंडळी चर्चा करवामां तेओश्री घणा निपुण हता. तेमां पण खुबी ए हती के स्हामो माणस गमे तेवा आटा मरडा पोइंट उपर जाय तोपण पोते तपी जता नहि किन्तु मगजने शांत राखी शांतिथी समजावता. तेमनी चर्चा मरचांथी भरेली नही पण साकर जेवी मधुर जणाती हती. घणी वार तेमनी चर्चा ज्ञानगोष्ठीरूप ज थती हती अने श्रोताओने तेमांथी अपूर्व ज्ञानानंद मळता हतो. संवत् १९४५ नी सालमां तेओश्री कच्छ मुंद्रामां बीराजता हता त्यारे कच्छ कोटडाना ठाकोर शोकमद राजी देवराज साथे तेमने मूर्ति संबंधी चर्चा थई हती. दरोज बपोरे चार कलाक नाणीय युक्ति अने शास्त्र साथे मशाल जवाब थतां त्रण दिवस सुधी मधुर चर्चा तेमने चलावी हती. तेथी शो. रतनी देवराजभाईने घणो संतोष थयो हतो अने तेमना ज्ञाननी तारीफ करी हती.

संवत् १९४३ नी सालमां तेओश्री रायर चोमासुं रह्या हता, त्यारे रायरना ठाकोर मोटा उमेदचंद करमचंद के जे एक जैन धर्मना पुरा धारक हता अने जेमणे जैन सूत्रोना बहु सारो परिचय करेल हतो, तेनी साथे तेरापंथीनी मान्यता संबंधी चर्चा चाली. दररोज रात्रे बे कलाक विचारणीय मुद्दा उपर चर्चा चालतां चार महिना नीकळी गया. छेवट शीमंतानी बाबते चर्चाने परिणामे जेठाभाई समज्या, अने तेरापंथीनी मान्यता विपरीत छे एम

कबुल करी तेरापंथीनी श्रद्धा तजी तेमणे शुद्ध श्रद्धा धारण करी. आ प्रसंगना परिचयथी पंडितश्रीए तेरापंथीनी चर्चा संबंधी एक नानुं सरखुं पुस्तक संस्कृत श्लोक रूपे तैयार करेल छे.

स्मारक.

महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीनी वय अवसान समये ६६ वर्षनी हती. तेमनो निर्वाण महोत्सव अमदावादना छ कोटी तथा आंठ कोटी समुदायना सर्व श्रावकसमुदाये सुंदर रीते उजव्यो हतो. तेमनी पाछळ रु. ५००० जेटलो धर्मादो ए बेउ समुदायोना श्रावको तरफथी थया पाम्यो हतो अने ए रकमना व्याजमांथी 'साधुशाळा' स्थापवानो तथा तेने अभावे 'श्राविकाशाळा' स्थापवानो ठराव थयो हतो. संवत १९८० मा पं. मुनि महाराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामी, श्री वीरजी स्वामी, पं. मु. श्री रत्नचंद्रजी स्वामी, श्री रुपचंद्रजी तथा स्व. महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीना विनीत शिष्य श्री खुशालचंद्रजी स्वामीनुं चातुर्मास अमदावादमां थतां आ श्राविकाशाळानो प्रारंभ करवामां आव्यो छे अने बधा समुदायोनी श्राविकाओ तेनो लाभ लई शके छे. धार्मिक शिक्षण अने ते हेतुपूरतुं लेखन वाचननुं ज्ञान आपवानो प्रबंध ए श्राविकाशाळामां करवामां आव्यो छे.

चुनीलाल वर्धमान शाह.

अनुक्रमणिका.

शुद्धिपत्र.

पत्राक	पृष्टाक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	२	१२	उत्सह	उत्साह
६	२	११	१९४३	१९४६
३	२	८-९	जीव समुदाय मळवाथी लागती क्रिया ते	पोतानी जीवरुप वस्तुना वखाण यथार्थी हर्ष पामे ते
३	२	९-१०	अजीव समुदाय रयादि मेळववाथी	पोताना अजीव समुदाय रयादिना वखाण ययाथी
६	२	७	१८ लाख पचेंद्रियनी योनीमा दर्शन २-३-४ लाभे	४ लाख तिर्यच पचेंद्रियनी योनीमा दर्शन २-३ अने १४ लाख मनुष्यनी
७	१	३	२२	६२
७	१	१२	६	४-६
८	१	१७	७०	५८
८	२	१	१४	२६

पत्राक	पृष्टाक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२	५	(अशुद्ध) नारकी देवनो ८ लाख योनीमा २५ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, एम ५३ हेतु लाभे (शुद्ध) नारकीनी ४ लाख योनीमा २३ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, ए ५१ हेतु लाभे देवतानी ८ लाख योनीमा २४ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, ए ५२ हेतु लाभे	
८	२	१०	५३	५३॥
१०	२	११	सोल	वार
१०	२	११	आठ—आठ	छ—छ
१०	२	१२	बे आगलनी	बे पगनी
११	१	१	वार आगल्नी	सात आगल्नी
१२	१	१०-११	शेर १०	शेर ८
१४	२	३	सूक्ष्म केटला? ने बादर केटला?	संज्ञी केटला? ने असज्ञी केटला?
१६	१	१	असख्यातगुणा	अनतगुणा
१८	१	१०	कळ	काल
१८	२	३	मरुदेवा मातानी अपेक्षाए	०
२०	२	१०	ए	ए १३२ ने

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४४	१	१ (अशुद्ध) २१९-३३७ विग्रयोगी		
मास्ट पाठी (शुद्ध) ११३-७ मरण, १ पादर पावरी ५, अविभक, १५ पंचेन्द्रिय, ग्रैवेयक अनुत्तर विमान मर्गी ८५ देवता, ए नरौंना पर्यायानो ज्यों				
४५	२	१०	६	७
४५	४	११	४-६-	६-७
४०	२	१२	महाणी प्राप	स्पर्श विषय
४१	१	१	स्पर्श भोग	रस विषय
,,	,	,,	दामाग	ग्रन्थविषय
,	,,	,	शब्दभाग	०
४२	१	२	मत्रसंस्थानो भोग	मानसिक भोग
४३	१	८	अन्यत्वानुं	अमन्यानानुं
९८	१	९	प्रोत	प्रोत
९९	१	१०	ग्राम	रोग
७४	२	९	नविकृत्य	र्देविकृत्य
८८	१	१२	ग्रान्धु	ओढु
९९	१	४	गाज	गगाय
९९	२	६	तगर	पैगर
१०१	४	४	यदुं	यदे
१०२	१	१	ज	जे
१०७	२	८	ग्रोपमदेवी	त्रिमदेवी
१०९	१	४	ओगन	गाउ
११०	२	५	त्रिपुरुमतियी	त्रिपुरुमति पणी
११७	२	९	४३	३४
११८	२	९	तेण	तेण
१२२	२	८	२१८	२१४
१२४	१	८	पम मगी ५२ गृहक यथा	पम ५२ ध्रुवक यथा, मंत्र मगी १०२ ध्रुवक आणगा
१२५	२	३	२२-२२	२१-२१
१२६	२	४	२२-४८	२१-४२
१२७	२	१२	३८	३२
१२८	१	२	१४५	१४४
१२९	१	४	२४२२	२२९०
१३०	१	८	५ पंचेन्द्रिय	६ पंचेन्द्रिय
१३०	१	११	न	ने
१३३	२	२	राख	रखा
१३३	२	८	पान्ट	पोन्ट
१३३	२	६	स्पलाचना	पलटयता
१४५	१	५	नान	नेम
१४७				

पत्रांक पृष्ठांक पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

६ १ १० (अशुद्ध) १८ लाख योनिमा १६ तथा ८ कषाय लाभे. (शुद्ध) ५८ लाख योनिमा १६ कषाय लाभे, ८ लाख योनिमा १६ तथा १२ कषाय लाभे, ४ लाख योनिमा १६-१२-८ कषाय लाभे.

६ २ ३ (अशुद्ध) १८ लाख पचेंद्रियनी योनिमा २-३-४-५ ज्ञान लाभे. (शुद्ध) ४ लाख योनिमा २-३ ज्ञान लाभे, १४ लाख योनिमा २-३-४-५ ज्ञान लाभे.

८ १ ११ (अशुद्ध) ६ लाख विकलेंद्रियनी योनिमा २ तथा ३ क्रियावादी वध्या. (शुद्ध) अज्ञानवादी १ अक्रियावादी २ ए बे समवसरण लाभे.

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२	२	४१ हेतु	३९ हेतु
८	२	२	२५	२३
८	२	४	४३	४१
८	२	४	२५	२३
८	२	५	४२	४०

२३ २ २ (शुद्ध) स्थावर नाडीमा १५० भेद अपेक्षाये लाभवा कह्यु छे, पण मूल भेदनी अपेक्षा लइये तो २२ एकेंद्रियमाथी १ तेउकायनो पर्याप्तो ... २१ एकेंद्रियना भेद लाभे

पत्रांक पृष्ठांक पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

३२ १ ११ (अशुद्ध) तिर्यंच अने मनुष्य ज्यां ज्यां जाय त्यां त्यां ज० उ० प्रथम पांचे लेश्यानी अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी केवल ज्ञान आश्री शुक्ल लेश्यानी स्थिति (शुद्ध) तिर्यंच आश्री छ लेश्या अने मनुष्य आश्री प्रथम पांच लेश्यानी स्थिति ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी। शुक्ल लेश्यानी स्थिति छद्मस्थ मनुष्य आश्री ज० उ० अंतर्मु०नी अने केवली आश्री

३२ २ ७ (अशुद्ध) ज्योतिषी. (शुद्ध) ज्योतिषी आश्री तेजु लेश्यानी ज० स्थिति पल्यना आठमा भागनी अने उ० १ पल्य ने १ लाख वर्षनी.

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१	१	११	१७॥	१७
४५	१	१०	आउयल	आउनहुल
४५	१	११	पकनल	पकयहुल
४९	१	५	जंबूद्वीप पालखी एक चपटीमांहि २१ फेरा देइ	०
५२	२	३	कालोदधि	कालोदधि समुद्रना पाणी सरिखा

पृष्ठ	पंक्ति	गाथा	अशुद्ध	शुद्ध
९४	१	१	(मनुष्य) २१९-ग्रैवेय मिथ्यात्वीने प्रायक ज्ञानी (शुद्ध) १३१-७ नरक, १ पांचर पायरा, ५ अनुत्तर विमान १०, ... ग्रैवेयक अनुत्तर विमान ...	
			[illegible]	... अने ...
				...
१५/१०	१	१	५१७०० [illegible]	५१७०० [illegible]
१५/१५	१	३	५९७००	५९७०० ,,
१७/१०	१	४	५५७०० ,,	५५६०० ,,
				[illegible] अठ्ठावीसगुणा २५०० [illegible]
...	१	१२	[illegible]	[illegible] गाढ
७८	१	५	१	१॥
७८	२	६	२	२॥
७९	३	६	३	३॥
७९	२	१	(अशुद्ध) [illegible] १०८ योजन आय० (शुद्ध) १ थी ३२ [illegible] आय तो ८ समय सुधिमां ४१० ३३ थी ४८ योजन आय मां ७ समय सुधिमां ४९४ ४९ थी ६० ... आय मां ६ समय ... ३१० ६१ थी ७२ ... आय मां ५ समय ... ७३ थी ८४ योजन आय मां ४ समय ... ८५ थी ९६ योजन आय मां ३ समय	
१०७	२	८	योगमदेवो	त्रिदेवो
१०९	१	५	नागन	नाग —
११०	२	६	[illegible] थी १०८ योजन	आय तो, १ समय
॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥				
४१	१	८	[illegible]गुणा	संख्यातगुणा
५३	१	११	पञ्चमा	बादर पञ्चमा
८४	१	४	३०	ज० २
८५	१	८	पर्यां त्रिय	वायुकाय पर्यां त्रिय
८५	१	९	[illegible]पर्यां त्रिय	[illegible]काय
८५	१	९	[illegible]पर्यां त्रिय	[illegible]काय
८५	१	९	पर्यां त्रिय	[illegible]काय पर्यां त्रिय
८५	१	११	समय	ज० असंख्याता
				उ० समय ॥
८७	२	५	(table A)	(table B)
१३९	२	५	[illegible]	[illegible]
१६५	२	२	[illegible]	[illegible]
१६६	६	५	[illegible]	[illegible]

Table A:

५	२५
५	१२५
५	६२५
५	३१२५

Table B:

१×५=	५	२५
५×५=	२५	१२५
१२५×५=	६२५	६२५
६२५×५=	३१२५	३१२५

श्री प्रकरण संग्रह.

भाग बीजो.

प्रारंभ.

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

पचीस क्रिया ॥

॥ अथ श्री ठाणांगसूत्रादिथी पचीस क्रियाना बोल ॥

करीए ते क्रिया. तेना पचीस भेद. तेमां कायाना व्यापारे करी निपनी ते कायकी क्रिया ॥ १ ॥ तेना बे भेद–१ पापथी निवर्त्यां नथी एवा अविरत मिथ्यादृष्टि तथा समदृष्टि जीवने हालवा चालवाथी जे क्रिया लागे ते अनुपरतकाय क्रिया. २ दुष्ट रीते मन, वचन अने कायाना योग प्रवर्ताववाथी लागे ते दुःप्रयुक्तकाय क्रिया ॥ २ ॥ अधिकरण (खड्गादि) शस्त्रे करी जे क्रिया लागे ते अधिकरणिका. तेना बे भेद–१ पूर्वे नीपजावेल खड्गादिने विषे मुष्टि आदिनुं जोडवुं ते संयोजनाधिकरणिका, २ प्रथमथीज

करण, मुष्ट्यादिनुं नीपजाववुं ते निवर्तनाधिकरणिका ॥ ३ ॥ प्रद्वेषे (मत्सरे) करी नीपजी ते पाउसिया–प्राद्वेषिकी. तेना बे भेद–१ जीवने विषे द्वेष करवाथी निपजी ते जीवप्राद्वेषिकी, २ अजीव (पत्थरादि) ने विषे द्वेष करवाथी निपजी ते अजीवप्राद्वेषिकी ॥ ४ ॥ परितापना (ताडनादि) दुःख विशेषे करी निपजी ते पारितावणिया–पारितापनिका. तेना बे भेद–१ पोताने हाथे करी परितापना उपजावे ते स्वहस्तपारितापनिका, २ बीजाने हाथे परितापना उपजावे करी निपजी ते परहस्तपारितापनिका ॥ ५ ॥ प्राण (आयुष्यादि १०) नो अतिपात–नाश करे करी निपजी ते प्राणातिपात क्रिया. तेना बे भेद–१ पोताने हाथे करी कोइ प्राणीने प्राणथी वेगळो करे ते स्वहस्तप्राणातिपात क्रिया, २ बीजाने हाथे कोइने प्राणथी वेगळो करावतां लागे ते परहस्तप्राणातिपात क्रिया ॥ ६ ॥ आरंभ (उपद्रव) करवाथी निपजी ते आरंभिका. तेना बे भेद–१ जीवने उपद्रव करवाथी लागे ते जीवआरंभिका, २ अजीव (जीवना कलेवर अथवा वस्त्रादि) नो आरंभ–परिसंस्कार वगेरे करतां जे क्रिया लागे ते अजीवआरंभिका ॥ ७ ॥ परिग्रह नव

प्रकारनो. ते उपर मूर्च्छा राखवाथी लागे ते परिग्गहिया क्रिया. तेना वे ज्ञेद–१ जीव (मनुष्यादि) ने विषे मूर्च्छा राखवाथी लागे ते जीवपरिग्गहिया, २ अजीव (सुवर्णादि) ने विषे मूर्च्छा राखवाथी लागे ते अजीव परिग्गहिया ॥ ८ ॥ माया–कपट निमित्तथी जे क्रिया लागे ते मायावत्तिया. तेना वे ज्ञेद–१ हृदयना दुष्ट आशयने वक्तारूपे वोजी रीते वताव वानी कोशीश करवी ते आयज्ञाववंकणया, २ खोटा लेखादिके करी परने वंचवानो व्यापार ते परज्ञाववंकणया ॥ ९ ॥ अविरति निमित्तथी निपनी जे क्रिया ते अपच्चखाण क्रिया. तेना वे ज्ञेद–१ जीवने विषे प्रत्याख्यान कर्या विना जे वंधादि व्यापार ते जीव अपच्चखाण क्रिया, २ मद्यादि अजीवने विषे पच्चखाण न करवाथी कर्मवंध थाय ते अजीव अपच्चखाण क्रिया ॥ १० ॥ मिथ्यात्व निमित्ते कर्मवंध व्यापार थाय ते मिच्छादंसणवत्तिया. तेना वे ज्ञेद–१ हीन–अधिक आत्मादि वस्तु विषय मिथ्यात्वदर्शन निमित्त व्यापार ते ऊणातिरिक्तमिच्छादंसणवत्तिया, २ पूर्वोक्त ऊणातिरिक्त मिथ्यादर्शनथी ज्ञिन्न मिथ्यादर्शन जेमके आत्मा नथी, इत्यादिरूप मिथ्यादर्शन व्यापार ते तद्व्यति-

पहेलुं जीवद्वार कहे छे—८४ लाख योनिमा ५६३ भेद लाभे. तेमां ५२ लाख योनिमां एकेन्द्रियना २२ भेद लाभे. ६ लाख योनिमा विकलेन्द्रियना ६ भेद लाभे. २६ लाख योनिमां ५३५ भेद लाभे. ते १४ नारकीना, २० तिर्यंच पंचेन्द्रियना, ३०३ भेद मनुष्यना, १९८ भेद देवताना. सर्व मळी ५३५ भेद थाय ॥१॥ बीजुं इन्द्रियद्वार—८४ लाख जीवा योनिमां इन्द्रिय ५ लाभे. तेमां ५२ लाख योनिमां इन्द्रिय १ लाभे. बे लाख बेइंद्रियनी योनिमां इन्द्रिय २ लाभे. २ लाख तेइंद्रियनी योनिमां इन्द्रिय ३ लाभे. २ लाख चउरिंद्रियनी योनिमां इन्द्रिय ४ लाभे. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां इन्द्रिय ५ लाभे. ॥२॥ त्रीजुं गुणठाणद्वार—८४ लाख योनिमां १४ गुणठाणा लाभे. तेमां ८४ लाख योनिमा प्रथम गुणठाणुं थाय. ३२ लाख योनि ते एकेन्द्रियनी वर्जितमां बीजुं गुणठाणुं लाभे. २६ लाख योनि ते विकलेन्द्रियनी ६ वर्जितमां त्रीजुं चोथुं बे गुणठाणां लाभे. १८ लाख योनि ते देवता नारकीनी ८ लाख वर्जितमां पांचमुं गुणठाणुं लाभे. १४ लाख योनि ते ४ लाख तिर्यंच पंचेन्द्रियनी वर्जितमां ६ था गुणठाणाथी १४ मा गुणठाणा सुधी ९ गुणठाणां

तिर्यच पंचेन्द्रियनी ... ३ मूल योग कहे छे. ५२ लाख योनिमां १
लाभे ॥३॥ चोथुं जोगद्वार–तेमां प्रथम ३ मूल योग कहे छे. ५२ लाख योनिमां
काय योग लाभे. ६ लाख योनिमां काया ने वचन ए बे योग लाभे. २६ लाख योनिमां
१-३ योग लाभे. हवे १५ उत्तर योग कहे छे. ८४ लाख योनिमां समुच्चय १५ जोग लाभे.
वाउकाय वर्जिने एकेन्द्रियनी ४५ लाख योनिमां ३ जोग लाभे. वाउकायनी ७ लाख
योनिमा ५ जोग लाभे. विगलेन्द्रियनी ६ लाख योनिमां ४ जोग लाभे. नारकी देवतानी
८ लाख योनिमां ११ जोग लाभे. ४ लाख तिर्यच पंचेन्द्रियनी योनिमां १३ जोग लाभे.
१४ लाख मनुष्यनी योनिमां १५ जोग लाभे ॥४॥ पांचमुं वेदद्वार कहे छे. ६२ लाख
योनिमां नपुंसक वेद लाभे ते एकेंद्रिय विकलेंद्रिय अने नारकीमां लाभे. १८ लाख यो-
निमां १-२-३ वेद लाभे. ४ लाख योनिमां १-२ बे वेद लाभे ॥५॥ छट्ठुं कषायद्वार–८४
लाख योनिमां १६ कषाय लाभे. तेमां १८ लाख योनिमां १६ तथा ८ कषाय लाभे. १४
लाख योनिमां १६-१२-८ ४-० कषाय लाभे. ॥६॥ सातमुं लेश्याद्वार–८४ लाख योनिमां
६ लेश्या लाभे. तेमां २४ लाख योनिमां ४ लेश्या लाभे. ३८ लाख योनिमां ३ लेश्या लाभे.

२२ लाख योनिमां ३-४-६ लेश्या लाभे ॥७॥ आठमुं ज्ञानद्वार–८४ लाख योनि तेमां ७२ लाख योनिमां ज्ञान लाभे नहि. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां २ ज्ञान लाभे. ८ लाख नारकी देवनी योनिमां ३ ज्ञान लाभे. १८ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां २-३-४-५ ज्ञान लाभे ॥८॥ नवमुं अज्ञानद्वार–८४ लाख योनिमां अज्ञान ३ लाभे. तेमां ५८ लाख योनिमां अज्ञान २ लाभे. २६ लाख योनिमां २ तथा ३ अज्ञान लाभे ॥९॥ दसमुं दर्शनद्वार–५६ लाख योनिमां १ अचक्षुदर्शन लाभे. २ लाख चउरिन्द्रियमां ते दर्शन चक्षु, अचक्षु लाभे. ८ लाख देवनारकीनी योनिमां ३ दर्शन लाभे. १८ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां दर्शन २-३-४ लाभे ॥१०॥ अगीआरमुं संज्ञी असंज्ञीद्वार–५८ लाख योनिमां १ असंज्ञी लाभे. २६ लाख योनिमां संज्ञी असंज्ञी २ लाभे ॥११॥ बारमुं वेदना द्वार–८४ लाख योनिमां निश्चयनये २ वेदना लाभे प्रत्येक प्रत्येकमां. व्यवहारनये ४ लाख नारकीनी योनिमां १ असाता वेदनीय लाभे. ४ लाख देवतानी योनिमां १ साता वेदनीय लाभे. शेष ७६ लाख योनिमां २ वेदना लाभे ॥१२॥ तेरमुं पर्याप्तिद्वार–८४ लाख योनि

योनिमां पर्याप्ति ६ लाभे. तेमां ५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां पर्याप्ति ४ लाभे. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां पर्याप्ति ५ लाभे. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां पर्याप्ति ५ ६ लाभे ॥ १३ ॥ चौदमुं प्राणद्वार—८४ लाख योनिमां प्राण दस लाभे. तेमां ५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां प्राण ४ लाभे. २ लाख बेइंद्रियनी योनिमां प्राण ६ लाभे. २ लाख ते इंद्रियनी योनिमां प्राण ७ लाभे. २ लाख चउरिंद्रियनी योनिमां प्राण ८ लाभे. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां प्राण ए—१० लाभे ॥ १४ ॥ पंदरमुं ध्यानद्वार—५८ लाख योनिमां २ ध्यान लाभे ते आर्त्तध्यान १, रौद्रध्यान २. १२ लाख योनिमां २ ३ ध्यान लाभे ते धर्मध्यान वध्युं. १४ लाख योनिमां २-३-४ ध्यान लाभे ॥ १५ ॥ सोलमुं उपयोगद्वार—८४ लाख योनि तेमां ५२ लाख योनिमां ३ उपयोग, २ अज्ञान १ अचक्षु ए ३ लाभे. ४ लाख बेइंद्रिय तेइंद्रियनी योनिमां ५ उपयोग लाभे. २ लाख चउरिन्द्रियनी योनिमां ६ उपयोग लाभे, १२ लाख देव नारकी तिर्यचनी योनिमां ए उपयोग लाभे. १४ लाख मनुष्यनी योनिमां उपयोग ६ तथा १२ लाभे ॥ १६ ॥ सत्तरमुं दृष्टिद्वार—५२ लाख

जीवायोनिमां दृष्टि १ लाभे. ६ लाख योनिमां २ दृष्टि लाभे. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां
१–२ तथा ३ दृष्टि लाभे ॥ १७ ॥ अढारमुं आत्माद्वार–५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां
लाभे ज्ञान चारित्र वर्जिने. १४ लाख योनिमां ७ आत्मा लाभे ते १ ज्ञान
च तिर्यंच मनुष्यनी योनिमां ८ आत्मा लाभे ते चारित्र वध्युं. ॥१८॥ ओग-
द्वार–८४ लाख जीवायोनिमां २ मरण समोहिया, १, असमोहिया २,
ने ॥१९॥ वीसमुं समुद्घातद्वार–५१ लाख योनिमां ३ समुद्घात
मां ४ समुद्घात लाभे, वैक्रेय वधी. ८ लाख योनिमां ५ समुद्घात
मां ३-४ ५ ६-७ समुद्घात लाभे ॥२०॥ एकवीसमुं शरीरद्वार–८४ लाख
१ लाख योनिमां ३ शरीर–उदारीक, तेजस अने कार्मण ए त्रण लाभे.
शरीर लाभे ते १ वैक्रेय वध्यु. ८ लाख योनिमां ३ शरीर ते वैक्रेय,
१ ३ लाभे. १४ लाख योनिमां ३-४-५ शरीर लाभे ॥२१॥ बावीसमुं संठाण-
लाख योनिमां ६ संठाण लाभे. तेमां ६२ लाख योनिमां १ [illegible]

योनिमां समचउरंस संठाण. १८ लाख योनिमां १ संठाण तथा ६ संठाण लाभे ॥ २२ ॥ तेवीसमुं संघयणद्वार-८४ लाख योनिमां ६ संघयण लाभे. तेमां ५८ लाख योनिमां १ छेवट्ठ संघयण. ८ लाख योनि असंघयणी. १८ लाख योनिमां १ संघयण तथा ६ संघयण लाभे ॥ २३ ॥ चोवीसमुं वर्णादिद्वार-८४ लाख जीवायोनिमां ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श सर्व मळी २० लाभे. तेमां ४ लाख नारकीनी योनिमां अशुभ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श लाभे ने ४ लाख देवनी योनिमां शुभ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श लाभे. शेष ७६ लाख योनिमां शुभाशुभ वर्णादि २० बोल लाभे ए व्यवहारनयनी अपेक्षाये जाणवुं ॥ २४ ॥ पचीसमुं संज्ञाद्वार-८४ लाख योनिमां ४ संज्ञा लाभे प्रत्येक प्रत्येकमां ॥ २५ ॥ छवीसमुं समवसरणद्वार-८४ लाख जीवायोनिमां ४ समवसरण लाभे. तेमां ५२ लाख योनिमां २ समवसरण अक्रियावादी अज्ञान २ लाभे. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां २ तथा ३ ते क्रियावादी वध्या. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां २-३-४ सम० लाभे ॥ २६ ॥ सत्तावीसमुं भावद्वार-७० लाख योनिमां भाव ३

लाभे, उदय, क्षयोपशम, परिणामिक. १४ लाख योनिमां भाव ५ लाभे ते उपशम, क्षायक ए बे वध्या ॥ २७ ॥ अट्ठावीसमुं हेतुद्वार—४५ लाख एकेन्द्रियमां ४१ हेतु लाभे. २५ कषाय, ३ जोग, १२ अव्रत, १ अनाभोगमिथ्यात्व एम ४१. वाउकायनी ७ लाख योनिमां २ वैक्रेयना वधतां ४३ हेतु लाभे. त्रण विगलेन्द्रियनी छ लाख योनिमां २५ कषाय, ४ जोग, १२ अव्रत, १ अनाभोगमिथ्यात्व एम ४२ हेतु लाभे. नारकीदेवनी ८ लाख योनिमां २५ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व ए ५३ हेतु लाभे. तिर्यंचपंचेन्द्रियनी ४ लाख योनिमां ५५ हेतु लाभे, ते ५७मांथी आहारकना २ वर्ज्या. १४ लाख मनुष्यनी योनिमां ५७ हेतु लाभे ॥ २८ ॥ ओगणत्रीसमुं कुलकोटिद्वार—५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां ५७ लाख कुलकोटि. विगलेन्द्रियनी ६ लाख योनिमां २४ लाख कुलकोटि. देवनारकीनी ८ लाख योनिमां ५१ लाख कुलकोटि तिर्यंच पंचेंद्रियनी ४ लाख योनिमां ५३ लाख कुलकोटी. १४ लाख मनुष्यनी योनिमां १२ लाख कुलकोटि. ए १९७५०००० लाख थाय. कुलकोटि कहेतां कुलना समुदाय जाणवा ॥ २९ ॥ त्रीसमुं पदवीद्वार—७ लाख पृथ्वीकायनी योनिमां

७ एकेन्द्रियनी पदवी लाभे. शेष ४५ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां पदवी एके न लाभे. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां पदवी एक समकीतनी लाभे. ८ लाख नारकी तथा देवनी योनिमां १ समदृष्टिनी पदवी लाभे. ४ लाख तिर्यंच पंचेन्द्रियनी योनिमा ४ पदवी— अश्व ने गज तथा श्रावक ने समदृष्टिनी लाभे. मनुष्यनी १४ लाख योनिमां ५ पंचेन्द्रिय रत्ननी ने ए मोटी पदवी एम १४ पदवी लाभे ॥ ३० ॥

॥ इति योनिना बोल संपूर्णम् ॥

गर्भावासना बोल ॥

अथ श्री तंडुलवेयालिया प्रकीरणकथी संक्षेपे गर्भावासना बोल लिख्यते ॥

स्त्रीनी नाभी नीचे बे नाडी छे, ते फुलनी नालीने आकारे छे तेनी नीचे योनि छे. ते जीवने उपजवानुं ठेकाणुं छे. ते अधोमुख कमळने आकारे छे. त्यां आंबानी मंजरी

लगवुं मांस छे. ज्यारे स्त्रीने ऋतुकाळ आवे त्यारे मंजरी करे. जेम रसनयुं गुमडुं करे तेम ते ऋतुनां बिंदु करे. त्यां वीर्यनो संजोग मिश्र थाय त्यारे बार मुहूर्त्तमां जीव आवी उपजे, उत्कृष्टा नव लाख जीव उपजे. स्त्रीनी योनि पंचावन वर्ष उपरांत मळी जाय—अबीज थाय. पुरुष पंचोतेर वर्ष पछी अबीज थाय. ए नियम सो वर्षना आयुष्यना प्रमाणनो समजवो. उपरांत पूर्व क्रोड सुधी आयुष्य होय तो स्त्रीना अर्द्ध आयुष्य सुधी सबीज योनि होय. पुरुषना सर्व आयुष्यनो वीसमो भाग शेष रहे त्यारे अबीज होय. वळी एक पुत्रने नवसें पिता होय. नवसें पुरुषनो एक पुत्र. ते गर्भ उत्कृष्टो बार वर्ष सुधी माताना उदरमां जीवपणे रहे. पाछो एनो ए जीव पापना उदयथी फरी पाछा बीजा बार वर्ष रहे, एटले चोवीस वर्ष थाय, त्यांसुधी रहे. जमणे पासे पुत्र रहे. डावे पासे पुत्री रहे. वच्चे नपुंसक रहे. तिर्यंचणीने आठ वर्ष सुधी जीव रहे. मातानुं रुधिर, पिताना शुक्रनो प्रथम आहार ले. सात दिवस सुधी चोखाना धोवण सरखो होय. बीजा साते पाणीना परपोटा सरखो थाय. त्रीजा साते [illegible]

आवानी गोटली सरखो थाय--अथवा खजुरनी पेशी सरखो थाय. ते जीव पहेले मासे अरुतालीस मासात्तार थाय. बीजे मासे पेशीथी कठण थाय. त्रीजे मासे माताने दोहद (इछा) थाय. सारी इछा पुण्यवंतनी माताने थाय अने खराब इछा पापी जीवनी माताने थाय. चोथे मासे मातानुं अंग पुष्ट करे. पांचमे मासे पेशी थकी पांच अंकुरा नीकळे, बे हाथ, बे पग, एक माथुं एम पांच. छठे मासे पीत्त अने लोही उपजे. सातमे मासे सातसो शीरा--नाडी उपजे. पांचसें पेसी ते मांसस्थानक विशेष, नव मोटी नाडी थाय, नवाणु लाख रोम गळा हेठे, बे क्रोड एकावन लाख रोम गळा उपर, सर्व मळी साडीत्रणक्रोड रोम थाय. आठमे मासे संपूर्ण अंगनी प्राप्ति होय. गर्भमांहि जीव उच्चार पासवण खेल संघाण पीत्त शुक्र शोणित एटलां वानां न करे. ते केम जे पुरुल रसहरणी नाडीये आहारे, ते शरीरना अंगोपांगपणे, पांच इंद्रियपणे, हाड, मींजा, वाळ, मुछ, दाढी, रोम, नखपणे परगमावे. मस्तक अवयवादि पण निपजावे. गर्भमांहि जीवने कवल आहार नहि. माता राजी तो गर्भ राजी. माता दुःखी तो गर्भ दुःखी. मातानी ने गर्भना

जीवनी नाम रसहरणीने वळगी रही छे. जे माता आहार करे ते सर्व गर्भने नाकोनाक प्रगमे, फळना वींटनी परे. शरीरने विषे त्रण अंग मातानां छे. मांस १, लोही २, माथानुं भेजुं ३. त्रण अंग पितानां छे. हाड १, हाडनी मींजा २, दाढी, मूछ, रोम, नख, प्रमुख ३. गर्भमांथी जीव मरीने नरकमां जाय तेम देवतामां पण जाय. वळी गर्भमांहि माता सुवे तो गर्भ सुवे. माता जागे तो गर्भ जागे. गर्भावासमांहि अंधकार छे. महा अशुचि डुर्गंध छे. मल मूत्रनुं स्थानक छे. त्यां जीव दुःखी थतो रहे छे. एम दुःख भोगवतां सवा नव मासे जन्मे. जीव अल्प लोही ने घणा शुक्रनो आहार करे तो पुत्र थाय १, अल्प शुक्र ने घणा लोहीनो आहार करे तो पुत्री थाय २, बे बरोबर आहार करे तो नपुंसक थाय ३. मस्तकेथी जन्म पामे तो सुखेथी जन्मे. कोइ पापी जीव आडो थइ आवे तो विनाश पण पामे. वळी आ शरीर केवुं छे तो के महा अशुचीनो भंडार छे. आ शरीरने विषे अढार पृष्ट करंड सांधा छे. सोल पांसळी करंड छे. आठ एक पासे, आठ बीजे पासे.

... पलनुं हैयुं छे. पचास पलनुं काळजुं ...
छे. चार आंगळनी जीभ छे. साडात्रण पलनुं हैयुं छे. पचास पलनुं काळजुं छे. नानी आंतमां वडीनीत प्रणमे छे. नानी आंत (कोठा) नानी छे, वे आंत मोटी छे. मोटी आंतमां वडीनीत प्रणमे छे. नानी आंतमां लघुनीत प्रणमे छे. वे पासां छे. डावुं ने जमणुं पासुं. डावे पासे सुखनो परिणाम छे. जमणे पासे दुःखनो परिणाम छे. आ शरीरने विषे एकसो साठ सांधा छे. एकसो सीत्तेर मर्मनां स्थान छे. त्यां घा लागे तो तत्काळ मरण पामे. त्रणसो हाडनी मींजा छे. नवसो नारुणी छे. सातसो शीरा छे. पांचसो पेसी मांसस्थानक छे. नव नाडी मोटी छे. सातसो नाडीनुं विवरण--एकसो साठ नाडी नाभीथी निकली, ते ऊंची चाली मस्तके पहोंची. ते रसहरणी नामथी ओलखाय छे. एनी निरुपघाते आंख, कान, नाक, जीभनुं बळ वधे. एनी उपघाते आंख, कान, नाक, जीभनुं बळ घटे. एकसो साठ नाडी नाभिथी उपनी अधोगामिनी पगतळे जइ पहोंची. तेनी निरुपघाते नेत्रनुं अने जंघानुं बळ वधे. तेनी उपघाते मस्तके वेदना, शूळादिक उपजे. आंखे आंधळो थाय, नेत्रनुं बळ ओछुं थाय. एकसो साठ नाडि नाभिथी उपनी त्रीछी जइ हाथे जइ पहोंची.

तेनी निरूपघाते वाहुनु बळ वधे. तेनी उपघाते पठवाके वेदना, पुंठवेदना, कुखवेदना, कुणे गुल्मादिक उपजे. एकसो साठ नाडि नाभिथी उपनी अधोगामिनी गुदे पहोंची. एनी निरूपघाते वडीनीत लघुनीत, कूर्मवायु आदि रौद्र दुःख उपजे. पचीस नाडि सलेखमनी धरणहारी छे. पचीस नाडि पित्तनी धरणहारी छे. दश नाडि शुक्रनी धरणहारी छे. एम पुरुषने सातसें नाडी शिराने नामे छे. एथी वसें सीत्तेर नाडि स्त्रीने छे. नपुंसकने वसे एंसी नाडी छे. मोटी नव नाडी तेनाथी जूदी जाणवी. पुरुपना शरीरमांहे पांच कोठा छे. स्त्रीने छ कोठा छे. गर्भ धरे ते कोठो अधिको छे. नव द्वार पुरुपने छे. बार द्वार स्त्रीने छे. पुरुपने पांचसें पेशी छे. स्त्रीने त्रीस ओछी छे. जेम सोनी जतरडाथी तार खेंची बहार काढे तेम गर्भावासमांथी गर्भ खेंचाइ कोटी कष्टे बहार आवे. बाल्यावस्थामां मल मूत्र अशुचीमां रगदोळ थयो अनेक व्याधी भोगवी म्होटो थयो, वळी शरीर रस १, रुधिर २, मांस ३, मेद ४, हाड ५, मज्जा ६, शुक्र ७ ए सात धातुए करीने भर्यो छे. सदा अशुची, मलमूत्रनो भंडार छे. ए द्वार तथा १२ द्वार हमेशां वहे छे. समण पकण चिवंमण स्वनात्र छे. अनेक मल मूत्र श्लेष्मादिक [illegible] छे. ए शरीर स्वाभावि [illegible]

शूचीपणे करी माने ठे, ते जीवनुं मूर्खपणुं ठे. शुचि--पवित्रता तो ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३, तप ४ ए चारथी थाय, अने तेणे करी मोक्ष पामीए, एवुं जाणी दुगंछा टाळवी. एक स्त्रीने एक नवमां नव लाख संतान उपजे नीपजे, ए जगवतीसूत्रमां ठे. जोगे जोगे असंख्याता जीव समुर्छिम मरण पामे ठे, ते केम तो के, वासनी जूंगळीमांहे रु पींजीने जर्युं होय, ते जूंगळीमां लोढानो खीलो अग्निमां तपावी रातोचोळ करी ते वांसनी नळीमां दाबे ने जेम रु विध्वंस पामे--बळी जाय, तेम स्त्रीने संगे असंख्यात जीव समुर्छिम मरण पामे ठे. आठ बोल उदारीक शरीरना कहे ठे--त्रणसें साठ सांधा ठे १, पांचसें पेशी ठे २, सातसो शीरा ठे ३, नवसो नारुणी ठे ४, वहोंतेर कोठा ठे. ५, एकसो आठ नानी नाक्ति ठे ६, नव मोटी धमण नाक्ति ठे ७ साडीत्रण क्रोम्न रोम ठे ८, ए आठ बोल उदारीक शरीरना जाणवा. पीत्त टांक ६४ ॥ १ ॥ वीर्य टांक ३२ ॥ २ ॥ रुधिर शेर १० ॥३॥ मूत्र शेर १० ॥४॥ चरवी शेर ५ ॥ ६ ॥ विष्टा शेर ५ ॥ ६ ॥ ए मान निरोगी शरीरनुं जाणवुं.

॥ इति गर्जावासना बोल सपूर्ण ॥

श्वासोश्वासना बोल ॥

अथ श्री श्वासोश्वासना बोल लिख्यते ॥

सो वर्षनी युग वीस ॥१॥ सो वर्षना संवत्सर सो ॥२॥ सो वर्षनां अयन बसो ॥३॥ सो वर्षनी ऋतु छसो ॥४॥ सो वर्षना मास बारसो ॥५॥ सो वर्षनां पखवाडियां चोवीस सो ॥६॥ सो वर्षनां अठवाडियां अडतालीस सो ॥७॥ सो वर्षना दिवस छत्रीस हजार ॥८॥ सो वर्षना पहोर बे लाख ने अठ्ठाशी हजार ॥९॥ सो वर्षनां मुहूर्त दस लाख ने एंसी हजार ॥१०॥ सो वर्षनी घडी एकवीस लाख ने साठ हजार ॥११॥ सो वर्षनां श्वास उश्वास चारसो सात कोड अडतालीस लाख ने चालीस हजार. ते सख्याना अंक इम जाण. ४०७,४८,४०,००० ॥१२॥ एक घडीना श्वास उश्वास अढारसो ने साडी [illegible]

अर दुःख पाप. ४०७,४८,४०,००० ॥ [illegible]

श्वास उश्वास चौद हजार एकसो ने पोणी ओगणपचास ॥१५॥ एक अहोरात्रना श्वास
उश्वास एक लाख तेर हजार एकसो ने नेवुं ॥१६॥ पंदर दिवसना श्वासोश्वास सोल लाख
सत्ताणुं हजार आठसो ने पचास ॥ १७ ॥ एक मासना श्वासोश्वास तेत्रीस लाख पंचाणु ह-
जार सातसो ॥१८॥ सवानव मासना श्वासोश्वास त्रण क्रोड चउद लाख दस हजार वसो
ने पचीस ॥१९॥ एक वर्षना श्वासोश्वास चार क्रोड सात लाख अडतालीस हजार ने चा-
रसो ॥२०॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री मरीने सातमी नरके उपन्यो. त्यां तेत्रीस साग-
रनुं आयुष्य छे. ते इहां मनुष्यपणे एकेक श्वासोश्वासने सुखे त्यां नरकमां केटलो काल
दुःख भोगवशे ते कहे छे. अग्यार लाख पल्योपम छप्पन हजार पल्योपम नवसो ने पचीस
पल्योपम ने एक पल्योपमनो त्रीजो भाग झाझेरुं दुःख भोगवशे ॥ १ ॥ काकंदी नगरीना
धन्ना अणगारे नव मासनुं चारित्र पाळ्युं,ते नव मासना श्वासोश्वास त्रण क्रोड पांच लाख
एकसठ हजार ने त्रणसो. ते धन्नो अणगार चवी सर्वार्थसिद्ध विमाने उपन्या. त्यां ३३
सागरनुं आयुष्य छे. तेणे इहां मनुष्यपणामां नव मासनुं चारित्र पाळ्युं, कष्ट वेठ्युं, ते

एकेक श्वास उश्वासने कष्टे देवतानी गतिमां एकसो सात क्रोड सत्तावणुं लाख छन्नु हजार नवसो अट्ठाणुं पल्योपम ने एक पल्योपमनो छट्ठो भाग माठेरुं एटलुं देवतानुं सुख जोगवशे. हवे संवर तथा तपना फळनुं प्रमाण कहे छे. सम्यग्दृष्टि जीव रागद्वेषरहित, क्षमा दयासहित, पोषध पडिक्कमे ने सत्तावीसमो ने सीत्तोतेर क्रोड सीत्तोतेर लाख सीत्तोतेर हजार सातसो ने सीत्तोतेर पल्य ने एक पल्यना नव भाग करीए ते मांहिला आठ भाग ऊणेरुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥१॥ एक पहोरवेळा सुधी संवर आदरे ते त्रणसो पंचाशीस क्रोड चालीस लाख चालीस हजार वसो चालीस पल्य ने एक पल्यना आठ भाग करीए ते मांहिला सात भाग ऊणेरुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥२॥ एक मुहूर्त सुधीनो संवर आदरे ते बाणुं क्रोड ओगणसाठ लाख पचीस हजार नवसो ने पचास पल्य ने एक पल्यना सात भाग करीए तेवा छ भाग ऊणेरुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥३॥ एक घडीनो संवर आदरे ते त्रेतालीस क्रोड, ओगणत्रीस लाख बासठ हजार नवसो ने सडसठ पल्य ने एक पल्यना नव भाग करीए ते मांहिला आठ भाग ऊणेरानुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥४॥

एक श्वासोश्वास सुधीनो संवर आदरे ते बे लाख चोपन हजार चारसो आठ पल्य न
एक पल्यनो चोथो भाग देवतानुं आयुष्य बांधे ॥५॥ एक नमोक्कारसी तप करे ते ओग-
णीस लाख त्रेसठ हजार बसो सरुसठ पल्य ने एक पल्यना चोथा भागनुं देवतानुं आयु-
ष्य बांधे ॥६॥ एक अनुपूर्वि गणे तेनां जघन्य ग्रासठ सागरनां नारकीनां पाप नाश
पामे, उत्कृष्ट पांचसें सागरनां नारकीनां पाप नाश पामे ॥७॥ एक उणोदरी तप करे ते,
सो वर्षे नारकी कर्म खपावे, तेथी अधिक खपावे ॥८॥ एक उपवास करे त एक हजार
वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥९॥ एक छठ्ठ तप करे ते एक लाख वर्षे नारकी
कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ १० ॥ एक अठ्ठम तप करे ते क्रोड वर्षे नारकी कर्म
खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ ११ ॥ चार उपवास करे ते एक क्रोडाक्रोडी वर्षे नारकी कर्म
खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ १४ ॥

॥ इति श्वासोश्वासना बोल संपूर्ण ॥

जीवना चौद भेद ॥

अथ जीवना चौद भेदनी चर्चा लिख्यते ॥

जीवना १४ भेद–तेमां सूक्ष्म केटला ? ने बादर केटला ? उत्तर–असंज्ञीना चार पहेला. संज्ञी बे ने तेरमो ने चौदमो ए बे ॥ १ ॥ जीवना १४ भेद तेमां त्रस केटला ? ने स्थावर केटला ? उत्तर–स्थावर चार पहेला, अने त्रसना उपला दस ॥ २ ॥ जीवना १४ भेद तेमां पर्याप्ता केटला ? अने अपर्याप्ता केटला ? उत्तर–सात अपर्याप्ता ते १-३-५-७ ए-११-१३, अने सात पर्याप्ता ते २-४-६-८-१०-१२-१४ ॥ ३ ॥ जीवना १४ भेद तेमां नजरे केटला आवे ? अने नजरे केटला न आवे ? उत्तर–सात अपर्याप्ता अने एक सूक्ष्म पर्याप्तानो ए आठ नजर न आवे, अने बाकी ६ भेद नजरे आवे ॥ ४ ॥ जीवना १४ भेद तेमां त्रस नालीमां केटला ? अने स्थावर नालीमां केटला ? उत्तर–त्रस नालीमां १४ भेद लाभे, अने

स्थावर नाळीमां चार स्थावरना जेदनी नियमा. पांच अप र्यांता अने संज्ञीनो पर्यांतो एम ६ जेदनी जजना वखते होय अने वखते न पण होय ॥ ५१ ॥ जीवना १४ जेद तेमां आहारक केटला ? अने अणाहारक केटला ? उत्तर–सात अ ।पर्यांता ने एक संज्ञीनो पर्यांतो एम ८ अणाहारकमा लाजे, अने आहारकमां १४ जेद ल ।जे ॥ ६ ॥ जीवना १४ जेद तेमां मनसहित केटला ? अने मनरहित केटला ? उत्तर–मन स। हत तो एक १४ मो अने मनरहित मांहे १४ जेद लाजे॥७॥ जीवना १४ जेद तेमां गर्जज केटला ? अने अणगर्जज केटला ? उत्तर–गर्जज वे तेरमो ने चौदमो, अने अणगर्जजमां तो चौद लाजे ॥८॥ जीवना १४ जेद तेमां साश्वता केटला ? अने असाश्वता केटला ? उत्तर–साश्वता तेर जेद लाजे, ते एक १३ मो जेद वर्जिने, अने असाश्वतो एक १३ मो ज जेद लाजे ॥ ए ॥ जीवना १४ जेद तेमां प्रत्येक केटला ? ने साधारण केटला ? उत्तर–साधारणमां चार जेद पहेला ला ।, अने प्रत्येकमां १४ जेद लाजे. ॥ १० ॥ ए दस प्रश्न ॥ वाटे वेहेता जीवने शरीर केटलां ला जे ? उत्तर–तेजस १, कामण २, ए वे शरीर लाजे ॥ १ ॥ वाटे वेहेता जीवने जोग केटला ल ।जे ? उत्तर–एक कार्मण काय-

जोग. ॥ २ ॥ वाटे वहेता जीवने उपयोग केटला लाभे ? उत्तर–मनः पर्यवज्ञान १, चक्षुदर्शन २, ए बे वर्जिने बाकी १० उपयोग लाभे ॥ ३ ॥ वाटे वेहेता जीवने गुणठाणां केटलां लाभे ? उत्तर–पहेलु, बीजुं अने चोथुं ए त्रण लाभे ॥४॥ वाटे वेहेता जीवने प्राण केटला ? उत्तर–एक आयुष्यप्राण ॥ ५ ॥ एक आंगळीना टेरवामां जीवना भेद केटला ? उत्तर–त्रण. सूक्ष्म एकेन्द्रियना बे भेद, एक सज्ञीनो पर्यासो एम ३ नी नियमा. बीजा अपर्यासानी भजना जाणवी ॥ ६ ॥ हाथनी मुट्ठीमां जीवना भेद केटला ? उत्तर–पांच भेद. चार स्थावरना भेद, एक सज्ञीनो पर्यासो एम ५ भेद लाभे. ए ५ नी नियमा अने शेष अपर्यासानी भजना ॥ ७ ॥ चार भाषामां सत्य १, असत्य २, ए बे पर्याप्ति. (पूरी भाषा). मिश्र १, व्यवहार २, ए बे अपर्याप्ति (अपूरी भाषा) ॥ ८ ॥ सौधर्म देवलोके जीवना १४ भेद तेमां केटला भेद लाभे ? उत्तर–छ भेद. चार पहेला अने सज्ञीनां २, ए छ लाभे. ॥ ९ ॥ एमज रयणप्रभामां छ भेद लाभे ॥ १० ॥ ए प्रश्न १० ॥ एक आंगळीनां टेरवामा प्रदेश केटला लाभे ? उत्तर–एक पोताना जीवना असंख्याता प्रदेश लाभे. एम ...

जीवथी प्रदेश असंख्यातगुणा अधिक लाभे ॥ १ ॥ एक आकाशप्रदेश उपर अजीवना केटला भेद लाभे? उत्तर–नव भेद. धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायना २; पुद्गलना ४ अने एक अधासमयनो एम ए भेद लाभे ॥ २ ॥ अलोकमां अजीवना भेद केटला लाभे? उत्तर–आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २; ए वे लाभे.॥३॥एक जीवने माता केटली? अने पिता केटला? उत्तर–माता एक अने पिता घणा ॥ ४ ॥ पांचमे आरे ठ नियंठामांहियी केटला लाभे? उत्तर–बीजो, त्रीजो अने चोथो ए त्रण लाभे ॥५॥ ठ नियठामांहियी एक पुलाकनुं साहरण न थाय,बाकी पाचनुं साहरण थाय ॥६॥ ठेवट्ठ संघयणनो धणी मरीने देवतामां जाय तो पहेला चार देवलोक सुधी जाय. पांचमे, ठट्टे पहेला ५ संघयणनो धणी जाय. सातमे आठमे पहेला ४ संघयणनो धणी जाय. नवमे, दसमे, अग्यारमे अने बारमे देवलोके पहेला ३ संघयणनो धणी जाय. नव ग्रैवेयके पहेला वे संघयणनो धणी जाय. पांच अनुत्तर विमाने तथा मोक्षमां एक पहेला संघयणनो धणी जाय ॥ ७ ॥ वधे वधे ते शुं? तृष्णा ॥ १ ॥ घटे पण वधे नहि ते शुं? आयुष्य ॥२॥ घटे पण खरुं ने वधे

पण खरुं ते शुं? मनना परिणाम ॥ ३॥ न वधे न घटे ते शुं? तीर्थंकरे जाव दीठा ते ॥४॥ वळी बीजा चार भांगा—वधे पण घटे नहि ते शुं? सिद्ध भगवंत ॥ १ ॥ घटे पण वधे नहि ते शुं? भव्यजीव ॥ २ ॥ घटे ने वधे ते शुं? पडिवाइ समदृष्टि ॥ ३ ॥ न वधे न घटे ते शुं? अभव्य जीव ॥ ४ ॥ पाच इंद्रियनां संठाण ॥ श्रोत्रेन्द्रियनुं संठाण कलंबु फुलनुं ॥ १ ॥ चक्षु इंद्रियनुं संठाण मसुरनी दाळनु ॥ २ ॥ रसेंद्रियनुं संठाण ठरपलानुं ॥ ३ ॥ घ्राणेंद्रियनुं संठाण नाविनी कोयळीनुं ॥ ४ ॥ स्पर्शेन्द्रियनुं संठाण नाना प्रकारनुं ॥ ५ ॥ पांच इन्द्रियना विषय कहे छे ॥ श्रोत्रेंद्रियनो विषय १२ जोजननो ॥ १ ॥ चक्षुइंद्रियनो विषय लाख जोजननो ॥ २ ॥ नासिका ॥ ३ ॥ जीभ ॥ ४ ॥ स्पर्शेंद्रिय ए त्रणेनो विषय नव जोजननो ॥ ५ ॥ जीवतत्त्व चौद राजलोकमांहे लाभे ॥ १ ॥ अजीवतत्त्व लोक अलोक मांहि लाभे ॥ २ ॥ पाप १, आश्रव २, बंध ३, ए त्रणोक आलामांहि लाभे ॥ ५ ॥ पुण्यतत्त्व देशे उणा चौद राजलोकमांहि लाभे, 'लोगदेसे य वायरा' इति वचनात् ॥ ६ ॥ संवर ७, नीर्जरा ८, ए बे [illegible]

॥ ए ॥ समकितनु जाजन जीव ॥ १ ॥ जीवनुं जाजन अजीव ॥ २ ॥ अजी
लोक ॥ ३ ॥ लोकनुं जाजन अलोक ॥ ४ ॥ अलोकनुं जाजन केवलज्ञान, केवलदर्शन ॥५॥
उगी उगीने उग्या ते जरत महाराजा ॥ १ ॥ उगीने आथम्या ते वह्मदत्त चक्रवर्ति ॥२॥
आथमीने उग्या ते हरकेशी अणगार ॥ ३ ॥ आथमीने आथम्या ते कालसूरीयो कसाइ
॥ ४ ॥ ए चोजंगी ठाणांगे छे ॥ पापनुं कुटुंब कहे छे ॥ पापनी माता हिंसा ॥ १ ॥ पापनो
बाप लोज ॥ २ ॥ पापनो जाइ जूठो ॥ ३ ॥ पापनी बेन तृष्णा ॥ ४ ॥ पापनी स्त्री माया
॥ ५ ॥ पापनो दीकरो लालच ॥ ६ ॥ पापनी दीकरी कुबुद्धि ॥ ७ ॥ पापनु मूळ क्रोध
॥८॥ हवे जुदां जुदा द्रव्योनां संठाण कहे छे. तरूकानुं संठाण गामानी उधनुं ॥ १ ॥ ठायानुं
संठाण पेटीनुं ॥२॥ अलोकनुं संठाण पोला गोळानुं ॥ ३ ॥ अधोलोकनुं संठाण त्रापानुं
॥ ४ ॥ त्रिठा लोकनुं संठाण झालरनुं ॥ ५ ॥ उर्ध्वलोकनुं संठाण मृदंगनुं ॥ ६ ॥ दिवसनुं
संठाण मोतीनी लटनुं ॥ ७ ॥ दिशानुं संठाण गामानी उधनुं ॥ ८ ॥ पृथ्वीनुं संठाण
मसुरनी दाळनुं ॥ ए ॥ पाणीनुं संठाण पाणीना बिंदुनुं ॥ १० ॥ अग्निनुं संठाण सुइना

पण रस्त्रं ते शुं? मनना परिणाम ॥३॥ न वधे न घटे ते शुं? तीर्थंकरे ज्ञान दीठा ते ॥४॥ वळी बीजा चार जागा—वधे पण घटे नहि ते शुं? सिद्ध भगवंत ॥ १ ॥ घटे पण वधे नहि ते शुं? भव्यजीव ॥ २ ॥ घटे ने वधे ते शुं? पडिवाइ समदृष्टि ॥ ३ ॥ न वधे न घटे ते शुं? अभव्य जीव ॥ ४ ॥ पांच इंद्रियनां संठाण ॥ श्रोत्रेंद्रियनुं संठाण कलंबु फुलनुं ॥ १ ॥ चक्षु इंद्रियनुं संठाण मसुरनी दाळनु ॥ २ ॥ रसेंद्रियनु संठाण छरपलानुं ॥ ३ ॥ घ्राणेंद्रियनुं संठाण नासिनी कोथळीनुं ॥ ४ ॥ स्पर्शेंद्रियनुं संठाण नाना प्रकारनुं ॥ ५ ॥ पांच इंद्रियना विषय कहे छे ॥ श्रोत्रेंद्रियनो विषय १२ जोजननो ॥ १ ॥ चक्षुइंद्रियनो विषय लाख जोजननो ॥ २ ॥ नासिका ॥ ३ ॥ जीभ ॥ ४ ॥ स्पर्शेंद्रिय ए त्रणेनो विषय नव जोजननो ॥ ५ ॥ जीवतत्त्व चौद राजलोकमांहे लाभे ॥ १ ॥ अजीवतत्त्व लोक अलोक मांहि लाभे ॥ २ ॥ पाप १, आश्रव २, बंध ३, ए लोक आखामांहि लाभे ॥ ५ ॥ पुण्यतत्त्व देशे उणा चौद राजलोकमांहि लाभे, 'लोगदेसे य चायग' इति वचना ॥ ६ ॥

[illegible] जीवनुं भाजन अजीव ॥ [illegible] ॥ अजीवनुं भाजन
॥ ए ॥ समकितनुं भाजन जीव ॥ १ ॥ जीवनुं भाजन अजीव ॥ २ ॥ अजीवनुं भाजन केवलज्ञान, केवलदर्शन ॥५॥
लोक ॥ ३ ॥ लोकनुं भाजन अलोक ॥ ४ ॥ अलोकनुं भाजन केवलज्ञान, केवलदर्शन ॥५॥
उगी उगीने उग्या ते भरत महाराजा ॥ १ ॥ उगीने आथम्या ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति ॥२॥
आथमीने उग्या ते हरकेशी अणगार ॥ ३ ॥ आथमीने आथम्या ते कालसूरीयो कसाइ
॥ ४ ॥ ए चोभंगी ठाणांगे छे ॥ पापनुं कुटुंब कहे छे ॥ पापनी माता हिंसा ॥ १ ॥ पापनो
बाप लोभ ॥ २ ॥ पापनो भाइ जूठो ॥ ३ ॥ पापनी बेन तृष्णा ॥ ४ ॥ पापनी स्त्री माया
॥ ५ ॥ पापनो दीकरो लालच ॥ ६ ॥ पापनी दीकरी कुबुद्धि ॥ ७ ॥ पापनुं मूळ क्रोध
॥ ८ ॥ हवे जुदां जुदा द्रव्योनां संठाण कहे छे. तरूकानुं संठाण गाडानी उधनुं ॥ १ ॥ ठायानु
सठाण पेटीनुं ॥२॥ अलोकनुं संठाण पोला गोळानुं ॥३॥ अधोलोकनुं संठाण त्रापानुं
॥ ४ ॥ त्रिण लोकनुं संठाण झालरनुं ॥५॥ उर्ध्वलोकनुं संठाण मृदंगनुं ॥ ६ ॥ दिवसनुं
सठाण मोतीनी लटनुं ॥ ७ ॥ दिशानुं संठाण गाडानी उधनुं ॥ ८ ॥ पृथ्वीनुं संठाण
मसुरनी दाळनुं ॥ ए ॥ पाणीनुं सठाण पाणीना बिंदुनुं ॥ १० ॥ अग्निनुं संठाण सुइना

सारानुं ॥ ११ ॥ वायुनुं संगाण ध्वजापताकानुं ॥ १२ ॥ वनस्पतिनुं संगाण नाना प्रकारनुं ॥ १३ ॥ त्रसकायनुं संगाण नाना प्रकारनुं ॥ १४ ॥ अढिद्वीप माहिला चंद्रमा, सूर्यनुं सगाण अर्क लानवानु ॥ १५ ॥ अढि द्वीप बाहिरला चंद्रमा सूर्यनुं संगाण पाकी ईंटनु ॥ १६ ॥ आठ फरस काया उपर कहे छे ॥ खरखरो फरस ते पगनां तळा ॥ १ ॥ सुंहाळुं ते ताळवुं ॥ २ ॥ भारे ते हाडकां ॥ ३ ॥ हळवो ते केश ॥ ४ ॥ टाढी ते काननी चुट ॥ ५ ॥ उनी ते गाती ॥ ६ ॥ चीगटी ते नाकनी मांफी ॥ ७ ॥ लूखो ते जीभनो फरस ॥ ८ ॥ नारकीनो जीव काळ करीने जघन्य उत्कृष्टो केटले आंतरे जइ उपजे? उत्तर— जघन्य हजार जोजन झाझेराने आंतरे उपजे. ते केम? पहेली नरकनो जीव काल करीने—महापाताल कलशा लाख जोजनना लांबा पहोळा छे, ने हजार जोजननी ठींकरी जाडी छे तेने भेदीने पाताल कलशामां जळचरपणे उपजे, उत्कृष्टो त्रिछो स्वयंभूरमणसमुद्रमां अने उंचो मेरुनी बावडीमां उपजे ॥ ७ ॥ भवनपतिथी बीजा देवलोकना देवता काल करीने जघन्य

वेदीने पाताल [illegible]
[illegible] उपजे, उत्कृष्टा नीचा सातमा नरकना हेठला
शय्याना आजूपणमांहि पृथ्वीकायपण उपजे, उत्कृष्टा नीचा सातमा नरकना हेठला
शय्याना आत्मपणमांहि पृथ्वीकायपण उपजे, ऊंचो इसीपन्नारामां उपजे ॥२॥
चरिम प्रदेशमां त्रिठो स्वयंभूरमणसमुद्रनी वेदीकामां अने ऊंचो इसीपन्नारामां उपजे ॥२॥
त्रीजा देवलोकथी आठमा देवलोकनां देवता काल करीने जघन्य उत्कृष्टा केटले आंतरे
उपजे ? उत्तर, जघन्य आंगुलना असंख्यातमे भागे उपजे. ज्यारे पंकगवननी वावडीमां
आठमा देवलोक सुधीना देवता जल अवगाहीने क्रीडा करतां आउखुं त्रुटे तेवारे समय
पुरो थये माछलीना गर्भपणे उपजे, अथवा पूर्वभवनी मनुष्यपणानी स्त्रीथी घणो स्नेह
करी, अतिरागे करीने ते स्त्रीनो स्पर्श करे, त्यारे प्रदेश प्रवेशतो काल करे ते गर्भमांहि
पुरुषनुं वीर्य हतुं ते त्यां उपजे. नीचो तो महापाताल कलशा लाख जोजनना छे, तेना
त्रण भाग करीए तेना सहुथी नीचेना भागमां मच्छपणे उपजे. त्रिठो स्वयंभूरमण समु-
द्रमां उपजे ॥ ३ ॥ नवमा देवलोकथी सर्वार्थसिद्धना देवता काळ करीने जघन्य
उत्कृष्टा केटले आंतरे उपजे ? उत्तर—जघन्य तो विद्याधरनी श्रेणीमां. नीचो हजार
जोजननी विजय ऊंडी छे तेमां अने त्रीछो मनुष्यक्षेत्रने अंते उपजे ॥ ४ ॥ श्री

साधुजीनी अवगाहना उत्कृष्टी ५०० धनुष्यनी, आयुष्य देशे उणुं पूर्व क्रोमनुं. देशव्रती श्रावकनी अवगाहना १००० जोजननी माछलानी अपेक्षाए, आयुष्य देशे उणुं पूर्व क्रोमनुं मरुदेवा मातानी अपेक्षाए ॥ ५ ॥ केवलीनी अवगाहना त्रण लोक प्रमाणे केवल समुद्घातनी अपेक्षाए. आयुष्य देशे उणुं पूर्व क्रोमनुं ॥ ६ ॥ आखा लोकमांहि अजीवना नेद केटला? उत्तर—अग्यार नेद लाने. धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २. कालनो १, पुद्गलना ४, एम ११ नेद लाने ॥ ७ ॥ अलोकमां अजीवना बे नेद लाने. देश १ प्रदेश २, ए बे लाने ॥ ८ ॥ अढिद्वीप बाहिर काल वर्जिने अजीवना १० नेद लाने ॥ ९ ॥ द्रव्य १, क्षेत्र २, काल ३, नाव ४. ए चारमां सूक्ष्म घणो कोण ? ने थोमो कोण ? उत्तर—सर्वथी थोमो सूक्ष्म काल १, तेथी क्षेत्र सूक्ष्म २, तेथी द्रव्य सूक्ष्म ३, तेथी नाव सूक्ष्म छे ॥ १० ॥ परमाणुनुं परमाणुपणे जो पुद्गल रहे तो केटलो काळ रहे? उत्तर—असंख्यातो

आवे तो केटले काळे आवे? उत्तर–असंख्यात काल ॥ १२ ॥ अजागा घणा ? के अणाहारक घणा? उत्तर–अणाहारक घणा ते वाटे वेहेता अणाहारक ठे माटे ॥ १३ ॥ वाटे वेहेता जीव घणा ? के सिद्ध घणा ? उत्तर–वाटे वेहेता जीव घणा निगोद ठे माटे ॥१४॥

॥ इति जीवना चौद जेदनी चर्चा संपूर्ण ॥

जीवना ५६३ भेद ॥

॥ अथ श्री ५६३ जेद जीवना ठे तेनी चर्चा ॥

गाथा–वेय १ दिठिय २ पज्जत्ते ३, सासए ४ सन्नि ५ चवणे ६ लेस्सा ७ ॥
जोगे ८ सरीरे ९ मणसहीए १०, दिठिगोयरे ११ गजज्जा १२ नालिए चेव १३ ॥ १ ॥
आया १४ मरणे १५ समुग्घाए १६, पज्जा १७ विजंग अणाणे १८ उहिनाणेय १९॥

उद्दिंसण २० परित्त २१ सावग २२, गुणठाणे २३ लोया २४ ऽलोए २५ चेव ॥ २ ॥

जीवना ५६३ जेद मांहि १४ जेद नारकीना, ४७ जेद तिर्यंचना, ३०३ जेद मनुष्यना, १९७ जेद देवताना ए सर्व मळी ५६३ जेद थाय. स्त्रीवेदमां ३४० जेद लाजे, ते ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, तथा मनुष्यना १०१ गर्जज मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना अने देवताना ६४ जेद प्रथम जातिना बीजा देवलोक सुधीना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १२७ देवताना. सर्व मळी ३४० जेद लाजे ॥ १ ॥ पुरुष वेदमां ४१० जेद लाजे, ते संज्ञी तिर्यंचनां १० जेद, गर्जज मनुष्यना २०२ जेद, देवताना १९८ भेद. सर्व मळी ४१० जेद लाजे ॥ २ ॥ नपुंसक वेदमां १९३ जेद लाजे. ते १४ जेद नारकीना, ४७ जेद तिर्यंचना, मनुष्यना जुगलीया वर्जिने १३१ जेद, सर्व मळी १९३ जेद लाजे ॥ ३ ॥ त्रणे वेदमां ४० जेद लाजे. ते संज्ञी तिर्यंचना १० जेद, १५ कर्मजूमि मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, सर्व मळी ४० जेद लाजे ॥ ४ ॥ समकित एकलामां पांच अनुत्तर विमानना

[illegible] ए १० जेद लाजे ॥ ५ ॥

ते १४ न्नेद नारकीनामांथी सातमी नरकना अप्रजाप्ता वर्ज्या, शेष १२ न्नेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रियना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० न्नेद, ५ असंज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता ए १८ न्नेद तिर्यंचना, १५ कर्मन्नूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३० ने त्रीस अकर्मन्नूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ९० मनुष्यना ने देवतामांहि १५ परमाधामी ने त्रण किलविषी ए १८ वर्जिने शेष ८१ जाति देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १६२ न्नेद देवताना. सर्व मळी २८२ न्नेद लान्ने ॥ ६ ॥ मिथ्यादृष्टिमां २८० न्नेद लान्ने ते ७ मी नरकनो अप्रजाप्तो ने तिर्यंचना ३० न्नेद ते २२ एकेन्द्रियना अने ५ असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रियना, ३ विगलेन्द्रियना ए ८ ना प्रजाप्ता ने मनुष्यना २१३ न्नेद ते १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ने ५६ अंतरद्वीपाना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ११२, ए सर्व मळी २१३ न्नेद मनुष्यना, ने देवताना ३६ न्नेद ते १५ परमाधामी, ३ किलविषी ए १८ ना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३६. एम सर्व मळी २८० न्नेद लान्ने ॥ ७ ॥ समामिथ्यात्वदृष्टिमां ९४ न्नेद ते ७ नरकना प्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंच, १५ कर्मन्नूमिना मनुष्य, देवतामांहि

१५ परमाधामी, ३ किल्बिषी, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमानना ए ३२ वर्जिने शेष ६७ जातिना देवना ए सर्व मळी ए४ नेद प्रजासाना लाने ॥ ८ ॥ बे दृष्टि ते समकित दृष्टि ने मिथ्यात्वदृष्टि, ए २ दृष्टिमा १७ए नेद लाने. ते पहेली ६ नरकना अप्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यञ्च, ५ असज्ञी तिर्यञ्च, ३ विगलेन्द्रिय ए १३ ना अप्रजाप्ता, १५ कर्मभूमि मनुष्यना अप्रजासा ३० अकर्मनूमिना प्रजासा अप्रजासा मळी ६० अकर्मनूमि ए ७५ नेद मनुष्यना, देवतामां १० नवनपति, १६ वाणव्यंतर, १० जंनका, १० ज्योतिषि, १२ देवलोक, ए लोकान्तिक ए ६७ नेदना अप्रजासा ने ए ग्रैवेयकना प्रजासा अप्रजासा ए ८५ नेद देवताना. सर्व मळी १७ए नेद लाने ॥ ए ॥ त्रणे दृष्टिमा ए४ नेद लाने. ते समामिथ्यात्वीनो माफक जाणवुं ॥ १० ॥ प्रजासामा २३१ नेद लाने ते ७ नरकना, २४ तिर्यञ्चना, १०१ संज्ञी मनुष्यना ए एए नेद देवताना. सर्व मळी २३१ भेद प्रजासाना लाने ॥ ११ ॥ अप्रजासामां ३३२ नेद लाने ते २३१ नो पना अप्रजासा ने १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्र-

१०२ सन्नी मन

[illegible]

चना ४० ञ्नेदमांथी ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता वर्जीने शेष ४२ [illegible] तिर्यंचना ने मनुष्य संज्ञी तेना १०१ ञ्नेदना प्रजाप्ता, एए जातिना देवताना प्रजाप्ता ए सर्व मळी २५० ञ्नेद लान्ने ॥ १३ ॥ अशाश्वतामांहि ३१३ ञ्नेद लान्ने. ते ७ नरकना अप्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता, १०१ संज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना, एए जातिना देवताना अप्रजाप्ता, सर्व मळी ३१३ ञ्नेद लान्ने ॥ १४ ॥ संज्ञीमा ४२४ ञ्नेद लान्ने ते १४ ञ्नेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० तिर्यंचना. संज्ञी मनुष्य १०१ ना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना ने १एए ञ्नेद देवताना सर्व मळी ४२४ ञ्नेद लान्ने ॥ १५ ॥ असंज्ञीमांहि १३ए ञ्नेद लान्ने. ते १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता, ३० ञ्नेद तिर्यंचना, ते ४० मांथी १० ञ्नेद सज्ञीना वर्ज्या, शेष ३० ञ्नेद तिर्यंचना, सर्व मळी १३ए ञ्नेद लान्ने ॥ १६ ॥ पांचसे त्रेसठमांहि चवे तो ३७१ ञ्नेद चवे. ७ नरकना प्रजाप्ता, एए देवताना प्रजाप्ता, ४० ञ्नेद तिर्यंचना, ०६ जातिना जुगलियाना अप्रजाप्ता वर्जीने शेष २१७ ञ्नेद मनुष्यना, सर्व मळी ३७१ ञ्नेद लान्ने ॥१७॥

न चवे तेमां १९२ भेद लाभे. ते ७ नरकना अप्रजाप्ता, ९९ देवताना अप्रजाप्ता, ८६ जुगलियाना अप्रजाप्ता, सर्व १९२ भेद न चवे तेमां लाभे ॥ १८ ॥ आगली ३ लेश्या तेमां प्रत्येक ३ मां ४५९ भेद लाभे. ते नारकीना ६ भेद, ते एकेकी लेश्या त्रण त्रण नरके लाभे तेथी, ४८ भेद तिर्यचना, ३०३ भेद मनुष्यना, ५१ जाति देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता १०२, सर्व मळी ४५९ भेद लाभे ॥ १९ ॥ तेजुलेश्यामां ३४३ भेद लाभे. ते बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाप्ता, संज्ञी तिर्यचना १०भेद, संज्ञी मनुष्यना २०२ भेद, ६४ जातिना देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता १२८, सर्व मळी ३४३ भेद लाभे ॥२०॥ पद्मलेश्यामांहि ६६ भेद लाभे. ते संज्ञी तिर्यचना १० भेद, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ३०, देवतामां बीजो किलविषी, त्रीजो, चोथो, पांचमो देवलोक ने ९ लोकांतिक ए १३ ना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता २६. सर्व मळी ६६ भेद लाभे ॥ २१ ॥ शुक्ल लेश्यामां ८४ भेद लाभे. ते संज्ञी तिर्यचना १० भेद, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ३०, ने देवतामांहि त्रीजो किलविषी १, छठ्ठेथी ते बारमा

सर्वे मळी ७४ नेद लाने ॥ २२ ॥ ठए लेश्यामा ४० नेद ते १० नेद लेश्या ...
३० नेद मनुष्यना ते १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, सर्वे मळी ४० नेद लाने
॥ २३ ॥ आगली ४ लेश्यामां २७७ नेद लाने. ते प्रथम ५१ जातिना देवताना अप्र-
जाप्ता ने प्रजाप्ता १०२, ने जुगलीयाना ८६ नेदना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १७२ ने वादर,
पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाप्ता ए सर्वे मळी २७७ नेद लाने ॥ २४ ॥ उदा-
रिक काययोगमां ३५१ नेद लाने. ते ३०३ नेद मनुष्यना, ४८ नेद तिर्यंचना ए ३५१ नेद
लाने ॥ २५ ॥ उदारिक मिश्रयोगमां २४७ नेद लाने ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, १०१ संज्ञी
मनुष्यना अप्रजाप्ता, १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता, तिर्यंचना २४ नेद अप्रजाप्ता वादर वायु-
कायनो प्रजाप्तो ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता सर्वे मळी २४७ नेद लाने ॥ २६ ॥ वैक्रेय
योगमां २३३ नेद लाने ते १९८ देवताना, १४ नेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता,
वादर वायुकायनो प्रजाप्तो, १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता, सर्वे मळी २३३ नेद लाने ॥ २७ ॥
वैक्रेयना मिश्रमां २१९ नेद लाने. ते पूर्वे २३३ नेद कह्या तेमांथी ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर

विमान, ए १४ ना प्रजाप्ता वर्जिने शेष २१ए भेद लाभे ॥ २० ॥ आहारक ने आहारकना मिश्रमां १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता ए १५ भेद लाभे ॥ २ए ॥ कार्मण काययोगमांहि ३४७ भेद लाभे. ते ३३२ अप्रजाप्ता ने १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता, सर्व मळी ३४७ भेद लाभे ॥३०॥ सत्य मनादि ४ ने सत्य वचनादि ३ ए ७ जोगमां २१२ भेद लाभे. ते एए जातिना देवता ने ७ नारकी, १०१ सञ्ज्ञी मनुष्य, ५ संज्ञी तिर्यंच ए सर्वेना पर्याप्ताना २१२ भेद पूर्वोक्त सात योगमां लाभे ॥ ३१ ॥ व्यवहार वचनमां २२० भेद लाभे. ते पूर्वे सत्यमनादिमां २१२ भेद कह्या तेज ने ५ असंज्ञी तिर्यंच ने ३ विगलेन्द्रियना ए ८ ना प्रजाप्ता सर्वे मळी २२० भेद लाभे ॥ ३२ ॥ उदारिक शरीरमां ३५१ भेद लाभे. ते ५६३ मांथी १४ भेद नारकीना ने १ए८ भेद देवताना वर्जिने शेष ३५१ भेद लाभे ॥३३ ॥ वैक्रेय शरीरमांहि २३३ भेद लाभे. ते १ए८ भेद देवताना, १४ भेद नारकीना, १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता, ५ सञ्ज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता, बादर वाउकायनो प्रजाप्तो ए २३३ भेद लाभे ॥ ३४ ॥ आहारक शरीरमां १५ कर्म-

३४७ नेद लाने ते कार्मण काययोगनी माफक जाणवुं ॥ ३७॥ आहारकमां ...२ भेद लाभे

॥३८॥ मनसहितमा २१२ नेद लाने ते सत्य मननी माफक जाणवुं ॥३९॥ मनरहितमां ३५१ नेद लाने ते ७ नरकना अप्रजाप्ता, ४३ नेद तिर्यंचना ते ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता वर्जिने शेष ४३ नेद तिर्यंचना, १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता, १०१ संज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्ता ए २०२, ९९ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ए सर्व मळी ३५१ नेद लाने ॥ ४० ॥ नजरे आवे तेमां २२५ नेद लाने. ते ७ नरक, ९९ जातिना देवता, १०१ गर्नज मनुष्य, ५ संज्ञी तिर्यंच, ५ असंज्ञी तिर्यंच, ३ विगलेन्द्रिय, ५ बादर एकेन्द्रिय ए सर्वना प्रजाप्ता एम २२५ नेद लाने ॥४१॥ नजरे न आवे तेमां ३३८ नेद लाने. ते ३३२ तो अप्रजाप्ता, ५ सूक्ष्म एकेन्द्रिय ने साधारण वनस्पति ए६ ना प्रजाप्ता ए सर्व मळी ३३८ नेद लाने ॥ ४२ ॥ गर्नजमां २१२ नेद लाने. ते २०२ संज्ञी मनुष्यना ने १० नेद संज्ञी तिर्यंचना, ए सर्व मळी २१२ नेद लाने ॥ ४३ ॥ अणगर्नजमां ३५१ नेद लाने. ते १४ नारकीना, १९८ नेद देवताना, ३८ नेद तिर्यंचना ते ४८ मांथी १० नेद संज्ञीना वर्ज्या १०१ समु-

च्छिम मनुष्य ए, सर्वे मळी ३५१ भेद लाभे ॥ ४४ ॥ त्रस नालीमांहि ५६३ भेद लाभे ॥४५॥
स्थावर नालीमां १५० भेद लाभे. ते १०१ समुच्छिम मनुष्य, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता
ए ११६ ने ३४ भेद तिर्यंचना ते २२ एकेन्द्रियमांथी एक बादर वायुकायनो प्रजाप्तो
वर्जिने २१ एकेन्द्रियना, ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, ५
असंज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ए ३४ तिर्यंचना ए १५० भेद लाभे. ॥ ४६ ॥ ज्ञान आत्मामां
२०३ भेद लाभे. ते सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वर्जिने १३ भेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यं-
चना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ए १० ने ५ असंज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने ३ विगलेन्द्रियना अ-
प्रजाप्ता ए १८ तिर्यंचना, ने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, ने ६० अकर्मभूमिना
अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ९० मनुष्यना ने १५ परमाधामी, ३ किलविषी ए १८ ना प्रजाप्ता
ने अप्रजाप्ता ए ३६ भेद वर्जिने शेष १६२ भेद देवताना ए सर्व मळी २०३ भेद लाभे
॥ ४७ ॥ चारित्र आत्मामां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता लाभे ॥ ४८ ॥ शेष ६ आत्मामांहि

४७ नेद तिर्यचना, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता २०, ए १७९ ...

॥ ५० ॥ स्त्री मरीने ५६१ नेदमा जाय ते ५६३ मांथी सातमी नरकनो अप्रजाप्तो ने प्रजाप्तो वर्जिने शेष ५६१ मां जाय ॥ ५१ ॥ पुरुष मरीने ५६३ नेदमांहि जाय ॥ ५२ ॥ नपुंसक मरीने ५६३ नेदमांहि जाय ॥ ५३ ॥ वेदनीय समुद्घातमां ५६३ नेद लाने ॥ ५४ ॥ कषाय समुद्घातमां ५६३ नेद लान्ने ॥ ५५ ॥ मारणातिक समुद्घातमां ३३१ नेद लान्ने. ते चव्यानी माफक जाणवुं ॥ ५६ ॥ वैक्रेय समुद्घातमां २१ए नेद लान्ने, ते वैक्रेय मिश्रयोगनी माफक जाणवुं ॥ ५७ ॥ तेजस समुद्घातमां १०५ नेद ते ७५ जातिना देवताना प्रजाप्ता ने १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यचना प्रजाप्ता ए १०५ नेद लान्ने ॥ ५७ ॥ आहारक समुद्घातमां १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता लान्ने ॥ ५ए ॥ केवल समुद्घातमां १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता लान्ने ॥ ६० ॥ आगली ३ पर्यायमां ५६३ नेद लान्ने ॥ ६१ ॥ श्वासोश्वास पर्यायमां ५५२ नेद लान्ने ते एकेन्द्रियना ११ अप्रजाप्ता वर्ज्या, शेष ५५२ नेद लान्ने ॥ ६२ ॥ नापा पर्यायमां ३२६ नेद लाने ते ७ नरकना ने ५ संज्ञी तिर्यचना अप्र-

र्छिम मनुष्य ए सर्वे मळी ३५१ जेद लाजे ॥ ४४ ॥ त्रस नाम्नीमांहि ५६३ जेद लाजे ॥४५॥ स्थावर नाम्नीमां १५० जेद लाजे. ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, १५ कर्मजूमिना अप्रजाप्ता ए ११६ ने ३४ जेद तिर्यंचना ते २२ एकेन्द्रियमांथी एक बादर वायुकायनो प्रजाप्तो वर्जिने २१ एकेन्द्रियना, ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, ५ असंज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ए ३४ तिर्यंचना ए १५० जेद लाजे. ॥ ४६ ॥ ज्ञान आत्मामां २७३ जेद लाजे. ते सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वर्जिने १३ जेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ए १० ने ५ असंज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता ए १७ तिर्यंचना, ने १५ कर्मजूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, ने ६० अकर्मजूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ९० मनुष्यना ने १५ परमाधामी, ३ किलत्रिषो ए १७ ना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता ए ३६ जेद वर्जिने शेष १६२ जेद देवताना ए सर्व मळी २७३ जेद लाजे ॥ ४७ ॥ चारित्र आत्मामां १५ कर्मजूमिना प्रजाप्ता लाजे ॥ ४८ ॥ शेष ६ आत्मामांहि ५६३ जेद लाजे. ॥ ४९ ॥ अप्रजाप्ता मरीने

४७ नेद तियचना, १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता २०, ५ १७९ भेदमांहि जाय ॥ ५० ॥ स्त्री मरीने ५६१ नेदमा जाय ते ५६३ मांथी सातमी नरकनो अप्रजाप्तो ने प्रजाप्तो वर्जिने शेष ५६१ मां जाय ॥ ५१ ॥ पुरुष मरीने ५६३ नेदमांहि जाय ॥ ५२ ॥ नपुंसक मरीने ५६३ नेदमाहि जाय ॥ ५३ ॥ वेदनीय समुद्घातमां ५६३ नेद लाने ॥ ५४ ॥ कषाय समुद्घातमां ५६३ नेद लाने ॥ ५५ ॥ मारणांतिक समुद्घातमां ३७१ नेद लाने. ते चव्यानी माफक जाणवुं ॥ ५६ ॥ वैक्रेय समुद्घातमां २१९ नेद लाने, ते वैक्रेय मिश्रयोगनी माफक जाणवुं ॥ ५७ ॥ तेजस समुद्घातमां १०५ नेद ते ७५ जातिना देवताना प्रजाप्ता ने १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए १०५ नेद लाने ॥ ५८ ॥ आहारक समुद्घातमां १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता लाने ॥ ५९ ॥ केवल समुद्घातमां १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता लाने ॥ ६० ॥ आगली ३ पर्यायमां ५६३ नेद लाने ॥ ६१ ॥ श्वासोश्वास पर्यायमां ५५२ नेद लाने ते एकेन्द्रियना ११ अप्रजाप्ता वर्ज्या, शेष ५५२ नेद लाने ॥ ६२ ॥ नाषा पर्यायमां ३२६ नेद लाने ते ७ नरकना ने ५ सज्ञी तिर्यंचना अप्र-

प्ता ने प्रजाप्ता १८, असंज्ञी तिर्यंचना ५ भेद ने ३ विगलेन्द्रियना ए ८ ना प्रजाप्ता ने संज्ञी मनुष्यना २०२ भेद ने ९९ जातिना देवताना प्रजाप्ता एम ३२६ भेद लाभे ॥ ६३ ॥ मनःपर्यायमां २१२ भेद लाभे. ते ७ नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंच ने १०१ संज्ञी मनुष्य, ९९ जातिना देवता, ए सर्वना प्रजाप्ता २१२ मां मनःपर्याय लाभे ॥ ६४ ॥ विभंग ज्ञानमां २२२ भेद लाभे ते ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० भेद वर्ज्या, बाकी १८८ भेद देवताना ने १४ भेद नारकीना, १५ कर्मभूमिना मनुष्यना प्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २२२ भेद लाभे ॥ ६५ ॥ अवधिज्ञानमां २१० भेद लाभे. ते १५ परमाधामी, ३ किलविषी ए १८ वर्जिने शेष ८१ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १६२ ने १३ नारकीना ते १४ मांथी सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वर्जिने १३ भेद ने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३० ने ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २१० भेद लाभे ॥६६॥ अवधिदर्शनमाहि २४७ भेद लाभे. तेमां १९८ भेद देवताना, १४ भेद नारकीना, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३० ने ५ संज्ञी

भेद लाभे ॥ ६७ ॥ पारतमा...

लाभे. ते ५६३ मांथी ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १० भेद वर्ज्यां, शेष ५५३ भेद लाभे ॥ ६ए ॥ सजतिमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता लाभे, ॥ ७० ॥ संजतासंजतिमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यचना प्रजाप्ता ए २० भेद लाभे ॥ ७१ ॥ असंजतिमां ५६३ भेद लाभे. ॥ ७२ ॥ पहेला गुणठाणामां ५५३ भेद लाभे. ते ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १० भेद वर्ज्यां, शेष ५५३ भेद लाभे॥ ७३ ॥ सास्वादान गुणठाणामां २१३ भेद लाभे. ते १३ भेद नारकीना, ते १४ मांथी ७ मी नरकनो अप्रजाप्तो वर्ज्यो ने १० भेद तिर्यचना, ३ विगलेन्द्रिय ने ५ असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय ए ७ ना अप्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रियना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० ने ७ पूर्वे कह्या ते ए १० ने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३० ने देवता एए जातिमांहिथी १५ परमाधामी, ३ किल्विषी, ५ अनुत्तर विमान ए २३ वर्जिने शेष ७६ जातिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १५२ भेद देवताना, ए सर्व मळीने २१३ भेद लाभे ॥ ७४ ॥ मिश्र गुणठाणामां एध भेद लाभे. ते

७ नारकीना प्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यचना प्रजाप्ता, १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता ए २७ नेद७ नेद देवताना ते एए नेदमांथी १५ परमाधामी, ३ किलविषी, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर वि-मान ए ३२ नेद वर्जिने शेष ६७ नेदना प्रजाप्ता ए सर्व मळी एध नेद लाने ॥ ७५ ॥ चोथे गुणठाणे २४५ नेद लाने. ते पूर्वे समकितमां २५३ नेद कह्या ठे, तेमांथी ५ असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय ने ३ विगलेन्द्रिय ए ८ नेद वर्जिने शेष २४५ नेद लाने ॥७६॥ पांचमे गुणठाणे २० नेद लाने. ते १५ कर्मनूमिना, ५ संज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय ए २० ना प्रजाप्ता लाने ॥ ७७ ॥ ठठे गुणठाणेथी चौदमा गुणठाणा सुधी १५ कर्मनूमिना मनुष्यना प्रजाप्ता लाने ॥ ७८ ॥ अजीवना ५६० नेद तेमा लोकमां ५५७ लाने. ते धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति-काय ए बेना देश अने आकाशास्तिकायनो स्कंध ए ३ नेद वर्ज्या, शेष ५५७ नेद लाने ॥ ७ए ॥ अलोकमां अजीवना ५६० नेद मांहिला ६ नेद लाने, ते आकाशास्तिकायना देश १, प्रदेश २, अने द्रव्यादि ४ नेद, ए ६ नेद लाने ॥ ८० ॥ धर्मास्तिकायना स्कंधमां अजीवना ११ नेद लाने. ते धर्मास्तिकायनो स्कंध १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो स्कंध

३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो देश ५, प्रदेश ६ ने अद्धा समयकाल ७ ने पुद्गलास्ति-
कायनो स्कंध ८, देश ९, प्रदेश १०, परमाणु पुद्गल ११, ए ११ भेद लाभे ॥ ८१ ॥ अ-
ढीद्वीप बहार अजीवना १० भेद लाभे ते पूर्वे ११ भेद कह्या तेमांथी काल वर्ज्यो ॥८२॥
धर्मास्तिकायना देशमा ११ भेद, ते धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो
देश ३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो देश ५, प्रदेश ६, काल ७, पुद्गलना ४ भेद ए ११
भेद लाभे. ॥ ८३ ॥ धर्मास्तिकायना प्रदेशमां ८ भेद लाभे ते धर्मास्तिकायनो प्रदेश १,
अधर्मास्तिकायनो प्रदेश २, आकाशास्तिकायनो प्रदेश ३, काल ४, पुद्गलना ४ भेद ए आठ
भेद लाभे ॥ ८४ ॥ अधर्मास्तिकायना स्कंधमां ११ भेद लाभे ते धर्मास्तिकायनी माफक
जाणवुं ॥ ८५ ॥ आकाशास्तिकायना स्कंधमां ११ भेद लाभे. ते धर्मास्तिकायनो स्कंध
१, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो स्कंध ३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो स्कंध ५, प्रदेश ६,
काल ७, पुद्गलना ४ भेद, सर्व मळी ११ भेद लाभे ॥ ८६ ॥ आकाशास्तिकायना २
भेद, लोकाकाश १, अलोकाकाश २. ते लोकाकाशना २ भेद, संपूर्ण १, अधुरो २. ते संपू-

र्गमा ११ भेद लाभे. ते धर्मास्तिकायनो देश १, अधर्मास्तिकायनो देश २, आकाशास्तिकायनो स्कध ३ ए ३ जतां वाकी ११ लाभे ॥ ८७ ॥ अधूरामां ११ भेद लाभे. ते धर्मास्तिकायनो स्कंध १, अधर्मास्तिकायनो स्कंध २, आकाशास्तिकायनो स्कंध ३, ए ३ जतां वाकी ११ भेद लाभे ॥ ८८ ॥ अलोकाकाशमां २ भेद लाभे, ते आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, ए २ लाभे ॥ ८९ ॥ आकाशास्तिकायना प्रदेशमां ८ भेद ते धर्मास्तिकायना प्रदेशनी माफक जाणवुं ॥९०॥

॥ इति जीवना ५६३ भेदनी चर्चा संपूर्ण ॥

महादंडक ॥

॥ अथ श्री जीवाजीवाभिगमादिसूत्रथी महादंडकना वोल लिख्यते ॥

॥ [illegible] ॥ १ ॥

नवण ६ गयागइ ७, संघयण ७ संठाणे [illegible] ॥

जोगु ११ वओग १२ सरीरं १३, गुणठाण १४ दिट्ठी १५ य पज्जत्ती १६ ॥

पाणे १७ नाण अनाणे १८, संजइ १९ माइण आहारे २० ॥ २ ॥

आहार २१ इच्छाहारे २२, कायठिइ २३ समुग्घाय २४ कुलकोडी २५ ॥

आउ २६ देव २७ जराय २८, परिग्गहय २९ संतरं ३० चेव ॥ ३ ॥

ए ३० द्वार ते २४ दंडक उपर उतारवा ते कहे छे. ते मध्ये प्रथम दंडकद्वार कहे छे. साते नरकनो दंडक १. तेनां नाम–घमा १, वंसा २, शिला ३, अंजना ४, रिठा ५, मघा ६, माघवइ ७. हवे तेना गोत्र कहे छे. रत्नप्रभा १, शर्करप्रभा २, वालुप्रभा ३, पंकप्रभा ४, धूमप्रभा ५, तमप्रभा ६, तमतमाप्रभा ७ ॥ १ ॥ दस दंडक भवनपतिना कहे छे. असुरकुमार १, नागकुमार २, सुवनकुमार ३, विज्जुकुमार ४, अग्निकुमार ५, द्वीपकुमार ६, उदधिकुमार ७, दिशाकुमार ८, पवनकुमार ९, स्तनितकुमार १० ॥ ११ ॥ पृथ्वीकाय १२, अपकाय १३, तेउकाय १४, वायुकाय १५, वनस्पतिकाय १६ ॥ सत्तरमो दंडक बे

इंद्रियनो ते कीमा, पोरा, अलसीयां, करमियां, सरमियां, जलो, ठीप, शंख प्रमुख ॥१७॥ तेइंद्रियनो १८ मो दंमक ते कीमी, कंथवा, जू, कीमा, मंकोमा, घीमेल, चांचम प्रमुख ॥ १८ ॥ चउरिंद्रियनो दंमक १९ मो ते जमरा, जमरी, माखी, मांस, टीम, वगा प्रमुख ॥ १९ ॥ तिर्यच पंचेन्द्रियनो दंमक २० मो. तेमां जलचरनां ५ जेद. मच्छ कच्छ गाहा मगर सुसमार प्रमुख. स्थलचरना ४ जेद–एगखुरा १, दोखुरा २, गंमीपया ३, सणहपया ४ ॥ खेचरना ४ जेद–चर्मपंखी १, रोमपंखी २, वितंतपंखी ३, समुगपंखी ४ ॥ उरपरना ४ जेद–सर्प १, अजगर २, महोरग ३, आसालीया ४ ॥ जुजपरना अनेक जेद ते घो उंदर खीसकोली प्रमुख ॥ २० ॥ मनुष्यनो दंमक २१ मो ॥ ते मनुष्यने उपजवानां ठाम. पंदर कर्मजूमि ते असि मसि कसि एहथी आजीविका करे, अने मोक्षमार्गने साधे ते ५ जरत, ५ एरवत, ५ महाविदेह ए १५ ॥१॥ अकर्मजुमि ते असि, मसि, कसि ए त्रण प्रकारनो व्यापार नथी अने १० प्रकारना कल्पवृक्षे करी जीवे ते ५ हेमवय, ५ एरणवय, ५ हरि-

ते जंबूद्वीप मध्ये हेमवत पर्वत अने शिषरी पर्वत थकी पूर्व अने पश्चिमनी दिशाए स-मुद्र मध्ये बे बे दाढा नीकळी छे, ते एकेकी दाढाए सात सात द्वीपा छे तेनुं मान. प्रथम ३०० जोजन गया पछी पहेलो द्वीपो छे. तिहांथकी ४०० जोजन गया पछी बीजो द्वीपो छे. तिहांथकी ५०० जोजन गया पछी त्रीजो द्वीपो छे. तिहांथकी ६०० जोजन गया पछी चोथो द्वीपो छे. तिहांथकी ७०० जोजन गया पछी पांचमो द्वीपो छे. तिहां थकी ८०० जोजन गया पछी छठ्ठो द्वीपो छे. तिहांथी ९०० जोजन गया पछी सातमो द्वीपो छे. ए रीते ८ दाढाए ५६ अंतरद्वीपा छे. सर्वे अढीद्वीप मध्ये जाणवा ॥ ३ ॥ हवे समुर्छिम मनुष्य उपजवानां ठाम कहे छे ॥ उच्चारेसुवा १, पासवणेसुवा २, खेलेसुवा ३, सघाणेसुवा ४, वंतेसुवा ५, पित्तेसुवा ६, सोणिएसुवा ७, पुएसुवा ८, सुक्केसुवा ९, सुक्क पोग्गल परिसाडीयेसुवा १०, विगयजीव कलेवरेसुवा ११, इत्थीपुरिससंजोगेसुवा १२, नगर निधम्मणेसुवा १३, सव्वेसु चेव असुइठाणेसुवा १४ ॥ ४ ॥ २१ ॥ २२ मो वाणव्यंतरनो दंडक तेना नाम–पिशाच १, भूत २, यक्ष ३, राक्षस ४, किंनर ५, किंपुरुष ६, महोरग ७, गांधर्व ८, आणपन्नी ९, पाणपन्नी १०, इसीवाइ ११, भुयवाइ १२, कंदीय १३, महाकंदीय १४, कोहंड

१५ पयगदेव १६ ॥ ए सोलनी काय व्यंतरनी जात अने एकेकीनी काये वे वे इंद्र जाणवा ॥२२॥ २३ मो ज्योतिषीनो दंमक ते चंद्र १, सूर्य २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, तारा ५, ए ५ चर अढी द्वीप मध्ये ठे, ने पांच अचर अढीद्वीपनी वाहीर ठे ॥ २३ ॥ २४ मो विमानीक देवतानो दंमक ॥ सुधर्म्म १, इशान २, सनत्कुमार ३, माहेंद्र ४, ब्रह्मलोक ५, लांतक ६, महासुक्र ७, सहस्रार ८, आणत ए, प्राणत १०, आरण ११, अच्चुय १२ ॥ हवे नव ग्रैवेयक कहे ठे ॥ नंद्दे १, सुनद्दे २, सुजाए ३, सुमाणसे ४, पियदंसणे ५, सुदंसणे ६, आमोहे ७, सुपमिवद्धे ८, जसोधरे ए ॥ हवे पाच अनुत्तर विमाननां नाम कहे ठे ॥ विजय १, विजयंत २, जयंत ३, अपराजित ४, सर्वार्थसिद्ध ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध उपरे ईसिप्पन्नारा पृथ्वी ते सिद्धिशिला तना वार नाम ठे ते कहे ठे ॥ इसीतिवा १, इसीप्पन्नारा तिवा २, तणुतिवा ३, तणुतणुतिवा ४, सिद्धितिवा ५, सिद्धालयतिवा ६, मुत्तीतिवा ७, मुत्तालयतिवा ८, लोयगेतिवा ए, लोगथुनियातिवा १०, लोगपमिवोहेतिवा ११, सव्वपाणनुयजीव सत्त सुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ २४ ॥

हवे पांचमुं लेश्याद्वार कहे छे ॥

गाथा—नाम१ वण्ण२ रस३ गंध४, फास५ परिणाम६ लक्खण७ सठाणठ ॥
ठिइए गइ१० चवण११ द्वारा, एगारस लेस्साणं णेया ॥ १ ॥

ए ११ द्वार छ लेश्या उपर उतारवां तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे. कृष्णलेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५ अने शुक्ल लेश्या ६ ॥१॥ बीजुं लेश्याना वर्णनु द्वार कहे छे. भाव लेश्यामां एके वर्ण नथी. द्रव्य लेश्यामां कृष्णादि पांचे वर्ण होय तेमा कृष्ण लेश्यानो वर्ण (रंग)—जेवो पाणीसहित मेघ काळो, जेवा पाडाना शींगडां काळां, जेवां अरीठाना बीज काळां, जेवुं गाडानुं खजन, आंखनी कीकी ए करतां अनन्तगुणो काळो ॥ १ ॥ नील लेश्यानो वर्ण—जेवुं अशोक वृक्ष नीलुं, जेवी चास पक्षीनी पांख, जेवु वैडुर्य रत्न एथी अनन्तगुणो नील लेश्यानो नीलो वर्ण छे ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानो वर्ण जेवा अलशीनां फूल, जेवी कोयलनी पांख, जेवी पारेवानी डोक कांइक राती कांइक काळी ए करतां अनन्तगुणो अधिक कापोत लेश्यानो

वर्ण जाणवो ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानो वर्ण, जेवो उगतो सूर्य रातो, जेवी सुडानी चांच, जेवी दीवानी शीखा ए करता अनन्तगुणो अधिक रातो तेजुलेश्यानो वर्ण ॥ ४ ॥ पद्म लेश्यानो वर्ण–जेवी हरताल, जेवी हळदर, जेवां शणना फूल, ए करतां अनन्तगुणो अधिक पीळो पद्म लेश्यानो वर्ण ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानो वर्ण–जेवो शंख, जेवुं अंक रत्न, जेवुं मोगरानुं फूल, जेवुं गायनुं दूध, जेवो रूपानो हार ए करतां अनन्तगुणो अधिक श्वेत शुक्ल लेश्यानो वर्ण ॥ ६ ॥ २ ॥ त्रीजुं लेश्याना रसनुं द्वार कहे छे. कृष्ण लेश्यानो रस–जेवुं कडवुं तुंबडुं, जेवो कडवो लीवडानो रस, जेवो रोहीणी नामे वनस्पतिनो रस, एथी अनन्तगुणो अधिक कडवो रस कृष्ण लेश्यानो जाणवो ॥ १ ॥ नील लेश्यानो रस–जेवो सुंठनो तीखो रस, जेवो पीपर अने मरीनो रस, एथी अनंतगुणो अधिक तीखो रस नील लेश्यानो जाणवो ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानो रस–जेवो कुणी काची केरीनो रस, जेवो काचां कोठनो रस, एथी अनन्तगुणो अधिक खाटो रस कापोतनो जाणवो ॥ ३ ॥

वारुणीनो रस, जेवो आसव (सरका)नो रस, जेवो मधुनो रस एथी अनन्तगुणो मधुरो रस पद्म लेश्यानो ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानो रस—जेवो खजुरनो रस. जेवो द्राक्षनो रस, जेवो दूधनो रस, जेवो साकरनो रस एथी अनन्तगुणो अधिक मीठो रस शुक्ल लेश्यानो जाणवो ॥ ६ ॥ ३ ॥ चोथुं लेश्याना गंधनुं द्वार कहे छे. जेवो गायना मडानो, कुतराना मडानो, सर्पना मडानो एथी अनन्तगुणो अधिक अप्रशस्त, प्रथम त्रण माठी लेश्यानो गंध जाणवो ॥ १ ॥ कपुर, केवडो प्रमुख सुगंधी पदार्थ वाटतां (घुंटतां) जेवी सु- गंध नीकळे ते करतां अनन्तगुणो प्रशस्त त्रण सारी लेश्यानो गंध जाणवा ॥ ५ ॥ ४ ॥ पांचमुं लेश्याना स्पर्शनुं द्वार कहे छे—जेवी करवतनी धार, जेवो गायनी जीभ, जेवुं मुंजनुं तथा वांसनुं पान, ते करतां अनन्तगुणो माठो अप्रसस्त लेश्यानो स्पर्श जाणवो ॥ १ ॥ जेवी बूर नामे वनस्पति, जेवुं माखण, जेवां सरसवनां फूल, जेवुं मखमल ए करतां अनन्तगुणो अधिक प्रसस्त लेश्यानो स्पर्श सुंवाळो जाणवो ॥ २ ॥ ५ ॥ छट्ठुं लेश्याना

वर्ण जाणवो ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानो वर्ण, जेवो उगतो सूर्य रातो, जेवी सुडानी चांच, जेवी दीवानी शीखा ए करता अनन्तगुणो अधिक रातो तेजुलेश्यानो वर्ण ॥ ४ ॥ पद्म लेश्यानो वर्ण–जेवी हरताल, जेवी हळदर, जेवां शणनां फूल, ए करतां अनन्तगुणो अधिक पीळो पद्म लेश्यानो वर्ण ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानो वर्ण–जेवो शंख, जेवुं अंक रत्न, जेवुं मोगरानु फूल, जेवुं गायनुं दूध, जेवो रूपानो हार ए करतां अनन्तगुणो अधिक श्वेत शुक्ल लेश्यानो वर्ण ॥ ६ ॥ २ ॥ त्रीजुं लेश्याना रसनु द्वार कहे छे. कृष्ण लेश्यानो रस–जेवुं कडवु तुंबडुं, जेवो कडवो लींबडानो रस, जेवो रोहीणी नामे वनस्पतिनो रस, एथी अनन्तगुणो अधिक कडवो रस कृष्ण लेश्यानो जाणवो ॥ १ ॥ नील लेश्यानो रस–जेवो सुंठनो तीखो रस, जेवो पींपर अने मरीनो रस, एथी अनंतगुणो अधिक तीखो रस नील लेश्यानो जाणवो ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानो रस–जेवो कुणी काची केरीनो रस, जेवा काचां कोठनो रस, एथी अनन्तगुणो अधिक खाटो रस कापोतनो जाणवो ॥ ३ ॥

काईक खाटो ने काईक मीठो रस ...
वारुणीनो रस, जेवो आसव (सरका)नो रस, जेवो मधुनो रस एथी अनन्तगुणो मधुरो रस पद्म लेश्यानो ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानो रस—जेवो खजुरनो रस. जेवो द्राक्षनो रस, जेवो दूधनो रस, जेवो साकरनो रस एथी अनन्तगुणो अधिक मीठो रस शुक्ल लेश्यानो जाणवो ॥ ६ ॥ ३ ॥ चोथुं लेश्याना गंधनुं द्वार कहे छे. जेवो गायना मडानो, कुतराना मडानो, सर्पना मडानो एथी अनन्तगुणो अधिक अप्रशस्त, प्रथम त्रण माठी लेश्यानो गंध जाणवो ॥ १ ॥ कपुर, केवडो प्रमुख सुगंधी पदार्थ वाटता (घुटतां) जेवी सुगंध नीकळे ते करतां अनन्तगुणो प्रशस्त त्रण सारी लेश्यानो गंध जाणवो ॥ ५ ॥ ४ ॥ पांचमुं लेश्याना स्पर्शनुं द्वार कहे छे—जेवी करवतनी धार, जेवो गायनी जीभ, जेवुं मुंजनुं तथा वासनुं पान, ते करतां अनन्तगुणो माठो अप्रसस्त लेश्यानो स्पर्श जाणवो ॥१॥ जेवी बूर नामे वनस्पति, जेवुं माखण, जेवां सरसवनां फूल, जेवुं मखमल ए करतां अनन्तगुणो अधिक प्रसस्त लेश्यानो स्पर्श सुंवाळो जाणवो ॥ २ ॥ ५ ॥ छट्ठु लेश्याना

परिणामनुं द्वार कहे छे. लेश्या त्रण प्रकारे परिणमे—जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट; तथा नव प्रकारे परिणमे ते उपर त्रण कही तेना अकेकना त्रण त्रण भेद थाय; जेमके, जघन्यनो जघन्य, जघन्यनो मध्यम, जघन्यनो उत्कृष्ट ए रीते दरेकना त्रण त्रण भेद करतां नव भेद थाय. एम नवना सत्तावीस भेद थाय. एम सत्तावीसना एकाशी भेद थाय. एम एकाशीना बसे ने तेतालीस भेद थाय. एटले भेदे लेश्या परिणमे ॥ ६ ॥ सातमुं लेश्यानां लक्षणनुं द्वार कहे छे. तेमां प्रथम कृष्णलेश्यानां लक्षण कहे छे—पांच आश्रवनो सेवनार, त्रण अगुप्तिवंत, छकाय जीवनो हिंसक, आरंभनो तिव्र परिणामी तथा द्वेषी, पाप करवामां साहसीक, निठोर परिणामी, जीवहिंसा शुग रहित करनार, अजितेन्द्रिय एवा जोगे करी सहित होय तेने कृष्ण लेश्यानुं लक्षण जाणवुं ॥१॥ नील लेश्याना लक्षण कहे छे. इर्ष्यावंत, अमर्षवंत, तपरहित, मायावी पाप करतां लाजे नहीं, गृधी, धूतारो, प्रमादी, रसनो लोलुपी, मायानो गवेषी, आरंभनो अत्यागी, पापने

वांको वाळो, वांको काम करनार,
अने पुंठे जुदो, मिथ्या—खोटां वचननो बोलनार, चोरी मत्सरनो करनार, ए कापोत ले-
श्याना लक्षण जाणवां ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानां लक्षण कहे छे—मर्यादावंत, मायारहित, चपळ-
पणाथी रहित, कुतूहळ रहित, विनयवंत, दमितेंद्रिय, शुभ जोगवंत, उपध्यान तप सहित,
दृढधर्मि, प्रियधर्मि, पाप थकी वीहे, ए तेजुलेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ ४ ॥ पद्म लेश्यानां
लक्षण कहे छे—क्रोध, मान, माया, लोभ पातळा कर्या छे, प्रशान्त चित्त, आत्मानो दमण-
हार, योगउपध्यान सहित होय, थोडा वोलो, उपशान्त, जितेंद्रिय, ए पद्मलेश्यानां
लक्षण जाणवां ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानां लक्षण कहे छे—आर्त्तध्यान रौद्रध्यानथी सर्वथा रहित,
धर्मध्यान शुक्लध्यानथी सहित, दश प्रकारनी चित्त समाधीए करी सहित, आत्मानो दम-
णहार, इत्यादिक शुक्ल लेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ ६ ॥ हवे आठमुं स्थानद्वार कहे छे—
स्थान एटले उत्कर्षे के अपकर्षे करी लेश्यानुं परस्पर तारतम्य. असंख्यात उत्सर्पिणी अव-
सर्पिणीना समय जेटलां के असंख्यात लोकना आकाश प्रदेश जेटलां थाय तेटलां लेश्यानां

छे. त्या अकेका सागरना ११ भाग करीए, तेमांना बबे भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० सागर १, उ० सागर १ भाग २ ॥ बीजे पाथडे ज० सागर १ भाग २, उ० सागर १ भाग ४ ॥ त्रीजे ज० सागर १ भाग ४, उ० सागर १ भाग ६ ॥ चोथे पाथडे ज० १ सागर ने ६ भाग, उ० १ सागर ने ८ भाग ॥ पांचमे ज० सागर १ भाग ८, उ० १ सागर भाग १० ॥ छट्ठे ज० १ सागर भाग १०, उ० २ सागर १ भाग ॥ सातमे ज० २ सागर १ भाग, उ० २ सागर ३ भाग ॥ आठमे ज० २ सागर ३ भाग, उ० २ सागर ५ भाग ॥ नवमे ज० २ सागर ५ भाग, उ० २ सागर ७ भाग ॥ दशमे ज० २ सागर ७ भाग, उ० २ सागर ए भाग ॥ अग्यारमे ज० २ सागर ए भाग, उ० ३ सागर ॥ २॥ त्रीजी नरके पाथडा ए त्यां एकेका सागरना ए भाग करीए ते प्रतर प्रतरे ४ भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० ३ सागर, उ० ३ सागर ४ भाग ॥ बीजे ज० ३ सागर ४ भाग, उ० ३ सागर ८ भाग ॥ त्रीजे ज० ३ सागर ८ भाग, उ० ४ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज० ४ सागर ३ भाग, उ० ४ सागर ७ भाग ॥ पांचमे ज० ४ सागर ७ भाग, उ० ५ सागर २ भाग ॥ छट्ठे ज० ५ सागर २

[illegible] ज० ६ सागर १ भाग ॥
भाग, उ० ५ सागर ६ भाग ॥ सातमे ज० ५ सागर ६ भाग, उ० ६ सागर १ भाग ॥
आठमे ज० ६ सागर १ भाग, उ० ६ सागर ५ भाग ॥ नवमे ज० ६ सागर ५ भाग, उ०
७ सागर ॥ ३ ॥ चोथी नरके पाथडा ७ ॥ त्यां एकेका सागरना ७ भाग करीए तेमा त्रण
त्रण भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० ७ सागर, उ० ७ सागर ३ भाग ॥ बीजे ज० ७
सागर ३ भाग, उ० ७ सागर ६ भाग ॥ त्रीजे ज० ७ सागर ६ भाग, उ० ८ सागर २ भाग ॥
चोथे ज० ८ सागर २ भाग, उ० ८ सागर ५ भाग ॥ पांचमे ज० ८ सागर ५ भाग, उ० ९
सागर १ भाग ॥ छठे ज० ९ सागर १ भाग, उ० ९ सागर ४ भाग ॥ सातमे ज० ९
सागर ४ भाग, उ० १० सागर ॥ ४ ॥ पांचमी नरके पाथडा ५ ॥ त्या एकेका सागरना
५ भाग करीए तेमां १ सागरने २ भाग प्रतरे प्रतरे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० १०
सागर, उ० ११ सागर २ भाग ॥ बीजे ज० ११ सागर ने २ भाग, उ० १२ सागर ४ भाग ॥
त्रीजे ज० १२ सागर ४ भाग, उ० १४ सागर १ भाग ॥ चोथे ज० १४ सागर १ भाग, उ०
१५ सागर ३ भाग ॥ पांचमे ज० १५ सागर ३ भाग, उ० १७ सागर ॥ ५ ॥ छठी नरके

पाथडा ३ त्यां एकेका सागरना ३ जाग करीए तेमां २ जाग १ सागर प्रतरे प्रतरे वधारीए॥ पहेले-प्रतरे ज० १७ सागर, उ० १८ सागर २ जाग ॥ बीजे ज० १८ सागर २ जाग, उ० २० सागर १ जाग ॥ त्रीजे ज० २० सागर १ जाग, उ० २२ सागर ॥ ६ ॥ सातमी नरके १ पाथडो छे. त्यां ५ नरकावासा छे. तेनां नाम—काल ॥ १ ॥ महाकाल ॥ २ ॥ रौद्र ॥ ३ ॥ महारौद्र ॥ ४ ॥ ए चार नरकावासाए ज० २२ सागर, उ० ३३ सागर ॥ अपइठाण पाचमा नरकावासाए ३३ सागर जघन्योत्कृष्ट ॥ हवे जवनपतिनी स्थिति कहे छे— तेमा दक्षिण दिशाना जवनपतिनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० १ सागरनी ॥ तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० साडा त्रण पल्यनी. तेना नवनीकायना देवतानी स्थिति ज० १० हजार वर्षनी, उ० दोढ पल्यनी. तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० पोणा पल्यनी. उत्तर दिशाना जवनपतिनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० १ सागर झाझेरी. तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० साडाचार पल्यनी ॥ नवनीकायनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० बे पल्य देशे उणी. तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी उ० १ पल्य देशे उणी ॥ अथ १ ए

पृथ्वीनी स्थिति सघळोनी ज० अंतमुहूर्त्तनी ॥ हवे उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे–सन्हानी उ० हजार वर्षनी ॥ सुद्धानी उ० १२ हजार वर्षनी ॥ वालुयानी उ० १४ हजार वर्षनी ॥ मणोशिलानी उ० १६ हजार वर्षनी ॥ शर्करानी उ० १८ हजार वर्षनी ॥ खरपृथ्वीनी उ० २२ हजार वर्षनी ॥ अपनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७ हजार वर्षनी ॥ तेउनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनो, उ० ३ अहोरात्रिनी ॥ वायुनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ हजार वर्षनो ॥ वनस्पतिनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० हजार वर्षनी ॥ सूक्ष्म ५ स्थावरनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० तेटली ॥ बेइन्द्रियनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १२ वर्षनी ॥ तेइन्द्रियनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ४९ दिवसनी ॥ चउरिन्द्रियनी १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ६ मासनो ॥ हवे तिर्यंच पंचेन्द्रियनी स्थिति कहे छे–जलचर गर्भज समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोडनी॥ स्थलचर गर्भजनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ पल्योपमनी ॥ समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ८४ हजार वर्षनी ॥ खेचर गर्भजनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० पल्योपमना असंख्यातमा भागनी ॥ समुर्छमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७२ हजार वर्षनी ॥ उरपर गर्भजनो

ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोडनी. समुर्छिमनो ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ५३ हजार वर्षनो ॥ भुजपर गर्भजनो ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोडीनी. समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ४२ हजार वर्षनी ॥ ए तिर्यंच पंचेंद्रियनी स्थिति कही ॥ हवे मनुष्यनी स्थिति कहे छे—जे असंख्याता आयुष्यना मनुष्य छे तेनी ज० पल्योपमना असंख्यातमा भागनी ॥ जे मनुष्य संख्याता वर्षना आयुष्यना छे तेनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ए समस्तनी जघन्य स्थिति कही ॥ हवे उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे—देवकुरु उत्तरकुरुना मनुष्यनी स्थिति ३ पल्योपमनी ॥ हरिवास रम्यकवासे २ पल्यनी ॥ हेमवंत एरणवंते १ पल्यनी ॥ छप्पन अंतरद्वीपे पल्योपमना असंख्यातमा भागनी ॥ महाविदेहे १ पूर्वक्रोडनी ॥ भरत ऐरवते आराने मेळे आयुष्य तथा आरानुं मानादि जाणवुं ॥ प्रथम सुसमसुसम आरो ४ क्रोडाक्रोडी सागरोपमनो ॥ तेना मनुष्यनुं ३ पल्यनुं आयुष्य. अपत्यप्रतिपालणा ४९ दिवस ॥ बीजो सुसम आरो ३ क्रोडा-

त्रीजा सुसम दुसम आरे

पल्यप्रतिपालणा ७९ दिवस ॥ उतरते आरे पूर्व क्रोडीनुं ॥ ते आरामांहि ८४ लाख पूर्व ३ वर्ष ८ मास शेष बाकी होय, त्यारे प्रथम तीर्थंकर उपजे ॥ त्रण वर्ष साडा आठ मास शेष बाकी होय, त्यारे ८४ लाख पूर्वनुं आयुष्य पाळीने मोक्ष जाय ॥ पांच कल्याणीक होय ॥ दुसम सुसम चोथो आरो १ क्रोडाक्रोडी सागरमांहि ४२ हजार वर्ष ओछां. तेने धुरे आयुष्य पूर्व क्रोडीनुं ॥ उतरते १०० वर्ष झाझेरानुं ॥ ते आरामां २३ तीर्थंकर होय, तेनुं आयुष्य कहे छे ॥ बीजा तीर्थंकरनुं ७२ लाख पूर्वनुं आयुष्य ॥ त्रीजानुं ६० लाख पूर्वनुं ॥ चोथानुं ५० लाख पूर्वनुं ॥ पांचमानुं ४० लाख पूर्वनुं ॥ छठानुं ३० लाख पूर्वनु ॥ सातमानु २० लाख पूर्वनुं ॥ आठमानुं १० लाख पूर्वनुं ॥ नवमानुं २ लाख पूर्वनुं ॥ दशमानुं १ लाख पूर्वनुं ॥ अग्यारमानुं ८४ लाख वर्षनुं ॥ बारमानुं ७२ लाख वर्षनुं ॥ तेरमानुं ६० लाख वर्षनुं ॥ चौदमानुं ५० लाख वर्षनुं ॥ ॥ पंदरमानुं १० लाख वर्षनुं ॥ सोलमानुं १ लाख वर्षनुं ॥ सत्तरमानुं ९५ हजार वर्षनुं ॥ अढारमानुं ८४ हजार वर्षनुं ॥ ओगणीसमानुं ५५ हजार

वर्षनुं ॥ वीसमानुं ३० हजार वर्षनुं ॥ एकवीसमानुं १० हजार वर्षनुं ॥ वावीसमानुं एक हजार वर्षनुं ॥ त्रेवीसमानुं १०० वर्षनुं ॥ चोवीसमानुं ७२ वर्षनुं आयुष्य जाणवुं ॥ ए चोथा आराना ७५ वर्ष ८॥ मास शेष थाकता होय त्यारे चरम तीर्थंकर उपजे ॥ ३ वर्ष ८॥ मास शेष थाकता होय त्यारे मोक्ष जाय ॥ पांच कल्याणीक होय ॥ पांचमो दुसम आरो २१ हजार वर्षनो ॥ धूरे आयुष्य १०० वर्ष झाझेरानुं. उतरतां २० वर्षनुं ॥ छठो दुसम दुसम आरो २१ हजार वर्षनो ॥ धुरे आयुष्य २० वर्षनु, उतरतां १६ वर्षनुं ॥ समुर्छिम मनुष्यनुं आयुष्य जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनुं जाणवुं ॥ व्यंतरनी स्थिति जघन्य १० हजार वर्षनी, उ० १ पल्यनी. तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० अर्द्ध पल्यनी ॥ ज्योतिषीनी ज० पल्यना आठमा भागनी, उ० १ पल्य झाझेरी ॥ ए समुच्चय आयुष्य कह्युं ॥ हवे जुदो जुदो विवरो कहे छे—चंद्रमानुं आयुष्य ज० पा पल्यनुं, उ० १ पल्य ने लाख वर्षनुं ॥ सूर्यनुं आयुष्य [illegible] १ हजार वर्षनुं ॥ ग्रहनुं ज० पा पल्यनुं, उ०

ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्धपल्य ने ५० हजार वर्षनुं ॥ सूर्यनी देवीनुं ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्ध पल्य ने ५०० वर्षनुं ॥ ग्रहनी देवीनुं ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्ध पल्यनुं ॥ नक्षत्रनी देवीनु ज० पल्यनो आठमो भाग, उ० पा पल्यनु ॥ तारानी देवीनुं ज० पल्यनो आठमो भाग, उ० पल्यनो आठमो भाग झाझेरुं ॥ हवे वैमानिकनी स्थिति कहे छे–जघन्य १ पल्योपम, उत्० ३३ सागरनी, ए समुच्चय स्थिति जाणवी ॥ हवे तेनो जुदो विवरो कहे छे–प्रथम देवलोके ज० १ पल्यनुं, उत्० २ सागरनुं ॥ तेनी देवीनुं ज० १ पल्योपमनुं उ० ७ पल्य ते परिग्रहीतनुं तथा अपरिग्रहीतनुं ज० १ पल्यनुं, उत्० ५० पल्यनुं ॥ बीजे देवलोके ज० १ पल्य झाझेरुं, उत्० २ सागर झाझेरुं ॥ तेनी देवीनुं ज० १ पल्य झाझेरुं उत्० ९ पल्य ते परिग्रहीतनुं अने अपरिग्रहीतनुं ज० १ पल्य झाझेरुं, उत्० ५५ पल्यनुं ॥ त्रीजे देवलोके ज० २ सागरनुं, उत्० ७ सागरनुं ॥ चोथे देवलोके ज० २ सागर झाझेरुं, उत्० ७ सागर झाझेरु ॥ पांचमे देवलोके ज० ७ सागरनुं, उत्० १० सागरनु ॥ छट्ठे देवलोके

ज० १० सागरनुं, उत्० १४ सागरनुं ॥ सातमे देवलोके ज० १४ सागरनुं, उत्० १७ साग-रनुं ॥ आठमे देवलोके ज० १७ सागरनु, उत्० १८ सागरनुं ॥ नवमे देवलोके ज० १८ सागरनुं, उत्० १९ सागरनुं ॥ दशमे देवलोके ज० १९ सागरनु, उत्० २० सागरनुं ॥ अग्या-रमे देवलोके ज० २० सागरनुं, उत्० २१ सागरनुं ॥ बारमे देवलोके ज० २१ सागरनुं, उत्० २२ सागरनु ॥ नव ग्रैवेयके पहेली त्रिके ज० २२ सागरनुं उत् २३ सागरनुं, ॥ एमज एकेक सागर एकेक ग्रैवेयके वधारता जवुं ॥ जावत् नवमी ग्रैवेयके ज० ३० सागरनुं, उत्० ३१ सागरनु ॥ चार अनुत्तर विमाने ज० ३१ सागरनुं, उत्० ३३ सागरनुं ॥ सर्वार्थसिद्धे ३३ सागर जघन्योतकृष्ट ॥ हवे प्रतरनी स्थिति कहे छे–पहेला बीजा देवलोके प्रतर १३ छे, त्यां एकेका सागरना १३ भाग करीए तेमांना बबे भाग वधारता जइए ॥ पहेले प्रतरे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने २ भाग ॥ बीजे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने ४ भाग ॥ त्रीजे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने ६ भाग ॥ चोथे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्यने ८ भाग ॥ पां-

१ पल्य, उत्० १ सागर १ भाग ॥
सातमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ५ भाग ॥ दशमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ६ भाग ॥
नवमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ९ भाग ॥ बारमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ११
अग्यारमे ज० १ पल्य, उत्० २ सागर ॥ त्रीजे चोथे देवलोके प्रतर १२ छे. त्यां एकेका
भाग ॥ तेरमे ज० १ पल्य, उत्० २ सागर ॥ त्रीजे चोथे देवलोके प्रतर १२ छे. त्यां एकेका
सागरना १२ भाग करीए, तेमांना ५ भाग वधारता जइए ॥ पहेले प्रतरे ज० २ सागर,
उत्० २ सागर ने ५ भाग ॥ बीजे ज० २ सागर, उत्० २ सागर १० भाग ॥ त्रीजे ज०
२ सागर, उत्० ३ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज० २ सागर, उत्० ३ सागर ८ भाग ॥ पांचमे
ज० २ सागर, उत्० ४ सागर १ भाग ॥ छठे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर ६ भाग ॥
सातमे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर ११ भाग ॥ आठमे ज० २ सागर, उत्० ५ सागर ४
भाग ॥ नवमे ज० २ सागर, उत्० ५ सागर ९ भाग ॥ दशमे ज० २ सागर, उत्० ६ सागर
२ भाग ॥ अग्यारमे ज० २ सागर, उत्० ६ सागर ७ भाग ॥ बारमे ज० २ सागर, उत्० ७
सागर ॥ ब्रह्मलोक देवलोके प्रतर ६ छे. त्यां एकेका सागरना ६ भाग करीए, तेमांना ३

नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० ७ सागर, उत्० ७ सागर ३ नाग ॥ बीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर ॥ त्रीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर ३ नाग ॥ चोथे ज० ७ सागर, उत्० ए सागर ॥ पांचमे ज० ७ सागर, उत्० ए सागर ३ नाग ॥ ठठे ज० ७ सागर, उत् १० सागर ॥ लांतक देवलोके प्रतर ५ ठे. त्यां एकेका सागरना ५ नाग करीए, तेमांना ४ नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १० सागर, उत्० १० सागर ४ नाग ॥ बीजे ज० १० सागर. उत्० ११ सागर ३ नाग ॥ त्रीजे ज० १० सागर, उत्० १२ सागर २ नाग ॥ चोथे ज० १० सागर, उत्० १३ सागर १ नाग ॥ पांचमे ज० १० सागर, उत्० १४ सागर ॥ महाशुक्र देवलोके प्रतर ४ ठे ॥ त्या एकेका सागरना ४ नाग करीए, तेमाना ३ नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १४ सागर, उत्० १४ सागर ३ नाग ॥ बीजे ज० १४ सागर, उत्० १५ सागर २ नाग ॥ त्रीजे ज० १४ सागर, उत्० १६ सागर १ नाग ॥ चोथे ज० १४ सागर, उत्० १७ सागर ॥ सहस्रार देवलोके प्रतर ४ ठे ॥ त्यां एकेका सागरना ४ नाग करीए. तेमानो १

उत्० १७ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० १७ सागर, उत्० १८ सागर ॥ आणत देवलोके प्रतर ४ ठे. त्यां एकेक सागरना ४ जाग करीए, तेमानो १ जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर १ जाग ॥ वीजे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० १८ सागर, उत्० १९ सागर ॥ प्राणत देवलोके प्रतर ४ ठे. त्यां एक सागरना ४ जाग करीए तेमांना एकेको जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर १ जाग ॥ वीजे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० १९ सागर, उत्० २० सागर ॥ आरण देवलोके प्रतर ४ ठे. त्या एक सागरना ४ जाग करीए, तेमांनो एकेको जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० २० सागर, उत्० २० सागर १ जाग ॥ वीजे ज० २० सागर, उत्० २० सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० २० मागर, उत्० २० सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० २० सागर, उत्० २१ सागर ॥ अच्युत देवलोके प्रतर ४ ठे. त्यां एकेका सागरना ४ जाग करीए, तेमांनो एकेको जाग

धारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर १ जाग ॥ बीजे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० २१ सागर, उत्० २२ सागर ॥ ते उपर नव नव ग्रैवेयके एकेक सागर वधारीए ॥ त्यां प्रतर नथी ॥ हवे देवीनो विचार कहे ठे–सौधर्म देवलोके अपरिग्रहित देवीनां ६ लाख विमान ठे ॥ तेमां जेनुं १० पल्यनुं आयुष्य ठे ते सनत्कुमार इंद्रने जोग आवे ॥ २० पल्यनी ब्रह्मलोक देवलोकना देवताने जोग आवे ॥ ३० पल्यनी महाशुक्रना देवताने जोग आवे ॥ ४० पल्यनी आणतना देवताने जोग आवे ॥ ५० पल्यनी आरणना देवताने जोग आवे ॥ ईशान देवलोके ४ लाख विमान ठे ॥ तेनुं एक पल्य जाजेरानुं आयुष्य ठे. ते ईशानना देवताने जोग आवे ॥ १५ पल्यनी देवी माहेंद्रना देवताने जोग आवे ॥ २५ पल्यनी देवी लांतकना देवताने जोग आवे ॥ ३५ पल्यनी देवी सहस्रारना देवताने जोग आवे ॥ ४५ पल्यनी देवी प्राणतना देवताने जोग आवे ॥ ५५ पल्यनी देवी अच्युतना देवताने जोग आवे ॥ पहेले बीजे देवलोके जोग मनुष्यनी रीते ॥ त्रीजे चोथे [illegible]

छठे स्पर्शभोग ॥ सातमे आठमे रूपभोग ॥ नवमे दशमे शब्दभोग ॥ अग्यारमे बारमे नजर मेळानो भोग ॥ ते उपरांत अल्प विकार, असंख्य सुख छे ॥

इति त्रीजुं स्थितिद्वार संपूर्ण ॥ ३ ॥

हवे चोथुं अवगाहना द्वार कहे छे ॥

सर्व जीवनी अवगाहना जघन्य आंगुलना असंख्यातमा भागनी जाणवी ॥ उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे—पहेली नरके पोणा आठ धनुष्य ने ६ आंगुल ॥ बीजीए १५॥ धनुष्य १२ आगुल ॥ त्रीजीए ३१॥ धनुष्य ॥ चोथीए अवगाहना ६२॥ धनुष्य ॥ पांचमीए १२५ मनुष्य ॥ छठीए २५० धनुष्य ॥ सातमीए ५०० धनुष्यनी काया जाणवी ॥ हवे प्रतर प्रतरनी जुदी अवगाहना कहे छे—पहेली नरके १३ प्रतर छे. तेमां प्रथम पाथडे ३ हाथनी काया. ते उपर २ हाथ ८॥ आंगुल वधारीए ॥ बीजे पाथडे १ धनुष्य १ हाथ ८॥ आगुल ॥ त्रीजे १ धनुष्य. ३ हाथ १७॥ आंगुल ॥ चोथे २ धनुष्य

२ हाथ १॥ आंगुल ॥ पांचमे ३ धनुष्य १० आंगुल ॥ छठे ३ धनुष्य २ हाथ १८॥ आंगुल ॥ सातमे ४ धनुष्य १ हाथ ३ आंगुल ॥ आठमे ४ धनुष्य ३ हाथ ११॥ आंगुल ॥ नवमे ५ धनुष्य १ हाथ २० आंगुल ॥ दशमे ६ धनुष्य ४॥ आंगुल ॥ अग्यारमे ६ धनुष्य २ हाथ १३ आंगुल ॥ बारमे ७ धनुष्य २१॥ आंगुल ॥ तेरमे ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल ॥ बीजी नरके पाथडा ११ छे ॥ त्यां ३ हाथ ३ आंगुल पाथडे पाथडे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल ॥ बीजे ८ धनुष्य २ हाथ ९ आंगुल ॥ त्रीजे ९ धनुष्य १ हाथ १२ आंगुल ॥ चोथे १० धनुष्य १५ आंगुल ॥ पांचमे १० धनुष्य ३ हाथ १८ आंगुल ॥ छठे ११ धनुष्य २ हाथ २१ आंगुल ॥ सातमे १२ धनुष्य २ हाथ ॥ आठमे १३ धनुष्य १ हाथ ३ आंगुल ॥ नवमे १४ धनुष्य ६ आंगुल ॥ दशमे १४ धनुष्य ३ हाथ ९ आंगुल ॥ अग्यारमे १५ धनुष्य २ हाथ १२ आंगुल ॥ त्रीजी नरके पाथडा ९ छे ॥ त्यां ७ हाथ, १९॥ आंगुल पाथडे पाथडे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे १५ धनुष्य २ हाथ १२ आंगुल ॥ बीजे १७ धनुष्य २ हाथ ७॥ आंगुल ॥ त्रीजे १९ धनुष्य २ हाथ ३ आंगुल ॥ चोथे

२१ धनुष्य १ हाथ २२॥ आंगुल ॥ पांचमे २३ धनुष्य १ हाथ १ठ आंगुल ॥ ठट्ठे २५ धनुष्य १ हाथ १३॥ आंगुल ॥ सातमे २७ धनुष्य १ हाथ ए आंगुल ॥ आठमे २ए धनुष्य १ हाथ ४॥ आंगुल ॥ नवमे ३१ धनुष्य १ हाथ ॥ चोथी नरके पाथमा ७ ठे ॥ त्या ८ धनुष्य २० आंगुल, एकेके पाथमे वधारीए ॥ पहेले पाथमे ३१ धनुष्य १ हाथ ॥ बीजे ३६ धनुष्य १ हाथ २० आंगुल ॥ त्रीजे ४१ धनुष्य २ हाथ २६ आंगुल ॥ चोथे ४६ धनुष्य ३ हाथ १२ आंगुल ॥ पांचमे ५२ धनुष्य ठ आंगुल ॥ ठट्ठे ५७ धनुष्य १ हाथ ४ आंगुल ॥ सातमे ६२ धनुष्य २ हाथ ॥ पांचमी नरके पाथमा ५ ठे. त्यां २५ धनुष्य २ हाथ १२ आंगुल एकेके पाथमे वधारीए. प्रथम पाथमे ६२ धनुष्य २ हाथ ॥ बीजे ७ठ धनुष्य १२ आंगुल ॥ त्रीजे ए३ धनुष्य ३ हाथ ॥ चोथे १०ए धनुष्य १ हाथ १२ आंगुल ॥ पांचमे १२५ धनुष्य ॥ ठठ्ठी नरके पाथमा ३ ठे ॥ त्यां एकेके पाथमे ६२ धनुष्य २ हाथ वधारीए ॥ प्रथम पाथमे १२५ धनुष्य ॥ बीजे १ठ७ धनुष्य २ हाथ ॥ त्रीजे २५० धनुष्य ॥ सातमी नरके ५०० धनुष्यनी काया ठे ॥ ते नवधारणी काया जाणवी ॥ वैक्रेय करे तो जघन्य आंगुलनो संख्यातमो

नाग, उत्कृष्टी वैक्रेय करे तो बमणी काया करे ॥ ए नारकीनी अवगाहना करी ॥ हवे नवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देवलोक बे सुधी नवधारणी ७ हाथनी काया ॥ त्रीजे चोथे ६ हाथ ॥ पांचमे छठे ५ हाथ ॥ सातमे आठमे ४ हाथ ॥ उपरना ४ देवलोके ३ हाथनी काया ॥ ए देवता उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगुलनो संख्यातमो नाग, उत्० लाख जोजन करे. एथी उपरना देवता उत्तर वैक्रेय न करे. नव ग्रैवेयके २ हाथनी काया ॥ चार अनुत्तर विमाने १ हाथनी काया ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाने १ हाथ माठेरी काया ॥ ए अवगाहना उत्सेद आंगुले करी सर्वनी जाणवी ॥ हवे सिद्धनी अवगाहना ज० १ हाथ ० आंगुल, मध्यम ४ हाथ १६ आंगुल, उत्० ३३३ धनुष्य ३२ आंगुल ॥ बादर, पृथ्वी, पाणी, तेउ, वाउ अने सूक्ष्म एकेंद्रिय ए सर्वनी ज० उ० आंगुलना असंख्यातमा नागनी अवगाहना जाणवी ॥ प्रत्येक वनस्पतिनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो नाग, उ० हजार जोजन काठेरी कमलाना कोमाने न्याये ॥ सूक्ष्म वनस्पतिना असंख्यात शरीरे एक सूक्ष्म वायुनुं शरीर थाय ॥ सूक्ष्म वायुना असंख्य शरीरे एक सूक्ष्म तेजनुं शरीर थाय ॥

सूक्ष्म तेउना असंख्य शरीर एके सूक्ष्म अपनु शरीर थाय॥ सूक्ष्म अपना असंख्य शरीर एक सूक्ष्म पृथ्वीनुं शरीर थाय॥ सूक्ष्म पृथ्वीने असंख्य शरीरे एक वादर वायुनुं शरीर थाय ॥ वादर वायुने असंख्य शरीरे एक वादर तेउनुं शरीर थाय॥ वादर तेउने असंख्य शरीरे एक वादर अपनुं शरीर थाय ॥ वादर अपने असंख्य शरीरे एक वादर पृथ्वीनुं शरीर थाय ॥ एटले केवको थयो ते उपर चूर्णपीसिका दासीनुं दृष्टांत कहे छे—बत्रीस वर्षनो जुवान जोध वळवंत पुरुष रत्नने एरण उपर मुकीने गाढा घणनो प्रहार करे तो ते रत्न एरणमां खुंचे पण भांगे नहि ॥ एवुं रत्न ते चूर्णपीसिका दासी आंगळी ने अंगुठा वचे चांपीने तेनो साथीयो काढे एवी वळवत ते रत्नने वज्रमय खरल उपर मुके, वज्रमय लोढावती २१ वार पीसे, वाटे तो ते जीव केटलाएक विलय जाय, केटलाएक किलामना पामे, केटलाएके जाएयुं पण नथी ॥ वळी नगरने दृष्टांते—जेम कोइ नगर मोटुं होय, ते नगरने क्यांक पासे जुरू होय, ते जुरू करतां केटलाएक वीलय जाय, केटलाएक कीलामना पामे, केटलाके जाएयुं पण नथी, एवुं सूक्ष्म शरीर छे ॥ चे इंद्रि-

न शंख प्रमुखनुं शरीर १२ जोजननुं ॥ तेइंद्रिय खजुरा प्रमुखनुं गाउ ३ नुं ॥ चउरिंद्रिय
भमरा प्रमुखनु गाउ ४ नुं ॥ जलचरनुं खाफीमांहि ए जोजनना मह ॥ लवण समुद्रमांहि
५०० जोजनना मह ॥ कालोदधीमां ७०० जोजननां मह ॥ स्वयंभूरमण समुद्रमां १०००
जोजननां मह छे ॥ ए जलचर समुर्छिम अने गर्भज बन्ने जाणवा ॥ स्थलचर समुर्छिमनुं
शरीर पृथक् गाउनुं ॥ गर्भजनुं ६ गाउनुं ॥ उरपर समुर्छिमनुं पृथक् जोजननुं ॥ गर्भजनुं १ हजार
जोजननुं ॥ भुजपर समुर्छिमनु पृथक् धनुष्यनु ॥ गर्भजनुं पृथक् गाउनुं ॥ खेचर समुर्छिम ने
गर्भजनु पृथक् धनुष्यनुं ॥ वैक्रेय ज० अंगुलनो संख्यातमो भाग करे, उत्० नवसें जोजननी
काया करे ॥ मनुष्यनी काया देवकुरु उत्तरकुरुना युगलियानी ३ गाउनी हरिवास
रम्यक्वासे २ गाउनी ॥ हेमवय एरणवये १ गाउनी ॥ छपन्न अंतरद्वीपे ८०० धनुष्यनी ॥ पांच
महाविदेहे ५०० धनुष्यनी ॥ भरत ऐरवते आराना प्रमाणे अवगाहनानुं मान जाणवुं ॥
पहेले आरे ३ गाउ ॥ बीजे आरे २ गाउ ॥ त्रीजे आरे १ गाउ ॥ चोथे आरे ५०० ध-

पांचमानुं ३०० धनुष्यनुं ॥ छहानुं २५० धनुष्यनुं ॥ सातमानुं २०० धनुष्यनुं ॥ आठमानुं १५० धनुष्यनुं ॥ नवमानुं १०० धनुष्यनुं ॥ दशमानुं ९० धनुष्यनुं ॥ अग्यारमानुं ८० धनुष्यनुं ॥ बारमानुं ७० धनुष्यनुं ॥ तेरमानुं ६० धनुष्यनुं ॥ चौदमानुं ५० धनुष्यनुं ॥ पनरमानुं ४५ धनुष्यनुं ॥ सोलमानुं ४० धनुष्यनुं ॥ सत्तरमानुं ३५ धनुष्यनुं ॥ अढारमानुं ३० धनुष्यनुं ॥ ओगणीसमानुं २५ धनुष्यनुं ॥ वीसमानुं २० धनुष्यनुं ॥ एकवीसमानुं १५ धनुष्यनुं ॥ बावीसमानुं १० धनुष्यनुं ॥ तेवीसमानुं ९ धनुष्य १ हाथनुं ॥ चोवीसमानुं १ धनुष्य ३ हाथनुं ॥ पांचमे आरे ७ हाथनुं, उतरते आरे १ हाथनुं ॥ छट्ठे आरे १ हाथ, उतरते आरे मूढा हाथनी ॥ सर्व जीव उपजताने आंगुलना असंख्यातमा भागनी अवगाहना जाणवी, अने उत्तर वैक्रेय करे तो लाख जोजननी झाझेरी जाणवी ॥

इति चोथुं अवगाहनाद्वार संपूर्ण ॥ ४ ॥

प्रभा केम कही ? तेमां वेलु छे ॥ ३ ॥ पंकप्रभा केम कही ? तेमां कादव छे ॥ ४ ॥ धूम-प्रभा केम कही ? तेमां धुमाडो छे ॥ ५ ॥ तमप्रभा केम कही ? तेमा अंधकार छे ॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा केम कही ? तेमा अंधकारमां अंधकार छे ॥७॥ साते पृथ्वी जाडी केटली छे ते कहे छे ॥ प्रथम पृथ्वी १ लाख ८० हजार जोजन जाडी छे ॥ बीजी पृथ्वी १ लाख ३२ हजार जोजन जाडी छे ॥ त्रीजी पृथ्वी १ लाख २८ हजार जोजन जाडी छे ॥ चोथी पृथ्वी १ लाख २० हजार जोजन जाडी छे ॥ पांचमी पृथ्वी १ लाख १८ हजार जोजन जाडी छे ॥ छठी १ लाख १६ हजार जोजन जाडी छे ॥ सातमी नरकनो पिंड १ लाख ८ हजार जोजन जाडीनो छे, ते शेने आधारे रह्यो छे ? पहेलोए २० हजार जोजन घनोदधि छे, असंख्याता जोजननां सहस्रनो घनवात छे, असंख्याता जोजन सहस्रनो तनुवात छे ॥ असंख्याता जोजनना सहस्रनो आकाश छे ॥ एमज साते नरके जाणवुं ॥ सातमी नरके परतो विशेष जे छेते अलोक छे ॥ हवे त्रीजो अलोक केटले दूर छे ते कहे छे ॥

तेमांना २ जाग वधारीए ॥ ठेहला सुधी बीजीए जोजन १२ त्रझ्या जाग २ ॥ त्रीजीए जोजन १३ जाग १ त्रझ्यो ॥ चोथीए १४ जोजन ॥ पांचमीए १४ जोजन त्रझ्या जाग २ ॥ ठहीए १५ जोजन त्रझ्यो जाग १ ॥ सातमीए १६ जोजन ॥ एटले अलोक ठे ॥ एकेकी नरके वलयाने आकारे त्रण वलय ठे ॥ पेली नरके ६ जोजननो घनोदधि ठे ॥ साडाचार जोजननो घनवात ठे. १॥ जोजननो तनवात ठे. एकएक नरके एकएक त्रझ्यो जाग वधारतां जाव सातमी नरके आठ जोजननो घनोदधि ठे. वळी एकेकी नरके पा पा जोजन घनवातमां वधारता वधारता जाव सातमी नरके ठ जोजननो घनवात ठे ॥ वळी एकेकी नरके एक जोजनना १२ जाग करीए एवो एकेको जाग वधारतां जाव सातमी नरके बे जोजननो तनवात ठे ॥ सात पृथ्वी ऊालरने संस्थाने ठे. साते नरके ४ए पाथडा ठे. तेनी विगत– पहेली नरके १३ पाथडा ठे ॥ बीजीए ११ ॥ त्रीजीए ए ॥ चोथीए ७ ॥ पांचमीए ५ ॥ ठहीए ३ ॥ सातमीए १ ॥ ए सर्व ४ए पाथडा ठे ॥ एकेको पाथडो ३ हजार जोजननो जाडो ठे ॥ ते मध्ये १ हजार जोजननो हेठे जाडो ठे ॥ एक हजार जोजननो उपर जाडो

छे ॥ रहे १ हजार जोजननी पोलार छे, तेमां नारकीनो वास छे ॥ एकेको पाथडो असंख्याता जोजनना सहस्त्रनो लांबो पहोळो छे ॥ हवे पाथडानुं आंतरो कहे छे–प्रथम नरके १२ आंतरा छे ॥ एकेके पाथडे आंतरो ११५८३ जोजन १ गाउ ६६६ धनुष्य २ हाथ १६ आंगळ एटलो छे ॥ बीजी नरके १० आंतरा छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो ९७०० जोजननो छे ॥ त्रीजी नरके आंतरा ८ छे, त्यां एकेक पाथडे १२३७५ जोजननो आंतरो छे ॥ चोथी नरके आंतरा ६ छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो १६१६६ जोजन २ गाउ १३३३ धनुष्य ३२ आंगळनो छे ॥ पांचमी नरके आंतरा ४ छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो २५२५० जोजननो छे ॥ छठी नरके आंतरा २ छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो ५२५०० जोजननो छे ॥ ए समस्त पाथडाना आंतरा कह्या ॥ हवे पृथ्वीना पिंडनुं मान कहे छे ॥ प्रथम नरके १ लाख ८० हजार जोजननो पिंड छे, ते माहिलो १ हजार जोजन उपर मुकीए, एक हजार जोजन हेठे मुकीए, बच्चे १ लाख ७८ हजार जोजननो पोलार छे

[illegible]

सातमी नरके साको वावन हजार जोजन ...
जोजन हेठे मुकीए, वच्चे ३ हजार जोजननं। पोलार छे. त्यां १ पाथडो छे ॥ साते नरके थइ ८४ लाख नरकावासा छे तेनी विगत—पहेली नरके ३० लाख नरकावासा छे, बीजीए २५ लाख, त्रीजीए १५ लाख, चोथीए १० लाख, पांचमीए ३ लाख, छठीए १ लाख पांच उणा ॥ सातमीए पांच नरकावासा छे ॥ ते मध्ये एक नरकावासो संख्याता जोजननो छ ॥ ४ नरकावासा असंख्याता जोजनना छे जे संख्याता जोजनना नरकावासा छे त्यां संख्याता नारकीनो वास छे ॥ जे असंख्याता जोजनना छे त्यां असंख्याता नारकीनो वास छे ॥ हवे संख्यातानुं मान कहे छे ॥ कोइ एक देवता ८॥ लाख जोजननुं एक डगलुं भरतां ६ मास सुधी चाले ॥ छट्ठे मासे पार पामे, कोइ न पामे ते असंख्याता जोजनना जाणवा ॥ जे असंख्याता जोजनना छे तेनो पार न पामे ॥ सख्याता जोजनना छे तेनो पार पामे ॥ एटले नानो ते लाख जोजननो छे. मोटो ते असंख्याता जोजननो छे ॥ हवे ४९ पाथडा मध्य भागे ४९ इंद्रक नरकावासा छे, तेना नाम कहे छे--सीमंत १, रोरुक २, रंत्त ३, उद्भांत ४,

संभ्रान ४, असंभ्रान ६, विभ्रात ७, तप्त ८, शीत ९, वक्रांत १०, अवक्रांत ११, विकल १२, रोरव १३ ॥ ए १३ प्रथम नरकना क्रमे प्रतरना इंद्रक जाणवा ॥ १ ॥ स्तनिक १, स्तनक २, मनक ३, वनक ४, घट्ट ५, संघट्ट ६, जिव्ह ७, अवजिव्ह ८, लोल ९, लोलावत्त १०, घणलोलुक ११, ए बीजी नरके प्रतरना क्रमे ११ इंद्रक जाणवा ॥ २ ॥ तप्त १, तपित २, तपन ३, तापन ४, विदाय ५, प्रज्वलित ६, उज्वलित ७, संज्वलित ८, संप्रज्वलित ९, ए त्रीजी नरके प्रतरना क्रमे ९ इंद्रक जाणवा ॥ ३ ॥ आर १, तार २, मार ३, वर्च ४, तम ५, खाडखड ६, खडखड ७, ए चोथी नरके प्रतरना क्रमे ७ इंद्रक जाणवा ॥ ४ ॥ खात १, तमस, झस ३, अंध ४, तिमिस ५. ए ५मी नरके प्रतरना क्रमे ५ इंद्रक जाणवा ॥ ५ ॥ वाद्दी १, वाद्दल २, लल्लक ३ ए छठी नरके प्रतरना क्रमे ३ इंद्रक जाणवा ॥ ६ ॥ अपइट्ठाण १. ए सातमी नरके प्रतर १ नो इंद्रक (महोटो) नरकावासो जाणवो ॥ ७ ॥ एवं साते नरके ४९ आवलीका नरक ८४५३ नरकावासा छे तेमां केटलाएक संख्यात छे, केटलाएक असंख्यात छे, केटलाएक संख्यात छे, बाकीना पुष्पावकीर्ण जाणवा ॥ [illegible]

.... नीचे गया पठी चमरेंद्रना राजधानी ... त्यां
पृथ्वीना उपला पिंडयकी ४२ हजार जोजन ... ...
... तेनी विगत—४ क्रोड ६ लाख ज्ञवन दक्षिण
दिशे ठे, ३ क्रोड ६६ लाख ज्ञवन उत्तर दिशे ठे ॥ दक्षिण दिशामां प्रथम असुर कुमारनां
७ क्रोड, ७२ लाख ज्ञवनपतिनां ज्ञवन ठे,

पृथ्वीना उपला पिंडयकी ४२ हजार जोजन नीचे गया पठी चमरेंद्रना राजधानी ... त्यां ७ क्रोड, ७२ लाख ज्ञवनपतिनां ज्ञवन ठे, तेनी विगत—४ क्रोड ६ लाख ज्ञवन दक्षिण दिशे ठे, ३ क्रोड ६६ लाख ज्ञवन उत्तर दिशे ठे ॥ दक्षिण दिशामां प्रथम असुर कुमारनां ज्ञवन ३४ लाख ठे, नागकुमारनां ४४ लाख ठे, त्रीजाने ३८ लाख, चोथाने ४० लाख, पांचमाने ४० लाख, ठठाने ४० लाख, सातमाने ४० लाख, आठमाने ४० लाख, नवमाने ५० लाख, दशमाने ४० लाख ज्ञवन ठे ॥ उत्तर दिशामां असुर कुमारनां ३० लाख ज्ञवन ठे, बीजाने ४० लाख, त्रीजाने ३४ लाख, चोथाने ३६ लाख, पांचमाने ३६ लाख, ठठाने ३६ लाख, सातमाने ३६ लाख, आठमाने ३६ लाख, नवमाने ४६ लाख, दशमाने ३६ लाख, एटला ज्ञवनपतिनां ज्ञवन ठे ॥ हवे १० ज्ञवनपतिना मुगटनां चिह्न कहे ठे—असुर कुमारने चुडामणीनुं, बीजाने नागनी फेणनुं, त्रीजाने गरुडपंखीनुं, चोथाने वज्रनु, पांच-माने कळसनुं, ठठाने सिंहनु, सातमाने घाडानुं, आठमाने गजनुं, नवमाने मगरमच्छनुं, दशमाने सरावला संपुटनुं, ए चिह्न करी आप आपणी जाति जाणवी ॥ हवे एनो वर्ण

हवे वे-असुर काळा, नागने उदधि पंडुरा, सुवन, दिशा ने स्तनित ए त्रण सोवनवर्णे, विद्यु, अग्नि ने दीव ए त्रण रक्तवर्णे. पवननो लीलो वर्ण ॥ ए दशे नवनपतिना वर्ण जाणवा ॥ हवे तेनां वस्त्र कहे छे-असुर कुमारनां रक्त वस्त्र ॥ नाग १, उदधि २, विद्यु ३, दीव, ४, अग्नि ५ ए ५ नां लीलां वस्त्र ॥ दिशा स्तनित ने सुवन ए त्रणनां श्वेत वस्त्र ॥ वायुकुमार ने संध्याना राग सरखां वस्त्र जाणवां ॥ ए १० नवनपतिनां वस्त्र कह्यां ॥ हवे रत्नप्रना पृथ्वीनो उपलो पिंड हजार जोजननो छे. ते मध्ये १०० जोजन उपर मुकीए, १०० हेठे मुकीए, तेनी वच्चे १६ व्यंतरनां असंख्यातां नगर छे. उत्० जंबूद्वीप जेवडा ॥ मध्यम महाविदेह जेवडा ॥ जघन्य नरतक्षेत्र जेवडा॥ एनी जाति ध्वजाने चिह्ने करी जाणवी ते कहे छे ॥ पहेलाने कलंब वृक्षनुं, बीजाने शाली वृक्षनुं, त्रीजाने वड वृक्षनु, चोथाने पाडली वृक्षनुं, पांचमाने अशोक वृक्षनुं, छठाने चंपक वृक्षनुं, सातमाने नागवृक्षनुं, आठमाने टींबरु वृक्षनुं, ए आठ व्यंतरनां चिह्न कह्यां ॥ हवे [illegible]

२५ कोमाकोमी पल्योपमे जेटला रोमखंम होय तेटला द्वीप समुद्र ठे ॥ अथवा वारुणी द्वीप पठी संसारमांहि जेटली शुज्ञ वस्तुनां नाम ठे तेने वर अने वरावज्ञास शब्द जोमतां एकेक वस्तुने नामे त्रण त्रण द्वीप समुद्रनां नाम थाय तेवी रीते पण एकेके नामे असंख्याता द्वीपसमुद्र ठे, यावत् विज्ञास समुद्रसुधी ते पण असंख्यात ज गणवा ॥ पठी त्यांथी एकेके नामे देव १, नाग २, जक्ष ३, जूत ४, अने स्वयंजूरमण एम पांच द्वीप तथा समुद्र छे ५ ॥ हवे समस्त द्वीप अने समुद्रनो मध्यतो जंबूद्वीप ज ठे ते जंबूद्वीप पूर्ण चंद्रमाने अथवा पूर्ण पुष्कलाने आकारे ठे ॥ वाकी सर्व द्वीपसमुद्र वलयाने आकारे ठे ॥ जंबूद्वीप १ लाख जोजननो ठे तेनी विगत–प्रथम दक्षिण उत्तरे पहोळानुं मान कहे ठे–५२६ जोजन ६ कलानो जरतक्षेत्र पहोळो ठे, तेने ठेमे १०५२ जोजन १२ कलानो चूलहीमवंत पर्वत ठे, तेने ठेमे २१०५ जोजन ५ कलानुं हेमवय क्षेत्र ठे, तेने ठेमे ४२१० जोजन १० कलानो महाहेमवंत पर्वत ठे, तेने ठेडे ८४२१ जोजन १ कलानुं हरिवास क्षेत्र ठे, तेने ठेमे

... [illegible] ॥ [illegible] दिशे असंख्याता जोजननी [illegible] [illegible] दिशे
...था नीची दिशे असंख्याता जोजननी कोडाकोडीनुं छे ॥ [illegible] जोजननी
...काकोडीनुं मान कह्युं छे ॥ जंबुद्वीपनी ४ पोले ४ देवांगना [illegible] समकाळे उञा-
..., अने शीघ्र गतिना धणी ६ देवता जम्बुद्वीप पाखली [illegible] २१ फेरा दे
... ४ बलिपिंड समकाळे अस्कन्धी कोली ले नीचे [illegible] शीघ्र गतिना
...णी ६ देवता ६ दिशे चाल्या ॥ तवारे कोइ एक व्यवहारीयाने [illegible] दीकरानो जन्म
...यो, तेनुं आयुष्य १ हजार वर्षनुं, तेना ७ परिया [illegible] थया तोए लोकनो
...र पाम्या ? नोइणट्टे समट्टे ॥ तेनां नाम गोत्र क्षय [illegible] लोकनो पार पाम्या ?
...नोइणट्टे समट्टे ॥ तो स्वामी केटला लगी गया ? घणुं [illegible] थोडुं बाकी रह्या ॥ मेरु
...र्वतनो कंद त्यां रुचक प्रदेश थकी लोकनुं मान [illegible] ॥ [illegible] विषे असंख्याता
...द्वीपसमुद्र छे ॥ ते असंख्यातानु मान अढी उद्धार [illegible] स्वयंभूरमण द्वीप अथवा

देहनो विजाग ठे, तेने ठेके १६७४२ जोजन २ कलानो नीलवत पर्वत ठे, तेने ठेके ७४२१ जोजन १ कलानु रम्यग्वास क्षेत्र ठे, तेने ठेके ४२१० जोजन १० कलानो रूपी पर्वत ठे, तेने ठेके २१०५ जोजन ५ कलानु एरणवय क्षेत्र ठे, तेने ठेके १०५२ जोजन १२ कलानो शिखरी पर्वत ठे, तेने ठेके ५२६ जोजन ६ कलानुं ऐरवतक्षेत्र ठे, ए सर्वे दक्षिण उत्तर पोहोळा कह्या ॥ हवे पूर्व पश्चिम लांबा कहे ठे ॥ १४५२८ जोजन ११ कलानो जरतक्षेत्र लांबु ठे, ३७६७४ जोजन १६ कला देशे उणो हेमवय क्षेत्र लांबुं ठे, ७३९०१ जोजन १७॥ कला हरिवास क्षेत्र लांबुं ठे, एक लाख जोजन महाविदेह क्षेत्र लांबुं ठे, ७३९०१ जोजन १७॥ कला रम्यक्वास क्षेत्र लांबुं ठे, ३७६७४ जोजन १६ कला देशे उणुं एरणवय क्षेत्र लांबुं ठे, १४५२७ जोजन ११ कला एरवत क्षेत्र लांबुं छे, ए क्षेत्र लांबां कह्यां ॥ हवे वासधर पर्वतनुं लांबापणुं कहे ठे ॥ २४९३२ जोजन हेमवंत पर्वत लांबो ठे, ५३९३१ जोजन महाहेमवंत पर्वत लांबो ठे, ९४१५६ जोजन २ कलानो निषधने नीलवंत पर्वत लांबो ठे, ५३९३१ जोजन फाफेरो रूपी पर्वत लांबो ठे, २४९३२ जोजन शिखरी

मान कहे छे ॥ तिर्छी दिशे असंख्याती जोजननी कोडाकोडीनुं छे ॥ ऊंचो तथा [illegible] दिशे तथा नीची दिशे असंख्याता जोजननी कोडाकोडीनु छे ॥ हवे असंख्यात जोजननी कोडाकोडीनुं मान कहे छे ॥ जंबूद्वीपनी ४ पोळे ४ देवांगना ४ बलिपिंड समकाळे उछाळे, अने शीघ्र गतिना धणी ६ देवता जंबूद्वीप पाखली [illegible] मांहि २१ फेरा देइ ते ४ बलिपिंड समकाळे अद्धरथी झीली ले भोंये पडवा न दे, एहवी शीघ्र गतिना धणी ६ देवता ६ दिशे चाल्या ॥ तेवारे कोइ एक व्यवहारीयाने घेर एक दीकरानो जन्म थयो, तेनुं आयुष्य १ हजार वर्षनुं, तेना ७ परिया [illegible] आउखा थया तोए लोकनो पार पाम्या ? नोइणट्टे समट्टे ॥ तेनां नाम गोत्र क्षय गया तोपण लोकनो पार पाम्या ? नोइणट्टे समट्टे ॥ तो स्वामी केटला लगी गया ? घणुं गया अने थोडुं बाकी रह्या ॥ मेरु पर्वतनो कंद त्यां रुचक प्रदेश थकी लोकनुं मान सपाय ॥ ते लोकने विषे असंख्याता द्वीपसमुद्र छे ॥ ते असंख्यातानुं मान अढी उद्धार सागर [illegible] रोमखंड होय अथवा

देहनो विजाग ठे, तेने ठेके १६७४२ जोजन २ कलानो नीलवंत पर्वत ठे, तेने ठेके ७४२१ जोजन १ कलानुं रम्यगूवास क्षेत्र ठे, तेने ठेके ४२१० जोजन १० कलानो रूपी पर्वत ठे, तेने ठेके २१०५ जोजन ५ कलानुं एरणवय क्षेत्र ठे, तेने ठेके १०५२ जोजन १२ कलानो शिखरी पर्वत ठे, तेने ठेके ५२६ जोजन ६ कलानुं ऐरवतक्षेत्र ठे, ए सर्वे दक्षिण उत्तर पोहोळा कह्या ॥ हवे पूर्व पश्चिम लांबा कहे ठे ॥ १४५२८ जोजन ११ कलानो जरतक्षेत्र लांबुं ठे, ३७६७४ जोजन १६ कला देशे उणो हेमवय क्षेत्र लांबुं ठे, ७३९०१ जोजन १७॥ कला हरिवास क्षेत्र लांबुं ठे, एक लाख जोजन महाविदेह क्षेत्र लांबुं ठे, ७३९०१ जोजन १७॥ कला रम्यकूवास क्षेत्र लांबुं ठे, ३७६७४ जोजन १६ कला देशे उणुं एरणवय क्षेत्र लांबुं ठे, १४५२७ जोजन ११ कला एरवत क्षेत्र लांबुं छे, ए क्षेत्र लांबां कह्यां ॥ हवे वासधर पर्वतनुं लांबापणुं कहे ठे ॥ २४९३२ जोजन हेमवंत पर्वत लांबो ठे, ५३९३१ जोजन महाहेमवंत पर्वत लांबो ठे, ९४१५६ जोजन २ कलानो निपधने नीलवंत पर्वत लांबो ठे, ५३९३१ जोजन काफेरो रूपी पर्वत लांबो ठे, २४९३२ जोजन शिखरी

पर्वत लांबो ठे, ए वासधर पर्वतनुं लांबापणुं कह्युं ॥ हवे उंचापणुं कहे ठे ॥ चूलहिमवंत पर्वत अने शिखरी पर्वत १०० जोजनना उंचा ठे, १०० गाउ नीचे धरतीमां ठे. महाहेमवंत पर्वत अने रूपीपर्वत २०० जोजन उंचा ठे, २०० गाउ नीचे धरतीमां ठे. निषध नीलवंत पर्वत ४०० जोजन उंचा ठे, ४०० गाउ नीचे धरतीमां ठे. मानुष्योतर पर्वत १७२१ जोजन उंचा ठे, १७२१ गाउ नीचे धरतीमां ठे ॥ जंबूद्वीप पूर्व पश्चिम लाख जोजननो ठे तेनुं पहोलपणुं कहे ठे ॥ ५८४२ बे वनमुख ठे, ३५० जोजन ६ अंतर नदी ठे, ४००० जोजनना ८० वखारा पर्वत ठे, ४४००० जोजनना बे नद्रसाल वन ठे. १०००० जोजन मेरु पर्वत जाडो ठे, ३५४०४ जोजन विजयनुं पहोलपणुं ठे, ए जंबूद्वीपनुं पहोलपणुं कह्युं. तेनी परिधि ३१६२२७ जोजन ३ गाउ १२८ धनुष्य १३॥ आंगुलनी जाणवी. ए जंबूद्वीपने चारे दिशे ४ दरवाजा ठे. तेनु अंतर ७९०५२ जोजन देशे ऊणुं ठे. जनुद्वीपनुं क्षेत्रफल सातसे नेवु कोडी, ५६ लाख, ९४ हजार, १५० जोजन अने पोणा बे गाउ तथा साडी-

जंबूद्वीप पहोळो १ लाख जोजननो छे तेने फरतो २ लाख जोजननो लवण समुद्र छे, तेने फरतो ४ लाख जोजननो धातकी खंड छे, तेने फरतो ८ लाख जोजननो कालोदधि समुद्र छे, तेने फरतो १६ लाख जोजननो पुष्करद्वीप छे ॥ मेरुपर्वत ९९००० जोजन उंचो छे. एक हजार जोजन धरतीमां उंडो छे. तेना मध्य भागथी दक्षिण उत्तरे पुष्करार्द्ध सुधी गणीए, एम करतां ४५ लाख जोजन थाय ते मनुष्यक्षेत्र जाणवुं. तेनी परिधि १ कोडी ४२ लाख ३० हजार २४९ जोजन थाय. उपरांत द्वीपसमुद्र ठाम बमणां जाणवा ॥ हवे जंबुद्वीपनी नदीओनो विचार कहे छे ॥ जंबूद्वीप मध्ये मेरु पर्वतनी दक्षिण दिशे ७ नदी शाश्वती छे तेनी विगत ॥ प्रथम गंगा अने सिंधु चूलहिमवंत पर्वतथी निकली छे ॥ मूले जाडपणे ६। जोजन—पूर्व पश्चिम भरत मध्ये चाली, समुद्रमां भळी. त्यां पहोळपणुं ६२॥ जोजननुं छे. गंगा नदीनो परिवार १४००० नदीनो छे. सिंधु नदीनो परिवार १४००० नदीनो छे ॥ त्रीजी रोहितंसा नदी ते पण चूलहेमवंतना पद्मद्रहथी उत्तरी, पेले पासे हेमवय क्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोलपणुं

१२॥ जोजननो छे, अंते समुद्रमां मली, त्यां १२५ जोजन पहोलपणो छे ॥ चोथी रोहिता नदी ते महाहेमवंतना द्रहथी उतरी, ते आ बाजु हेमवंत क्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोळपणुं १२॥ जोजननुं छे. अंते समुद्र मध्ये मळी, त्यां पहो-ळपणुं १२५ जोजननु छे. ए बन्ने नदीनो परिवार २८००० नदीनो छे ॥ पांचमी हरिकांता नदी छे ॥ छठी हरिसलीला नदी. ते महाहेमवंतनां द्रह थकी उतरी ते पहेले पासे हरिवास क्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोलपणुं २५ जोजननुं छे, अंते समुद्र मध्ये मळी. पूर्व पश्चिमने पासे, त्यां २५० जोजन पहोलपणुं छे. ए बेउनो परिवार ५६००० नदीनो छे ॥ सातमी सीता नदी ते निषध पर्वतना द्रह थकी उतरी, ते पहेले पासे देवकुरुक्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोलपणुं ५० जोजननुं छे. अंते समुद्र मध्ये मळी, त्यां ५०० जोजन पहोळी छे. तेनो परिवार ५३२००० नदीनो छे ॥ हवे मेरुनी उत्तरनी दिशाए ७ शाश्वती नदी छे. प्रथम सीतोदा नदी ते नीलवंत पर्वतना द्रहथी उतरी, उत्तर कुरुक्षेत्र मध्ये चाली [illegible]

तेनो परिवार ५३२००० नदीनो ठे ॥ बीजी नारीकंता, त्रीजी नरकंता, ए बे रूप्य पर्वतना द्रहथी उतरी, ते आ तरफ रम्यकवास क्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोळपणुं २५ जोजन, अंते समुद्रमां नळी, त्या २५० जोजन पहोळी ठे, ए बेनो परिवार ५६००० नदीनो ठे ॥ चोथी रूपकुला, पांचमी सोवन्नकुला ॥ ते मध्ये रूपकुला नदी रूपी पर्वतना द्रहथकी उतरी, ते ऐरणवय क्षेत्र मध्ये चाली, मूले १२॥ जोजन पहोळपणुं ठे, अंते समुद्र मध्ये नळी, त्या १२५ जोजन पोहोळी ठे, अने सोवन्नकुला नदी शिखरी पर्वतना द्रह थकी उतरी, ते आ तरफ ऐरणवय क्षेत्र मध्ये चाली, मूले १२॥ जोजननुं पहोळपणुं ठे, अंते समुद्र मध्ये नळी, त्या १२५ जोजन पहोळी ठे, ए बेनो परिवार २८००० नदीनो ठे ॥ ठठी रक्ता, सातमी रतवइ ॥ ते शिखरी पर्वतना द्रहथकी उतरी, ते ऐरवत्त क्षेत्रे पेले पासे पूर्व पश्चिम दिशे चाली, मूले ६। जोजन पहोलपणुं ठे, अंते समुद्र मध्ये नळी, त्यां ६२॥ जोजन पहोळी ठे. ए बे नदीनो परिवार १४००० नदीनो ठे ॥ सर्व मळी १४५६००० नदीनो परिवार ठे ॥ हवे पर्वत आश्री कहे ठे ॥ सर्व मळी अढी द्वीप मध्ये १३४९ शाश्वता

बुधनुं विमान छे ॥ ८८१ जोजने शुक्रनो विमान छे ॥ ८८४ जोजने बृहस्पतिनुं विमान छे ॥ ८८७ जोजने मंगळनुं विमान छे ॥ ९०० जोजने शनिश्चरनुं विमान छे ॥ एक चंद्रमानो परिवार ८८ ग्रह २८ नक्षत्र, ६६ हजार ९ से ७५ एटली कोडाकोडी तारानां विमान छे ॥ तेटलो परिवार सूर्यनो पण जाणवो ॥ चंद्रमानुं विमान एक जोजनना ६१ भाग करीए तेमाना ५६ भागनुं लांबुं पहोळुं ने २८ भागनुं उंचुं ने जाडुं छे ॥ त्रिगुणी झाझेरी परिधि छे ॥ सूर्यनुं विमान ६१ या ४८ भागनुं लांबुं पहोळुं छे ने २४ भागनुं उंचु ने जाडुं छे ॥ त्रिगुणी झाझेरी परिधि छे ॥ ग्रहनां विमान २ गाउ लांबां पहोळां छे ॥ एक गाउना उंचा ने जाडां छे, त्रिगुणी झाझेरी परिधि छे ॥ नक्षत्रनां विमान १ गाउ लांबां पहोळां छे अर्द्ध गाउना उंचा ने जाडां छे ॥ त्रिगुणी झाझेरी परिधि छे ॥ तारानां विमान अर्द्ध गाउ लांबां पहोळां छे ॥ पा गाउ उंचा ने जाडां छे, त्रिगुणी झाझेरी परिधि छे ॥ चंद्रमानुं विमान १६ हजार देवता उपाडे छे ॥ ते ४ हजार हाथीने रूपे दक्षिण दिशे ॥ ४ हजार

दिशे उपाडे छे ॥ तम सूर्यने पण जाणवु ॥ एरीते ४ दिशे ८ हजार देवता तारानां
उपाडे छे, तेमज ४ हजार देवता नक्षत्रनां विमानने उपाडे छे, तेमज २ हजार देवता तारानां
विमानने उपाडे छे ॥ चारे दिशे चार रूपे चंद्रमानी माफक जाणवु ॥ चालवानी गति चंद्र-
मानी मंद गति छे, तेथी सूर्यनी गति उतावळी, तेथी ग्रहनी गति उतावळी, तेथी नक्षत्रनी
गति उतावळी, तेथी तारानी गति उतावळी ॥ चंद्रमाना एक विमानथी बीजा चंद्रमाना
विमानने १ लाख जोजन फाफेरानुं आंतरुं छे ॥ एक सूर्यथी बीजा सुर्यने १ लाख जोजन
फाफेरुं आंतरु छे ॥ सूर्य चंद्रमाने ५० हजार जोजननुं आंतरुं छे ॥ चंद्रमा ने सूर्यनां विमा-
नने ५० हजार जोजननुं आंतरुं छे ॥ हवे ज्योतिषीना उत्कृष्ट व्याघात आश्रि आंतरां कहे
छे ॥ १२२४२ जोजन आंतरुं छे ते केम ? १० हजार जोजन मेरुनो कंद छे अने ११२१ जोजन
ज्योतिषी चक्र मेरु थकी अळगुं फरे छे ॥ ते बेउ पासानां आंतरां अने मेरुनो कंद सर्व
मळी उ० १२२४२ जोजन आंतरु थाय ॥ ज० २६६ जोजन आंतरुं ते किम ? निषध
नीलवंत पर्वतना कुट २५० जोजन पहोळा छे ते थकी ८ जोजन ज्योतिषचक्र अळगुं

फरे ने ते वेळ पासानुं आंतरुं अने कुटनो कंद सर्व मळी २६६ जोजन थाय ॥ हवे निर्व्याघाते आंतरुं ॥ निर्व्याघात ते शुं ? ज्यां पर्वत कुट आडुं नथी ते ॥ त्यां ज० गाउ २ नुं आंतरुं ॥ ज० ५०० धनुष्यनुं आंतरुं जाणवुं ॥ ए आंतरुं कह्युं ॥ हवे सूर्यनुं तेज उंचुं १०० जोजन अने नीचुं १८०० जोजन तपे ॥ ते केम ? रत्नप्रभा पृथ्वी थकी पश्चिमना पामानी पांचमी विजय १००० जोजन उंडी छे अने रत्नप्रभा पृथ्वी थकी ८०० जोजन सूर्य उंचो छे ॥ सर्व मळी एटलुं थाय ॥ ४७२६३ जोजनने एक जोजनना, ६० भाग करीए तेमांना २१ भाग एटलुं त्रीछुं तेज करे ॥ एनां विमान समस्त वाटला संस्थाने छे ॥ हवे ज्योतिषचकथी असंख्यात जोजननी कोडाकोडी उंचा जइए त्यारे त्यां बार देवलोक नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमान आवे छे ॥ ते शेने आधारे छे ? पहेलुं, बीजुं देवलोक घनोदधिने आधारे छे, तेनी उपरना ३ देवलोक घन वाने आधारे छे, ते उपरना ३ देवलोक घनोदधि अने घनवातने आधारे छे, ते उपर ४ देवलोक, ... ग्रैवेयक

... ते उपरना २ देवलोकना तळां २५०० जोजनना जाडां ठे ॥ ... २६०० जोजनना जाडां ठे ॥ ते उपरना २ देवलोकना तळां २५०० जोजनना जाडां ठे ॥ ते उपरना ४ देवलोकनां २६०० जोजनना जाडां ठे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां तळां २४०० जोजननां जाडां ठे ॥ नव ग्रैवेयकनां तळां २२ सें जोजननां जाडां ठे ॥ पांच तळां २३०० जोजननां जाडां ठे ॥ पहेला वीजा देवलोकनां विमान अनुत्तर विमाननां तळां २१ सें जोजननां जाडां ठे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान ६०० जोजन उंचां ठे ॥ ते ५०० जोजन उंचां ठे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान ७०० जोजन उचां ठे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान उपरना २ देवलोकनां विमान ९०० जोजन उंचां ठे ॥ ते ८०० जोजन उंचां ठे ॥ ते उपरना ४ देवलोकनां विमान १००० जोजन उंचां ठे ॥ पांच अनुत्तर विमान ११०० जोजन उपर ए ग्रैवेयकनां विमान उंचां ठे ॥ पहेला ४ देवलोक अर्द्धचंद्राकार ठे ॥ ते उपरना ४ देवलोक पूर्णचंद्राकारे ठे ॥ ते उपरना ४ देवलोक अर्द्धचंद्राकारे ठे ॥ नव ग्रैवेयक वेडाने आकारे ठे ॥ चार अनुत्तर विमान अर्द्धचंद्राकारे ठे ॥ पांचमुं पूर्णचंद्राकारे ठे ॥ पहेला वीजा देवलोके ५ वर्ण ठे ॥ ते उपरना २ देवलोके ४ वर्ण ठे, काळो नथी ॥ ते उपरना २ देवलोके ३ वर्ण

, कालो नीलो नथी ॥ ते उपरना ३ देवलोकनो वर्ण ठे, पीळो ने धोळो ॥ ते उपरना देवलोक, ए ग्रैवेयके धोळो वर्ण ठे ॥ पांच अनुत्तर विमाने उत्कृष्टो श्वेत वर्ण ठे ॥
र देवलोक ए ग्रैवेयक अने ५ अनुत्तर विमाने १० प्रकारना मनोज्ञ जोग ठे॥ मनोज्ञ शब्द ॥ मनोज्ञ रूप २ ॥ मनोज्ञ गंध ३ ॥ मनोज्ञ रस ४ ॥ मनोज्ञ स्पर्श ५ ॥ मनोज्ञ कान्ति ६ ॥ मनोज्ञ लावण्य बोलवानुं ७ ॥ मनोज्ञ गति चालवानी ८ ॥ मनोज्ञ आत्मानी ज्योति ए ॥ मनोज्ञ आयुष्यनी स्थिति १० ॥ हवे देवलोकमां प्रतर ६२ ठे तेनी संगत ॥ पहेले बीजे थइ १३ प्रतर ठे ॥ त्रीजे चोथे १२ प्रतर ठे ॥ पांचमे ६ प्रतर ॥ ठठे ५ प्रतर ठे ॥ उपला ६ देवलोके चार चार प्रतर ठे ॥ ए ग्रैवेयकनां ए प्रतर
पांच अनुत्तर विमाननुं १ प्रतर ठे ॥ हवे विमाननी संख्या कहे ठे ॥ पहेला सो- ३२ लाख विमान ठे ॥ बीजे २८ लाख विमान ठे ॥ त्रीजे १२ लाख विमान ठे ॥ चोथे ८ लाख विमान ठे ॥ पांचमे ४ लाख विमान ठे ॥ ठठे ५० हजार विमान ठे ॥ ... विमान ठे ॥ ... ६ हजार विमान ठे ॥ नवमे दशमे ४०० विमान

छे ॥ अग्यारमे वारमे ३०० विमान छे ॥ पहेली त्रीके १११ विमान छे ॥ बीजी त्रीके १०७ विमान छे ॥ त्रिजी त्रीके १०० विमान छे ॥ पांच अनुत्तरनां ५ विमान छे ॥ सर्व मळी ८४९७०२३ विमान छे ॥ तेमां केटलांएक संख्याताने केटलाएक असंख्याता जोजननां छे ॥ तेमां सर्व देवलोके थई २५८६ वाटला विमान छे ॥ २६८८ त्र्यंश विमान छे ॥ २६०४ चउरंस विमान छे ॥ सर्व मळी आवलीकाबंध विमान ७८७४ छे ॥ बाकी ८४८९१४९ पुष्पाविकी-र्णक छे ॥ हवे सर्वार्थसिद्ध विमानथी १२ जोजन उंची सिद्धिशिला छे, ते ४५ लाख जोजन लांबी पहोळी छे, आठ जोजन मध्ये जाडी छे, छेडे मांखीनी पांखथी पातळी छे ॥ तेनी परिधि १४२३०२४९ जोजन १ गाउ १७ धनुष्य ६ हाथ १३ आंगळ झाझेरी छे ॥ उज्वल जेवो शंख, अंकरत्न, जेवो मचकुंद, जेवुं दुधनुं फीण, जेवो रूपानो पट, जेवां चंद्रमानां किरण, जेवुं दहीनुं खोट, तेथी ते अधिक उजळी छे ॥ ते उपर एक जोजनने २४ मे अग्र विभागे सिद्ध रह्या छे ॥ लोकने मस्तके रह्या छे ॥ अलोकथी ४ आंगळ नीचे रह्या छे ॥ ३१ गुणे करी विराजमान छे ॥ ते ३१ गुण कहे छे ॥ पांच ज्ञानावर्णीय

क्षय कर्या, ए दर्शनावर्णीय क्षय कर्या, बे वेदनीय क्षय कर्या, समकित मोहनीय, चारित्र मोहनीय क्षय कर्या, ४ गतिनां-आउखां क्षय कर्या, शुभ नाम अशुभ नाम क्षय कर्या, उंच गोत्र नीच गोत्र क्षय कर्या, दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय क्षय कर्या ॥ ए ३१ गुणे करी सहित सिद्ध छे ॥ हवे १४ राज कहे छे ॥ सात पृथ्वी नीचे ७ राज छे ॥ रत्नप्रभाथी उंचुं सौधर्म देवलोक सुधी १ राज ॥ सौधर्मथी माहेंद्र देवलोक सुधी २ राज ॥ माहेंद्रथी लांतक सुधी ३ राज ॥ लांतकथी सहस्रार सुधी ४ राज ॥ सहस्रारथी अच्युत सुधी ५ राज ॥ अच्युतथी ए ग्रैवेयक सुधी ६ राज ॥ ए ग्रैवेयकथी लोकना अंत सुधी ७ राज ॥ एटले ७ राज फाफेरा नीचा ने ७ राज माठेरा उंचा जाणवा ॥

इति भवनद्वार संपूर्ण ॥ ६ ॥

हवे सातमुं गत्यागतिद्वार कहे छे ॥

तिर्यंच पंचेन्द्रिय समुर्छिम अने गर्भज अने मनुष्य गर्भज ए वेसांथी आवे ॥ नरकना नीकळ्या तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ने गर्भज मनुष्यमां जाय ॥ ए समुच्चय कह्यो ॥ हवे विस्तारथी कहे छे ॥ नरकमां क्यांनो आवे कइ नरके जाय ? पहेली नरके तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम ने गर्भज जाय ॥ बीजी नरके भुजपर जाय ॥ त्रीजी सुधी खेचर जाय ॥ चोथी सुधी चउपद सिंहादिक जाय ॥ पांचमी सुधी उरपर सर्प जाय ॥ छठ्ठी सुधी स्त्री जाय ॥ सातमी सुधी नर नपुंसक मच्छादिक जाय ॥ हवे नरकना नीकळ्या क्यां आवे ते कहे छे ॥ सातमी नरकनो नीकळ्यो मनुष्य न थाय पण तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजमां जाय ॥ पांमे तो समकित पामे, पण विरती कशी न पामे ॥ छठी नरकनो नीकळ्यो तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज अने मनुष्य गर्भजमां आवे, पामे तो देशविरती, पण सर्वविरती न पामे ॥ पांचमी नरकनो नीकळ्यो तिर्यंच गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां आवे, पामे तो सर्वविरती, पण केवल ज्ञान न पामे ॥ चोथी नरकनो नीकळ्यो तिर्यंच गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां आवे, पामे तो केवल ज्ञान पामे, पण तीर्थंकरपद न पामे ॥ त्रीजी

तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज अने मनुष्य गर्भज एमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या तिर्यंच गर्भज पंचेंद्रि, अने मनुष्य गर्भजमां जाय ॥ नवमा देवलोकथी सर्वार्थसिद्ध सुधी मनुष्य गर्भ असांथी आवे, त्यांना नीकळ्या गर्भज मनुष्यमां जाय ॥ मनुष्य गर्भज मोक्ष-पण जाय, पण त्यांथी आवे नहि ॥ हवे १ समये मोक्ष जाय तेनी संख्या अने क्यांथी केटला जाय ते कहे छे ॥ पहेली ३ नरकना नारकीना जीव मनुष्य गर्भजमां आवे ॥ एक समये १० मोक्ष जाय ॥ ए संज्ञा सघळे जाणवी ॥ चोथीना ४ जाय ॥ पांचमी छठी सातमीनां नीकळ्या न जाय ॥ भवनपतिना देवताना १० जाय ॥ तेनी देवीनां ५ जाय ॥ पृथ्वी अपना ४ जाय ॥ तेउ वायुना न जाय ॥ वनस्पतिना ६ जाय ॥ विगलेंद्रियना ४ ज्ञान पामे, पण मोक्ष न जाय ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियना १० जाय ॥ तिर्यंचणीना १० जाय ॥ मनुष्य गतिना १० जाय ॥ पुरुष लिंगे १० जाय ॥ स्त्रीलिंगना २० जाय ॥ नपुंसकलिंगना १० जाय व्यंतरना १० जाय ॥ तेनी देवीना ५ जाय ॥ ज्योतिषीना १० जाय ॥ तेनी देवीना २० जाय ॥ वैमानिकना

त्रीजा लोकमांथी १०८ जाय ॥ समुद्रमांथी २ जाय ॥ ...

हनाना २ जाय ॥ मध्यम अवगाहनानां १०८ जाय ॥ जघन्य अवगाहनाना ४ जाय ॥ स्वलिंगना १०८ जाय ॥ अन्यलिंगे १० जाय ॥ गृहलिंगे ४ जाय ॥ नंदनवनमांथी २ जाय ॥ पुरुषथी पुरुष थइने १०८ जाय ॥ बाकी ८ भांगे १० जाय ॥ पुरुषथी स्त्रीलिंगे थइ १० जाय ॥ पुरुषथी नपुंसकलिंगे थइ १० जाय ॥ स्त्रीथी पुरुषलिंगे थइ १० जाय ॥ स्त्रीथी स्त्री थइने १० जाय ॥ स्त्रीथी नपुंसक थइ १० जाय ॥ नपुंसकथी पुरुष थइ १० जाय ॥ नपुंसकथी स्त्री थइ १० जाय ॥ नपुंसकथी नपुंसक थइ १० जाय ॥ एक समये जे जे गतिना मनुष्यमां आवी उत्कृष्टा मोक्ष एक समये जाय ते कह्या ॥ हवे १५ भेदे सिद्ध थाय ते कहे छे ॥ तीर्थ सिद्धा १ ॥ अतीर्थ सिद्धा २ ॥ तीर्थंकर सिद्धा ३ ॥ अतीर्थंकर सिद्धा ४ ॥ स्वयंबुद्ध सिद्धा ५ ॥ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा ६ ॥ बोधबोहि सिद्धा ७ ॥ स्वलिंग सिद्धा ८ ॥ अन्यलिंग सिद्धा ९ ॥ गृहलिंग सिद्धा १० ॥ पुरुषलिंग सिद्धा ११ ॥ स्त्रीलिंग सिद्धा १२ ॥ नपुंसक लिंग सिद्धा १३ ॥ एक सिद्धा १४ ॥ अनेक सिद्धा १५ ॥ हवे

अलिंग सिद्धा ने कहे छे ॥ पहेले समये १०८ मोक्ष जाय ॥ बीजे समये १०२ जाय ॥ त्रीजे समये ९६ जाय ॥ चोथे समये ८४ जाय ॥ पांचमे समये ७२ जाय ॥ छठे समये ६० जाय ॥ सातमे समये ४८ जाय ॥ आठमे समये ३२ जाय ॥

इति गतागतिद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥

हवे आठमुं संघयणद्वार कहे छे ॥

वज्रऋषभ नाराच संघयण १ ॥ ऋषभ नाराच संघयण २ ॥ नाराच संघयण ३ ॥ अर्धनाराच संघयण ४ ॥ किलक संघयण ५ ॥ छेवट्ठ संघयण ६ ॥ हवे वज्रऋषभ नाराच ते केने कहिये ? जे अस्थिनां छेडा परस्पर वींटाया होय वच्चे अस्थिनी खिली अने अस्थिनो पाटो एवी रीते देहनी संधि सर्वे होय, ते प्रथम संघयण जाणवुं ॥ ऋषभ नाराच ते केने कहिये ? तेने बन्ने पासे अस्थिना छेडा विंटाया होय अने उपर पाटो होय वच्चे खिली न होय, ए बीजुं संघयण जाणवुं ॥ ३ ॥ त्रीजुं नाराच ते केने

ठेका एक बाजुना विंटाया होय, बाजी सामा [illegible]
पासे खीली होय, ते चोथुं संघयण जाणवुं ॥ ४ ॥ पांचमुं किलक संघयण ते केने कहिये?
संधिनो अस्थि वच्चे उपरना ठेके आवी रहे अने वच्चे खीली होय पण उपर पाटो नहि
अने वच्चे अस्थिना प्रांत परस्पर विंटाया नहि ते पांचमुं संघयण जाणवुं ॥ ५ ॥ छठुं
छेवट्टु संघयण ते केने कहिये ते संघयण वच्चे खिली नहि पाटो नहि, वच्चे बाजु
अस्थिनां ठेका परस्पर विंटाया नहि एवा अव्यवस्थित अस्थिना सांधा, सामसामा अडकी
रहे अने अति नबळुं ते छठुं छेवट्टु संघयण जाणवुं ॥ ६ ॥ नारकी देवता असंघयणी, ५
एकेंद्रिय, ३ विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम ने मनुष्य समुर्छिम एटलाने छेवट्टुं
संघयण ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां संघयण ६ लाभे ॥ सिद्ध असंघ-
यणी जाणवा ॥

इति संघयणद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥

हवे नवमुं संठाणद्वार कहे छे ॥

समचउरंस संस्थान १ ॥ निगोह परिमंडल संस्थान २ ॥ सादि संठाण ३ ॥ वामन संठाण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ हुंड संठाण ६ ॥ हवे समचउरंस संठाण ते केने कहिये? जे चारे बाजु सरखुं होय ॥ पद्मासन बेठां जेटलुं बन्ने जानुनुं आंतरुं ॥ तेटलुं वळी आसनने ललाटनुं आंतरुं ॥ वळी तेटलुंज आंतरुं डाबा जानुथी जमणा स्कंध सुधी, अने जमणा जानुथी डाबा स्कंध सुधी, एटले चारे बाजु सरखुं आंतरुं होय ते समचउरंस संठाण जाणवुं ॥ १ ॥ निगोह परिमंडल संठाण ते केहने कहिये ? जे वडवृक्षनी माफक उपर पूर्ण अने नाभीथी नीचे हीनांग ते बीजुं संठाण जाणवुं ॥ २ ॥ सादि संठाण ते केहने कहिये? जे नाभी नीचे गुरुमान प्रमाण, पग कटी जानु प्रमुख सर्व रूडुं होय, अने नाभीथी उपलो भाग पाधरो होय, हैयुं हाथ माथु मुख प्रमुख अति कुराहनि होय ते त्रीजुं संठाण जाणवुं ॥ ३ ॥ कुब्ज संठाण ते केने कहिये? जे सम्थाने मात्र पग [illegible]

जाणवुं ॥ ४ ॥ वामन संठाण ते केने कहिये ? जे पूर्वना चोथाथी उपरांतुं होय ते पांचमुं संठाण जाणवुं ॥ ५ ॥ हुंरु ते केहने कहिये ? रुंढ मूंढ मृगापुत्र लोढीयानी माफक अंगे अवयवे करी अलक्षण होय, सर्वांगे पारुवो ते ठवुं हुंरु संठाण जाणवुं ॥ ६ ॥ देवताने नवधारणीय सम चउरंस संठाण, वैक्रेय शरीर करे तो नाना संठाण संठिया, बार देवलोक सुधी वैक्रेय करे, ते उपरांत न करे ॥ नारकी नवधारणीय अने वैक्रेय शरीर करे तोये हुंरु संठाण ॥ पृथ्वीने हुंरु संठाण पण चंद्राकारे तथा मसुरनी दाळने आकारे ठे ॥ अपने हुंरु संठाण पण जळना परपोटानो आकार ठे ॥ तेउने हुंरु संठाण पण सोयना नारानी अणीनो आकार ठे ॥ वायुने हुंरु संठाण पण ध्वजा पताकानो आकार ठे ॥ वनस्पतिने हुंरु संठाण पण नाना प्रकारनो आकार ठे ॥ विगलेंड्रिय, समुर्छिम तिर्यंच पंचेंड्रिय, मनुष्य समुर्छिमने हुंरु संठाण ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय गर्भज, ने मनुष्य गर्भजने ठए संठाण होय ॥ ए ॥

इति संठाणद्वार संपूर्ण ॥ ए ॥

हवे दसमुं वेद द्वार कहे छे ॥

वेद ३, ते स्त्रीवेद १ ॥ पुरुषवेद २॥ नपुंसकवेद ३ ॥ नारकी, एकेंद्रिय, विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम, समुर्छिम मनुष्य ए सर्वने १ नपुंसक वेद जाणवुं ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां वेद ३ लाभे ॥ देवतामां वेद २ ॥ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ॥ ते भवनपति आदि देइ २ देवलोक सुधी वेद २ लाभे ॥ उपर सघला पुरुषवेदी जाणवा ॥ अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा गब्भवक्कंतिय मणुस्सा १ ॥ मनुसणी संखेज्जगुणी २ ॥ बादर तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ ॥ अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा ४ ॥ उवरीमगेविज्जगादेवा असंखेज्जगुणा ५ ॥ मज्झिमगेविज्जगादेवा संखेज्जगुणा ६॥ हेठीमगेविज्जगादेवा संखेज्जगुणा ७ ॥ अच्चुएकप्पे देवा संखेज्जगुणा ८ ॥ आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा ९ ॥ पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा १० ॥ आणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा ११ ॥ अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १२ ॥ छठीसमाए पुढवीए नेरइया अ- [illegible]

१५ ॥ पंचमाए धूम्मप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जागुणा ...
१५ ॥ पंचमाए धूम्मप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जागुणा १८ ॥ वंनलोए कप्पे देवा
गुणा १७ ॥ चउत्थीए पंकप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जागुणा १८ ॥
असंखेज्जागुणा १९ ॥ तच्चाए वालुयप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जागुणा २० ॥
माहिंदकप्पेदेवा असंखेज्जागुणा २१ ॥ ॥ सणंकुमार कप्पेदेवा असंखेज्जागुणा २२ ॥
दोच्चाए सक्करप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जागुणा २३ ॥ मनुच्छिम मणुसा
असंखेज्जागुणा २४ ॥ इसाणे कप्पे देवा असंखेज्जागुणा २५ ॥ इसाणे कप्पे देवीओ
संखेज्जागुणी २६ ॥ सुहम्मे कप्पे देवा संखेज्जागुणा २७ ॥ सुहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जागुणी
॥ २८ ॥ भवणवासी देवा असंखेज्जागुणा २९ ॥ भवणवासिणी देवीओ संखेज्जागुणी ३० ॥
इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जागुणा ३१ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिख
जोणिया पुरिसा असंखेज्जागुणा ३२ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिख जोणिणीओ संखेज्जागुणी
३३ ॥ थलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया पुरिसा संखेज्जागुणा ३४ ॥ थलयर पंचिं-
दिय तिरिख जोणिणीओ संखेज्जागुणी ३५ ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया पुरिसा

हवे दसमुं वेद द्वार कहे छे ॥

वेद ३, ते स्त्रीवेद १ ॥ पुरुषवेद २ ॥ नपुंसकवेद ३ ॥ नारकी, एकेंद्रिय, विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम, समुर्छिम मनुष्य ए सर्वने १ नपुंसक वेद जाणवुं ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां वेद ३ लाभे ॥ देवतामां वेद २ ॥ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ॥ ते भवनपति आदि देइ २ देवलोक सुधी वेद २ लाभे ॥ उपर सघला पुरुषवेदी जाणवा ॥ अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा गब्भवक्कंतिय मणुसा १ ॥ मनुसणी संखेज्जगुणी २ ॥ बादर तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ ॥ अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा ४ ॥ उवरीमगेविज्जगादेवा असंखेज्जगुणा ५ ॥ मज्झिमगेविज्जगादेवा संखेज्जगुणा ६ ॥ हेठीमगेविज्जगादेवा संखेज्जगुणा ७ ॥ अच्चुएकप्पे देवा संखेज्जगुणा ८ ॥ आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा ९ ॥ पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा १० ॥ आणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा ११ ॥ अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १२ ॥ छठीसमाए पुढवीए नेरइया अ-

[illegible]

वणस्सइकाइया अपजात्ता असंखेजगुणा ५ए ॥ वादर निगोदा
५ट ॥ पत्तेय सरीर वादर वणस्सइकाइया अपजात्ता असंखेजगुणा ६१ ॥ वादर
अपजात्ता असखेजगुणा ६० ॥ वादर पुढवीकाइया अपजात्ता असंखेजगुणा
आउकाइया अपजात्ता असंखेजगुणा ६२ ॥ वादर वाउकाइया अपजात्ता असंखेजगुणा
६३ ॥ सुहुम तेउकाइया अपजात्ता असंखेजगुणा ६४ ॥ सुहुम पुढवी काइया अपजात्ता
विसेसाहिया ६५ ॥ सुहुम आउकाइया अपजात्ता विसेसाहिया ६६ ॥ सुहुम वाउकाइया
अपजात्ता विसेसाहिया ६७ ॥ सुहुम तेउकाइया पजात्ता संखेजगुणा ६ट ॥ सुहुम पुढवी
काइया पजात्ता विसेसाहिया ६ए ॥ सुहुम आउकाइया पजात्ता विसेसाहिया ७० ॥ सुहुम
वाउकाइया पजात्ता विसेसाहिया ॥ ७१ ॥ सुहुम निगोदा अपजात्ता असंखेजगुणा ७२ ॥
सुहुमनिगोदा पजात्ता संखेजगुणा ७३ ॥ अजवसिद्धिया अणंतगुणा ७४ ॥ पमिवाइ सम्म-
दिठ्ठि अणंतगुणा ७५ ॥ सिद्ध अणंतगुणा ७६ ॥ वादर वणस्सइ काइया पजात्ता अणत-
गुणा ७७ ॥ पजात्ता विसेसाहिया ७ट ॥ वादर वणस्सइ काइया अपजात्ता असंखेजगुणा
७ए ॥ वादर अपजात्ता विसेसाहिया ट० ॥ समुच्चय वादर विसेसाहिया ट१ ॥ सुहुम

संखेज्जगुणा ३६ ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिणीओ संखेज्जगुणी ३७ ॥ वाणवंतर देवा संखेज्जगुणा ३८ ॥ वाणवंतरवासि देवीओ संखेज्जगुणी ३९ ॥ जोइसिया देवा संखेज्जगुणा ४० ॥ जोइसिणी देवीओ संखेज्जगुणी ४१ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया नपुंसगा संखेज्जगुणा ४२ ॥ थलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया नपुंसगा संखेज्जगुणा ४३ ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया नपुंसगा संखेज्जगुणा ४४ ॥ चउरिंदिया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ४५ ॥ पंचिंदिया पज्जत्ताय विसेसाहिया ४६ ॥ बेइंदिया पज्जत्ता विसेसाहिया ४७ ॥ तेइंदिया पज्जत्ता विसेसाहिया ४८ ॥ पंचिंदिया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ४९ ॥ चउरिंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया ५० ॥ तेइंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया ५१ ॥ बेइंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया ५२ ॥ पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५३ ॥ बायर निगोदा पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५४ ॥ बायर पुढवी काइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५५ ॥ बायर आउकाइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५६ ॥ बायर वाउकाइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५७ ॥ बायर तेउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा

५८ ॥ पत्तेय सरीर बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५९ ॥ बादर निगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६० ॥ बादर पुढवीकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६१ ॥ बादर आउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६२ ॥ बादर वाउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६३ ॥ सुहुम तेउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६४ ॥ सुहुम पुढवी काइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६५ ॥ सुहुम आउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६६ ॥ सुहुम वाउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६७ ॥ सुहुम तेउकाइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ६८ ॥ सुहुम पुढवी काइया पज्जत्ता विसेसाहिया ६९ ॥ सुहुम आउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ७० ॥ सुहुम वाउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ७१ ॥ सुहुम निगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ७२ ॥ सुहुमनिगोदा पज्जत्ता संखेज्जगुणा ७३ ॥ अभवसिद्धिया अणंतगुणा ७४ ॥ पडिवाइ सम्म-दिट्ठि अणंतगुणा ७५ ॥ सिद्ध अणंतगुणा ७६ ॥ बादर वणस्सइ काइया पज्जत्ता अणंत-गुणा ७७ ॥ पज्जत्ता विसेसाहिया ७८ ॥ बादर वणस्सइ काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ७९ ॥ बादर अपज्जत्ता विसेसाहिया ८० ॥ समुच्चय बादर विसेसाहिया ८१ ॥ सुहुम

वणस्सइ काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ७२ ॥ सुहुम अपज्जत्ता विसेसाहिया ७३ ॥ सुहुम वणस्सइ काइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ७४ ॥ सुहुम पज्जत्ता विसेसाहिया ७५ ॥ समुच्चय सुहुमा विसेसाहिया ७६ ॥ भवसिद्धिया विसेसाहिया ७७ ॥ निगोद जीवा विसेसाहिया ७८ ॥ वणस्सइ काइया जीवा विसेसाहिया ७९ ॥ एगिंदिया जीवा विसेसाहिया ८० ॥ तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया ८१ ॥ मिच्छदिट्ठी विसेसाहिया ८२ ॥ अविरया जीवा विसेसाहिया ८३ ॥ सकसाइया विसेसाहिया ८४ ॥ छउमत्थजीवा विसेसाहिया ८५ ॥ सजोगी जीवा विसेसाहिया ८६ ॥ संसारत्थाजीवा विसेसाहिया ८७ ॥ सव्वजीवा विसेसाहिया ८८ ॥ ए अठाणुं बोलनो अल्प बहुत्व जाणवो ॥ सर्वथी थोडा पुरुषवेद ॥ १ ॥ तेथी स्त्रीवेद संख्यातगुणो ॥ २ ॥ तेथी नपुंसकवेद अनंतगुणा ॥ ३ ॥ मनुष्य पुरुषथी मनुष्यणी स्त्री २७ गुणी अधिक ॥ देवताथी देवी ३२ गुणी अधिक ॥ तिर्यंचथी तिर्यंचणी ३ गुणी अधिक ॥ पुरुषनो विषय [illegible] पुला सरिखो ॥ स्त्रीनो विषय [illegible] विकोना ताप सरिखो ॥ नपुंसकनो विषय [illegible] सरिखो ॥ [illegible]

...जा देवलोक सुधीमां मनुष्यनी माफक जोग छे ॥ ते उपरना वे देवलोके स्पर्शनो जोग छे ॥ ते उपरना वे देवलोके रूपनो जोग छे ॥ ते उपरना वे देवलोके शब्दनो जोग छे ॥ ते उपरना ४ देवलोके मननो जोग छे ॥ ते उपरांत देवताने जोग नथी.

॥ इति वेदद्वार संपूर्ण ॥ १० ॥

हवे जोगद्वार कहे छे ॥

जोग १५, तेमां मनना ४ ते साचुं मन १ ॥ जूठुं मन २ ॥ मिश्र मन ३॥ व्यवहार मन ४॥ वचनना जाग ४ ते साचुं वचन १ ॥ जूठुं वचन २ ॥ मिश्र वचन ३ ॥ व्यवहार वचन ४ ॥ कायाना जोग ७ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ आहारक ५ ॥ आहारकनो मिश्र ६ ॥ कार्मण कायजोग ७॥ नारकी देवताने जोग ११ ते मनना ४ ॥ वचनना ४ ॥ कायाना ३ ते वैक्रेय १ वैक्रेयनो मिश्र २ कार्मणकाय जोग ॥ ॥ पृथ्वी १ अप २ तेउ ३ वनस्पति ४ ए ४ ने जोग ३ ॥

दारिकनो १ उदारिकनोमिश्र २ कार्मण कायजोग ३ ॥ वायुने जोग ५ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ कार्मणकाय जोग ५ ॥ विगलेंद्रियने जोग ४ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ कार्मण काय जोग ३ ॥ व्यवहार भाषा ४ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिमने विगलेंद्रियनी माफक जाणवुं ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजने जोग १३ ते मनना ४ ॥ वचनना ४ ॥ उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ कार्मण काय जोग ५ ॥ ए ५ कायाना मळी १३ जोग जाणवा ॥ मनुष्य समुर्छिमने जोग जेम विगलेंद्रियने तेम जाणवा ॥ मनुष्य गर्भजने जोग १५ जाणवा ॥ सिद्ध अजोगी कहीये ॥

इति जोगद्वार संपूर्ण ॥ ११ ॥

हवे उपयोग द्वार कहे छे ॥

॥ चक्षुदर्शन ९ ॥ अचक्षु-
दर्शन १० ॥ अवधिदर्शन ११ ॥ केवलदर्शन १२ ॥ ए १२ उपयोग २४ दंडक उपर उतारे छे ॥ नारकीने उपयोग ए, ते केवलज्ञान, केवलदर्शन, मन॰पर्यवज्ञान ए ३ वर्जीने बाकीना ए जाणवा ॥ तेमां समदृष्टिने ६ उपयोग, ३ अज्ञान नहि ॥ मिथ्यात्वीने ६ उपयोग, ३ ज्ञान नहि ॥ देवताने ए उपयोग समुच्चये नारकीनी परे ॥ तेमां समदृष्टिने ६ उपयोग, ३ अज्ञान नहि ॥ मिथ्यात्वीने ६ उपयोग, ३ ज्ञान नहि ॥ नवरं अनुत्तर विमाने ६ उपयोग, त्यां ३ अज्ञान नहि ॥ पांच एकेंद्रियने ३ उपयोग, ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ अचक्षुदर्शन ३ ॥ बेइंद्रिय तेइंद्रियने उपयोग ५ ते मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ मतिअज्ञान ३ ॥ श्रुत अज्ञान ४ ॥ अचक्षु दर्शन ५ ॥ चउरिंद्रियने ६ उपयोग तेमां चक्षुदर्शन वध्यो ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिमने चउरिंद्रियनी माफक ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भजने नेरइयानी माफक ॥ मनुष्य समुर्छिमने उपयोग ४ ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत-अज्ञान २ ॥ चक्षुदर्शन ३ ॥ अचक्षुदर्शन ४ ॥ मनुष्य गर्भज ने उपयोग १२ लाभे ॥

हवे दृष्टिद्वार कहे छे ॥

दृष्टि ३, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ मिश्रदृष्टि ३ ॥ नारकी देवताने ३ दृष्टि लाभे ॥ नव ग्रैवेयकमां दृष्टि २, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ अनुत्तर विमाने दृष्टि १ समकित ॥ एकेंद्रियने दृष्टि १ मिथ्यात्व ॥ विगलेंद्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिमने दृष्टि २, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ मनुष्य समुर्छिमने दृष्टि १ मिथ्यात्व ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भजने दृष्टि ३ लाभे ॥ सिद्धमां दृष्टि १ समकितनी लाभे ॥

इति दृष्टिद्वार संपूर्ण ॥ १५ ॥

हवे पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥

पर्या ६, ते आहार पर्या १ ॥ शरीर पर्या २ ॥ इंद्रिय पर्या ३ ॥ श्वासोश्वास पर्या [illegible] पर्या ५ ॥ [illegible] पर्या ६ ॥ नारकी देवताने ॥ पर्या ५ [illegible] बांधे ॥

ंद्रिय समुर्छिमने पर्या ५ पहेला ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजने मनुष्य गर्भजने पर्या ६ जाणवी ॥ सिद्धने पर्या नथी ॥

इति पर्याद्वार संपूर्ण ॥ १६ ॥

हवे प्राणद्वार कहे छे ॥

प्राण १०, ते इंद्रिय ५, ३ जोग ८, श्वासोच्छ्वास ९, आउखुं १० ॥ नारकी देवताने प्राण १० ॥ एकेंद्रियने प्राण ४ ॥ स्पर्शेंद्रिय १ ॥ कायबल २ ॥ श्वासोच्छ्वास ३ ॥ आउखुं ४ ॥ बेइंद्रियने प्राण ६ तेमा मुख अने वचन ए बे वध्या ॥ तेइंद्रियने प्राण ७ ते नासिका वधी ॥ चउरिंद्रियने प्राण ८ ते चक्षु वधी ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिमने प्राण ९ ते कान वध्यो ॥ मनुष्य समुर्छिमने प्राण ८ ते मनबल वचनबल ए बे नहि ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजने, मनुष्य गर्भजने प्राण १० ॥ सिद्धने द्रव्य प्राण नथी पण भाव प्राण ४ छे ॥

इति प्राणद्वार संपूर्ण ॥ १७ ॥

हवे नाण अनाणद्वार कहे छे ॥

ज्ञान ५, ते मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ अवधिज्ञान ३ ॥ मन:पर्यवज्ञान ४ ॥ केवलज्ञान ५ ॥ त्रण अज्ञान ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ विभंग ज्ञान ३ ॥ नारकीने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नी भजना ॥ भवनपति वाणव्यंतरने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नी भजना ॥ ज्योतिषी वैमानिकने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नियमा ॥ नवरं अनुत्तर विमाने ज्ञान ३ प्रथम छे, अज्ञान नथी ॥ एकेंद्रिय ५ ने मतिअज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ विगलेंद्रियने तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिमने मतिनाण श्रुतनाण ॥ मति-अनाण श्रुतअनाण ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजने ज्ञान ३ अने अज्ञान ३ नी भजना ॥ मनुष्य समुर्छिमने मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान ॥ मनुष्य गर्भजने ज्ञान ५, अज्ञान ३ नी भजना ॥ पहेली नरके नारकी उत्कृष्टो ४ गाउ देखे, जघन्य ३॥ गाउ देखे ॥ बीजी नरके नारकी उत्कृ० ३॥ गाउ देखे, ज० गाउ ३ देखे ॥ त्रीजी नरके उत्कृ० गाउ ३ देखे, ज० २॥ गाउ देखे ॥ चोथी नरके उत्कृ० २॥ गाउ, ज० २ गाउ देखे ॥ पांचमी नरके

[illegible]

उत्० २ गाउ, ज० १॥ गाउ देखे ॥ छठीए उ० १॥ अने ज० १ गाउ देखे ॥ सातमीए उ० १ गाउ देखे, ज० अर्द्धगाउ देखे ॥ एवु चारे दिशे देखे ॥ हवे असुर कुमार ज० २५ जोजन देखे, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे॥ तेना नवनिकाय ज० २५ जोजन, उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ज० आंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ मनुष्य गर्भज ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० असंख्याता द्वीप समुद्र देखे ॥ वली जेवडो लोक तेवडां असंख्याता खांडुयां अलोकमांहि देखे ॥ व्यंतर ज० २५ जोजन देखे, उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ ज्योतिषी ज० उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ वैमानिक पहेला बीजा देवलोकना देवता ज० २५ जोजन देखे, उ० नीचे पहेली नरक सुधी देखे, त्रिछुं असंख्याताद्वीप समुद्र देखे, उंचे पोताना विमाननी ध्वजा सुधी देखे ॥ त्रीजा चोथानां बीजी नरक सुधी देखे ॥ उंचु त्रिछुं पहेला २ देवलोकनी माफक जाणवुं॥ पांचमा छठाना त्रीजी नरक सुधी देखे॥ उंचुत्रिछुं तेमज जाणवुं ॥ सातमा आठमाना चोथी नरक सुधी देखे ॥ उंचु त्रिछु जिम

पठमे ॥ नवमा, दशमा, अग्यारमा, बारमाना पांचमी नरक सुधी देखे ॥ ऊंचु त्रिछुं जिम पढमे ॥ नव ग्रैवेयकना छठी नरक सुधी देखे ॥ ऊंचु त्रिछुं जिम पढमे ॥ चार अनुत्तर विमानना सातमी नरक सुधी देखे ॥ ऊंचु त्रिछुं जिम पढमे ॥ सर्वार्थसिद्धना आखी लोकनाली कांइक उणी देखे ॥ सिद्ध लोकालोक समस्त देखे ॥

इतिनाण अनाणद्वार संपूर्ण ॥ १८ ॥

हवे १९ मुं संजतिद्वार कहे छे ॥

संजति आदि आठ बोलना चोवीस भेद कहे छे ॥ संजति १ ॥ असंजति २ ॥ संजतासंजति ३ ॥ व्रति १ ॥ अव्रति २ ॥ व्रताव्रति ३ ॥ पच्चखाणी १ ॥ अपच्चखाणी २ ॥ पच्चखाणापच्चखाणी ३ ॥ पंडिया १ ॥ अपंडिया २ ॥ पंडियापंडिया ३ ॥ सुत्ता १ ॥ जागरिया २ ॥ सुत्ताजागरिया ३ ॥ संवुडा १ ॥ असंवुडा २ ॥ संवुडासं-

नारकी देवता एकेंद्रिय विगलेंद्रिय तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्च्छिम, मनुष्य समुर्च्छिम ए सर्व असंजति, अव्रति, अपच्चखाणी, अपंडिया, अजागरा, असंवुडा, अधम्मिया, अधम्मववसाइया एटला बोल जाणवा ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज संजतासंजति आदि देइ यावत् धम्माधम्मववसाइया ए १६ बोल जाणवा ॥ मनुष्य गर्भजमां एकेका बोलना त्रण त्रण प्रकार गणतां २४ बोल लाभे ॥ सिद्धने एमानो एके बोल न लाभे ॥

इति संजतिद्वार संपूर्ण ॥ १९ ॥

हवे २० मुं आहारद्वार कहे छे ॥

आहारना त्रण प्रकार॥ ओज आहार जे समस्त जीव उपजतां करे ते कहीए १ ॥ रोम आहार जे त्वचाए करी ग्रहण करे ते कहीए २ ॥ कवल आहार ते कवल करी पुद्गल ग्रहण करे ते कहीए ३ ॥ नारकीने आहार २ ते ओज अने रोम॥ चिंतव्या पछी ... समनोज्ञपणे परिणमे ॥ देवताने आहार २ ओज अने रोम ॥ चिंतव्या पछी

ुन्न मनोज्ञकारिया परिणमे ॥ एकेंद्रिय पांचेने आहार २ ते ओज अने रोम, ते शुभा-
ुभपणें परिणमे ॥ ३ विगलेंद्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम अने गर्भज, मनुष्य गर्भज
एटलाने आहार ३ जाणवा ॥ मनुष्य समुर्छिमने आहार २ ते ओज अने रोम ॥ सिद्ध
अणाहारी जाणवा ॥

इति आहार द्वारसंपूर्ण ॥ २० ॥

हवे वीजे प्रकारे २१ मुं आहारद्वार कहे छे ॥

आहार ३, ते सचित्त १ ॥ अचित्त २ ॥ मिश्र ३ ॥ नारकी देवता अचित्त आहार
लिये, बाकी सघळा त्रण आहार लिये, सिद्ध एके आहार न लिये ॥

इति २१ मुं आहारद्वार संपूर्ण ॥ २१ ॥

हवे २२ मुं छट्ठा आहारद्वार कहे छे ॥

जं० चउत्थ भत्ते, उ० पृथक्
हजार झाझेरा वर्षे आहारनी इछा उपजे ॥ तेना नवनिकायने जं० चउत्थ भत्ते, उ० पृथक् दिवसे॥ व्यंतरने जं० चउत्थ भत्ते, उ० पृथक् दिवसे ॥ ज्योतिषीने जघनोत्कृष्ट पृथक् दिवसे॥ वैमानिकने जं० पृथक् दिवसे, उ० ज्यां जेटला सागर आयु त्यां तेटला हजार वर्षे आहार लेवानी इछा उपजे ॥ ज्यां झाझेरा सागर त्यां झाझेरा हजार वर्षे आहारनी इछा उपजे॥ एकेंद्रिय पांचेने समये समये आहारनी इछा उपजे ॥ विगलेंद्रियने अंतर्मुहूर्त्ते इछा उपजे ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियने छठ भत्ते आहारनी इछा उपजे ॥ मनुष्यने अठम भत्ते इछा उपजे ॥ देवकुरु उत्तरकुरुए अठम भत्ते ॥ हरिवास रम्यकवासे छठ भत्ते ॥ हेमवय एरणवए चउत्थ भत्ते आहारनी इछा उपजे ॥ सिद्ध अणाहारी ॥

इति २२ मुं इछा आहारद्वार संपूर्ण ॥ २२ ॥

हवे २३ मुं कायस्थितिद्वार कहे छे ॥

नारकी देवताने जेने जेटली आयुस्थिति छे तेने तेटली कायस्थिति जाणवी ॥

पुढवी अप तेउ वायुमां गयो थको जीव कालथी असंख्याती उत्सार्प्पिणी अवसार्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रथी असंख्याता लोक पुरे ॥ ते लोकनुं मान—लोकक्षेत्र मांहि १ मनथी कल्पीने आंगुल क्षेत्र भाग, चिंतवीए, ते १ आंगुल क्षेत्रमांहि एटला आकाश प्रदेश छे ॥ ते आकाश प्रदेश समये समये एकेको काढीए तो ते १ आंगुल क्षेत्रे असंख्याती उत्स-र्प्पिणी अवसर्प्पिणीए अवहराय कहेतां ठलवाय ॥ एक हाथ तथा १ धनुष्य तथा १ गाउ क्षेत्र ठलवातां केटलो काल थाय ? ते असंख्याती उत्सार्प्पिणी अवसार्प्पिणी काल ठलवातां थाय ॥ एम आखो लोक ठलवातां पण एटलो काल थाय, एटले १ लोके, एम असख्यांता लोक ठलवातां जेटलो काल थाए तेटली असंख्याती उत्सार्प्पिणी अवसर्प्पिणी जाणवी ॥ ए उत्कृष्टो काल कह्यो ॥ जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी ॥ बादर काय पृथिव्यादि एकेकी मांहि गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ए उत्कृष्टो काळ जाणवो, ज० अंतर्मुहूर्त्त रहे ॥ वनस्पति कायमां गयो थको काले अनंती उत्सार्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अनंता लोक पुरे ॥ असंख्याता [illegible]

असंख्यातानु मान कह्यं ॥ ...

असंख्यातानु मान कहे ७ ॥ ... एकली सूक्ष्म निगोदमां गयो थको काले
पुद्गल परावर्त्तन करे, ज० अंतर्मुहूर्त्त ॥ १ ॥ एकली सूक्ष्म निगोदमां गयो थको काले असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे असंख्याता लोक पुरे ॥ २ ॥ सूक्ष्म अने वादर निगोद ए वेमां गयो थको, काले अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अनंता लोक अढि पुद्गल परावर्त्तन करे ॥ ३ ॥ एकली वादर निगोदमां गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ४ ॥ प्रत्येकमां गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ५ ॥ वादर निगोद प्रत्येक वनस्पतिमां गयो थको, काले असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अंगुलनो असंख्यातमो भाग, ते तेना जेटला आकाश प्रदेश थाय तेटला पुद्गल परावर्त्तन करे ॥ बेइंद्रियमांहि गयो थको संख्याता वर्ष रहे ॥ तेइंद्रिय मांहि गयो थको संख्याता दिवस रहे ॥ चउरिंद्रियमांहि गयो थको संख्याता मास रहे ॥ पंचेंद्रिय तिर्यंचमांहि गयो थको केटलो काल रहे ? जे असंख्याता आउखानां तिर्यंच छे तेने तेज भव कायस्थिति ॥ जे संख्याता आउखानां तिर्यंच ते उत्कृष्टा सत्तव भव

करे ॥ मनुष्यने पण एमज तिर्यचनी परे जाणवुं, ज० समस्तने अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी ॥

इति कायस्थितिद्वार संपूर्ण ॥ २३ ॥

हवे २४ मुं समुद्‌घातद्वार कहे छे ॥

समुद्‌घात ७, ते वेदनीय समुद्‌घात १ ॥ कषाय समुद्‌घात २ ॥ मारणांतिक समुद्‌घात ३ ॥ वैक्रेय समुद्‌घात ४ ॥ तेजस् समुद्‌घात ५ ॥ आहारक समुद्‌घात ६ ॥ केवल समुद्‌घात ७ ॥ नारकीने पहेली ४ ॥ देवताने पहेली ५ ॥ पुढवी अप तेउ वनस्पति ए ४ ने पहेली ३ ॥ वायुने पहेली ५ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्च्छिम अने मनुष्य समुर्छिमने पहेली ३ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजने पहेली ५ ॥ मनुष्य गर्भजने ७ समुद्‌घात लाभे ॥ सिद्धमा एके समुद्‌घात न लाभे ॥

इति समुद्‌घातद्वार संपूर्ण ॥ २४ ॥

समस्त संसारी जीवनी एक कोमी साम्री सत्ताणु लाख कुलकोमी छे ॥ नारकीनी २५ लाख कुलकोमी ॥ देवतानी २६ लाख ॥ पृथ्वीनी १२ लाख ॥ अपनी ७ लाख ॥ तेउनी ३ लाख ॥ वाउनी ७ लाख ॥ वनस्पतिनी २८ लाख कुलकोमी ॥ बेइंद्रियनी ७ लाख ॥ तेइंद्रियनी ८ लाख ॥ चउरिंद्रियनी ए लाख ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय जलचरनी १२॥ लाख ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय थलचरनी १० लाख ॥ खेचरनी १२ लाख ॥ उरपरनी १० लाख ॥ भुजपरनी ए लाख ॥ मनुष्यनी १२ लाख कुलकोमी॥ कुलकोमीनो शुं अर्थ? कुल ते जे जोनी थकी उपजे ॥ जेम एक ठाणने पोमळे वींछीनां कुल घणां उपजे, तेम एकेंद्रियने घणाय कुल उपजे ॥ ते कुलनी कोमी कहे छे ॥

गाथा—एगंदिएसु पंचसु वारं, सगति सत्त अठवीसाय ॥
विगलेसु सत्त अठ नव, जल खह चउपय उरग भूयगे ॥ १ ॥
अऊतेरस वारस, दस दस नवगं नरामरे निरए ॥

वारस वीस पणविस, हुंति कुलकोमी लखाइं ॥ २ ॥
इगकोमि सत्त नवइ, लक्खा सढा कुलाण कोमीणं ॥
इइ संगहणी गंथे, कहिता पूव्वसूरिहिं ॥ ३ ॥
सिद्धने कुलकोमी एके नहि ॥ इति कुलकोमीद्वार संपूर्ण ॥ २५ ॥

हवे २६ मुं सोपकर्मी नोपकर्मी आयुष्यनुं द्वार कहे छे ॥

बे प्रकारे आयुष्य छे ॥ एक नोपकर्म्मी, बीजुं सोपकर्म्मी ॥ नारकी देवता तीर्थंकर चक्रवर्त्ती बलदेव वासुदेव असंख्याता वर्षनां आयुष्यनां तिर्यंच मनुष्य जुगलीया ए सर्वेनुं नोपकर्म्मी आयुष्य जाणवुं. बाकी सर्वमां नोपकर्म्मी सोपकर्म्मी ए बन्ने आयुष्य होय ॥ सिद्धमां आयुष्य बेमानुं एके नहि ॥

इति नोपकर्म्मी सोपकर्म्मी आयुष्यद्वार संपूर्ण ॥ २६ ॥

गाथा—नाम १ गुण २ उववाय ३, ठिइ ४ विउ ५ चवण ६ संचिठणा ७ ॥
अंतर ८ अप्पाबहुयं ए, नवद्दारा पण देवाणं णेया ॥ १ ॥

ए ए द्वार तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे ॥ ज्ञविय द्रव्य देव ॥ १ ॥ नरदेव २ ॥ धर्मदेव ३ ॥ देवाधिदेव ४ ॥ ज्ञावदेव ५ ॥ १ ॥ हवे बीजुं गुणद्वार कहे छे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेने देवतामां उपजवुं छे तेने ज्ञविय द्रव्य देव कहिये ॥ १ ॥ चौदरत्न नव निधान जेने होय तेने नरदेव कहिये ॥ २ ॥ साधुना सत्याविश गुणे करी सहित अने समणेतिवा १ ॥ माहणेतिवा २ ॥ खंतीतिवा ३ ॥ दंतीतिवा ४ ॥ गुत्तीतिवा ५ ॥ मुत्तीतिवा ६ ॥ इसीतिवा ७ ॥ मुणीतिवा ८ ॥ विरतीतिवा ए ॥ विउ तिवा १० ॥ लुहेतिवा ११ ॥ ज्ञिक्खुतिवा १२ ॥ तीरत्थीतिवा १३ ॥ ए १३ नामेयुक्त होय तेने धर्मदेव कहिये ३ ॥ अढार दोष रहित ने बारगुणे करी सहित होय तेने देवाधिदेव कहिये ॥ अढार दोष ते कहे छे ॥ अज्ञान १ ॥ क्रोध २ ॥ मद ३ ॥ मान ४ ॥

माया ५ ॥ लोज ६ ॥ रति ७ ॥ अरति ८ ॥ निद्रा ए ॥ शोक १० ॥ असत्य ११ ॥ चोरी १२ ॥ मच्छर १३ ॥ जय १४ ॥ प्राणिवध १५ ॥ प्रेम १६ ॥ क्रिडाप्रसंग १७ ॥ हास्य १८ ॥ ए १८ दोष रहित ने १२ गुणे करी सहित ॥ ते १२ गुण कहे ठे ॥ ज्यां ज्यां जगवंत उना रहे बेसे समवसरे त्यां त्यां दश बोल सहित ते जगवंतथी बारगुणो उंचो तत्काल अशोकवृक्ष थइ आवे. स्वामिने ठांयडो करे ॥ १ ॥ जगवंत ज्यां ज्यां समवसरे त्यां त्या पांचवर्णा अचेत फुलनी वृष्टि थाय, ढिंचण प्रमाणे ढगला थाय ॥२॥ जगवंतनी जोजन प्रमाणे वाणी विस्तरे, सहुना मननो संशय हरे ॥ ३ ॥ जगवंतने चोविस जोड चामर विंझाय ॥ ४ ॥ स्फटिक रत्नमय पादपीठ सहित सिंहासन स्वामिने आगळे थाय ॥५॥ जामंडल थंबोडाने ठेकाणे तेज मंडल विराजे, दिशो दिशनां अंधकार टाळे ॥६॥ आकाशे साडीबार क्रोड गेबी वाजा वागे ॥७॥ जगवंतनी उपर त्रण छत्र उपराउपरी बिराजे ॥८॥ अनंतज्ञानातिशय ॥९॥ अनंत अर्चातिशय परमपूज्यपणुं ॥१०॥ अनंत वचनाति-शय ॥११॥ [illegible]

कहिये ॥ ४ ॥ भावदेव ते केने कहिये ॥ भवनपति १ ॥ वाणव्यंतर २ ॥ ज्योतिषी ३ ॥ वैमानिक ४ ॥ ए चार जातिना देवताने भावे प्रवर्ते ले तेने भावदेव कहिये ॥ ५ ॥ २ ॥ हवे त्रीजुं उववाय द्वार कहे छे ॥ भविय द्रव्य देवमां मनुष्य तिर्यंच १ ॥ जुगलीया २ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ३ ॥ ए त्रण ठाम वर्जिने बाकी सर्व ठामना आवी उपजे ॥ १ ॥ नरदेवमां ४ जातिना देवताने पहेली नरक, ए ५ ठामना आवी उपजे ॥ २ ॥ धर्म देवमां छठी सातमी नरक ॥ तेउ वाउ मनुष्य तिर्यंच जुगलीया, ए ६ ठाम वर्जिने शेष सर्व ठामना आवी उपजे ॥ ३ ॥ देवाधिदेवमां पहेली बीजी त्रीजी नरक ने किल्विषी वर्जिने, वैमानिक देवना आवी उपजे ॥ ४ ॥ भावदेवमां संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय १ संज्ञी मनुष्य २ ए २ ठामना आवी उपजे ॥ ५ ॥ ३ ॥ हवे चोथुं स्थिति द्वार कहे छे ॥ भविय द्रव्य देवनी जघ० अंत०, उत्० ३ पल्यनी १ ॥ नरदेवनी जघ० सातसे वर्षनी, उत्० चोराशीलाख पूर्वनी २ ॥ धर्मदेवनी जघ० अंत०, उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडिनी ३ ॥ देवाधिदेवनी जघ० बहुंतेर

वर्षनी, उत्० ७४ लाख पूर्वनी ४ ॥ भावदेवनी जघ० दशहजार वर्षनी, उत्० ३३ सागरनी ५ ॥ ६ ॥ हवे पांचमुं ऋद्धि तथा विकुवणा द्वार कहे छे ॥ भविय द्रव्य देवमां जेने वैक्रेय लब्धि उपजी होय तेनेज होय ॥ नरदेवने तो होयज ॥ धर्मदेवमां जेने लब्धि उपजी होय तेने होय ॥ भाव देवने तो होयज ॥ ए ४ वैक्रेय रूप करे तो ज० १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० संख्याता करे ॥ शक्ति तो असंख्याता रूप करवानी छे पण करे नहि ॥ देवाधिदेवनी शक्ति घणी छे पण करे नहि ॥ ५ ॥ हवे छठुं चवण द्वार कहे छे ॥ भविय द्रव्य देव चवी देवता थाय १ ॥ नरदेव चवी नरके जाय २ ॥ धर्म देव चवी वैमानिक तथा मोक्षमां जाय ३ ॥ देवाधिदेव तो मुक्ति जाय ४ ॥ भाव देव चवीने बादर पृथवी पाणी वनस्पतिमां ने गर्भज मनुष्य तिर्यंचमां जाय ॥ ५ ॥ ६ ॥ हवे सातमुं सचिठणा द्वार कहे छे ॥ संचिठणा ते देवनो देवपणे रहे तो केटला काळ रहे ते ॥ भविय द्रव्य देवनी संचिठणा जघ० अंत०, उत्० ३ पल्योपमनी १ ॥ नरदेवनी जघ० सातसें वर्षनी, उत्० ८४ लाख

देवनी जघ० बहुत्तेर वषना, उत्० ...

वर्षनी, उत्० ३३ सागरनी ५ ॥ ७ ॥ हवे आठमुं अंतरद्वार कहे छे ॥ नवियद्रव्य देवनुं आंतरुं पके तो जघ० दश हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनुं, उत्० अनंता काळनुं आंतरुं पके १ ॥ नरदेवनुं जघ० १ सागर जाफेरुं, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे ऊणुं २ ॥ धर्मदेवनुं जघ० २ पल्य जाफेरुं, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे ऊणुं ३ ॥ देवाधिदेवनुं आंतरुं नथी ४ ॥ नावदेवनुं जघ० अंत०, उत्० अनंता काळनुं ॥ ५ ॥ ८ ॥ हवे नवमुं अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोका नरदेव १ ॥ तेथी देवाधिदेव संख्यातगुणा २ ॥ तेथी धर्मदेव संख्यातगुणा ३ ॥ तेथी नविय द्रव्यदेव असंख्यात गुणा ४ ॥ तेथी नावदेव असंख्यातगुणा ५ ॥ ए ॥ ए अधिकार न० श० १२ में उ० ए में छे ॥

इति २७ मुं देवद्वार संपूर्ण ॥ २७ ॥

हवे २८ मुं जरा सोगद्वार कहे छे ॥

जे शरीरे करी वेदे ते जरा वेदनीय ॥ मने करी वेदे ते शोक वेदनीय ॥ नारकी देवता

ने तिर्यंच गर्भज, मनुष्य गर्भजने जरावेदनीय, अने शोक वेदनीय ए बे लाभे ॥ पांच एकेंद्रियने त्रण विगलेंद्रियने तिर्यंच मनुष्य समुर्च्छिम एटलाने एक जरा वेदनीय होय ॥ सिद्धने एके वेदनीय नहि ॥

इति जरासोगद्वार संपूर्ण ॥ २७ ॥

हवे २८ मुं परिग्रहद्वार कहे छे ॥

परिग्रह ३ प्रकारे ॥ कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ बाह्य भंडमतोवगरण परिग्रह ३ ॥ नारकी, पांच एकेंद्रियने कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ देवता, त्रण विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, अने मनुष्यने त्रण परिग्रह ॥ कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ बाह्यभंडमतोवगरण परिग्रह ३ ॥ सिद्धने परिग्रह एके नहि ॥

इति परिग्रहद्वार संपूर्ण ॥ २८ ॥

सांतर निरंतर आर कहे छे ॥

पाचसे त्रेसठ भेद जीवना ते १४ भेद नारकीना ॥ १ ॥ ४८ भेद तिर्यचनां ॥ २ ॥ ३०३ भेद मनुष्यनां ॥ ३ ॥ १९८ भेद देवतानां ॥ ४ ॥ एवं सर्व मळी ५६३ भेद जीवनां छे ॥ ते जीव सांतर निरंतर उपजे के चवे ? उत्तर पहेली नरके नारकी सांतर निरंतर उपजे अने निरंतर उपजे तो आवलीकाने १ असंख्यातमे भागे ॥ जेटला समय थाय तेटला समय लगे उपजे अने चवे ॥ आतरुं पके तो २४ मुहूर्त्तनु १॥ बीजी नरके सांतर निरंतर एमज जाणवो ॥ आंतरुं पके तो ७ दिवसनुं ॥ २ ॥ त्रीजी नरके सांतर निरंतर एमज, आतरुं पके तो १५ दिवसनुं ॥ ३ ॥ चोथी नरके सांतर निरतर एमज ॥ आंतरु पके तो मास १ नु ४ ॥ पाचमी नरके सांतर निरतर एमज ॥ आंतरुं पके तो मास २ नु ५ ॥ छठी नरके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरु पके तो मास ४ नुं ६ ॥ सातमी नरके सांतर निरतर एमज ॥ आंतरुं पके तो मास ६ नु ७ ॥ भवनपतिने सांतर निरतर एमज ॥ आंतरुं पके तो २४ मुहूर्त्तनुं ॥ पांच एकेन्द्रिय निरंतरज उपजे

॥ अने चवे पण निरंतरज, उपजवा चववामां आंतरुं नथी ॥ त्रण विगलेंद्रियने सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पके तो अंतर्मुहूर्त्तनुं ॥ तिर्यंच समुर्च्छिमने सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पके तो अंतर्मुहूर्त्तनुं ॥ तिर्यंच गर्भजने सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पके तो मुहूर्त्त १२ नुं ॥ मनुष्य समुर्च्छिमने सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पके तो २४ मुहूर्त्तनुं ॥ मनुष्य गर्भजने सांतर निरंतर एमज, ॥ आंतरुं ज० अंत०, उत्० १२ मुहूर्त्तनुं ॥ वाण०व्यंतर ज्योतिषी पहेला बीजा देवलोके सांतर निरं० एमज, आंत० २४ मुहूर्त्तनुं ॥ त्रीजे देवलोके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पके तो ए दिवस अने २० मुहूर्त्तनुं ॥ चोथे देवलोके सांतर निरंतर एमज, ॥ आंतरुं पके तो १२ दिवसने १० मुहूर्त्तनुं ॥ पांचमे देवलोके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पके तो २२॥ दिवसनुं ॥ छठे देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० ४५ दिवसनुं ॥ सातमे देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० ८० दिवसनुं ॥ आठमे देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० १०० दिवसनुं ॥ नवमे दशमे देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० संख्याता मासनुं ॥ अग्यारमा

रणएमज, आं० संख्याता वर्षनां सेंकडानुं ॥ बीजा त्रिके सांतर निर० एमज, आं० संख्याता वर्षनां
हजारनुं ॥ त्रिजी त्रिके सांतर निर० एमज, आंतरुं संख्याता वर्षनां लाखनुं ॥ चार अनुत्तर
विमाने सांतर निरं० एमज, आं० पल्यनां असंख्यातमा जागनुं॥ सर्वार्थसिद्ध विमाने सांतर
निरंतर एमज ॥ उपजे तो आवलीकाने असंख्यातमे जागे जेटला समय थाय तेटला
समय लगे उपजे अने चवे ॥ आंतरुं पल्यना संख्यातमा जागनुं पडे ॥ सिद्धनुं जघन्य
आंतरुं १ समयनुं, अने उत्कृष्टुं आंतरुं ६ मासनुं ॥ चार गतिमां समुच्चय पंचेंद्रिय
आश्रि आंतरुं ज० १ समयनुं, उ० १२ मुहूर्त्तनुं ॥ इंद्रस्याननुं ज० १ समयनुं, उ० ६
मासनुं आंतरुं पडे ॥

इति सांतर निरंतरद्वार संपूर्ण ॥ ३० ॥

॥ इति श्री महादंडक संपूर्ण ॥

न तेना ४ भेद ॥ हिंसानुबंधी कहेता हिंसाकारी जीवने हणवानुं ध्यान चिंतवे, तथा हिंसा करीने आनंद माने १ ॥ मृषानुबंधी कहेता मृषावाद बोलवानुं ध्यान चिंतवे, तथा मृषावाद बोलीने आनंद माने २ ॥ स्तेनानुबंधी कहेता चोरी करवानुं ध्यान चिंतवे, तथा चोरी करीने आनंद माने ३ ॥ संरक्षणानुबंधी कहेता मारवो कुटवो बांधवो बंधीखाने नखाववानो ध्यान चिंतवे, तथा पुर्वोक्त काम करी आनंद माने ४ ॥ हवे रौद्र ध्याननां ४ लक्षण कहे छे ॥ उसणदोसे कहेता जाणी प्रिछीने उत्तरगुण दशविध पच्चखाणने विषे दोष लगावे १ ॥ बहुदोसे कहेता मूलगुण ५ महाव्रतने विषे वारंवार दोष लगावे २ ॥ अन्नाणदोसे कहेता अज्ञान शास्त्र भणे, भणीने प्ररुपे, अज्ञान शास्त्र सांभळे, सांभळीने ते अधर्मने धर्म करी जाणे, धर्म अर्थे हिंसा करे ३ ॥ आमरणांत दोसे कहेता मरणनां अंत लगे पण मिथ्यात्वथी निवर्त्ते नहि, अने हिंसा पापने विषे प्रवर्त्ते, माठी चिंतवणानां परिणाम मरणांत लगे राखे तथा ते मरणने अंते पण पाप आलोवे नहि, निंदे नहि, प्रायश्चित्त प्रतिवर्जे नहि, मिच्छामिदुक्कडं पण देवे नहि ४ ॥ ए ४ रौद्रध्याननां लक्षण

कह्या ॥ ए ७ भेद बीजा रौद्रध्यानना थया ॥ इति द्वितीय रौद्राधिकारः ॥ २ ॥ धर्मध्यानना ४ भेद ॥ आज्ञाविचय कहेतां समकित सहित १२ व्रत श्रावकना, ११ श्रावकनी पडिमा, ५ महाव्रत साधुना, १२ पडिमा भिक्षुनी, ज्ञान दर्शन चारित्र तप छकायनी रक्षा, ए वीतरागनी आज्ञा आराधवी, चतुर्विध तीर्थना गुण कीर्त्तन करवां, ए प्रथम भेद ॥ १ ॥ अपायविचय कहेतां संसारमांहि जीव मिथ्यात्व १ ॥ अव्रत २ ॥ प्रमाद ३ ॥ कषाय ४ ॥ अशुभ जोग ५ ॥ तथा १८ पाप स्थानक, छकायनी हिंसा ए दुःखनां कारण जाणी, आश्रव मार्ग छांडी संवर मार्ग आदरवो, जेम जीव दुःख न पामे, ए बीजो भेद ॥२॥ विपाकविचय कहेतां जीवे जेवे रसे करी शुभाशुभ कर्म उपराज्यां छे ते शुभाशुभ कर्मना उदयथी सुख दुःख भोगवे छे ते भोगवतां राग-द्वेष करवो नहि, समभाव राखीये जेथी परम सुख पामीए, ए त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ संस्थानविचय कहेतां लोकना आकारनो तथा परिमंडलादि संठाणनो तथा ५ इंद्रियना आकारनो चिंतववो, ए चोथो भेद ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ लक्षण कहे छे ॥ आज्ञारुचि १ ॥ निसर्गरुचि २ ॥ सूत्ररुचि ३ ॥ उपदेशरुचि ४ ॥ तेमां

आज्ञारुचि, कहेतां वीतरागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे १ ॥ निसर्गरुचि कहेतां स्वभावथी, अथवा सांभळवाथी तथा जातिस्मरण ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म पाळवानी रुचि उपजे २ ॥ सूत्ररुचि कहेतां कालिक उत्कालिक तद्व्यतिरिक्त सूत्र सांभळवानी-भणवानी रुचि उपजे ३ ॥ उपदेशरुचि कहेतां मिथ्यात्व १ ॥ अव्रत २ ॥ प्रमाद ३ ॥ कषाय ४ ॥ जोगे ५ ॥ करी उपार्ज्यां कर्म, सम्यक्त्व १ ॥ व्रत २ ॥ अप्रमाद ३ ॥ अकषाय ४ ॥ अजोगे ५ ॥ करी खपाविये, तथा ५ इंद्रियना विषय शब्द रूप गंध रस स्पर्श करी उपार्ज्यां कर्म ते तप रूप संवरे करी खपाविये, एवो तीर्थंकरनो उपदेश सांभळी तप संवर आदरिये ॥ जेम दुःख न पामीए एवो धर्म करवानी रुचि उपजे तेने उपदेशरुचि कहीए ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ आलंबन कहे छे ॥ वाचना १ ॥ पृच्छना २ ॥ पर्यटना ३ ॥ धर्मकथा ४ ॥ तेमां विनय सहित ज्ञानने अर्थे निर्जराने अर्थे भोनार्थे गुरुनो समीपे भणवो- ..... ते वाचना १ ॥ अपूर्व ज्ञान पामवाने अर्थे जि

'जेवा भाव' प्ररूप्या छे ते भाव ग्रहीने शंकादि रहितपणे पोतानी निर्जरा अथवा परोपकार
अर्थे सभा मध्ये तेवा प्ररूपे ते धर्मकथा ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ अनुप्रेक्षा कहे छे ॥ एक-
त्वानुप्रेक्षा १ ॥ अनित्यानुप्रेक्षा २ ॥ अशरणानुप्रेक्षा ३ ॥ संसारानुप्रेक्षा ४ ॥ तेमां एक-
त्वानुप्रेक्षा ते जीव निश्चयनये एकलो ज छे, बीजा पुद्गलिक पदार्थो जूदा छे, खावापीवा
मोजमजाओ करवी ए बधी कर्मथी थाय छे ने ते कर्म पुद्गल छे माटे कर्म पुद्गल उप-
रथी प्रीति उतारी एक पोतानो आत्मा अनंत ज्ञानमयी उपर उपयोग राखवो एवा एक-
त्वपणानी भावना, ते एकत्वानु प्रेक्षा १ ॥ अनित्यानुप्रेक्षा ते रूपी पुद्गलना अनेक प्रकारे
यत्न करीए तोपण रहे नहि ते भणी नित्य एक श्री-जैनधर्म ते परम सुखदायी पोताना
आत्माने माटे आत्मा जाणीने समकितादिक संवरे करी पुष्ट करीए जेथी निराबाध सुख
पामीए ते अनित्यानुपेक्षा २ ॥ अशरणानुप्रेक्षा ते आ भवने विषे पहोचता जीवने एक
समकितपूर्वक जैन धर्म विना बीजुं कोई शरण नथी एम जाणी धर्मनुं शरण अंगीकार

करीए, ते अशरणानुप्रेक्षा ३ ॥ संसारानुप्रेक्षा ते आ जीवने संसाररूप समुद्रने विषे परि-
भ्रमण करता जगतना जीवने जैन धर्मरूप द्वीपानो आधार छे, बीजुं कोई शरण नथी ते
संसारानुप्रेक्षा ४ ॥ ए धर्मध्यानना १६ भेद कह्या ॥ इति तृतीय धर्मध्यानाधिकारः॥३॥
हवे शुक्लध्यानना ४ भेद ॥ पृथक्त्ववितर्कसविचारी १ ॥ एकत्ववितर्कअविचारी २ ॥
सूक्ष्म क्रिय अप्रतिपाति ३ ॥ समुच्छिन्नक्रिया अनिवृत्ति ४ ॥ पृथक्त्ववितर्कसविचारी ते
अनंत द्रव्यरूप आ जगत छे एमांथी एक द्रव्यनुं स्वरूप ग्रहण करी एनी उत्पत्ति क्षय
अने ध्रुवताना जूदा जूदा पर्यायनुं अर्थथी व्यंजनमां अने व्यंजनथी अर्थमां मने करी
विचारवो ते १ ॥ एकत्ववितर्क अविचारी ते उत्पत्ति आदि जे द्रव्यना पर्याय तेनुं एकत्व
अभेदपणुं अवलंबीने रहेवुं, परम अविचारी कहेतां अर्थ व्यंजननुं विचाररहितपणुं २ ॥
सूक्ष्मक्रिय अप्रतिपाति कहेतां मन वचननो योग रोके ते छतां पण अर्द्धकाय योगना रोकवाथी
सूक्ष्म क्रियाने नथी पडवानो स्वभाव जेनो परिणामना वधवाथी अप्रतिपाती, ए पायो
निर्वाण अवसरे काले केवलीने होय ३॥ समुच्छिन्नक्रियअनिवृत्ति कहेता क्षय करी जे क्रिया,

कायिक्यादि शैलेशी अवस्थाने विषे योगना रुंधवाथी जेणे ते तथा अपाठा बळवानो स्वभाव ठे जेने विषे ते ४ ॥ हवे शुक्लध्याननां ४ लक्षण कहे ठे ॥ विवेक १ ॥ व्युत्सर्ग २॥ अवहे ३॥ असंमोहिता ४ ॥ तेमां विवेक कहेतां जीव विवेकपणे चिंतवे–अरे जीव! जीव काया जूदां ठे एम जाणीने काया उपर ममता न आणवी, ए काया तो पुद्गल ठे, विणशवानो स्वभाव ठे, ए प्रथम लक्षण कह्युं १ ॥ व्युत्सर्ग कहेतां कायाने वोसरावीने काउसग्ग करे, कायोत्सर्ग करीने निकाचित कर्मने त्रोडे अथवा देवता, मनुष्य, तिर्यंच संबंधि अनेक परिसह उपजे ते खमे अने धर्मथी डगाव्या डगे नहि, चळाव्या चळे नहि, सम्यक् प्रकारे ते खमे शुभ परिणामे, ए बीजुं लक्षण कह्युं २ ॥ अवहे कहेतां अहो! जीव रोगादिक आवीने उपन्या थका कायरपणुं वेदे नहि, मोडुं वगाडे नहि, जीव तारां संच्यां कर्म ते तारां उपराजेल ठे, ते तो समभावे करीने खमे, ए त्रीजुं लक्षण कह्युं ३ ॥ असंमोहिया कहेतां कोइ बीजानी चक्रवर्त्ति, बळदेव, वासुदेव तथा देवतानी ऋद्धि देखीने तथा परनी सुख साहबी देखीने मूर्छा आणे नहि ॥ अरे जीव! जे भाव सवारे

हता ते जीव संध्याए नहिं, अने जे जीव संध्याए हता ते जीव सवारे नहि ॥ जे जीव सुता हता ते उठया नहिं, अने जे जीव उठया ते सुता नहिं, एम अशाश्वती ऋद्धिने विषे मूंझाय नहिं, बांधे पण नहिं, मनमां भली पण जाणे नहि ॥ अरे जीव! ए ऋद्धि तो जीव घणी वार पाम्यो, पामे छे, अने पामशे पण जीवने कांइ त्राण शरण नथी, एम जाणीने दया, शील, संतोष, तप, संयम आदरीए तो अनंता मोक्षनां सुख पामीए, ए शुक्लध्याननुं चोथुं लक्षण कह्युं ४ ॥ हवे शुक्लध्याननां ४ आलंबन कहे छे ॥ खंति १ ॥ मुत्ति २ ॥ अज्जवे ३ ॥ मद्दवे ४ ॥ तेमां खंति कहेतां क्षमा करवी ॥ क्षमा उपरांत तप नथी माटे क्रोधनो त्याग करवो १ ॥ मुत्ति कहेतां निर्लोभपणुं आणवुं ॥ रे जीव! लोभ ते पापनुं मूळ छे ते माटे लोभनो त्याग करवो २ ॥ अज्जवे कहेता सरलपणुं आणवुं. माया कपटनो त्याग करवो. रे जीव! कपट करतां भली गति न पामे एम जाणी माया न करवी ३ ॥ मद्दवे कहेतां अति उत्कर्षपणुं ते मान टाळवुं. रे जीव!

ध्याननी ४ अणुपेहा कहे ठे ॥ अवायाणुपेहा १ ॥ असुनाणुपेहा २ ॥ अणंतवत्तियाणुपेहा ३ ॥ विपरिणामाणुपेहा ४ ॥ तेमां अवायाणुपेहा कहेता रे जीव! तुं पांच आश्रवे करी समये समये नारे थाय ठे एवुं विचारी आश्रवथी निवर्त्तवुं तथा अहो जीव! रागद्वेषथी जीवने डुःख उपजे ठे अथवा रागद्वेषथी बुटीने ए जीव क्यारे मुक्ति जाशे, एवुं चिंतवे १ ॥ असुनाणुपेहा कहेतां रे जीव! काया तो अशुचिनो नंमार ठे तथा अशुचिए करीने उपनी ठे एम जाणीने अशुचि परिहरे, ए संसारनुं स्वरूप एवुं जाणीने जे शुन्न कर्मना अशुन्न थाय ठे अने अशुन्न कर्मना शुन्न थाय ठे तेणे करीने जीव नारे थाय ठे ते क्यारे एवा शुन्नाशुन्न कर्मथी बूटीशुं एवुं ध्यान चिंतविए तो परम आनंद सुख पामीए २ ॥ अणंतवत्तियाणुपेहा कहेतां ए जीव तो अमर ठे, अजर ठे, अलक्ष ठे, अरूपि ठे, मरे नहि पण आयुष्य आश्री अनित्य ठे, नित्य नहि, एम जाणीने रे जीव! धर्मने विषे प्रमाद न करवो तथा नव करे ठे तेनुं अनित्यपणो चितवे ॥ नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ए ४ गतिनुं अनित्यपणुं चिंतवे एवुं अनित्यपणं नरत चक्रवर्त्तिए चिंतव्युं ॥ रे जीव ! एवी

ंतिवणा चिंतवीए तो परमानंद, अतुल्य, निराबाध उत्कृष्टा सुख पामीए ३ ॥ विपरि-
णामाणुपेहा कहेतां ए जीव तो अनादि काळनो छे अने अनादि काळथी ज ४ गति २४
दंडकने विषे परिभ्रमण करे छे पण चोर्याशी लाख जीवाजोनीथी परिभ्रमण करवुं मटयुं
नथी ते माटे एम जाणीने शुद्ध निर्मळ धर्म आदरीए, पाळीए, फरसीए ए रीते करीने
जन्म जरा मरण मटाडीए जेथी परमसुख पामीए तथा विपरिणामाणुपेहा कहेतां विविध
प्रकारना सगपण करीने हुं विचर्यो, एकेक जीव साथे ते ४ गति संसारमां मात पिता
भाइ बहेन भार्या पुत्रपणे अनंतिवार सगाइ करी तथा राजा युवराजा शेठ सेनापतिपणुं
अनंति वार पाम्यो तथा वैरभावपणे एकेक जीवथी तें रे जीव ! अनंति वार वैर बांध्युं
तथा अनंतिवार मित्रपणुं एकेक जीवथी तें रे जीव ! कीधुं, एवुं जाणी संसारथी विरक्त
थइ शुक्ल लेश्या आणीए तो परम आनंद सुख आत्मा पामे ४ ॥ ए १६ भेदे शुक्ल ध्यान थयुं
विशेष विस्तार ठाणांग उववाइ सूत्रनी वृत्तिथी जाणवो ॥ इति चतुर्थ शुक्ल ध्यानाधिकारः ४ ॥

इति ४ ध्याननो बोल संपूर्ण ॥

देशबंध सर्वबंधनो बोल ॥

प्रथम १२ ठेकाणे उदारिक शरीर लाभे ॥ समुच्चय उदारिक शरीर १ ॥ समुच्चय एकेंद्रिय २ ॥ ५ स्थावर ७ ॥ ३ विगलेंद्रिय १० ॥ तिर्यंच ११ ॥ मनुष्य १२ ॥ समुच्चय उदारिक उदारिकना सर्वबंधपणे रहेतो जघ० उत्० १ समय, अने उदारिकना देशबंधपणे रहेतो ज० १ समय, ते केम ? वायु तिर्यंच मनुष्य उदारिकना धणीए वैक्रेय कर्युं होय अने उदारिक प्रवेश काले प्रथम समय सर्वबंध करीने वळी उदारिकना देशबंधमां आवीने एक समय रहीने मरे ते माटे ज० १ समय, उत्० ३ पल्यमां १ समय उणानी स्थिति १॥समुच्चय एकेंद्रियना सर्वबंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ समय, उत्० २२ हजार वर्षमां १ समय उणानी २॥ पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय ए ७ ना सर्वबंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ खुलक भवमा ३ समय उणानी, उत्० पोतपोताना आयुष्यमाथी १ समय उणानी ॥ वाउकायना सर्वबंधनी स्थिति

जं० उ०, १ समयनी, देशबंधनी ज० १, समयनी, वाउकाय वैक्रेय करीने देशबंधमां आवी १ समय रहीने मरे माटे, उत्० ३ हजार वर्षमां १ समय उणानी १० ॥ तिर्यंच मनुष्यना सर्वबंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ समयनी ते वाउकायवत्, उत्० ३ पल्यमां १ समय उणानी ११ ॥ इति स्थितिद्वार ॥ हवे अंतरद्वार कहे छे ॥ समुच्चय उदारिकना सर्वबंधनु आंतरुं ज० खुलकभव ३ समय उणानुं, उत्० ३३ सागर पूर्वकोडि ने १ समय अधिकनुं, ते बे समय वाटना छे, ते पूर्वकोडिमां १ समय उणो छे तेमां घालीए एटले १ समय वध्यो ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० १ समयनुं, उत्० ३३ सागर ने ३ समय अधिकनुं, ते १ समय सर्वबंधनो ने २ समय वाटना एवं ३ समय अधिक जाणवा १ ॥ समुच्चय एकेंद्रियना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० खुभाग भव ३ समय उणानुं, ते केम ? २ समय वाटना ने १ समय सर्वबंधनो एवं ३ समय, उत्० २२ हजार वर्ष ने १ समय अधिकनुं, देशबंधनुं आंतरुं ज० १ समयनुं, ते सर्वबंधनुं तुल्युं, उत्० अंतर्मुहूर्तनुं ते केम ? उदारिक वाउकाय वैक्रेय करीने अंतर्मुहूर्त

रहीने वळी उदारिकनो सर्वबंध करीने देशबंध थाय ते कारणे २ ॥ पृथ्वी, पाणी तेउ वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय ए ७ ना सर्वबंधनुं आंतरुं. ज० खुड्डाग भव ३ समय उणानुं, उत्० पोतपोताना आयुष्य उपर १ समय अधिकनुं ॥ देशबंधनुं ज० १ समयनुं, उत्० ३ समयनुं ते २ समय वाटनाने १ समय सर्वबंधनो एवं ३ समयनु ए ॥ वायराना सर्व बंधनुं आंतरुं ज० खुड्डागभव ३ समय उणानुं, उत्० ३ हजार वर्षने १ समय अधिकनुं ॥ देशबंधनुं ज० १ समयनुं, उत्० अंतर्मुहूर्त्तनुं १० ॥ तिर्यंच मनुष्यना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० खुड्डागभव ३ समय उणानुं, उत्० पूर्व क्रोडिने १ समय अधिकनुं ॥ देशबंधनुं आंतरु ज० १ समयनुं, उत्० अंतर्मुहूर्त्तनुं ११ ॥ ए पोतपोतानी जाति मांहि आंतरुं पड्ये छे ॥ हवे विशेषांतर द्वार कहे छे ॥ एकेंद्रिय मरीने नोएकेंद्रिय थाय वळी नोएकेंद्रिय मरीने एकेंद्रिय थाय तेना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० २ खुड्डागभव ३ समय उणानुं, उत्० वे हजार सागर झाझेरानुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० खुड्डागभव १, समय अधिकनुं, उत्० वे हजार सागर झाझेरानुं ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वाउ, ३ विगलेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य ए ९ मरीने अनेरे

गामे जाय, जईने पाछा आपणे गामे आवे ॥ ए ए ना सर्ववंधनुं ज० २ खुडागभव ३ समय उणानुं, उत्० वनस्पति कालनुं, देशवंधनुं ज० खुडागभव १ समय अधिकनुं, उत्० वनस्पति कालनुं ॥ वनस्पति मरीने नोवनस्पति थाय, वळी नोवनस्पति मरीने वनस्पति थाय तेना सर्ववंधनुं ज० खुडागभव ३ समय उणानुं, उत्० पुढवीकालनुं ॥ देशवंधनु आंतरुं ज० खुडागभव १ समय अधिकनुं, उत्० पुढवीकालनुं ॥ हवे अल्प बहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा उदारिकना सर्ववंधक, ते पहेला समयना छे माटे १ ॥ तेथी उदारिकना अवंधक विसेसाहिया २ ॥ तेथी उदारिकना देशवंधक असंख्यातगुणा ३ ॥ इति उदारिकना सर्ववंध देशवंधनुं स्वरूप संपूर्ण ॥ अथ वैक्रेयना सर्ववंध देशवंधनुं स्वरूप कहे छे ॥ समुच्चय वैक्रेयना सर्ववंधनी स्थिति ज० १ समयनी, उ० २ समयनी ते केम ? कोई मनुष्य तथा तिर्यंचे वैक्रेय मांड्युं ॥ वैक्रेयनो पहेलो समय सर्ववंधनो करीने तेज समये मरे, मरीने देवता तथा नारकीमां विग्रहगति विना उपजे त्यारे बीजे समये सर्ववंध करे ए रीते २

वाउकाय १ तिर्यंच २ मनुष्य ३ ए ३ ना सर्वबंधनो ज० उ० १ समयनो ॥
ज० १ समयनी, उ० अतर्मुहूर्त्तनी ॥ नारकी देवताना सर्वबंधनो ज० उ० १ समयनी ॥
देशबंधनी ज० दश हजार वर्षमां ३ समय उणानी, उ० ३३ सागरमा १ समय उणानी ॥
हवे अंतरद्वार कहे छे ॥ समुच्चय वैक्रेयना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० १ समयनुं, उत्० वन-
स्पति कालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० १ समयनुं, उत्० वनस्पति कालनुं ॥ वाउकाय ति-
र्यंच मनुष्यना वैक्रेय शरीरना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, वाउकायनुं उ० पल्योपमना
असंख्यातमा भागनुं आंतरुं, तिर्यंच मनुष्यनुं उ० प्रत्येक पूर्व कोडिनुं ॥ एम देशबंधनुं पण
अंतर जाणवुं ॥ ए पोतपोतानी जातिमां आंतरुं पडे ॥ हवे विशेषांतर द्वार कहे छे ॥ एकेंद्रिय
मरीने नोएकेंद्रिय थाय वळी नोएकेंद्रिय मरीने एकेंद्रिय थाय तेना सर्वबंधनुं आंतरुं
ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० अनंतकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं पण एमज जाणवुं ॥ वाउकाय १
तिर्यंच २ मनुष्य ३ ए ३ ना सर्वबंध देशबंधनुं आंतरु ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उ० वनस्पतिका-
लनुं ॥ नारकी देवताना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनुं, उ० वन-
स्पति कालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं पण एमज ॥ ७ नारकी, १० भवनपति, १६ वाणव्यंतर,

ज्योतिषी, वैमानिक ८ देवलोक सुधी वैक्रेयना सर्वबंधनुं आंतरुं पोतपोतानी स्थिति उपरे अंतर्मुहूर्त्त अधिकनुं, उ० अनंतकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उ० वनस्पति कालनुं ॥ नवमा देवलोकथी नव ग्रैवेयक सुधीना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० पोत पोताना आउखा उपर पृथक् वर्ष अधिकनुं, उ० अनंतकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरु ज० पृथक् वर्षनुं, उ० अनंतकालनुं ॥ चार अनुत्तर विमानना सर्वबंधनु आंतरुं ज० ३१ सागरने पृथक् वर्ष अधिकनुं, उ० संख्यात सागरनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० पृथक् वर्षनुं, उ० संख्यात सागरनुं ॥ सर्वार्थसिद्धना सर्वबंध देशबंधनुं आंतरु नथी ॥ हवे अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा वैक्रेय शरीरना सर्वबंधक १ ॥ तेथी देशबंधक असंख्यात गुणा २ ॥ तेथी अबंधक अनंतगुणा ३ ॥ ४ ॥ इति वैक्रेयना देशबंध सर्वबंधनुं स्वरूप संपूर्ण ॥ हवे आहारकना देशबंध सर्वबंधनुं स्वरूप कहे छे ॥ आहारकना सर्व बंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधकनी स्थिति ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ आहारकना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उ० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणानुं ॥ हवे अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी

गुणा ३ ॥ ३ ॥ हवे तेजस् कार्मणनुं स्वरूप कहे छे ॥ तेजस् कार्मणना सर्वबंध नहि ॥ देशबंधना २ नेद ॥ आदि नहि अंत नहि ते अनव्य १ ॥ आदि नहि अंत छे ते नव्य २ ॥ हवे एनुं अल्पबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोका अनव्य १ ॥ तेथी नव्य अनंतगुणा २ ॥ सर्वथी थोका तेजस् कार्मणना अबंधक १ ॥ तेथी देशबंधक अनंतगुणा २ ॥ ५ ॥ हवे ११ बोलनुं अल्पबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोका आहारकना सर्वबंधक १ ॥ तेथी आहारकना देशबंधक संख्यातगुणा २ ॥ तेथी वैक्रेय शरीरना सर्वबंधक असंख्यातगुणा ३ ॥ तेथी वैक्रेयना देशबंधक असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी तेजस् कार्मणना अबंधक अनंतगुणा ५ ॥ तेथी उदारिकना सर्वबंधक अनंतगुणा ६ ॥ तेथी उदारिकना अबंधक विसेसाहिया ७ ॥ तेथी उदारिकना देशबंधक असंख्यातगुणा ८ ॥ तेथी तेजस् कार्मणना देशबंधक विसेसाहिया ९ ॥ तेथी वैक्रेयना अबंधक विसेसाहिया १० ॥ तेथी आहारकना अबंधक विसेसाहिया ११ ॥

इति देशबंध सर्वबंधना बोल संपूर्ण ॥

संख्याता असंख्याताना बोल ॥

अनुयोगद्वार सूत्र मध्ये संख्याता असंख्याता अनंताना २० भेद कह्या छे तेनो वि॰स्तार किंचित् मात्र लिख्यते ॥ संख्याताना ३ भेद ॥ जघन्य संख्यातो १ ॥ मध्यम संख्यातो २ ॥ उत्कृष्ट संख्यातो ३ ॥ ए ३ भेद ॥ असंख्याताना नव भेद ॥ जघन्य परित असंख्यातो १ ॥ मध्यम परित असंख्यातो २ ॥ उत्कृष्ट परित असंख्यातो ३ ॥ जघन्य जुत्त असंख्यातो ४ ॥ मध्यम जुत्त असंख्यातो ५ ॥ उत्कृष्ट जुत्त असंख्यातो ६ ॥ जघन्य असंख्यातो असंख्यातो ७ ॥ मध्यम असंख्यातो असंख्यातो ८ ॥ उत्कृष्ट असंख्यातो असंख्यातो ९ ॥ ए ९ भेद ॥ अनंताना ८ भेद ॥ जघन्य परित अनंतो १ ॥ मध्यम परित अनंतो २ ॥ उत्कृष्ट परित अनंतो ३ ॥ जघन्य जुत्त अनंतो ४ ॥ मध्यम जुत्त अनंतो ५ ॥ उत्कृष्ट जुत्त अनंतो ६ ॥ जघन्य अनंतो अनंतो ७ ॥ मध्यम अनंतो अनंतो ८ ॥ ए ८ भेद ॥

संख्याताना ३ भेद. असंख्याताना ९ भेद. अनंताना ८ भेद ॥ ए सर्व मळी २०

भेद नामथी कह्या ॥ हवे विस्तारे वीस भेदनो अर्थ समजणपूर्वक कहे छे ॥ जघन्य संख्यातो ते बे १ ॥ मध्यम संख्यातो ते त्रणथी मांडीने उत्कृष्टा संख्याता मांहेथी १ ओछो तेटला सुधी मध्यम संख्यातो कहीए, एनां संख्यातां रूप थाय २ ॥ उत्कृष्टो संख्यातो कहे छे ॥ जंबूद्वीप प्रमाणे पालो कल्पी सरसवने दाणे सग सुधी भरीने पछी १ दाणो द्वीपे अने एक दाणो समुद्रे मुकतां मुकतां सर्व पालाना कण खुटी जाय, पछी जे द्वीपसमुद्रे छेल्लो दाणो आव्यो तेवडो मोटो बीजो पालो कल्पवो ते सरसवने दाणे भरीने वळी एक दाणो द्वीपसमुद्रे मुकतां जे द्वीपसमुद्र सुधी छेल्लो दाणो पहोंचे तेवडो मोटो त्रीजो पालो कल्पवो ॥ एवा पाला केटला कल्पवा ? उत्तर—असंलप्पा कहेतां गण्या न जाय एटला पाला १७४ अंकथी अधिक शिखा सहित सरसवे करी भरवा ॥ पूरेपूरा शिखा सुधी जेटला पालाना कण तेटलो उत्कृष्टो संख्यातो जाणवो ए ३ भेद संख्याताना कह्या ॥ हवे असंख्याताना ए भेद कहे छे ॥ जे उत्कृष्टो संख्यातो ते उपर एक दाणो अधिक मुकीए त्यारे जघन्य परित असंख्यातो थाय; ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्टा परित असं-

ख्यातोमांथी १ ओछो तेने मध्यम परित असंख्यातो कहीए २॥ हवे उत्कृष्टो परित असंख्या-
तो ते केम थाय ? उत्तर-जघन्य परित असंख्याताना रूप जेटलां थयां छे तेटली जघन्य
परित असंख्यातनी राशी मांडीए, ते राशी मांडीने पछी मांहोमांहे राशी संघाते अभ्यास
कीजे ॥ ने गुणा करीए ते केम? असत्कल्पनाये ५ नी राशी मांडीए, तेने चारवार गणतां

५	२५
५	१२५
५	६२५
५	३१२५

पांच पंचा २५ ॥ २५ पंचा १२५ ॥ १२५ पंचा ६२५ ॥ ६२५ पंचा ३१२५ थाय
तेम जघन्य परित असंख्यातने जघन्य परित असंख्यातगुणा करीए तेटलां
रूप थाय तेमांथी एक रूप ओछुं करीए, एटले उत्कृष्टो परित असंख्यातो थाय
३ ॥ हवे उत्कृष्टो परित असंख्यातो कह्यो तेमां १ दाणो नांखीए, एटले जघन्य
युक्त असंख्यातो थाय, एक आवलिकाना समय तेटला जाणवा ४ ॥ ते उपरांत ज्या-
सुधी उत्कृष्टा युक्त असंख्याताना छेलो भेद छे तेमां १ रूप ओछुं त्यांसुधी सर्व मध्यम
युक्त असंख्यातो पांचमो भेद कहीए ५ ॥ हवे उत्कृष्टो युक्त असंख्यातो केम
थाय ? उत्तर-जघन्य युक्त असंख्यातो चोथे भेदे आवलिकाना समय कह्या,

त्यारे उत्कृष्टो जुत्त असंख्यातो कहीए ॥ ए छठ्ठो भेद ६ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त असंख्यातो कह्यो तेमां १ रूप प्रक्षेपीए एटले सातमो भेद जघन्य असंख्यातो असंख्यातो थाय ७ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्टो असंख्यातो असंख्यातामां १ रूप ओछुं तेने मध्यम असंख्यातो असंख्यातो कहीए ॥ ए आठमो भेद ८ ॥ हवे उत्कृष्टो असंख्यातो असंख्यातो केम थाय ? उत्तर—जघन्य असंख्यातो असंख्यातो सातमो भेद छे तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय तेमां १ रूप ओछुं करीए, त्यारे उत्कृष्टो असंख्यातो असंख्यातो थाय ९ ॥ ए ए भेद असंख्याताना कह्या ॥ हवे अनंताना ८ भेद कहे छे ॥ जे उत्कृष्टो असंख्यातो असंख्यातो कह्यो, ते उपर १ रूप अधिक करीए, त्यारे जघन्य परित अनंतो थाय १ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्ट परित अनंतामांहि १ ओछो तेने मध्यम परित अनंतो कहीए २ ॥ हवे उत्कृष्टो परित अनंतो केम थाय ? उत्तर—जघन्य परित अनंतो पहेलो भेद कह्यो, तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय ते मध्ये १ रूप ओछुं करीए, त्यारे उत्कृष्टो परित अनंतो थाय ३ ॥ हवे जघन्य परित अनंतो

करे ते ॥ तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय तेने जघन्य जुत्त अनंतो चोथो तेह कहीए तेटला अभव्यसिद्धिया जीव जाणवा ४ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्टो जुत्त अनंतामांहि १ रूप ओछुं तेने मध्यम जुत्त अनंतो कहीए ५ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त अनंतो केम थाय ? उत्तर–जघन्य जुत्त अनंते अभव्य जीव कह्या तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय तेमां १ रूप ओछुं करीए, त्यारे उत्कृष्टो जुत्त अनंतो थाय ६ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त अनंतो कह्यो ते मध्ये १ रूप प्रक्षेपिए, त्यारे जघन्य अनंतानंतो थाय ७ ॥ पछी सातमा अनंता उपरे जेटलां रूप मुकीए, ते सर्व आठमा अनंता मध्ये जाणवां ॥ ते मध्यम अनंतानंतो जाणवो ॥ ८ ॥ नवमो अनंतो नथी ॥ प्रकरण मध्ये नवमो अनंतो कह्यो छे पण सूत्र मते नथी ॥

इति सख्याता असंख्याता अनंतानो बोल संपूर्ण ॥

पांच शरीरनो थोकडो

अथ पन्नवणा सूत्रना पद २१ थी १६ द्वारे ५ शरीरना बोल लिख्यते ॥

गाहा—नाम १ अत्थ २ संठाण ३ सामी ४,
उग्गाहणा ५ पुग्गलच्चयण ६ संजोयणा ७ ॥
दव्व ८ पएस ए दव्वपएसठयाए १०,
सुहुम वायर ११ उग्गाहणा अप्पाबहु १२ ॥ १ ॥
पओयण १३ विसय १४ ठिइ १५,
अंतर १६ सोळस द्वारा इमे ॥
पण सरीरोवरि एए,
उत्तारेयव्वा निउण बुद्धिहिं ॥ २ ॥

ए १६ द्वार ॥ तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे ॥ उदारिकशरीर १ ॥ वैक्रेय शरीर २ ॥

आहारक शरीर ३ ॥ तैजस् शरीर ४ ॥ कार्मण शरीर ५ ॥ १ ॥ हवे बीजुं अर्थद्वार कहे छे ॥ उदारिक कहेतां प्रधान सर्व शरीरथी ॥ तीर्थंकर गणधरादिकनुं शरीर तथा मुक्ति जावानो स्वनाव तथा उदारिक कहेतां मोटुं सहस्र योजनमान, नवधारणीक तेने उदारिक शरीर कहीए ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीर ते केने कहीए ? रूप परावर्त्तन करवानी शक्ति तथा एक अनेक नाना मोटा खेचर नुचर दृश्य अदृश्य इत्यादिक विविध क्रियाए नवा रूप बनावे तेने वैक्रेय शरीर कहीए ॥ ते बे प्रकारे छे ॥ नवप्रत्ययिक १ ॥ लब्धिप्रत्ययिक २ ॥ नवप्रत्ययिक नारकी देवताने होय १, लब्धिप्रत्ययिक मनुष्य तियचने होय २ ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते केने कहीए ? चौद पूर्वधारी साधु, तीर्थंकर महाराजनी ऋद्धि देखवा नणी तथा संशय टाळवा निमित्त उत्तम पुद्गलो ग्रहीने ज० मुंडा हाथनुं, उ० १ हाथनुं शरीर करे तेने आहारक शरीर कहीए ॥ ते स्फटिकनी परे अति निर्मळ, कोइ न देखे एवु होय ३ ॥ तैजस शरीर ते तेजना पुद्गले निष्पन्न तेने तैजस शरीर कहीए ॥ अहस्य

कार्मण शरीर ते केने कहीए ? कर्म पुद्गलस्कंधो निपज्युं तेने का... शरीर कहीए ॥
जेना उदयथी जीव पुद्गल ग्रहीने ते कर्मादिरूपपणे परिणमावे तथा आहारने खेंचे तेने
कार्मण शरीर कहीए ५ ॥ २ ॥ हवे त्रीजुं संठाणद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरमां संठाण
६ ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीरमां देवताने संठाण एक समचउरंस ॥ नारकीमां संठाण एक
हुंड ॥ मनुष्य तिर्यंचमां वैक्रेय करतां समचउरंस तथा नाना प्रकारनुं ॥ वायुकायनां वैक्रेयमा
एक हुंड ॥२॥ आहारक शरीरमां संठाण १ समचउरंस ॥ ३ ॥ तेजस् कार्मणमां ६ संठाण
लाभे ॥४ ५॥३॥ चोथुं स्वामीद्वार कहे छे॥ उदारिक शरीरना स्वामी मनुष्य तिर्यंच १ ॥ वैक्रेय
शरीरना स्वामी देवता नारकी तथा लब्धिप्रत्ययिक मनुष्य तिर्यंच २ ॥ आहारक शरी-
रना स्वामी चउद पूर्वी साधु ३ ॥ तेजस् कार्मण शरीरना स्वामी सर्व संसारी जीव ४ ॥ ५
॥ ४ ॥ हवे पांचमुं अवगाहनाद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरनी अवगाहना जघन्य
अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टि हजार जोजन जाजेरी १ ॥ वैक्रेय शरीरनी अवगा-
हना-भवप्रत्ययिक जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० ५०० धनुष्यनी ॥ उत्तर-

आहारक शरीर ३ ॥ तैजस् शरीर ४ ॥ कार्मण शरीर ५ ॥ १ ॥ हवे बीजुं अर्थद्वार कहे छे ॥ उदारिक कहेता प्रधान सर्व शरीरथी ॥ तीर्थंकर गणधरादिकनुं शरीर तथा मुक्ति जावानो स्वभाव तथा उदारिक कहेतां मोटुं सहस्र योजनमान, भवधारणीक तेने उदारिक शरीर कहीए ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीर ते केने कहीए ? रूप परावर्त्तन करवानी शक्ति तथा एक अनेक नाना मोटा खेचर भुचर दृश्य अदृश्य इत्यादिक विविध क्रियाए नवा रूप बनावे तेने वैक्रेय शरीर कहीए ॥ ते बे प्रकारे छे ॥ भवप्रत्ययिक १ ॥ लब्धिप्रत्ययिक २ ॥ भवप्रत्ययिक नारकी देवताने होय १, लब्धिप्रत्ययिक मनुष्य तियचने होय २ ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते केने कहीए ? चौद पूर्वधारी साधु, तीर्थंकर महाराजनी ऋद्धि देखवा भणी तथा संशय टाळवा निमित्ते उत्तम पुद्गलो ग्रहीने ज० मुढा हाथनुं, उ० १ हाथनुं शरीर करे तेने आहारक शरीर कहीए ॥ ते स्फटिकनी परे अति निर्मळ, कोइ न देखे एवु होय ३ ॥ तैजस् शरीर ते तेजना पुद्गले निष्पन्न तेने तैजस् शरीर कहीए ॥ अदृश्य जन आहारने पचावे तथा लब्धिवंत तेजुलेश्या मूके तेने तेजस् शरीर कहीए ४ ॥

कार्मण शरीर ते केने क[illegible] कर्म पुद्गलथी [illegible] [illegible] तेने कार्मण शरीर कहीए ॥
जेना उदयथी जीव पुद्गल ग्रहीने ते कर्मादिरूपपणे परिणमावे तथा आहारने खेंचे तेने
कार्मण शरीर कहीए ५॥ २ ॥ हवे त्रीजुं संठाणद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरमां संठाण
६ ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीरमां देवताने संठाण एक समचउरंस ॥ नारकीमां संठाण एक
हुंड ॥ मनुष्य तिर्यंचमां वैक्रेय करतां समचउरंस तथा नाना प्रकारनुं ॥ वायुकायनां वैक्रेयमा
एक हुंड ॥२॥ आहारक शरीरमां संठाण १ समचउरंस ॥ ३ ॥ तैजस् कार्मणमां ६ संठाण
लाभे ॥४ ५॥३॥ चोथुं स्वामीद्वार कहे छे॥ उदारिक शरीरना स्वामी मनुष्य तिर्यंच १ ॥ वैक्रेय
शरीरना स्वामी देवता नारकी तथा लब्धिप्रत्ययिक मनुष्य तिर्यंच २ ॥ आहारक शरी-
रना स्वामी चउद पूर्वी साधु ३ ॥ तैजस् कार्मण शरीरना स्वामी सर्व संसारी जीव ४ ॥ ५
॥ ४ ॥ हवे पांचमुं अवगाहनाद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरनी अवगाहना जघन्य
अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टि हजार जोजन झाझेरी १ ॥ वैक्रेय शरीरनी अवगा-
हना भवप्रत्ययिक जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० ५०० धनुष्यनी ॥ लब्धि-

द्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडी उदारिकनी जघन्य अवगाहना १ ॥ तेथी तेजस् कार्मणनो मांहोमांहि तुल्य ने जघन्य अवगाहनां विसेसाहिया ३ ॥ तेथी वैक्रेयनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी ४ ॥ तेथी आहारकनी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी ५ ॥ तेथी आहारकनी उत्कृष्टी अवगाहना विसेसाहिया ६ ॥ तेथी उदारिकनी उत्कृष्टी अवगाहना संख्यातगुणी ७ ॥ तेथी वैक्रेयनी उत्कृष्टी अवगाहना संख्यातगुणी ८ ॥ तेथी तेजस् कार्मणनी मांहोमांहि तुल्य ने उत्० अवगाहना असंख्यातगुणी १० ॥ १२ ॥ हवे तेरमुं प्रयोजनद्वार कहे छे ॥ उदारिकनुं प्रयोजन मुक्ति जावानुं १ ॥ वैक्रेयनुं प्रयोजन अनेक रूप करवानुं २ ॥ आहारकनुं प्रयोजन संशय टाळवानुं ३ ॥ तेजसनुं प्रयोजन आहार पचाववानुं ४ ॥ कार्मणनुं प्रयोजन आहार खेंचवानुं अने आठ कर्म ग्रहण करीने संसार परिभ्रमण करवानु ५ ॥ १३ ॥ चउदमुं विषयद्वार कहे छे ॥ उदारिकनो विषय पन्नरमा रुचक द्वीपताइं १ ॥ वैक्रेयनो विषय असंख्याता द्वीप समुद्रताइं २ ॥ आहारकनो विषय अढी द्वीपताइं ३ ॥ तेजस कार्मणनो विषय सर्व लोकमां जवानो

४-५ ॥ १४ ॥ पंदरमुं स्थितिद्वार कहे छे ॥ उदारिकनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्ट ३ पल्योपमनी १ ॥ वैक्रेयनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्ट ३३ सागरनी २ ॥ आहारकनी ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी ३ ॥ तेजस् कार्मणनी स्थिति बे प्रकारनी ॥ अणाइया अपज्जवसीया ते अभव्य आश्रि आदि नथी ने अंत पण नथी अने अणाइया सपज्जवसीया ते भव्य आश्रि आदि नथी ने अंत छे ॥ १५ ॥ हवे सोलमुं अंतरद्वार कहे छे ॥ उदारिकनुं आंतरुं पडे तो जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० तेत्रीस सागरोपमनुं १ ॥ वैक्रेय शरीरनुं आंतरुं पडे तो ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० अनंतो काल यावत् वणस्सईकालो २ ॥ आहारकनुं आंतरु पडे तो ज० अंतर्मुहूर्त्तनु, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्तन देशे उणानुं ३ ॥ तेजस् कार्मणनु आंतरु नथी ४-५ ॥ तथा अंतर बीजा प्रकारे ॥ आहारिक शरीर वर्जि ४ शरीर लोकमा सदा लाभे पण तेनु अंतर पडतुं नथी, अने आहारिक शरीरनुं अंतर पडे तो उत्कृष्ट ६ मासनुं अंतर पडे ॥ १६ ॥

इति पांच शरीरना बोल संपूर्ण ॥

पाच इंद्रिय ॥

अथ श्री पन्नवणा सूत्रना पदरमा पदना पहेला उद्देशाथी पांच इंद्रियना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ नाम १ संठाण २ बाहल्लं ३, पुहत्तं ४ कइपएस ५ उगाढे ६ ॥
अप्पाबहु ७ पुट्ठ ८ पविट्ठे ९, विसय १० अणागार ११ आहारे १२ ॥ १ ॥

हवे प्रथम नाम द्वार कहे छे ॥ १ श्रोत्रेंद्रिय, २ चक्षुइंद्रिय, ३ घ्राणेंद्रिय, ४ रसेंद्रिय, ५ स्पर्शेंद्रिय ॥ १ ॥

हवे बीजुं संस्थान द्वार कहे छे ॥ १ श्रोत्रेंद्रियनुं संस्थान कदंब वृक्षनां फूल सरखुं, २ चक्षुइंद्रियनुं संस्थान मसूरनी दाळ अथवा अर्ध चंद्रमा सरखुं, ३ घ्राणेंद्रियनुं संस्थान अतिमुक्तक पुष्प अथवा धमण सरखुं, ४ रसेंद्रियनुं संस्थान छरपलानी धार सरखुं, ५ स्पर्शेंद्रियनुं संस्थान नाना प्रकारनुं ॥ २ ॥

हवे त्रीजुं बाहल्यद्वार कहे छे ॥ पांच इंद्रियनुं जाडपणुं जघन्य उत्कृष्ट आंगुलना

असंख्यातमा जागनु ॥ ३ ॥

हवे चोथुं पृथक्त्वद्वार कहे ठे ॥ श्रोत्र, २ चक्षु ने ३ घाण ए त्रण इंद्रियनुं लांबपणुं जंघन्य उत्कृष्ट आंगुलना असंख्यातमा जागनुं, ३ रसेंद्रियनुं लांबपणुं जंघन्य आंगुलना असंख्यातमा जागनुं, उत्कृष्ट पृथक् ते २ थी ए आंगुलनुं ४ ॥ स्पर्शेंद्रियनुं लांबपणुं जंघन्य आंगुलनां असंख्यातमा जागनुं, उत्कृष्ट हजार योजन जाजेरुं ५ ॥ ४ ॥

हवे पांचमुं प्रदेश द्वार कहे ठे ॥ पांच इंद्रियना अनंत अनंत प्रदेश ठे ॥ ५ ॥

हवे ठठुं अवगाह द्वार कहे ठे. पांच इंद्रिय ठे तेमां दरेक इंद्रिय आकाशना प्रदेश असंख्यात असंख्यातने अवगाही रहेल ठे ॥ दरेक इंद्रियना अनंत अनंत कर्कश अने जारे स्पर्श ठे, तेम अनंत अनंत हलका अने मृदु स्पर्श ठे, ए स्थूल दृष्टिनी अपेक्षाए जाणवु ॥ ६ ॥

हवे सातमुं अल्पबहुत्व द्वार कहे ठे, तेमां प्रथम प्रदेशनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोमा चक्षु इंद्रियना प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना प्रदेश संख्यातगुणा २ ॥ तेथी घाणें-

द्रियना प्रदेश संख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना प्रदेश असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शें-द्रियना प्रदेश सख्यातगुणा ५ ॥

बीजो इंद्रियोनो आकाश प्रदेश अवगाही रह्यानो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडा चक्षु इंद्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश संख्यातगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश संख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश असख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश सख्यातगुणा ५ ॥

हवे त्रिजो इंद्रियोना प्रदेश अने आकाश प्रदेशने अवगाही रहेल इंद्रियो ए बेनो साथे अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडा चक्षु इंद्रियना अवगाह्य आकाश प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना अवगाह्य सख्यातगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना अवगाह्य संख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना अवगाह्य असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना अवगाह्य संख्यातगुणा ५ ॥ तेथी चक्षु इंद्रियना प्रदेश अनंतगुणा ६ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना प्रदेश संख्यातगुणा ७ ॥ तेथी घ्रा-

शैंद्रियना प्रदेश सख्यातगुणा १० ॥

हवे चोथो इंद्रियोमा कर्कश ग्नारे स्पर्शनो अल्प बहुत्व ॥ सर्वथी थोडा चक्षु इंद्रियना कर्कश ग्नारे स्पर्श १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना अनंतगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना अनंतगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनंतगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना अनंतगुणा ५ ॥ सर्वथी थोडा स्पर्शेंद्रियना लघुमृदु स्पर्श १ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनंत गुणा २ तेथी घ्राणेंद्रियना अनंतगुणा ३ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना अनतगुणा ४ ॥ तेथी चक्षु इंद्रियना अनंतगुणा ५ ॥ हवे छठो इंद्रियोमां कर्कश १ ग्नारे २ लघु ३ मृदु ४ ए चारे स्पर्शनो साथे अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडा चक्षु इंद्रियना कर्कश ग्नारे स्पर्श १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना कर्कश ग्नारे स्पर्श अनत गुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना अनंतगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनंतगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना अनंतगुणा ५ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा ६ ॥ तेथी रसेंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा ७ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना लघु मृदु

स्पर्श अनंतगुणा ८ ॥ तेथी श्रोत्रेंड्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा ॥ ए ॥ तेथी चक्षु-इंड्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा १० ॥ ७ ॥

हवे आठमुं पृष्ट द्वार कहे छे ॥ इंड्रियोने जे पुद्गलो आवी स्पर्शे ते पुद्गलोनें इंड्रियो ग्रहे ते पृष्ट कहीए. पांच इंड्रियोमा चक्षु इंड्रिय विना चार इंड्रियोनें पुद्गलो आवी स्पर्शे छे पण चक्षु इंड्रियने आवी स्पर्शता नथी ॥ ८ ॥

हवे नवमुं प्रविष्ट द्वार कहे छे. जे इंड्रियोने विषे अभिमुख (सामां) पुद्गलो आवीने प्रवेश करे तेने प्रविष्ट कहीए ॥ पाच इंड्रियमां चक्षु इंड्रिय विना चार इंड्रिय प्रविष्ट छे ने चक्षु इंड्रिय अप्रविष्ट छे ॥ ए ॥

हवे दशमुं विषयद्वार कहे छे ॥ पांचे इंड्रियोनो जघन्य विषय आंगुलना असंख्यातमा नागनो, उत्कृष्ट जुदो जुदो कहे छे ॥ एकेन्ड्रियनो स्पर्शेंड्रियनो विषय ४०० धनुष्य, बेइंड्रियनो रसेंड्रियनो ६४ धनुष्य अने स्पर्शेंड्रियनो ८०० धनुष्यनो, तेइंड्रियनो

२५६ धनुष्यनो अने स्पर्शेंद्रियनो ३२०० धनुष्यनो, असञ्ज्ञी पचेंद्रियनो श्रोत्रेंद्रियनो १ योजननो, चक्षुइंद्रियनो ५९०८ धनुष्यनो, घ्राणेंद्रियनो ४०० धनुष्यनो, रसेंद्रियनो ५१२ धनुष्यनो अने स्पर्शेंद्रियनो ६४०० धनुष्यनो, संज्ञी पंचेंद्रियना श्रोत्रेंद्रियनो १२ योजननो, चक्षुइंद्रियनो १ लाख योजन जाझेरानो, घ्राणेंद्रियनो ९ योजननो, रसेंद्रियनो ९ योजननो, स्पर्शेंद्रियनो ९ योजननो ॥ १० ॥

हवे अग्यारमुं अनाकार (उपयोग) द्वार कहे छे, तेमां प्रथम जघन्य उपयोगकाळनो अल्पबहुत्व॥सर्वथी थोडो चक्षुइंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ १॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ३ ॥ तेथी रसेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ५ ॥

हवे बीजो उत्कृष्ट उपयोगकाळनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडो चक्षुइंद्रियनो उत्कृष्ट

उपयोगकाळ १ ॥ तेथकी श्रोत्रेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेपाधिक २ ॥ तेथकी घ्राणेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेपाधिक ३ ॥ तेथकी रसेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेपाधिक ४ ॥ तेथकी स्पर्शेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ५ ॥

हवे जघन्य उत्कृष्ट बन्नेनो उपयोगकाळनो अल्पबहुत्व केहुं कहे छे. सर्वथी थोडो चक्षुइंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेपाधिक २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेपाधिक ३ ॥ तेथी रसेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेपाधिक ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेपाधिक ५ ॥ तेथी चक्षुइंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेपाधिक ६ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेपाधिक ७ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेपाधिक ८ ॥ तेथी रसेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेपाधिक ९ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेपाधिक १० ॥ २२ ॥

वादोपदेश सञ्ज्ञी ते ज्ञान सहित समकितदृष्टि जीव सूत्रना क्षयोपशमे करी युक्तायुक्त जाणे ते ३ ॥ असञ्ज्ञी श्रुत ते भावार्थरहित विचारशून्य उपयोगशून्य पूर्वापर आलोचनरहित भणे-भणावे इत्यादिक ४ ॥ सम्यक् श्रुत ते अरिहंत देव केवलज्ञानी केवलदर्शनी देवाधिदेव १२ गुणे करी युक्त, १८ दोषरहित, अनंत गुणे करी सहित, देवाधिदेवना प्ररूप्या अर्थ तथा गणधरे पाठ गुंथ्या वांख्या १४–१३–१२–११–१० पूर्वधारिनुं रच्युं ते समश्रुत कहीये ने तेथी उणा पूर्वसुधीना रच्या ते समश्रुत होय ने मिथ्याश्रुत पण होय ५ ॥ मिथ्याश्रुत ते जे अज्ञानी मिथ्यादृष्टिए स्वछंदबुद्धिए करी रच्या भारत रामायण यावत् ४ वेद अंगोपांग सहित ते मिथ्यादृष्टिने मिथ्यात्वपणे आव्या मिथ्यात्व श्रुत ॥ सम्यक् दृष्टिने सम्यक्त्वपणे प्रह्या समश्रुत अथवा मिथ्यादृष्टिने ए सम्यक्त्व श्रुत होय शामाटे के सम्यक्त्वना हेतुपणाथी मिथ्या दृष्टि पोताना शास्त्र विचारतां केटलाक स्वपक्षदृष्टिने त्यजे छे ६ ॥ सादि १ ॥ सपर्यवसित २ ॥ अने अनादि ३ ॥ अपर्यवसित ४ ॥

रादि ह्रस्व दीर्घ प्रमुखनुं उच्चारवुं २ ॥ लब्ध्यक्षर ते अकारादि अक्षरोनुं जाणपणुं सञ्ज्ञी जीवोने उपजे ते. ५ प्रकारनु श्रोत्रेंद्रिय लब्ध्यक्षर यावत् नोइंद्रिय (मन) लब्ध्यक्षर ॥ ५ तेमां श्रोत्रेंद्रिय लब्ध्यक्षर ते काने शब्द सांभळीने कहे जे ए. नेरि प्रमुखनो शब्द छे, ते वार तेने नेरी प्रमुख ए अक्षरना ज्ञाननी प्राप्ति थइ ॥ एवं नोइंद्रिय लब्ध्यक्षर तेमने विचारतां सांभळ्युं जे फलाणुं छे ए अक्षरनु ज्ञान थयुं ते ३ ॥ १ ॥ हवे अनक्षर श्रुतना अनेक नेद छे ॥ अक्षरना उच्चार विना शब्द बोले ते ॥ उच्छ्वास निःश्वास करवो, थुंकवु, खुखारो करवो, छिकवु, विगेरे २ ॥ संज्ञीश्रुतना ३ नेद ॥ कालिकोपदेश १ ॥ हेतूपदेश २ ॥ दृष्टिवादोपदेश ३ ॥ संज्ञी ते जेने इहा अपोहा यावत् विमंसा होय, ते संज्ञी ॥ जेने ए नहि, ते असंज्ञी ॥ कालिकोपदेश ते घणा कालनो संज्ञा ते कालिकी तेनो ते उपदेश, जेम चक्षुवाळो दीवानके करी स्फुट अर्थने जाणे तेम ए पण मनोलब्धिये संपन्न मनोद्रव्यना अवष्टंननथी उपन्या विचारे पूर्वापर अनुसंधान करी यथावस्थित स्फुट अर्थने जाणे १ ॥ हेतूपदेश संज्ञा ते यत्नायक विचारपूर्वक इष्ट प्रवृत्ति अनिष्ट

निवृत्ति करवी ते ॥ तेवी संज्ञावाळा जीव हेतूपदेश संज्ञाए करी संज्ञी कहेवाय २ ॥ वादोपदेश संज्ञी ते ज्ञान सहित समकितदृष्टि जीव सूत्रना क्षयोपशमे करी युक्तायुक्त जाणे ते ३ ॥ असंज्ञी श्रुत ते भावार्थरहित विचारशून्य उपयोगशून्य पूर्वापर आलोचन-रहित भणे भणावे इत्यादिक ४ ॥ सम्यक् श्रुत ते अरिहंत देव केवलज्ञानी केवलदर्शनी देवाधिदेव १२ गुणे करी युक्त, १८ दोषरहित, अनंत गुणे करी सहित, देवाधिदेवना प्ररू-प्या अर्थ तथा, गणधरे पाठ गुंथ्या भांख्या १४–१३–१२–११–१० पूर्वधारिनुं रच्युं ते सम-श्रुत कहीये ने तेथी उणा पूर्वसुधीना रच्या ते समश्रुत होय ने मिथ्याश्रुत पण होय ५ ॥ मिथ्याश्रुत ते जे अज्ञानी मिथ्यादृष्टिए स्वछंदबुद्धिए करी रच्या भारत रामायण यावत् ४ वेद अंगोपांग सहित ते मिथ्यादृष्टिने मिथ्यात्वपणे ग्रह्या मिथ्यात्व श्रुत ॥ स-म्यक् दृष्टिने, सम्यक्त्वपणे ग्रह्या समश्रुत अथवा मिथ्यादृष्टिने ए सम्यक्त्व श्रुत होय शामाटे के सम्यक्त्वना हेतुपणाथी मिथ्यादृष्टि पोतानां शास्त्र विचारतां केटलाक स्व पक्षदृष्टिने त्यजे छे ६ ॥ सादि १ ॥ सपर्यवसित २ ॥ अने अनादि ३ ॥ अपर्यवसित ४ ॥

गादि ह्रस्व दीर्घ प्रमुखनुं उचारवुं २ ॥ लब्ध्यक्षर ते अकारादि अक्षरोनुं जाणपणुं संज्ञी जीवोने उपजे ते. ५ प्रकारनुं श्रोत्रेंद्रिय लब्ध्यक्षर यावत् नोइंद्रिय (मन) लब्ध्यक्षर ॥ ५ तेमां श्रोत्रेंद्रिय लब्ध्यक्षर ते काने शब्द सांभळीने कहे जे ए भेरि प्रमुखनो शब्द छे, ते वारे तेने भेरी प्रमुख ए अक्षरना ज्ञाननी प्राप्ति थइ ॥ एवं नोइंद्रिय लब्ध्यक्षर ते मने विचारता सांभळ्युं जे फलाणुं छे ए अक्षरनु ज्ञान थयुं ते ३ ॥ १ ॥ हवे अनक्षर श्रुतना अनेक भेद छे ॥ अक्षरना उच्चार विना शब्द बोले ते ॥ उच्छ्वास निःश्वास करवो, थुंकवु, खुंखारो करवो, छिकवुं, विगेरे २ ॥ संज्ञीश्रुतना ३ भेद ॥ कालिकोपदेश १ ॥ हेतूपदेश २ ॥ दृष्टिवादोपदेश ३ ॥ संज्ञी ते जेने इहा अपोहा यावत् विमंसा होय, ते संज्ञी ॥ जेने ए नहि, ते असंज्ञी ॥ कालिकोपदेश ते घणा कालनी संज्ञा ते कालिकी तेनो जे उपदेश, जेम चक्षुवाळो दीवावडे करी स्फुट अर्थने जाणे तेम ए पण मनोलब्धिवंत संपन्न मनोद्रव्यना अवष्टंभनथी उपन्या विचारे पूर्वापर अनुसंधान करी यथावस्थित स्फुट अर्थने जाणे १ ॥ हेतुपदेश संज्ञा ते युक्तायुक्त विचारपूर्वक इष्ट प्रवृत्ति अनिष्ट

निवृत्ति करवी

... संज्ञावाळा जीव हेतूपदेश संज्ञाए करी संज्ञी कहेवाय २ ॥ दृष्टि-
वादोपदेश सज्ञी ते ज्ञान सहित समकितदृष्टि जीव सूत्रना क्षयोपशमे करी युक्तायुक्त जाणे
ते ३ ॥ असंज्ञी श्रुत ते भावार्थरहित विचारशून्य उपयोगशून्य पूर्वापर आलोचन-
रहित भणे भणावे इत्यादिक ४ ॥ सम्यक् श्रुत ते अरिहंत देव केवलज्ञानी केवलदर्शनी
देवाधिदेव १२ गुणे करी युक्त, १८ दोषरहित, अनंत गुणे करी सहित, देवाधिदेवना प्ररु-
प्या अर्थ तथा गणधरे पाठ गुंथ्या भाख्या १४–१३–१२–११–१० पूर्वधारिनुं रच्युं ते सम-
श्रुत कहीये ने तेथी उणा पूर्वसुधीना रच्या ते समश्रुत होय ने मिथ्याश्रुत पण होय
५ ॥ मिथ्याश्रुत ते जे अज्ञानी मिथ्यादृष्टिए स्वछंदबुद्धिए करी रच्या भारत रामायण
यावत् ४ वेद अंगोपांग सहित ते मिथ्यादृष्टिने मिथ्यात्वपणे ग्रह्या मिथ्यात्व श्रुत ॥ स-
म्यक् दृष्टिने सम्यक्त्वपणे ग्रह्या समश्रुत अथवा मिथ्यादृष्टिने ए सम्यक्त्व श्रुत होय
शामाटे के सम्यक्त्वना हेतुपणाथी मिथ्यादृष्टि पोताना शास्त्र विचारतां केटलाक स्व
पक्षदृष्टिने त्यजे छे ६ ॥ सादि १ ॥ सपर्यवसित २ ॥ अने अनादि ३ ॥ अपर्यवसित ४ ॥

ते आ १२ अंग पर्यायास्तिक नयनी अपेक्षाये सादि १ सपर्यवसित २ छे ॥ ने द्रव्यास्तिक नयनी अपेक्षाये अनादि १ अपर्यवसित २ छे॥ ते संक्षेपथी ४ भेदे छे ॥ द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ भावथी ४ ॥ द्रव्यथी सम्यक् श्रुत एक जीव आश्रि सादि, सपर्यवसित अने घणा जीव आश्री अनादि, अपर्यवसित ॥ क्षेत्रथी पांच भरत अने पांच इरवत आश्रि सादि सपर्यवसित, पंच महाविदेह आश्रिने अनादि अपर्यवसित ॥ कालथी अवसर्पिणी उत्सर्पिणीने आश्रिने सादि १ सपर्यवसित २ ॥ नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणीने आश्रिने अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ भावथी जे जेवारे जिन प्ररूप्या भाव कह्या प्ररूप्या तेवारे ते भावने आश्रिने सादि १ सपर्यवसित २ ॥ क्षयोपसम भावने आश्रिने अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ अथवा भव्य सिद्धिकनुं श्रुत सादि १ सपर्यवसित २ ॥ अभव्य सिद्धिकनुं श्रुत अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ त्रीजे चोथे भांगे श्रुतनो अनादि भाव कह्यो, ते जघन्य ने मध्यमथी जाणवो ॥ तेनुं मान सर्वाकाश लोकाकाश तेना प्रदेश, तेने अनंतवार गुणीये ॥ एक आकाश प्रदेशे अनंता अगुरु

जीवने उघाडो छे ॥ जो ते आवरे तो जीव अजीवपणाने पामे ॥ जेम गाढ मेघनो समुदाय छते पण चंद्र सूर्यनी तमाम प्रभानो नाश न होय, तेम ए न्याये जीवनो पण ज्ञानभाव जाणवो ॥ ए रीते मतिश्रुतनो अनादिभाव अंगीकार करवो ७–८–९–१० ॥ हवे गमिकश्रुत ते जेमां सरखा गमा छे ते दृष्टिवाद श्रुत ११ ॥ अगमिक श्रुत ते जेमां सरखा गमा अलावा नही तेवा आचारांगादि श्रुत १२ ॥ अंगप्रविष्ट श्रुत ते १२ अंग गणधरकृत मूल सूत १३ ॥ शेष जे श्रुत ते अनियमथी अनंग प्रविष्ट कहेवाय छे ॥ अनंग प्रविष्ट (अंग बाह्य) तेना बे भेद ॥ आवश्यक १ ॥ आवश्यक व्यतिरिक्त २ ॥ आवश्यक ते सामायकादि छ अध्ययन ॥ आवश्यक व्यतिरिक्तना २ भेद ॥ कालिक १ ॥ उत्कालिक २ ॥ कालिक उत्कालिकनो विस्तार सिद्धांत प्रमाणना बोलथी जाणी लेवो १४ ॥ यावत् १२ अंग गणिपिटक अनंता जीवो आज्ञाए विराधीने अनंते काले पूर्वे ४ गति संसारमां भम्या ॥ वर्तमानकाले संख्याता जीव विराधीने भमे छे ॥ भविष्य काले अनंता जीव

राधीने जमशे ॥ एमज ए १२ अंग आज्ञाये आराधीने पूर्व काले अनंता जीवो तर्या ॥ वर्त्तमान काले आराधीने तरे छे ॥ जविष्य काले आराधीने तरशे ॥ ते श्रुत ज्ञाननी स्थिति ४ जेदे ॥ द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ जावथी ४ ॥ द्रव्यथी श्रुतज्ञानी उपयुक्त थको सर्व द्रव्यने जाणे देखे, एवं क्षेत्रथी १ ॥ कालथी २ ॥ जावथी ३ ॥ पण जाणी लेवुं ॥ सूत्र ज्ञानी अनंतां द्रव्यने जाणे देखे, ते मेरु आदि अदृष्ट पदार्थने पण शिष्यने अर्थे आलेखीने (चितरीने) देखाके तेनाथी, ते श्रोताने ए बुद्धि थाय के ए जगवान् आचार्य साक्षात् देखवानी परे कहे छे ॥ एम क्षेत्रादिने विषे पण जाणवुं ॥ इति परोक्ष श्रुत ज्ञान समाप्त २ ॥ प्रत्यक्ष ज्ञानना २ जेद ॥ इंद्रिय प्रत्यक्ष ते श्रोत्रेंद्रिय यावत् स्पर्शेंद्रिय प्रत्यक्ष १ ॥ नोइंद्रिय प्रत्यक्षना ३ जेद ॥ अवधिज्ञान प्रत्यक्ष १ ॥ मन.पर्यवज्ञान प्रत्यक्ष २ ॥ केवलज्ञान प्रत्यक्ष ३ ॥ अवधिज्ञान प्रत्यक्षना २ जेद ॥ जव-प्रत्ययिक १ ॥ क्षायोपशमिक २ ॥ जवप्रत्ययिक देवना नारकी वेने होय ॥ क्षायोपशमिक संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय मनुष्यने होय, तेना हेतु ए छे के, [illegible] कर्म, [illegible]

ध्यानी क्षय करीने, अनुदय ...

अप्रमादी गुणवंत साधुने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय ते संक्षेपथी ठ प्रकारे कह्युं ठे ॥ आनुगामिक १ ॥ अनानुगामिक २ ॥ वर्द्धमान ३ ॥ हायमान ४ ॥ पमिवाइ ५ ॥ अपमिवाइ ६ ॥ तेमां आनुगामिक ते ज्यां जाय त्यां साथे आवे तेना २ भेद ॥ अंतःगत १ ॥ मध्यगत २ ॥ तेमां अंतःगत ते आत्माना पर्यंत वर्ति प्रदेशे रह्युं तथा उदारिक शरीरने अंते रह्युं ॥ अंतःगतना ३ भेद ॥ पुरतो अंतःगत १ ॥ मार्गतो अंतःगत २ ॥ पार्श्वतो अंतःगत ३ ॥ तेमां पुरतो अंतःगत ते जेम कोइ पुरुष बळतो पुळो, बळती दीवी, बळतुं उंबाडीयुं, बळतुं ज्योतिनुं भाजन, मणीरत्न प्रमुख एटलावानां लइने आगळ करीने चाले तेनी आगळ प्रकाश थाय अने पाछळ वेज पासे अंधारुं थाय तेम पुरतो अंतःगत अवधिज्ञाननुं एवुं आवरण क्षयोपशम थयुं के जेणे करी आगलुं क्षेत्र देखे, पण पुंठे वेज पासे न देखे ए पुरतो अंतःगत १ ॥ मग्गओ (मार्गतो) अंतःगत ते ए पूर्वोक्त ठ बोलने लइ पाछले करी चाले तेने आगले वेज पासे अंधारुं ॥ पाछले अजवाळुं थाय, तेम मग्गओ अंतःगत अवधिज्ञाननुं

एवुं आवरण क्षयोपशम थयुं के जेणे करी पाछलुं क्षेत्र देखे, ने आगळ बे पडखे न देखे ए, मग्गओ अंतःगत ॥ पासओ (पार्श्वतो) अंतःगत ते पूर्वोक्त छ बोल लेइने डाबे जमणे पासे लेइने चाले तेने डाबे जमणे पडखे ज प्रकाश करे अने जमणे पडखे छ वाना होय तो जमणे प्रकाश करे अने डाबे पडखे प्रकाश न करे, तेम पासओ अंतःगत अवधिज्ञानना आवरणनो क्षयोपशम थये जेणे करी ते पासे क्षेत्र देखे, आगळ पाछळ क्षेत्र न देखे, ए पासओ अंतःगत ३ ॥ १ ॥ हवे मध्यगत अवधिज्ञान कहे छे ॥ ए पूर्वोक्त छ वानां लेइ माथे मुकीने चाले तेने छ दिशे अजवाळु करे, ते मध्यगत अवधिज्ञानना आवरणनो क्षयोपशम थाय के जेणे करी छ दिशिनुं क्षेत्र देखे ए मध्यगत २ ॥ शिष्ये गुरुने पूछ्युं के, स्वामी अंतःगत मध्यगतमां फेर शुं? गुरु कहे छे ॥ अंतःगत अवधिज्ञान ते आगळ तथा पाछळ तथा पासे एक कोरे संख्याता असंख्याता जोजन सुधी क्षेत्र देखे अने मध्यगत अवधिज्ञान तो सर्व दिशा देखे ॥ संख्याता असंख्याता जोजन प्रमाण अवगाढ द्रव्यने जाणे ॥ आनुगामिक अवधिज्ञानना जीवना प्रदेशनो विचित्र क्षयोपशम होवाथी ...

जाणवा १ ॥ अणाणुगामिक ते जेम कोइक पुरुषे तापणी करी होय,
होय, तेनी समीपे आसपास क्षेत्र देखे, पण आघो जाय त्यारे देखे नहि, तेम ज्यां अवधि
उपजे ते ज क्षेत्रे रह्यो थको जाणे देखे, पण आघो जाय त्यारे देखे नहि ॥ २ ॥ हवे वर्द्ध-
मान ते प्रशस्त अध्यवसायना स्थानके करी वध्युं छे चारित्र जेने तथा विशुध्यमान
छे चारित्र जेने एवा अणगारने सर्वथी सर्व दिशे अवधिज्ञान वधे ॥ जेटला
त्रि समयाहारक सूक्ष्म निगोदना शरीरनी अवगाहना तेटलुं जघन्य क्षेत्र जाणे देखे,
उत्कृ० अग्निकायना जीव अजितनाथने वारे घणा होय, ते अग्निकायना जीव एकेक आ-
काश प्रदेशे एकेको मुकीये एम आंतरा रहित मुकता मुकतां असंख्यात लोक जराय
अलोकमां लोक जेवडा असंख्याता खांडुआ प्रमाणे क्षेत्र देखवानी शक्ति प्रगटे, एटली
अवधिज्ञाननी समर्थाइ होय, एटलुं क्षेत्र जाणे देखे ॥ हवे क्षेत्र ने कालथी देखवुं कहे
छे ॥ जे क्षेत्रथी अंगुलनो असंख्यातमो जाग जाणे देखे, ते कालथी आवलिकाना असं-
ख्यातमा जागना कालनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अंगुलनो

संख्यातमो भाग जाणे देखे, ते कालथी आवलिकाना संख्यातमा भागनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अंगुल प्रमाणे जाणे देखे, ते कालथी आवलिकानी माठेरी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी प्रत्येक अंगुल क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी आवलिका पुरीनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी हाथ प्रमाणे क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी अंतर्मुहूर्त्त प्रमाणे कालनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी गाउक्षेत्रने जाणे देखे, ते कालथी एक दिवस माठेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी जोजन प्रमाणे क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी प्रत्येक दिवसनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी २५ जोजन जाणे देखे, ते कालथी पक्ष माठेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी भरतक्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी पक्ष पूरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी जंबूद्वीप जाणे देखे, ते कालथी मास झाझेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अढीद्वीपने जाणे देखे, ते कालथी वर्षनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी

क्षेत्रथी १५ मा रुचकद्वीपने जाणे ... ... कालथी प्रत्येक वर्षनी वात ... ॥ जे
अवधिज्ञानी क्षेत्रथी नाना संख्याता जोजनना द्वीपने जाणे देखे, ते कालथी संख्याता का-
लनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी असंख्याता द्वीपने जाणे देखे, ते कालथी
असंख्याता कालनी वात जाणे देखे ॥ एम उर्द्धलोक अधोलोक त्रिछो लोक ए त्रण लोके
वधतां वधतां असंख्याता लोक प्रमाणे जाणे देखे॥ एटली समर्थाइ प्रगटे ते वर्द्धमान अ-
वधिज्ञान ४ प्रकारे ते द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ भावथी ४ ॥ वृद्धिनी
रीत कहे छे ॥ ज्यारे कालथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे द्रव्यथी, क्षेत्रथी,
भावथी, जाणवानी वृद्धि होय १ ॥ ज्यारे क्षेत्रथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे का-
लथी जाणवानी भजना होय, ने द्रव्य भावथी जाणवानी नियमा वृद्धि होय, २ ॥
ज्यारे द्रव्यथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे क्षेत्रथी कालथी जाणवानी भजना होय, अने
भावनी वृद्धि होय ३ ॥ ज्यारे भावथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे द्रव्य क्षेत्र कालथी
जाणवानी भजना होय ४ ॥ सर्वथी काल सूक्ष्म छे ॥ आंख मिची उघाडीये तेमां

असंख्याता समय थाय, ते मांहिलो एक समय छे माटे १ ॥ तेथी क्षेत्र असंख्यातगणुं सूक्ष्म छे, केमके एक अंगुल प्रमाणे क्षेत्र लइये, तेमां असंख्याती श्रेणी छे, तेमांथी एक श्रेणी लइये ॥ ते श्रेणी अगुल प्रमाणे लांबी ने एक आकाश प्रदेश प्रमाणे पहोळी तेमांथी समय २ एकेक प्रदेश हरतां २ असख्याता कालचक्रना समय वही जाय, तोपण ते खूटे नहि एवो कालथी क्षेत्र सूक्ष्म छे २ ॥ तेथी द्रव्य अनंतगणुं सूक्ष्म छे, केमके एक अंगुल प्रमाणे श्रेणी लइये, तेमां असंख्यात श्रेणीयो छे, ते मांहेली एक श्रेणी एक अंगुल प्रमाणे लांबी एक आकाश प्रदेश प्रमाणे पहोळी, तेमां असंख्याता आकाश प्रदेश छे ॥ एकेक प्रदेशे अनंता २ परमाणु द्रव्य छे ॥ अनंतद्वीपप्रदेशी स्कंध एवां द्रव्य अनंतां छे ते समये २ एकेको द्रव्य हरतां अनंता कालचक्रना समय वही जाय, तोपण खूटे नहि, एटलां एक प्रदेश उपर द्रव्य छे, एम सर्व प्रदेश उपर छे, एवुं क्षेत्रथी द्रव्य सूक्ष्म छे ३ ॥ द्रव्यथी भाव अनंतगुणो सूक्ष्म छे, केमके एक अंगुल प्रमाणे क्षेत्र लइए, तेमां असंख्याती श्रेणीयो छे, तेमांथी एक श्रेणी लइये, ते श्रेणी एक अंगुल प्रमाणे लांबीने एक

प्रदेशनी पहोळी, तेमां असंख्याता प्रदेश छे ॥ एक प्रदेशमां अनंता परमाणु प्रमुख
द्रव्य छे ॥ एकेक द्रव्यमां अनंता पर्यव छे ॥ जेमके एक परमाणुमां, १ वर्ण ॥ १ गंध ॥
१ रस ॥ २ स्पर्श छे ॥ एक वर्णमां एक गुण कालो, यावत् अनंत गुण कालो, ए ५ बोलना अनंता
भेद कहेवा, एम द्विप्रदेशी स्कंधमां, बे वर्ण, बे गंध, बे रस, चार स्पर्श, ए दश जातिना
अनंता भेद छे ॥ एक त्रिप्रदेशी स्कंधमां, त्रण वर्ण, बे गंध, त्रण रस, चार स्पर्श, ए बार
जातिना अनंता भेद छे ॥ एम सर्व द्रव्यना पर्यव कहेवा, ते पर्याय समय समय एकेको
अपहरतां अनंता कालचक्रना समय वही जाय, त्यारे एक परमाणुना पर्यव
थाय ॥ एम द्विप्रदेशी स्कंधना अनंता पर्यव छे ॥ एम अनंतानंत प्रदेशी स्कंधना
अनंत पर्यव छे ॥ एम एक प्रदेश संबंधी अनंतां द्रव्यना अनंतानंत भेद पर्यव
छे ॥ एम संपूर्ण लोकना अनंता पर्यव छे माटे द्रव्यथी पर्याय (भाव) अनंतगुणो
सूक्ष्म छे ४ ॥ हवे ४ ने उपमा दइ बतावे छे ॥ कालने चणानी १ ॥ क्षेत्रने जुवारनी
२ ॥ द्रव्यने तलनी ३ ॥ भावने खसखसनी उपमा ४ ॥ ए ४ उपमाए करी समजवुं

३ ॥ हायमान ते अप्रशस्त–माठा अध्यवसाये करी, अशुभ जोगे करी, अशुभ लेश्याए करी, अशुभ ध्याने करी, अवधिज्ञानना पर्यव हीणा पडे तेनुं आवरण थाय ॥ जेम वधतुं हतुं तेम घटतुं जाय ४ ॥ पडिवाइ अवधिज्ञान ते जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागनुं क्षेत्र देखीने पडि जाय, एम संख्यातमो भाग, वालाग्र, प्रत्येक वालाग्र ॥ लीख, प्रत्येक लीख ॥ जु, प्रत्येक जु ॥ जवमध्य, प्रत्येक जवमध्य ॥ अंगुल, प्रत्येक अंगुल ॥ पग, प्रत्येक पग ॥ वेत, प्रत्येक वेत ॥ हाथ, प्रत्येक हाथ ॥ कुक्षि, प्रत्येक कुक्षि ॥ धनुष, प्रत्येक धनुष ॥ गाउ, प्रत्येक गाउ ॥ जोजन, प्रत्येक जोजन ॥ लाख, प्रत्येक लाख ॥ कोड, प्रत्येक कोड ॥ सो कोड, प्रत्येक सो कोड ॥ हजार कोड, प्रत्येक हजार कोड ॥ लाख कोड, प्रत्येक लाख कोड ॥ कोडाकोड, प्रत्येक कोडाकोड ॥ एम यावत् संख्यात कोडाकोड, असंख्यात कोडाकोड, जोजन प्रमाणे क्षेत्र देखीने पडी जाय, उ० लोकने देखीने पडी जाय॥ जे पडे ते जेम दीवो करी मुके ते दीवो पवनने जोगे करी ओलवाइ जाय, तेम पडिवाइ अवधिज्ञान आव्युं जाय ५ ॥ अपडिवाइ अवधिज्ञान ते जे अलोकना एक पण आकाश

केटलुं जाणे ते कहे ठे ॥ पहेली नरकना नारकी ज० साडात्रण गाउ, उ० ४ गाउ देखे॥ वीजीना ज० ३ गाउ, उ० साडात्रण गाउ देखे ॥ एम एकेक नरके ज० उ० मांथी अर्धो-अर्ध जोजन घटाडतां सातमी नरकना नारकी ज० अर्द्ध गाउ, उ० १ गाउ देखे॥ असुरकुमार ज० २५ जोजन देखे, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ नवनिकायना देव तथा व्यंतर ज० २५ जोजन देखे, उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ ज्योतिषी ज० उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ पहेला वीजा देवलोकना देवता उंचुं पोताना विमाननी ध्वजा लगी देखे ॥ नीचुं रत्नप्रभानो हेठलो चरिमांत जाणे देखे ॥ तिरछुं ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र जाणे देखे ॥ त्रीजाथी मांडी अनुत्तर विमानना देव सुधी, उंचुं पोतपोताना विमाननी ध्वजा सुधी देखे ॥ तीरछुं ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० असंख्यात [illegible]समुद्र जाणे देखे ॥ नीचुं देखे तो त्रीजा चोथा दे-[illegible]ला चरिमांत सुधी जाणे देखे ॥ पांचमा छठा देव-

लोकना देवता त्रीजी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ सातमा आठमा देवलोकना देवता चोथी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ ए-१०-११-१२ ए ४ देवलोकना देवता पांचमी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ पहेलीथी छठी ग्रैवेयक सुधीना देवता छठी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ सातमी ग्रैवेयकथी मांडी नवमा ग्रैवेयक सुधीना देवता सातमी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ पांच अनुत्तर विमानना देव कांइक उणो लोक देखे ॥ संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय ज० अंगुलनो असंख्यातमो नाग, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ संज्ञी मनुष्य पंचेंद्रिय ज० अंगुलनो असंख्यातमो नाग, उ० अलोकमध्ये लोक जेवडा असंख्याता खांडुआ जाणे देखे ॥ अवधिज्ञाननुं संठाण (देखवानो आकार) कहे छे ॥ नारकी त्रापाने आकारे देखे ॥ नवनपति पालाने आकारे ॥ व्यंतर पडहने आकारे ॥ ज्योतिषी झालरने आकारे ॥ बार देवलोकना देव उर्ध्वमुख मृदंगने आकारे ॥ नव ग्रैवेयकना देव फूलचंगेरीने आकारे ॥ पांच अनुत्तर विमानना देव जवनालिका तथा कुंवारिकाना कंचुवाने आकारे ॥ संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा संज्ञी मनुष्य नाना प्रकारने आकारे

देखे ॥ नारकी देवता तीर्थकरने अच्यतर अवधिज्ञान ॥ ति ... बाहिर अवधिज्ञान ॥
मनुष्यने अभ्यंतर ने बाहिर अवधिज्ञान होय ॥ नारकी देवताने अणुगामी १ ॥ अप-
डिवाइ २ ॥ अवस्थित ३ ॥ ए प्रकारनुं अवधिज्ञान होय ॥ तिर्यंच ने मनुष्यने अनु-
गामी १ ॥ अनानुगामी २ ॥ वर्द्धमान ३ ॥ हायमान ४ ॥ पडिवाइ ५ ॥ अपडिवाइ ६ ॥
अवस्थित ७ ॥ अनवस्थित ८ ॥ ए प्रकारनुं अवधिज्ञान होय ॥ हवे अवधिज्ञान संक्षे-
पथी ४ प्रकारे कहे छे ॥ द्रव्यथी अवधिज्ञानी ज० अनंतां रूपी द्रव्यने जाणे देखे, उ०
अनंतां रूपी द्रव्यने जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी अवधिज्ञानी ज० अंगुलनो असंख्यातमो
भाग जाणे देखे, उ० अलोकमा लोक जेवडा असंख्याता खांडुआ जाणे देखे ॥ कालथी
अवधिज्ञानी ज० आवलिकानो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उ० असंख्याता उत्स-
र्पिणी अवसर्पिणी काल गयानी अने आवतांनी वात जाणे देखे ३ ॥ भावथी अवधिज्ञानी
ज० अनंता भावने जाणे देखे, उ० अनंता भावने ते सर्व भावना अनंतमा भागने जाणे
देखे ४ ॥ इति प्रत्यक्ष अवधिज्ञान समाप्त ३ ॥ हवे प्रत्यक्ष मनःपर्यव ज्ञाननुं स्वरूप कहे छे ॥ मनः

पर्यव ज्ञान मनुष्य,संज्ञी,कर्मजूमि,संख्याता वर्षनी स्थितिवाळा,पर्याप्ता,समदृष्टि,संयति,अप्र-
मादी,लब्धिवत, एटला बोलवाळाने होय ॥ मनःपर्यव ज्ञानना २ जेद॥ ऋजुमति १॥विपुलमति
२॥ ऋजुमति कांइक विपुलमतिनी,अपेक्षाए ओछुं जाणे देखे, माटे जेद जूदा पाड्या छे ॥ हवे
मनःपर्यवज्ञान संक्षेपथी ४ प्रकारे कहे छे ॥ द्रव्यथी अनंत अनंत प्रदेशी स्कंधने जाणे
देखे ए ऋजुमति विपुलमतिथी विशेष जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी अंगुलनो असंख्यातमो
जाग, उ० हेठु रत्नप्रजाना उपला ने हेठला क्षुलक प्रतर सुधी ॥ उंचुं ज्योतिषीना उप-
ला तळा सुधी ॥ त्रिछु अढि द्वीप सुधी ॥ ऋजुमति अढि अंगुल ओछुं ने विपुलमति
पूरुं जाणे देखे २॥ कालथी पल्योपमनो असंख्यातमो जाग, उ० पल्योपमनो असंख्यातमो
जाग अतीत अनागत कालने जाणे देखे ॥ ए ऋजुमति विपुलमति एथी विशेष जाणे
देखे ३ ॥ जावथी अनंता जाव ते सर्व जावने अनंतमे जागे जाणे देखे ॥ विपुलमति एथी
काइ विशेष जाणे देखे ४ ॥ इति प्रत्यक्ष मनःपर्यव ज्ञान समाप्त ४ ॥ हवे प्रत्यक्ष केवलज्ञान

ल ज्ञान १ ॥ अजोगी नवस्थ केवल ज्ञान २ ॥ सिद्धस्थ केवल ज्ञानना २ नेद ॥ अनंतर सिद्धस्थ केवल ज्ञान १ ॥ परपर सिद्धस्थ केवल ज्ञान २ ॥ हवे केवलज्ञान संक्षेपथी ४ प्रकारे कहे छे ॥ द्रव्यथी सर्व द्रव्यने १ ॥ क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रने २ ॥ कालथी सर्व कालने ३ ॥ नावथी सर्व नावने जाणे देखे ४ ॥ केवल ज्ञाने करी तीर्थंकर अर्थने जाणी प्ररूपवा योग्य अर्थने कहे ते वचनजोगे करी गणधरादि सूत्र गुंथे ॥ इति प्रत्यक्ष केवल ज्ञान समाप्त ॥

इति पांच ज्ञानना बोल संपूर्ण ॥

सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल ॥

अथ नगवती शतक ६ उद्देशा ४ थाथी काल आश्री सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल लिख्यते ॥ गाथा–सपएसा १ आहारग २ नविय ३, सन्नि ४ लेस्सा ५ दिठी ६ संजय ७ कसाए ८ ॥

नाणे ए जोगु १० वओगे ११, वेएय १२ सरीर १३ पज्जत्ती १४ ॥ १ ॥

ए चौद द्वारनी गाथा कही ॥ हवे ते चौद द्वार उपर एक जीव आश्री अथवा घणा जीव आश्री सप्रदेशी अप्रदेशीनो विचार कहे छे ॥ सप्रदेशी एटले एकथी वधारे समयनी स्थितिवाळो, अप्रदेशी एटले प्रथम समयवर्ती अर्थात् जीवने अमुक भाव प्राप्त थयाने एकज समय थयो होय ते अप्रदेशी अने बे त्रण आदि अनेक समय थया होय ते सप्रदेशी कहेवाय ॥ तेमां प्रथम सप्रदेशी द्वार कहे छे ॥ समुच्चय एक जीव काल आश्री केम सप्रदेशी? के अप्रदेशी? उत्तर–नियमा सप्रदेशी ॥ एक नारकी काल आश्री केम सप्रदेशी? के अप्रदेशी? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एवं यावत् वैमानिक अने सिद्ध सुधी पचीस दंडक कहेवा ॥ हवे घणा जीव काल आश्री केम सप्रदेशी? के अप्रदेशी? उत्तर–नियमा सप्रदेशी ॥ घणा नारकी काल आश्री केम सप्रदेशी? के अप्रदेशी? उत्तर–त्रण भांगा ॥ सर्व सप्रदेशी १, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी एक २, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ३ ॥ एवं एकेंद्रिय वर्जीने वैमानिक सुधी वीश दंडक कहेवा ॥ पांच स्थावर काल आश्री

सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ॥ इति प्रथम द्वार संपूर्ण ॥ १ ॥ बीजुं आहारक द्वार

कहे ठे ॥ आहारक एक जीव आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एम नारकीथी वैमानिक सुधी चोवीश दंमकना एक एक जीव कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने पांच स्थावरमां तो सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा॥ शेष नरकादि १ए दंमकमां घणा जीवोमां प्रत्येक प्रत्येक दंमकमां ३ नांगा उपर प्रमाणे जाणवा॥ अणाहारिक आश्री समुच्चय एक जीव केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ एम नारकादि चोवीश दंमक अने सिद्ध पचीस दंमक कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीव ने पांच एकेंद्रियमां सप्रदेशी घणा ने अप्रदेशी घणा अने शेष नारकादि ओगणीश दंमकना घणा जीवोमां प्रत्येक प्रत्येकमां ठ(६) नांगा जाणवा॥ सर्व सप्रदेशी होय १, अथवा सर्व अप्रदेशी होय २, अथवा एक सप्रदेशी अने एक अप्रदेशी ३, अथवा सप्रदेशी एक अने अप्रदेशी घणा ४, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी एक ५, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ६, एना नांगा तो ० थाय पण

इहां ठ त्रिवर्यां ठे॥ घणा सिद्ध आश्री नांगा ३ पूर्वोक्त॥इति वीजुं आहारकद्वार संपूर्ण॥ १॥ त्रीजुं नव्यद्वार कहे ठे॥ नव्य समुच्चय एक जीव आश्री नियमा सप्रदेशी॥ शेष चोवीस दंमकना एक एक जीव सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीव तो नियमा सप्रदेशी अने नरकादि १ए दंमकना घणा जीवोमां प्रत्येकमां नांगा ३ पूर्वोक्त॥ पाच स्थावरमां सप्रदेशी घणा अप्रदेशी घणा॥ एम अनव्य पण समुच्चय जीवने चोवीश दंमक कहेवा॥ नोनवि नोअनवि, समुच्चय एक जीव सिय सप्रदेशी,सिय अप्रदेशी॥ एम एक सिद्ध पण कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने सिद्धनगवानमां प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्वोक्त॥ इति त्रीजुं नव्यद्वार संपूर्ण॥ ३॥ चोथुं संज्ञीद्वार कहे ठे॥ संज्ञी एक जीव काल आश्री सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ एम सोल दंमक संज्ञीना एक जीव आश्री कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने सोल दंमकमां प्रत्येकमां त्रण नांगा पूर्वोक्त॥ असंज्ञी समुच्चय एक जीव अने वावीश दंमकमां सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ घणा जीव आश्री एकेंडियमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा॥ घणा नारकी असंज्ञी आश्री

जांगा ६ पूर्वोक्त ॥ एम दश जवनपति, मनुष्य अने वाणव्यंतर मळी। बार दंडक कहेवा ॥ शेष त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यंच पचेंद्रिय असंज्ञी घणा जीव आश्री प्रत्येकमां त्रण जांगा पूर्वोक्त ॥ नोसंज्ञीनोअसंज्ञी आश्री, समुच्चय एक जीव सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एम मनुष्य अने सिद्ध एक जीव आश्री कहेवा ॥ घणा जीव, घणा मनुष्य अने घणा सिद्धमां नोसंज्ञीनोअसंज्ञी आश्री प्रत्येकमां त्रण जांगा पूर्वोक्त ॥ इति चोथुं संज्ञीद्वार संपूर्ण ॥४॥ पाचमुं लेश्याद्वार कहे छे ॥ सलेशी तो एक जीव ने घणा जीव ओघिक प्रथम द्वारवत् जाणवा ॥ कृष्णलेशी, नीललेशी अने कापोतलेशी एक जीवने घणा जीव आश्री आहारकवत् कहेवा ॥ नवरं दंडक बावीस कहेवा ॥ तेजु लेश्या समुच्चय जीव अने पंदर दंडकमां त्रण जांगा पूर्वोक्त ॥ पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकायमां प्रत्येक प्रत्येकमां ६ जांगा पूर्ववत् कहेवा ॥ पद्मलेश्या अने, शुक्ललेश्यामां समुच्चय जीव, तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य अने वैमानिक प्रत्येकमा ३ जांगा पूर्वोक्त ॥ अलेशी जीव अने सिद्धमां ३ जांगा पूर्वोक्त ॥ मनुष्यमां ६ जांगा पूर्वोक्त ॥ इति पांचमुं लेश्याद्वार संपूर्ण ॥ ५ ॥

हवे ६ हुं दृष्टिद्वार कहे छे ॥ समदृष्टि, समुच्चय जीव, सोळ दंडक अने सिद्ध भगवान प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्ववत् ॥ त्रण विकलेंद्रिय प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ मिथ्यादृष्टि, समुच्चय जीव, ओगणीश दंडकमां प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ मिश्रदृष्टि, समुच्चय जीव, सोल दंडक प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्वोक्त ॥ इति दृष्टिद्वार संपूर्ण ॥ ६ ॥ हवे सातमुं संयतिद्वार कहे छे ॥ समुच्चय संयति, समुच्चय जीव अने मनुष्यमां ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ असंयति समुच्चय जीवना ओगणीश दंडकमा ३ भांगा ॥ पांच स्थावर असंयति आश्री सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ संयतासंयति, समुच्चय जीव, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य प्रत्येकमां त्रण भांगा पूर्वोक्त ॥ नोसंयतिनोअसंयतिनोसंयतासंयति समुच्चय जीव ने सिद्धमां प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ इति संयतिद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥ हवे आठमुं कषायद्वार कहे छे ॥ सकषाय समुच्चय जीव ने ओगणीश दंडकमां प्रत्येकमां ३ भांगा पू० ॥ पांच स्थावरमा सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥

भांगा पूर्ववत् ॥ मानकषायी, मायाकषायीमां समुच्चय जीव ने पांच स्थावरमां क्रोध कषायी माफक ॥ नारकी अने देवता आश्री तेर दंडकमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ शेष पांच दंडकमां ३ भांगा पू० ॥ लोभकषायी समुच्चय जीव अने पांच स्थावर प्रत्येकमां क्रोधवत् ॥ नारकीमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ १८ दंडकमां प्रत्येकमा ३ भांगा ॥ अकषायी समुच्चय जीव, मनुष्य अने सिद्धमां प्रत्येकमां ३ भांगा ॥ इति कषायद्वार संपूर्ण ॥ ८ ॥ हवे नवमुं नाणद्वार कहे छे ॥ समुच्चय ज्ञानी, समुच्चय जीव, सोल दंडक अने सिद्ध भगवान प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्ववत् ॥ त्रण विकलेंद्रिय प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ एम सिद्ध वर्जीने मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी पण १९ दंडकमां कहेवा ॥ अवधिज्ञानी, समुच्चय जीव अने सोले दंडक प्रत्येकमां ३ भांगा ॥ मनःपर्यव ज्ञानी अने केवल ज्ञानी, समुच्चय जीव अने मनुष्यमां प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्ववत् ॥ समुच्चय अज्ञानी, मति अज्ञानी अने श्रुत अज्ञानी, समुच्चय जीव अने १९ दंडक प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्ववत् ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ विभंग

ज्ञानी, समुच्चय जीव अने सोल दंरुक प्रत्येकमां ३ जांगा पूर्ववत् ॥ इति नाणद्वार संपूर्ण ॥ ए ॥ हवे १० मु जोगद्वार कहे छे ॥ सजोगी, समुच्चय जीव, ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ मनजोगी, समुच्चय जीव अने सोल दंरुक ॥ वचन जोगी, समुच्चय जीव ने १ए दंरुक ॥ अने कायजोगी, समुच्चय जीव ने १ए दंडक ॥ प्रत्येकमां ३ जांगा पूर्ववत् ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ अजोगी, समुच्चय जीव अने सिद्धमां ३ जांगा ॥ मनुष्यमां ६ जांगा अलेशीवत् ॥ इति योगद्वार संपूर्ण ॥१०॥ हवे ११ मुं उपयोगद्वार कहे छे ॥ सागारोवउत्ता अने अणागारोवउत्ता, समुच्चय जीव अने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष १ए दंरुक अन सिद्ध आश्री प्रत्येकमां ३ जांगा पूर्ववत् ॥ इति उपयोगद्वार संपूर्ण ॥ ११ ॥ हवे १२ मु वेदद्वार कहे छे ॥ सवेदी, समुच्चय जीव ने चोवीश दंरुकमां सकषायवत् ॥ स्त्रीवेदी, समुच्चय जीव ने पंदर दंरुक, पुरुष वेदी, समुच्चय जीव ने १५ दंरुक, प्रत्येकमां ३ जांगा पूर्ववत् ॥ नपुंसक वेदी, समुच्चय जीव अने ठ दंरुक प्रत्येकमा ३ जांगा पूर्ववत् ॥ पांच स्थावरमा सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ अवेदी, समुच्चय जीव, मनुष्य अने

सिद्ध अकषायवत् ॥ इति वेदद्वार सपूर्ण ॥ १२ ॥ हवे १३ मु शरीरद्वार कहे छे ॥ सश-
रीरी, समुच्चय जीवने २४ दंडक ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ उदारिक शरीर आश्रि
समुच्चय जीवने पांच स्थावरमां सप्रदेशो घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष पांच दंडकमां
प्रत्येकमां उदारिक शरीर आश्री ३ भांगा पूर्ववत् ॥ वैक्रेय शरीर आश्री, समुच्चय जीवने वाउ-
कायमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष सोल दंडकमां प्रत्येकमां ३ भांगा ॥ आहारक
शरीर आश्री समुच्चय जीवने मनुष्यमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ तेजस कार्मण शरीर आश्री
समुच्चय जीवने चोवीश दंडक ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ अशरीरी, समुच्चय जीवने सिद्धमां
३ भांगा ॥ इति शरीरद्वार संपूर्ण ॥ १३ ॥ हवे १४ मुं पर्यासिद्वार कहे छे ॥ आहारप्रजा,
शरीरप्रजा, इंद्रियप्रजा अने श्वासोच्छ्वासप्रजा ए चार प्रजाना पर्याप्ता आश्री समुच्चय जीवने
पाच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, ने अप्रदेशी घणा ॥ शेष ओगणीश दंडकमां प्रत्येकमां ३
भांगा पूर्ववत् ॥ भाषाप्रजा ने मनप्रजामां संज्ञीवत् ॥ आहारप्रजाना अपर्याप्ता अणाहारक-
वत् ॥ शरीरप्रजाना अपर्याप्ता [illegible] प्रजाना अपर्याप्ता, श्वासोच्छ्वास प्रजाना अपर्याप्ता,

समुच्चय जीवने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ॥ शेष नारकी देवताना १३ दंडक अने मनुष्यमां ६ भांगा ॥ शेष प्रत्येकमां ३ भांगा ॥ भाषा मन अप्रजाता आश्री समुच्चय जीव, ३ विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रत्येकमां ३ भांगा ॥ शेष नारकी, तेर दंडक देवता अने मनुष्य प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ १४ ॥ इति सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल संपूर्ण ॥ विशेष विस्तार सूत्र श्री भगवतीजी शतक ६ उदेशा चोथाथी जाणवो ॥ पण आमां ओछुं अधिकुं विपरीत थयुं होय तो मिछामि डुक्कडं ॥ तमेव सच्चं निसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ॥

पढमापढमना बोल ॥

अथ श्री भगवती श० १८ माने उद्देशा १ लाथी १४ द्वारे पढमापढमना बोल

गाथा ॥ जीवा १ हारग २ [illegible] २ साण्ण ४, [illegible]

नाणे ए जोगु १० वओगे ११, वेए १२ य सरीर १३ पज्जत्ती १४, ॥ १ ॥

जो जेणपत्त पुव्वो, जावो सो तेण अपढमो होइ ॥

सेसेसु होइ पढमो, अपत्त पुव्वेसु जावेसु ॥ २ ॥

जावार्थ–जे जीव जे जाव पूर्वे पाम्यो ते जावे करी ते अप्रथम (अपढम) १ ॥ जे जाव पूर्वे नथी पाम्यो, ते जावने पामवुं ते प्रथम (पढम) २ ॥

हवे पहेलुं जीवद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्री जीव, जीवजावे अप्रथम,(अपढम) केमके जीवपणुं तो ठे ज ॥ कांइ नवुं पामवुं नथी, ते अपेक्षाए-१ ॥ एवं नारकीथी मांभी वैमानिकना दंमक सुधी ते ते जावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ सिद्ध, सिद्ध जावे पढम केमके सिद्धपणुं पूर्वे पाम्यो नथी, तेनुं प्रथम पामवापणुं थयुं ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एक वचन आश्रि २६ दंमक थया ॥ वहुवचन आश्रि कहे ठे ॥ जीवो, जीवजावे अपढम ॥ अपेक्षा पूर्ववत् समजवी १ ॥ एवं

नारकीथी मांरुी वैमानिकना दंरुक सुधी, ते ते नावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ सिद्धो, सिद्ध नावे प्रथम, तेनी अपेक्षा पूर्ववत् समजवी २६ ॥ ए ५२ दंरुके करी जीवद्वार संपूर्ण ॥ १ ॥

हवे वीजुं आहारकद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि एक आहारक जीव, आहारक नावे अपढम (अप्रथम) केमके आहारकपणु पूर्वे अनंति वार पाम्या ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांरुी वैमानिकना दंरुक सुधी ते ते नावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ ए एक वचन आश्रि २५ दंरुक थया ॥ बहुवचन आश्रि पण २५ दंरुक एज रीते जाणवा ॥ ए ५० दंरुक थया ॥ सिद्धने अनाहारकपणुं छे माटे एक वचने बहुवचने पुछवा नहि ॥ एक वचन आश्रि अनाहारक जीव, अनाहारक नावे कोइ प्रथम (पढम) केमके सिद्धने अनाहारकपणानो नाव प्रथम प्राप्त थयो छे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अप्रथम (अपढम) केमके विग्रह गतिने विषे अनाहारकपणुं अनंति वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांरुी वैमानिकना दंरुक सुधी ते ते

भावे एक अपढमज कहेवा केमके विग्रहगतिने विषे अनाहारकपणुं अनंति वार पामवाथी २५ ॥ सिद्ध अनाहारकभावे प्रथम (पढम) केमके सिद्धने अनाहारकपणुं प्रथम प्राप्त थयु छे ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एक वचन आश्रि २६ दंडक थया ॥ बहुवचन आश्रि २६ दंडक पूर्ववत् जाणवा ॥ ए ५२ दंडक थया ॥ एव आहारक अनाहारकना सर्व मळी १०४ दंडक थया ॥ इति आहारकद्वार संपूर्ण ॥ २ ॥

हवे त्रिजुं भव्यद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि भव्यसिद्धिक जीव, भव्यसिद्धिक भावे अपढम (अप्रथम) केमके भव्यनुं भव्यपणुं अनादि छे, माटे भव्यपणे प्रथम (पढम) नहि, एम अभव्य सिद्धिकपणुं पण अपढम ज जाणवुं १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिकना दंडक सुधी, ते ते भावे अपढम कहेवा २५ ॥ एवं बहुवचने पण २५ दंडक अपढम ज कहेवा ॥ एवं ५० दंडक थया ॥ एवं ५० दंडक अभव्यसिद्धिकना पण कहेवा ॥ नोभव्यसिद्धिकनोअभव्यसिद्धिकना जीव नोभव्यसिद्धिकनोअभव्यसिद्धिकने भावे पढम (प्रथम), नो-

जव्यसिद्धिकनोअजव्यसिद्धिकपणानुं प्रथम पामवापणुं ठे ते अपेक्षाए १ ॥ एवं सिद्धना दंमकमां पण ते जावने पामवा आश्रिमां पढमपणुं कहेवुं ॥ एकेक वचने २, एव वहु वचने पण २ दंमक जाणवा ॥ एवं ४ दंमक थया ॥ सर्व मळी १०४ दंमक थया ॥ इति जव्यद्वार संपूर्ण ॥

हवे चोथुं संज्ञीद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि संज्ञी जीव, संज्ञी जावे अपढम (अप्रथम) केमके संज्ञीपणुं पूर्वे अनंति वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी, ५ स्थावर, ३ विगलेंद्रियना ए ७ दंमक वर्जिने वैमानिकना दंमक सुधी, ते ते जावे अपढमपणुं कहेवुं १७ ॥ ए एक वचन आश्रि १७ दंमक थया, एवं वहु वचने पण १७ दंमक अपढम, एवं ४२ दंमक थया ॥ असंज्ञी जीव, असंज्ञीजावे अपढम (अप्रथम)१ ॥ एवं नारकीथी मांमी वाणव्यंतर सुधी, ते ते जावे अपढम कहेवा ॥ ज्योतिषी वैमानिकमां असज्ञी उपजे नहि, माटे असंज्ञीपणुं लाजे नहि, तेथी ए २ दंमक वर्जवा ॥ ए एक वचन आश्रि 23 दंमक थया ॥ एवं बहु

वचन पण २३ दंरूके अपढमपणुं कहेवुं, ए ४६ दंरूक थया ॥ नोसंज्ञीनोअसंज्ञी जीव, नोसंज्ञीनोअसज्ञी जावे पढम (प्रथम) केमके ए जावनुं प्रथम पामवापणुं छे, तें अपेक्षाए १ ॥ मनुष्यने सिद्धमां पण पढम (प्रथम) पणुं ज लाजे ॥ ए ३ दंरूक एक वचनें थया ॥ एवं बहु वचन आश्रि पण त्रणे दंरूके प्रथमपणुंज कहेवुं ॥ ए ६ दंरूक ॥ सर्व मळीनें ७६ दंरूक थया ॥ ए संज्ञीद्वार संपूर्ण ॥ ४ ॥

हवे पाचमुं लेश्याद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सलेशी जीव, सलेशी जावे अपढम केमके पूर्वें सलेशीपणानुं अनंति वार पामवुं थयुं छे, ते अपेक्षाए १ ॥ नारकीथी मांरूी वैमानिक सुधीमां, तें ते जावे अपढमपणुं होय २५ ॥ ए एक वचन आश्रि २५ दंरूक, एवं बहु वचन आश्रि पण २५ दंरूके अपढमपणुं लाजे ॥ ए ५० दंरूक थया ॥ एवं समुच्चय कृष्णलेशी जीव, कृष्णलेशी जावे अपढम १ ॥ नारकीथी मांरूी वाणव्यंतर सुधी, २२ दंरूके पण अपढम ॥ ए २३ दंरूक एक वचनना, एवं २३ बहु वचनना दंरूक, सर्व मळी कृष्णलेशीना ४६ दंरूक ॥ एवं नीललेशीना

४६ ॥ कापोतना ४६ ॥ तेजुलेशीना एक वचने १ए दंरुक, वहु वचने १ए; एवं ३० दंरुके अपढमपणुं ॥ पद्मलेशीना ४ दंरुक एक वचने ४ ॥ वहु वचने ४ ॥ एवं ० दंरुके अपढमपणुं ॥ शुक्ललेशीना पण ० दंरुके अपढमपणुं कहेवुं ॥ अलेशी जीव, अलेशी जावे पढम (प्रथम) केमके अलेशीपणानुं प्रथम पामवापणुं छे, ते अपेक्षाए १ ॥ एवं मनुष्य ने सिद्धमा पण पढमपणुं ॥ ए एक वचने ३ दंरुक, एवं वहु वचने ३ दंरुके प्रथमपणुं, ए ६ दंरुक थया ॥ एवं २४० दंरुक सर्व मळीने थया ॥ इति लेश्याद्धार संपूर्ण ॥ ५ ॥

हवे छठुं दृष्टिद्धार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि समदृष्टि जीव, समदृष्टि जावे कोइ प्रथम, ते कोइ समदृष्टिपणुं प्रथम पाम्यो ते अपेक्षाए ॥ कोइ अपढम, ते तेणे प्रतिपतित (परुवा) थी समदृष्टिपणुं फरीथी लाध्युं ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांरुी ५ स्थावर वर्जिने वैमानिक सुधी, प्रथम सम्यक्त्वना लाजे करी, प्रथम द्धितीयादि लाजे करी अपढम २० ॥ सिद्ध समदृष्टिजावे प्रथम १ ॥ ए २१ दंरुक एक वचनना थया ॥ एवं २१ दंरुक बहु वचनना, ने समदृष्टिजावे प्रथम,

ए ४२ दंरुक थया ॥ मिथ्यादृष्टि जीव, मिथ्यादृष्टिजावे अपढम १ ॥ एव नारकीथो वैमानिक सुधी अपढम कहेवा २५ ॥ ए एक वचनना २५ दरुक, एवं वहु वचन आश्रि पण २५ दंरुक, एव ५० दंरुक थया ॥ समामिथ्यादृष्टि जीव, समामिथ्यादृष्टिजावे एक वचने, समुच्चय जीवने सोल दरुक, सिय पढम, सिय अपढम ॥ पढम केमके नवी दृष्टि पामवापणुं ठे तेथी १ ॥ एवं नारकीथो मांरुी, ५ स्थावर, ३ विगलेंद्रिय, ए ७ दंरुक वर्जि १६ दंरुके प्रथमपणुं, ए १७ दंरुक एक वचनना, ने १७ दरुक वहु वचनना, ए ३४ दंरुके सिय पढम, सिय अपढमपणुं ॥ सर्व मळी १२६ दंरुक थया ॥ इति दृष्टिद्वार संपूर्ण ॥ ६ ॥

हवे सातमु संयतद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि संयत जीव, संयतजावे कोइ प्रथम, कोइ अपढम, अपेक्षा समदृष्टिवत् १॥ मनुष्य संयत जावे कोइ पढम, कोइ अपढम २॥ ए एक वचने २ दरुक, एवं वहुवचन आश्रि वे दंरुके अपढमपणुं कहेवुं ॥ ए ४ दंरुक थया ॥ असंयत जीव, असंयत जावे अपढम, असंयतपणु अनंती वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांरुी वैमानिक

सुधी, २४ दंरूक ते ते नावे अपढमपणुं कहेवुं. २५ ॥ ए २५ दंरूक एक वचन आश्रि, एव २५ दंरूक वहुवचन आश्रि अपढम जाणवा ॥ ए ५० दंरूक थया ॥ संयतासंयति आश्री समुच्चय जीव, तिर्यंच पंचेंड्रिय अने मनुष्य ३ दंरूक एक जीव आश्री, तेम त्रण दंरूक घणा जीव आश्री ॥ एम ६ ए दंरूक थया ॥ संयतासयती नाव आश्री, सिय प्रथम सिय अप्रथम नावना समदृष्टिवत् ॥ नोसयतनोअसंयत जीव, नोसंयतनोअसंयत नावे पढम केमके एनुं प्रथम पामवापणुं ठे ते अपेक्षाए ॥ सिद्धमां पण एज रीते पढमपणुं कहेवुं ॥ ए एक वचन आश्रि २ दंरूक ॥ एवं वहु वचन आश्रि वे दंरूके प्रथमपणुं कहेवुं ॥ सर्व मळीने ६४ दंरूक थया ॥ इति संयतद्वार संपूर्ण ॥ ३ ॥

हवे आठमुं कपाय द्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि सकपायी जीव, सकपाय नावे अपढम केमके सकपायपणाने अनादिपणुं ठे तेथी १ ॥ नारकीथी मांरूी वेमानिक सुधी सकपाय नावे अप्रथम २५ ॥ ए एक [illegible] ॥ दंरूक ॥ एवं वहु वचन आश्रि पण २५ दंरूके ते ते नावे अपढमपणुं कहेवुं ॥

ए ५० दंरुक ... एवं क्रोधकषायीना ५० दंरुक ... कषायीना ५० दंरुक ॥ लोजकषायीना ५० दंरुक ॥ सर्वत्र अपढमपणुं कहेवु ॥ अकषायी जीव, अकषायी जावे कोइ पढम, ते यथाख्यात चारित्रनो प्रथम लाज पामवाथी ॥ कोइ अपढम, ते यथाख्यात चारित्रनो द्वितीयादि लाज पामवाथी १ ॥ एवं मनुष्य १ ॥ ते ते जावे-कोइ पढम, कोइ अपढम जाणवा २॥ सिद्ध, अकषायी जावे पढम जाणवा, केमके सिद्धपणाने अनुगत अकषायजावनुं प्रथम पामवापणुं ठे तेथी ३ ॥ ए ३ दंरुक एक वचन आश्रि ॥ एवं वहु वचन आश्रि ३ दंरुके पूर्वोक्त एक वचननी रीते ज्या जे लाने त्यां ते कहेवुं ॥ एवं ६ दंरुक थया ॥ सर्व मळी २५६ दंरुक थया ॥ इति कषायद्वार संपूर्ण ॥ ८ ॥

हवे नवमुं ज्ञानद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि ज्ञानी जीव, ज्ञानजावे कोइ पढम, केमके कोइ ज्ञानीपणानो लाज प्रथम पामे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अपढम (अप्रथम) केमके कोइ पमिवाइपणाथी ज्ञाननो लाज फरीथी पाम्यो ते अपेक्षाए ॥ एवं नारकीथी मांमी ५ स्थावर वर्जीने वैमानिक

सुधी, ज्ञानजावे पढम अपढमपणुं कहेवुं २० ॥ सिद्ध ज्ञानजावे पढम, केमके प्रथम लाज्ञ पामवाथी २१ ॥ ए एक वचने २१ दंरूक ॥ एवं बहु वचने २१ दरूक, पण पूर्वोक्त रीते जाणवा ॥ ए ४२ दंरूक थया ॥ एवं मतिज्ञानना ४० दरूक, ते पूर्वोक्तमांथी सिद्धना एक वचन ने बहु वचन आश्रिना २ दंरूक वर्जवा ॥ एवं श्रुतज्ञानना ४० दंरूक पण ए रीते जाणवा ॥ एवं अवधिज्ञानना एक वचने बहु वचने ३४ दंरूक, ते पूर्वोक्त ४० थी, ३ विगलेन्डियना एक बहु वचने ६ दंरूक वर्ज्या, ते दंरूके पढम अपढमपणुं पूर्ववत् जाणवुं ॥ एवं मनःपर्यव ज्ञानना एक बहु वचने ४ दंरूके पण एमज जाणवुं ॥ केवलज्ञानी, ते ते जावे एक बहु वचने ६ दंरूके पूर्ववत् जाणवुं ॥ अज्ञानी अज्ञानजावे अपढम, अपेक्षा अनादि काळथी अज्ञाननुं पामवापणुं ठे ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी वैमानिक सुधी, ते ते जावे अपढमपणुं लाजे २५ ॥ ए एक वचनना २५ दंरूक ॥ एवं बहु वचन आश्रि २५ दंरूक एमज जाणवा ॥ एवं ५० दंरूक थया ॥ एमज मतिअज्ञानीना एक बहु वचने ५० दंरूक जाण-

२४ दंरुके ते, ए स्थावर, ३ विगलेंद्रियमां [illegible] वचनना २४ दंरुक वर्जीने अपढमपणुं होय ॥ सर्व मळीने ३५० दंडक थया ॥ इति ज्ञानद्वार संपूर्ण ॥ ए ॥

हवे दशमुं जोगद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सयोगी सयोगीनावे अपढम, अनादि काळथी ए नावनुं पामवापणुं छे ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते नावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ ए एक वचने २५ दंरुक ॥ एवं वहु वचन आश्रि पण २५ दंरुके अपढमपणुं कहेवुं ॥ ए ५० दरुक थया ॥ एवं मनयोगीना एक वचने १७ दंरुक, वहु वचने १७ दंरुक, ए ३४ दंरुके ते ते नावे अपढमपणुं जाणवुं ॥ वचनजोगीना एक वचने २० दंरुक ॥ वहु वचने २० दंरुक ॥ ए ४० दंरुके अपढमपणुं कहेवुं ॥ काययोगीने ५० दंरुके ते ते नावे सयोगीनी परे कहेवुं ॥ अजोगी जीव अजोगीनावे प्रथम, प्रथम लाजनी अपेक्षाए १ ॥ एवं मनुष्य सिद्धने नावे पढम, ए एक वचनना ३ दंरुक ॥ एवं वहु वचनना ३ दंरुक, ए ६ दंरुके पढमपणुं कहेवुं ॥ ए [illegible] थया ॥ इति जोगद्वार संपूर्ण ॥ १० ॥

हवे अग्यारमु उपयोग द्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सागारोवउत्ता, सागारोवउत्ता जावे कोइ अपढम, केमके अनादिपणुं छे ते अपेक्षाए ॥ कोइ पढम, केमके सागारने अणागार उपयोगे करी विशेषित सिद्धपणाने प्रथम (पढम)पणानो ज भाव छे ते अपेक्षाए १ ॥ एम नारकीथी मांडी वैमानिकना दंडक सुधी अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ सिद्धमां पढम (प्रथम) पणुं कहेवुं, ओघिक अपेक्षा दंडकवत् २६ ॥ एवं वहु वचनना २६ दंडकपण पूर्वोक्त रीते जाणवा ॥ ए ५२ दंडक थया ॥ एवं अणागारोवउत्ताना ५२ दंडके एक वचने वहु वचने पढम-अपढम पूर्वोक्त सागारोवउत्तानी रीते समजी लेवुं ॥ सर्व मळी १०४ दंडक थया ॥ इति उपयोग द्वार संपूर्ण ॥११॥

हवे १२ मुं वेदद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सवेदी जीव, सवेदी भावे अपढम, केमके अनादि काळथी पनो लाभ पामवाथी १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते भावे अपढमपणुं जाणवुं २५ ॥

बहुवचन २१ दंडके ॥ एवं पुरुषवेदना एक बहुवचने २२

दंडके ॥ एव नपुंसकना २४ दंडके अपढमपणु कहेवु ॥ अवेदी जीव अवेदीभावे कोइ पढम, केमके अवेदी भावनो प्रथम लाभ पामवाथी ॥ कोइ अपढम, केमके अवेदी भावनो द्वीतीयादि लाभ पामवाथी १ ॥ एवं मनुष्यने दंडके पण ते ते भावे पढम अपढमपणुं जाणवुं ॥ सिद्धमां अवेदीभावे, पढमपणुं ज लाभे, द्वीतीयादि लाभनो अभाव छे तेथी ॥ ए ३ दंडक एकवचनना, एवं ३ दंडक वहुवचनना पण जाणवा ॥ ए ६ दंडक थया ॥ सर्व मळी १४४ दंडक थया ॥ इति वेदद्वार संपूर्ण ॥ १२ ॥

हवे १३ मुं शरीरद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सशरीरी जीव, सशरीरी भावे अपढम, अनादिकाळथी एनो लाभ पामवाथी ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिकना दंडक सुधी ते ते भावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ ए एकवचनना २५ दंडके ने वहुवचनना २५ दंडके ते ते भावे अपढमपणुं जाणवुं ॥ ए ५० दंडक थया ॥ एवं उदारिक शरीरना एकवहुवचने २२ दंडके ॥ एवं वेक्रेयना एकवहु-

वचनं ३६ दंरुके अपढमपणुं कहेवुं ॥ आहारक शरीरी जीव, आहारक शरीरत्नावे कोइ पढम, केमके एनो प्रथम लाज पामवाथी १ ॥ कोइ अपढम, केमके पमिवाइने आहारकनो छितीयादि लाज पामवाथी १ ॥ एवं मनुष्यने दंरुके पण जाणवुं २ ॥ ए २ दंरुक एक वचनना ने २ दंरुक वहुवचनना जाणवा ॥ ए ४ दंरुक थया ॥ एवं तैजसना ५० दंरुक एकवचन वहुवचन आश्रिना ॥ एवं कार्मणना ५० दंरुक एक वहुवचन आश्रिना, ते ते त्नावे सशरीरीवत् जाणवा ॥ अशरीरी जीव, अशरीरीत्नावे पढम, केमके सिरूने अशरीरी त्नावनो प्रथम लाज ठे ते अपेक्षाए, ए एकवचने एक दंरुक, वहुवचने वीजो, ए वे दंरुक थया ॥ सर्व मळी २१५ दंरुक थया ॥ इति शरीरद्वार संपूर्ण ॥ १३ ॥

हवे १४ मुं पर्याप्तिद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि ५ पर्याप्तिए पर्याप्ति जीव, पर्याप्तित्नावे अपढम, केमके पर्याप्तिनुं अनंति वार पामवापणुं ठे तेथी १ ॥ एव नारकीथी मांमीने वैमानिक सुधी, ते ने त्नावे अपढमपणुं २० ॥ ए एकवचनना २०, ने वहुवचनना २०, एव ४० दंरुके अपढमपणुं कहेवु ॥

तमा ए स्थावरना एकवचन बहुवचनना १० दंडक वर्ज्या ॥ एवं आहार पर्याप्तिना एक बहुवचने ते ते जावे ५० दंडक ॥ शरीर पर्याप्तिना ५० ॥ इन्द्रिय पर्याप्तिना ५० ॥ श्वासोश्वास पर्याप्तिना ५० ॥ नापा मन पर्याप्तिना ४० दंडक ॥ सर्व मळी २७० दंडके अपढमपणुं कहेवुं ॥ ५ अपर्याप्तिए अपर्याप्ति जीव, अपर्याप्ति जावे अपढम (अप्रथम) १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते जावे अपढमपणुं कहेवुं २० ॥ ए एकवचनना २० दंडके ने बहु वचनना २० दंडके, सर्व मळी ४० दंडके अपढमपणुं कहेवुं ॥ एवं आहार अपर्याप्तिना एकवचन बहु वचने ५० दंडके ॥ एवं शरीर अपर्याप्तिने ५० दंडके ॥ एवं इंद्रिय अपर्याप्तिने ५० दंडके ॥ एवं श्वासोश्वास अपर्याप्तिने ५० दंडके ॥ एवं नापामन अपर्याप्तिने ४० दंडके ॥ सर्व मळी २७० ॥ एवं पर्याप्ति अपर्याप्तिना सर्व दंडक जेगा करतां ५६० दंडके अपढमपणुं कहेवुं ॥ इति पर्याप्तिद्वार संपूर्ण १४ ॥ सर्व मळीने दंडक २५८० थया ॥

इति पढम अपढमना बोल संपूर्ण ॥

चरमाचरमना बोल ॥

अथ श्री भगवती शतक १८ मा ने उद्देशा पहेलाथी चरमाचरमना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ जीवा १ हारग २ भव ३ सण्णि ४, लेस्सा ५ दिठी य ६ संजय ७ कसाए ८ ॥ नाणे ९ जोगु १० वओगे ११, वेएय १२ सरीर १३ पज्जत्ती १४ ॥ १ ॥

हवे प्रथम जीवद्वार कहे छे ॥ एकवचन आश्री जीव, जीवभावे अचरम, केमके जीवपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते भावे कोइ चरम, केमके नरकादिथी नीकळ्याने सिद्धगमनथी फरी नरकादिने विषे जावुं नथी ते अपेक्षाए १॥ कोइ अचरम ते पूर्वोक्तथी विपरीत २५ ॥ एवं सिद्ध, सिद्धभावे अचरम, केमके सिद्धपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए ॥ ए २६ दंडक एक वचनना, एवं २६ दंडक बहुवचनना, ए ५२ दंडक थया ॥ इति प्रथम जीवद्वार १ ॥ हवे बीजुं आहारकद्वार कहे छे ॥ आहारक जीव, आहारक भावे कोइ चरम, केमके फरीथी आहारकपणुं न पामशे, सिद्धि-

गमनथी, ते अपेक्षाए ॥ कोइ जीव अचरम १ ॥ नारकीथी मांकी वैमानिक सुधी, ते ते
नावे कोइ चरम, केमके—नरकादिपणे फरी आहारकपणुं न पामशे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ
अचरम । फरीथी नरकादिपणे आहारकपणु पामवाथी २५ ॥ ए २५ दंरूक एकवचनना,
एवं बहुवचनना २५ दरूक, एवं ५० दंरूक थया ॥ अनाहारक जीव अनाहारकपणे अच-
रम, केमके अनाहारकपणाने अनाशपणुं ठे तेथी १ ॥ एवं नारकीथी मांरुी वैमानिक सुधी
अनाहारकनावे कोइ चरम, केमके नरकादिपणे फरी अनाहारकपणुं न पामशे ते अपेक्षाए,
कोइ अचरम २५ ॥ सिरू अनाहारकपणे अचरम, अनाहारकपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए
२६ ॥ ए एक वचनना २६ दंडक, एवं बहु वचनना २६ दंरूक ॥ सर्व मळी ५२ दंरूक
थया ॥ इति आहारक द्वार ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं नव्यद्वार कहे ठे ॥ नव्यसिरूिक जीव,
नव्यसिरूिक नावे चरम, केमके मोक्षगमनथी ते नावनो नाश थवाथी १ ॥ एवं ना-
रकीथी मांरुी वैमानिक सुधी, ते ते नावे कोइ चरम, सिरूपणुं पामवे करी ॥ कोइ अचरम
२५ ॥ ए २५ दंरूक एकवचने, ने २५ बहुवचने. एवं ॥५० दंरूक थया ॥ अनव्यसिरूिक

जीव, अभव्यसिद्धिक भावे अचरम, अभव्यनो भव्यपणे अभाव छे तेथी १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते भावे अचरम २५ ॥ ए २५ दंडक एक वचनना, ने २५ बहुवचनना, ए ५० दंडक थया ॥ नोभव्यसिद्धिकनोअभव्यसिद्धिक जीव, नोभव्यनोअभव्य भावे अचरम, केमके तेने सिद्धपणुं छे तेथी ॥ वळी सिद्धपणाना पर्यायनुं अनपगम (अनाश) पणुं छे तेथी १ ॥ एवं सिद्धने पण जाणवुं २ ॥ ए २ दंडक एकवचने, २ दंडक बहुवचने, एवं ४ दंडक थया ॥ सर्व मळी १०४ दंडक थया ॥ इति भव्यद्वार ३ ॥ हवे चोथु संज्ञीद्वार कहे छे ॥ संज्ञी जीव, संज्ञीभावे कोइ चरम, कोइ अचरम, युक्ति आहारकवत् ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम १७ ॥ ए एकवचने १७ दंडक, बहुवचने १७ दंडक, सर्व मळी ३४ दंडक थया ॥ असंज्ञी जीव, असंज्ञीभावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वाणव्यंतर सुधी जाणवुं २३ ॥ ए एकवचने २३, बहुवचने २३, सर्व ४६ दंडक थया ॥ नोसंज्ञीनोअसंज्ञी जीव, नोसंज्ञीनोअसंज्ञीभावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते भावे चरम, केमके मनुष्यने केवलीपणो

करी मनुष्यपणाना अज्ञान व तथा २ ॥ सिद्ध ते ते भावे अचरम, केमके ते भावना पर्यायनुं (अनपगम) अनाशपणुं छे तेथी ३ ॥ ए ३ एकवचने, ३ बहुवचने, एवं ६ दंडक थया ॥ सर्व मळी ७६ दंडक थया ॥ इति संज्ञीद्वार ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं लेश्याद्वार कहे छे ॥ सलेशी जीव, सलेशी भावे कोइ चरम, केमके जे निर्वाण पामशे ते सलेशीपणाना चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ ए एकवचनना २५ ॥ बहुवचनना २५ ॥ सर्व मळी ५० दंडक थया ॥ एवं कृष्णलेशीना एक बहुवचने ४६ दंडके ॥ नीललेशीना ४६ दंडके ॥ कापोतलेशीना ४६ दंडके ॥ एवं तेजुलेशीना एक बहुवचने ३७ दंडके ॥ पद्मलेशीना एक बहु वचने ७ दंडके ॥ शुक्ललेशीना एक बहुवचने ७ दंडके ॥ सर्वत्र कोइ चरम कोइ अचरम ॥ अलेशी जीव, अलेशीभावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते भावे चरम, अपेक्षा नोसंज्ञीनोअसंज्ञीवत् २ ॥ सिद्ध ते ते भावे अचरम, केमके ते भावना पर्यायनुं अनाशपणुं छे तेथी २ ॥ ए ३ एकवचने, ने ३ बहुवचने, ६ दंडक थया ॥ सर्व मळी २४७ दंडक थया ॥ इति लेश्याद्वार ॥ ५ ॥ हवे छहुं दृष्टिद्वार कहे छे ॥

समदृष्टि जीव समदृष्टि भावे अचरम केमके समदृष्टिथी पडतो ठते पुनर्भावे अचरमपणुं ॥ नारकीथी मांकी वैमानिक सुधी ते ते भावे अचरमपणुं २१ ॥ सिद्ध ते ते भावे अचरम अपड्याथीज २२, ए एकवचनना २२, ने बहुवचनना २२, सर्व मळी ४४ दंडक थया ॥ मिथ्यादृष्टि जीव ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम, अपेक्षा आहारकवत् १ ॥ एवं नारकीथी मांकी वैमानिक सुधी ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ ए एकवचनना २५, ने बहुवचनना २५, सर्व मळी ५० दंडक थया ॥ समामिथ्यादृष्टि जीव ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांकी वैमानिक सुधी ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम १७ ॥ ए एकवचनना १७ दंडक, ने १७ दंडक बहुवचनना ए ३४ दंडक थया ॥ सर्व मळी १२८ दंडक थया ॥ इति दृष्टिद्वार॥८॥ हवे सातमुं संयतद्वार कहे छे ॥ संयत जीव, संयतभावे कोइ सिद्धगमनथी चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं मनुष्य कोइ चरम, कोइ अचरम २ ॥ ए एकवचनना २ दंडक, ने बहुवचनना २, एवं ४ दंडक ॥ असंयत जीव, असंयत भावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥

एव नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते नावे कोइने चरमपणुं, कोइने अचरमपणु जाणवुं २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवचनना २५, ए ५० दंमक थया ॥ संयतासंयत जीव, संयतासंयत नावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम १ ॥ तिर्यंच ते ते नावे पूर्ववत् २ ॥ मनुष्य ते ते नावे पूर्ववत् ३ ॥ ए एकवचने ३, ने बहुवचने ३, एवं ६ दंमक थया ॥ नोसंयतनोअसंयत जीव, ते ते नावे अचरम, केमके सिद्धने सिद्धपणाना पर्यायनुं अनपगम (अनाश) पणुं बे तेथी १ ॥ एवं सिद्धपणुं एमज जाणवुं २ ॥ ए एकवचनना २, ने बहुवचनना २, एवं ४ दंमके अचरमपणु ॥ सर्व मळीने ६४ दंमक थया ॥ इति संयतद्वार ॥ ७ ॥ हवे आठमु कपाय द्वार कहे बे ॥ सकपायी जीव, सकपाय नावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते नावे कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ एवं एकवचने २५, ने बहुवचने २५, सर्व मळी ५० दंमक थया ॥ एवं क्रोधकपायीने ५० दंमके ॥ एवं मानकपायीने ५० दंमके ॥ मायाकपायीने ५० दंमके ॥ लोनकपायीने ५० दंमके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ अकपायी जीव, अकपाय नावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते नावे

कोइ चरम, केमके अकषायीपणे युक्त मनुष्यपणाने जे वळी फरी नहि पामे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम, केमके जे फरीने पामशे ते अपेक्षाए २ ॥ सिद्ध ते ते नावे अचरम ३ ॥ ए एकवचने ३ दंमक, बहु वचने ३ दंमक, एवं ६ दंमक ॥ सर्व मळीने २५६ दंमक थया ॥ इति कषाय द्वार ॥ ८ ॥ हवे नवमुं ज्ञान द्वार कहे छे ॥ ज्ञानी, ज्ञानी नावे अचरम, केमके ज्ञानथी अपमवे पुनर्नावे अचरमपणुं छे माटे १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते नावे कोइ चरम, केमके ज्ञानयुक्त नारकीपणादि पुनर्लाजना अनावथी ॥ कोइ अचरम २० ॥ सिद्ध ते ते नावे अचरम, केमके अक्षीण ज्ञाननाव छतोज होय ते अपेक्षाए २१ ॥ ए एक वचनना २१, ने बहुवचनना २१, एवं ४२ दंमक थया ॥ एवं मतिज्ञानी ते ते नावे एक वचने, बहुवचने ४० दंमके ॥ श्रुत ज्ञानी ४० दंमके ॥ अवधिज्ञानी ३४ दंमके ॥ मनःपर्यवज्ञानी ४ दंमके कोइ चरम, कोइ अचरम, केमके केवलज्ञानप्राप्तिए फरी मति ज्ञानादि न पामे ते अपेक्षाए चरम ॥ केवलज्ञानी ६ दंमके अचरम ॥ अज्ञानी जीव अज्ञान नावे कोइ चरम, केमके अज्ञानने फरी नहि पामे ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत जे

अनव्य ते ज्ञानने नहि पामे ते अपेक्षाए कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकाथी मांडी वैमा-
निक सुधी, ते ते नावे कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवच-
नना २५, एवं ५० दंडक थया ॥ एवं मतिअज्ञानना एक बहुवचने ५० दंडके ॥ श्रुत
अज्ञानना ५० दंडके ॥ विनंगज्ञानना ३४ दंडके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ सर्व मळीने
३५० दंडक थया ॥ इति ज्ञानद्वार ॥ ए ॥ हवे दशमुं जोग द्वार कहे ले ॥ सजोगी जीव,
सजोगनावे कोइ चरम, केमके अजोगपणुं पामवानी अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम १ ॥ एवं नार-
कीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते नावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम २५ ॥ ए एकवचने
२५, ने बहुवचने २५, एवं ५० दंडक थया ॥ एवं मनजोगीना एक बहुवचने ते ते नावे
३४ दंडके ॥ एवं वचनजोगीना एक बहुवचने ते ते नावे ४० दंडके ॥ एवं काययोगीना
५० दंडके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ अयोगी जीव, अयोगनावे अचरम १ ॥ मनुष्य
ते ते नावे चरम, केमके मनुष्यने अयोगीपणे फरी मनुष्यपणानो अलान ले, ते अपेक्षाए
२ ॥ सिद्ध ते ते नावे अचरम, केमके ते नावनुं नाश थवापणुं नथी, ते अपेक्षाए ३ ॥

ए एक वचनना ३, ने बहुवचनना ३, एवं ६ दंडक थया ॥ सर्व मळी १७० दंडक थया ॥ इति जोगद्वार ॥१०॥ हवे ११ मुं उपयोगद्वार कहे छे ॥ सागारोवउत्ता जीव, सागारोवउत्ता जावे अचरम, केमके ते जावनुं अनाशपणुं छे, ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते जावे कोइ चरम, केमके नारकादिपणे फरी सागरोवउत्तापणुं न पामशे, ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम ॥ २५ ॥ सिद्ध ते ते जावे अचरम, केमके सागारोवउत्तापणानो नाश नथी, ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एकवचने २६, ने बहुवचने २६ ॥ सर्व मळी ५२ दंडक थया ॥ एवं अणागारोवउत्तानां पण ५२ दंडक, ते ते जावे सागारोवउत्तानी परे जाणवा ॥ सर्व मळी १०४ दंडक थया ॥ इति उपयोगद्वार ॥ ११ ॥ हवे १२ मुं वेद द्वार कहे छे ॥ सवेदी जीव, सवेदी जावे कोइ चरम, केमके सवेदपणुं फरीथी न पामे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम ते फरीथी पामे ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते जावे कोइ चरम, कोइ अचरम, २५ ॥ ए एकवचने २५, ने बहुवचने २५, सर्व मळी ५० थया ॥ एवं स्त्रीवेदना एक बहुवचने ३४ दंडक ॥ पुरुषवेदना

एक बहुवचने ३२ दंडके ॥ नपुंसक वेदना २४ दंडक ॥ ते ते जावे कोइ चरम, कोइ
अचरम ॥ अवेदी जीव, अवेदजावे अचरम १॥ मनुष्य अवेदजावे कोइ चरम, केमके अवेदपणे
युक्त मनुष्यपणाने जे वळी फरी नहि पामे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम, केमके कोइ
फरी पामशे ते अपेक्षाए २ ॥ सिद्ध ते ते जावे अचरम ३ ॥ ए एक वचने ३, ने बहु-
वचने ३, एवं ६ दंडक थया ॥ सर्व मळीने १४५ दंडक थया ॥ इति वेदद्वार ॥ १२ ॥
हवे १३ मुं शरीरद्वार कहे छे ॥ सशरीरी जीव, सशरीरजावे कोइ चरम, केमके सिद्धगमनथी
फरी शरीर नहि पामे, ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी
मांडी वैमानिक सुधी, ते ते जावे कोइ चरम, केमके नारकादिपणे फरी शरीर नहि पामे,
ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवचनना
२५, एवं ५० दंडक थया ॥ एवं उदारिक शरीरी ते ते जावे, एक बहुवचने ४२ दंडके ॥
एवं वैक्रेय शरीरी एक बहुवचने ते ते जावे ३६ दंडके ॥ एवं आहारक शरीरी ते ते
जावे एक बहुवचने ४ दंडके ॥ एवं तेजस् शरीरी ते ते जावे एक बहुवचने ५० दंडके ॥

एवं कार्मण शरीरी ते ते नावे एक वहुवचने ५० दंमके कोइ चरम, ने कोइ अचरम॥ अशरीरी जीव, अशरीरजावे अचरम, केमके तेने सिद्धपणुं ने तेथी ते जावनुं अनाशपणुं ठे, ते अपेक्षाये १ ॥ ए एक वचने १, ने वहुवचने १, एवं २ दंमक थया ॥ सर्व मळीने २१४ दंमक थया ॥ इति शरीरद्वार ॥ १३ ॥ हवे १४ मुं पज्जत्तिद्वार कहे ठे ॥ ५ पर्याप्तिए पर्याप्तिजीव पर्याप्तिजावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते जावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम २० ॥ ए एक वचनना २०, ने वहुवचनना २०, एवं ४० दंमक थया ॥ एवं आहार पर्याप्तिना ते ते जावे एक वहुवचने ५० दंमके ॥ एवं शरीर पर्याप्तिना एक वहुवचने ५० दंमके ॥ एवं इंद्रिय पर्याप्तिना ५० दंमके ॥ एवं श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिना ५० दंमके ॥ एवं जाषा मनपर्याप्तिना ४० दंमके कोइ चरम, कोइ अचरम जाणवा ॥ ए २७० दंमक थया ॥ ५ अपर्याप्तिए अपर्याप्ति जीव, अपर्याप्तिजावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिकसुधी, ते ते जावे कोइ चरम, कोइ अचरम २० ॥ ए एक वचनना २०, ने वहुवचनना २०, एवं ४०

दंरुक थया ॥ ... आहार अपर्याप्तिना एक बहु ... दंरुके ॥ एवं शरीर अपर्याप्तिना ५० दंरुके ॥ एव इंद्रिय अपर्याप्तिना ५० दंरुके ॥ एवं श्वासोश्वास अपर्याप्तिना ५० दंरुके ॥ एवं जाषा मन अपर्याप्तिना ४० दंरुके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ सर्व मळीने ५६० दंरुक थया ॥ इति पर्याप्तिद्वार ॥ १४ ॥ सर्व मळीने दंरुक २५०४ थया ॥

गाथा ॥ जो जं पाविहिति पुणो, जावं सो तेण अचरिमो होइ ॥
अच्चंत विजोगो जस्स, तेण जावेण सो चरिमो ॥ १ ॥

जावार्थ—जे जे जावने फरीने पामे, ते ते जावे करी अचरम होय ॥ जे जावनो अत्यंत वियोग, ते तेणे जावे करी चरम होय ॥ १ ॥

॥ इति चरमाचरमना बोल संपूर्ण ॥

आहारक अनाहारकना बोल ॥

अथ श्री आहारक अनाहारकना बोल पन्नवणा पद २० मांथी लख्या छे ॥

गाथा ॥ आहार १ जविय २ सन्नी ३, लेस्सा ४ दिठि ५ संजय ६ कसाए ७ ॥

एवं कार्मण-शरीरी ते ते भावे एक बहुवचने ५० दंडके कोइ चरम, ने कोइ अचरम॥
अशरीरी जीव, अशरीरभावे अचरम, केमके तेने सिरूपणं ने [illegible] —

[illegible] पज्जत्ति २३ ॥ २ ॥

[illegible] जीव एक वचन आश्रि कोइ आहारक ने
[illegible] समुद्घाते तथा १४ मे गुणठाणे तथा
[illegible] वैमानिक सुधी एक वचने जाणवुं ॥ समु-
[illegible] होय ते विग्रह गतिने विषे निगोद तथा
[illegible] आश्रि ३ भांगा, ते आहारक घणा
[illegible] दर्शनो विरह पडे, विग्रह
[illegible] कोइ वखते

जाणवु ॥ नोजव्यनोअ-
एवं अन्नव्यसिद्धिक एक वचन आश्र, बहु वचन आश्रिने जाणवु ॥ नोजव्यनोअ-
नव्यसिद्धिक एक वचन आश्रि एक अनाहारक ॥ एवं सिद्ध पण बहु वचन आश्रि अना-
हारक ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं संज्ञी द्वार कहे छे ॥ एक वचन आश्रि संज्ञी जीव, कोइ आहार-
क, ने कोइ अनाहारक, विग्रह गतिनी अपेक्षाए ॥ संज्ञीनुं आयु वेदवाथी संज्ञी शेप काल
आहारक, यावत् वैमानिक सुधी ॥ बहु वचन आश्रि संज्ञीने त्रिपे ३ जांगा, वैमानिक
सुधी ॥ असंज्ञी जीव, एक वचन आश्रि कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ एवं नारकी
यावत् वाणव्यंतर सुधी ॥ बहु वचन आश्रि असंज्ञी जीव, आहारक ने अनाहारक घणा,
एक जांगो ॥ असंज्ञी नारकी बहु वचन आश्री ६ जांगा ॥ एवं १० जवनपतिमां, ६ एकेंद्रि-
यमां अजंगक ॥ ३ विगलेंद्रिय, तिर्यच पंचेंद्रियमां ३ जांगा ॥ मनुष्य वाणव्यंतरमां ६ जांगा॥
नोसन्नीनोअसन्नी मनुष्य, सिद्धमां एक वचने आहारक ने अनाहारक ॥ बहु वचने नो-
संज्ञीनोअसंज्ञीमां आहारक ने अनाहारक समुद्घात आश्री घणा ॥ मनुष्यमां ३ जांगा ॥
सिद्धो अनाहारक घणा ॥ ३ ॥ हवे चोथुं लेश्याद्वार कहे छे ॥ सलेशी तथा सलेशी नारकी-

थी मांमी वैमानिक सुधी, एक वचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक॥ बहु वचन आश्री स-
लेशी, कृष्ण नील कापोत लेशीमां समुच्चय ने एकेंद्रियना ५ दंडक वर्जिने, बीजामां ३ त्रांगा
लाभे॥ बहु वचन आश्रि तेजु लेश्यामां पृथ्वी पाणी वनस्पतिमां ६ त्रांगा, बीजा देवलोक
सुधीना देवनुं तेमां आगमन छे माटे॥ शेष जीवोमां त्रांगा ३ लाभे ॥ जेने तेजुलेश्या होय
तेने ३ त्रांगा, शेषने नहि॥ पद्म शुक्ल लेश्या तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य, वैमानिकने विषे
होय ॥ एक वचन आश्रि आहारक, बहु वचन आश्रि त्रांगा ३ ॥ अलेशी जीव तथा
मनुष्य तथा सिद्ध एक वचने, बहु वचने अनाहारक ॥ ४ ॥ हवे पांचमु दृष्टि द्वार कहे छे ॥
समदृष्टि जीव कोइ आहारक, कोइ अनाहारक॥ ३ विगलेंद्रिय समदृष्टिमां ६ त्रांगा ॥ सिद्ध
अनाहारक ॥ शेषमां त्रांगा ३ लाभे ॥ मिथ्यादृष्टिमां समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शे-
षमां ३ त्रागा ॥ समामिथ्यादृष्टि जीव, आहारक एकेंद्रिय, ३ विगलेंद्रिय वर्जिने, वैमानिक
सुधीमां एक बहु वचने आहारक ज होय ॥ ५ ॥ हवे छठुं संयति द्वार कहे छे॥ संजति
मनुष्य ने समुच्चय जीव कोइ आहारक, कोइ अनाहारक, बहु वचने ३ त्रागा ॥ असंजति

एक वचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ बहु वचने समुच्चय जीवने
शेषमां ३ भांगा॥ सजतासंजति समुच्चय जीव, पंचेंद्रिय तिर्यच ने मनुष्यमा एक बहु वचने
आहारक ॥ नोसंयतनो असंयतनोसंयतासंयत समुच्चय जीवने सिद्ध एक बहु वचने
अनाहारक ॥ ६ ॥ हवे सातमुं कषाय द्वार कहे छे ॥ सकषायी जीव कोइ आहारक, कोइ
अनाहारक, एवं वैमानिक सुधी, बहु वचने समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ भांगा॥
क्रोध कषायी जीवोने विषे एमज जाणवुं ॥ नवरं देवमां ६ भांगा केमके देवमां स्वभावथी
लोभ बहु होय, क्रोधादि बहु न होय तेथी, क्रोध कषायी एक पण लाभे छे तेथी ॥ मान
कषायी माया कषायी देव नारकीने विषे ६ भांगा, शेषमां समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने
त्रण भांगा लाभे ॥ लोभ कषायी नारकीमां ६ भांगा, शेषमां जीव एकेंद्रिय वर्जिने
३ भांगा लाभे ॥ अकषायी नोसंज्ञीनोअसंज्ञीनी परे जाणवा ॥ ७ ॥ हवे आठमुं ज्ञान
द्वार कहे छे ॥ ज्ञानी एक वचने समदृष्टिनी परे, मतिज्ञानी श्रुत ज्ञानी, ३ विगलेंद्रियमां ६
भांगा, शेषमां ३ भांगा ॥ अवधिज्ञानी एक वचने तेमज बहुवचने तिर्यच पंचेंद्रिय आहा-

कहे छे ॥ सशरीरने विषे समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जि, शेषमां ३ भांगा ॥ उदारिक शरीरने विषे समुच्चय जीवने मनुष्यने विषे ३ भांगा ॥ शेषने विषे आहारक अनाहारक नहि ॥ वैक्रेय आहारक शरीरी एक बहुवचने आहारक अनाहारक नहि, जेने वैक्रेय आहारक संभवे तेज जाणवा, बीजा नहि ॥ नारकी, भवनपति, वाउकाय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिष, वैमानिकने विषे आहारक नहि ॥ मनुष्यने विषे होय ॥ तेजस् कार्मण शरीरने विषे एकवचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक, बहुवचने समुच्चय जीवने एकेंद्रियने विषे अभंगक ॥ शेषमां ३ भांगा ॥ अशरीरी सिद्धमां जीवने, सिद्धमां एक-बहुवचने अनाहारक ॥ १२ ॥ हवे तेरमुं पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ आहारादि पर्याप्तिने विषे समुच्चय जीवने, मनुष्यने विषे ३ भांगा ॥ शेष आहारक भाषा मनःपर्याप्ति पंचेंद्रियने होय, बीजाने न होय ॥ आहारक पर्याप्तिए अपर्याप्त अनाहारक एक ने बहु वचने ॥ शरीर पर्याप्तिए अपर्याप्त कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ उपरनी ४ पर्याप्तिए अपर्याप्त नारकी, देव मनुष्यने विषे ६ भांगा ॥ समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने शेषने विषे ३ भांगा ॥ भाषा, मन पर्याप्तिने विषे समुच्चय जीवने पंचेंद्रिय तिर्यंचमां भांगा ३ ॥ नारकी देव

मनुष्यने विषे ६ भांगा ॥ सर्व पदे ए एक बहुवचन जाणवा ...
ते पुछवुं, जेने जे न होय ते न पुछवुं ॥ यावत् भाषा मन पर्याप्तिये अपर्याप्त नारकी देव
मनुष्यने विषे ६ भांगा ॥ शेषने विषे ३ भांगा ॥ १३ ॥

॥ इति आहारक अनाहारकना बोल संपूर्ण ॥

बंधिशतकना बोल ॥

अथ श्री भगवती शतक २६ मांथी बंधिशतकना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ जीवा य १ लेस्स २ पक्खिय ३, दिट्ठि य ४ नाण ५ अनाणे ६ ॥
सण्णा य ७ वेय ८ कसाय ९, जोगु १० वओगे ११ एगारस ठाणाइं ॥ १ ॥
ए ११ द्वारनी गाथा कही ॥ हवे ११ उद्देशानी गाथा कहे छे ॥
अणंतरोववन्नादि चत्तारि ४, परंपरोववन्नादि तहेवय ४ ॥
उहिया १ चरिमा चरिमे य २, इइ एगारस उद्देशा ॥ १ ॥
समुच्चय दंडकथी मांडी चोवीसे दंडकमां जे ठकाणे जेटला बोल लाभे तेनो यंत्र आ प्रमाणे—

२५ दंडकनां नाम	जीव १	८	२	३	६	४	५	५	६	५	ग २	४७
समुच्चय दंडकमां	१	८	२	३	६	४	५	५	६	५	२	४७
७ नारकीना १ दंडकमां	१	४	२	३	४	४	४	२	५	४	२	३५
१० भवनपति,१६वाणव्यंतर, ए २१ दंडकमां	१	५	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३७
ज्योतिषी,१-२ देवलोक सुधीमां	१	२	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३४
३ थी १२ देवलोक सुधीमां	१	२	२	३	४	४	४	२	५	४	२	३३
९ ग्रैवेयकमां	१	२	२	२	४	४	४	२	५	४	२	३२
५ अनुत्तर विमानमां	१	२	१	१	४	०	४	२	५	४	२	२६
पृथ्वी,पाणी,वनस्पति ए ३ दंडकमां	१	५	२	१	०	३	४	२	५	२	२	२७
तेउ,वाउ ए २ दंडकमां	१	४	२	१	०	३	४	२	५	२	२	२६
३ विगलेंद्रियना ३ दंडकमां	१	४	२	२	३	३	४	२	५	३	२	३१
तिर्यंच पंचेंद्रियना दंडकमां	१	७	२	३	४	४	४	४	५	४	२	४०

हवे वंधीना ४ ज्ञांगा कहे ठे ॥ वंधी, वंधइ, बंधिस्सइ—बांधतो हवो, बा... ॥ वंधी, वंधइ, न वंधिस्सइ—बांधतो हवो, बांधे ठे, बांधशे नहि २॥ वंधी, न वधइ, वंधिस्सइ, वांधतो हवो, वांधतो नथी, वांधशे ३ ॥ वंधी, नवंधइ, नवंधिस्सइ—वांधतो हवो, वांधतो नथी, वाधशे नहि ४ ॥ ए वंधी त्रण काल आश्रि ठे, तेमां प्रथम पापकर्म (अशुज्ञ कर्म) वांधवा आश्रि २५ दंमकमां जे जे वोल लाज्ञे तेमां कोण २ ज्ञांगा लाज्ञे ते कहे ठे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ वोल लाज्ञे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्ललेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ मतिज्ञानीआदि ज्ञानी ४ ॥१०॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ सकषायी १३ ॥ लोज्ञ कषायी १४ ॥ सजोगी १५ ॥ मनजोगी १६ ॥ वचनजोगी १७ ॥ कायजोगी १८ ॥ सागारोवउत्ता १९ ॥ अणागारो वउत्ता २० ॥ ए २० वोलमां ४ ज्ञांगा लाज्ञे ॥ अलेशी १ ॥ केवली २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ वोलमां एक चोथो ज्ञांगो लाज्ञे ॥ अकषायीमां २ ज्ञांगा लाज्ञे ॥ त्रीजो ने चोथो ॥ शेष वोल २३ रह्या, तेमां पहेलो ने वीजो ए २ ज्ञांगा लाज्ञे ॥ नारकीथी मांमी मनुष्य वर्जि वैमानिक सुधी २३ दंमकमां

जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे, तेमां पहेलो बीजो ए २ भांगा लाभे ॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे भांगा उतारवा ॥ हवे ज्ञानावरणीय १ ॥ दर्शनावरणीय २ ॥ नाम ३ ॥ गोत्र ४ ॥ अंतराय ५ ॥ ए ५ कर्मनो भेगो अधिकार कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्लेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समकितदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ मत्यादि ४ ज्ञानी १० ॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ सजोगी १३ ॥ त्रण जोगी १६ ॥ सागारोवउत्ता १७ ॥ अणागारो वउत्ता १८ ॥ ए १८ बोलमां ४ भांगा लाभे ॥ अलेशी १ ॥ अजोगी २ ॥ केवली ३ ॥ ए ३ मां एक चोथो भांगो लाभे ॥ अकषायीमां त्रीजो ने चोथो बे भांगा लाभे ॥ शेष बोल २५ रह्या, तेमां पहेलो ने बीजो भांगो लाभे ॥ हवे मनुष्य वर्जिने २३ दंडकना सर्व बोलमां पहेलो ने बीजो ए २ भांगा लाभे ॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे भांगा उतारवा ॥ हवे वेदनीय कर्म बांधवा आश्रि कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्लेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समकितदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ केवलज्ञानी ७ ॥ नोसन्ना-

॥ अवेदी ए ॥ अकपायी १० ॥ सागारोव ... वेदनीय कर्मना बंध
वत्ता ८ ॥ अवेदी ए ॥ अकपायी १० ॥ त्रिजो न्नांगो वर्जिने ॥ त्रिजो न्नांगो वेदनीय कमना वंध
ए १२ बोलमां ३ न्नांगा लान्ने त्रिजो न्नांगो वर्जिने ॥ अजोगी २॥ ए २ मां १ चोथो न्नांगो लान्ने ॥
आश्रि मूलथी ठेज नहि ॥ अलेशी १ ॥ अजोगी २॥ ए २ मां १ चोथो न्नांगो लान्ने ॥ नारकीथी मान्नी मनुष्य वर्जिने
शेप ३३ बोल रह्या, तेमां पहेलो ने वीजो वे न्नांगा लान्ने ॥ नारकीथी मान्नी मनुष्य वर्जिने
२३ दंन्नकमां पहेलो ने वीजो वे न्नांगा लान्ने ॥ मनुष्यना दंन्नकमां समुच्चय जीवनी परे
न्नांगा जाणवा ॥ मोहनीय कर्मनो विस्तार ओघिक अशुन्न कर्मनी परे जाणवो ॥ हवे
आयुष्य कर्म वांधवा आश्रि कहे ठे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लान्ने, तेमां अलेशी १ ॥
केवली २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ मां एक चोथो न्नांगो लान्ने ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥
अवेदी २ ॥ अकपायी ३ ॥ ए त्रणमां त्रीजो ने चोथो ए वे न्नांगा लान्ने ॥ कृष्णपक्षीमां
पहेलो ने त्रीजो ए २ न्नांगा लान्ने ॥ मनःपर्यव ज्ञानी १ ॥ नोसन्नावउत्ता २ ॥ ए २ मां
१-३-४ ए ३ न्नांगा लान्ने ॥ शेप ३७ बोल रह्या तेमां चार न्नांगा लान्ने ॥ नारकीमां कृष्ण
पक्षी १ ॥ कृष्णलेशी २ ॥ ए २ मां पहेलो ने त्रीजो ए २ न्नांगा लान्ने ॥ समामि-

केवलज्ञान ४ ॥ नोसन्नावउत्ता ५ ॥ अवेदी ६ ॥ अकपायी ७॥ मनजोगी ८ ॥ वचनजोगी ए ॥ अजोगी १० ए १० वोल प्रथम समये न होय॥ शेष ३७ वोल राह्य, तेमां २ जांगा लान्ने, ते पहेलो ने वीजो ॥ नारकीथी मांमी १२ देवलोक सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला वोल लान्ने तेमांथी समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ मनजोग २ ॥ वचनजोग ३ ॥ ए त्रण त्रण वोल वर्जवा, शेष जेटला जेटला वोल रह्या तेमां पहेलो ने वीजो जांगो लान्ने ॥ नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमानमां जेटला जेटला वोल लान्ने, तेमांथी वे वे वोल वर्जवा ॥ मनजोग १ ॥ वचनजोग २ ॥ शेष जेटला २ वोल रह्या तेमा पहेलो ने वीजो जांगो लान्ने ॥ पांच स्थावरमां जेटला वोल लान्ने, तेमां वे जांगा लान्ने ते पहेलो ने वीजो ॥ त्रण विगलेंड्रियमांथी १ वचनजोग वर्ज्यो, शेष ३० वोल रह्या तेमां वे जांगा लान्ने, पहेलो ने वीजो ॥ तिर्यच पंचेंड्रियमांथी ५ वोल वर्ज्या ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ विजंगज्ञान २ ॥ अवधिज्ञान ३ ॥ मनजोग ४ ॥ वचनजोग ५ ॥ शेष ३५ वोल रह्या तेमां २ जांगा लान्ने, पहेलो ने वीजो ॥ मनुष्यमांथी ११ वोल वर्ज्या ॥ अलेशी १ ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि २ ॥ विजंग-

ज्ञान ३ ॥ मन-पर्यवज्ञान ४ ॥ केवलज्ञान ५ ॥ नोसन्नावउत्ता ६ ॥ अवेदी ७ ॥ अक-षायी ८ ॥ मनजोग ९ ॥ वचनजोग १० ॥ अलेशी ११ ॥ शेष बोल ३६ रह्या तेमां २ नांगा लाने, पहेलो ने बीजो ॥ ए समुच्चय अशुनकर्म आश्रि कह्युं ॥ तेम ज्ञानावरणीय १ ॥ दर्शनावरणीय २ ॥ वेदनीय ३ ॥ मोहनीय ४ ॥ नाम ५ ॥ गोत्र ६ ॥ अंतराय ७ ॥ ए ७ कर्मनो विचार ओघिकनी परे जाणवो ॥ हवे आयुष्यकर्म बांधवानो अधिकार कहे ठे ॥ मनुष्य वर्जि २३ दंमकमा जे जे बोल लाने ठे, ते ते सर्व बोलमां १ त्रिजो नांगो लाने ॥ मनुष्यमां कृष्णपक्षी एक बोलमां त्रिजो नांगो लाने ॥ शेष ३५ बोलमां २ नांगा लाने ते त्रिजो ने चोथो ॥ ए रीते अनंतरोववन्नगादि ४ उद्देशा जाणवा ॥ इति पांचमो उद्देशो समाप्तः ५ ॥ हवे परंपरोववन्नगादि ४ उद्देशा कहे ठे ॥ परंपरोववन्नगा ते घणा समय उपने थया होय ते १ ॥ परंपरोगाढगा ते घणा समय आकाश क्षेत्र स्पर्श्याने थया होय ते २ ॥ परंपरोआहारगा ते घणा समय आहार लीधाने थया होय ते ३ ॥ परंपरोपज्जत्तगा ते घणा समय प्रजा बांध्याने थया होय ते ४ ॥ ए ४ उद्देशानां ११ द्वार, २५ दंमक, ए पापकर्मबंधन अधि-

कार सर्व व्यक्तवता प्रथम ओघिक उद्देशानी परे जाणवी ॥ नवरं पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ दंडकमां २६ बोल लाभे कहेवा ॥ एक तेजुलेश्या वर्जि, त्रण विगलेंद्रियमां २७ बोल लाभे कहेवा ॥ ते ३१ बोलमांथी समकितदृष्टि १ ॥ त्रण ज्ञान ४ ॥ ए ४ बोल वर्जवा ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥ इति नवमो उद्देशो समाप्तः ॥ ए ॥ हवे दशमो चरमनो उद्देशो कहे छे ॥ ए उद्देशाना ११ द्वार, २४ दंडक, ए पापकर्म बंधनाधिकार सर्व व्यक्तवता प्रथम ओघिक उद्देशानी परे जाणवी ॥ नवरं मनुष्यपदे आयुषनी अपेक्षाये सामान्यथी ४ भांगा कह्या छे, तेमां चरम मनुष्य आश्रि चोथो भांगो संभवे छे ॥ एम न मानीए तो चरमपणुं न संभवे ॥ एम बीजे पण विशेष जाणवुं ॥ इति दशमो चरम उद्देशो समाप्तः ॥ १० ॥ हवे ११ मो अचरमनो उद्देशो कहे छे ॥ ए उद्देशाना, ए पापकर्मबंधननो अधिकार, २४ दंडक, ११ द्वारथी बतावे छे ॥ पापकर्म मोहनीय कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४४ बोल लाभे, ते ४७ बोलमांथी अलेशी १ ॥ केवलज्ञानी २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ बोल वर्ज्या ॥ ए ३ ने छेल्लो भव करवापणुं छे माटे, ए ४४ बोलमां समु-

... सुक्कपक्खी ४ ॥ समकिती ५ ॥ ज्ञान ५ ॥
च्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्कलेशी ३ ॥ शुक्कपक्खी ४ ॥ समकिती ५ ॥ ज्ञान ५ ॥ ... ए १० ॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ सकषायी १३ ॥ लोभ कषायी १४ ॥ सजोगी १५ ॥ मनजोगी १६ ॥ वचनजोगी १७ ॥ कायजोगी १८ ॥ सागारोवउत्ता १९ ॥ अणागारोवउत्ता २० ॥ ए २० बोलमां १–२–३ ए ३ भांगा लाभे ॥ अकषायीमां एक त्रिजो भांगो लाभे ॥ शेष २३ बोल रह्या तेमां १-२ ए २ भांगा लाभे ॥ नारकीथी मांडी मनुष्य वर्जिने वैमानिकमां ठेठ ४ अनुत्तर विमान सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे तेमां १–२ ए २ भांगा लाभे ॥ मनुष्यमां ४४ बोल लाभे, तेमां समुच्चय जीवनी परे जे जे बोलमां जे जे भांगा कह्या छे ते ते भांगा कहेवा ॥ हवे आयुष्य वर्जिने ज्ञानावरणीयादि ५ कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४४ बोल लाभे ॥ तेमांथी पूर्वे २० बोल वर्ज्या हता तेमांथी सकषायी १ ॥ लोभ कषायी २ ॥ ए २ बोल वर्ज्या, शेष १८ बोल रह्या तेमां १–२–३ ए ३ भांगा लाभे ॥ अकषायीमां १ त्रिजो भांगो लाभे, शेष २५ बोल रह्या तेमां १–२ ए २ भांगा लाभे ॥ नारकीथी मांडी ४ अनुत्तर विमान सुधीमां १–२

ए २ भांगा लाभे ॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे जाणवुं ॥ हवे वेदनीय कर्म आश्रि समुच्चय जीवथी मांडी ४ अनुत्तर विमान सुधीमां जे जे ठेकाणें जेटला जेटला बोल लाभे छे, तेमां १–२ ए बे भांगा लाभे ॥ हवे आयुष्य कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४४ बोल लाभे तेमांथी समामिथ्यात्व दृष्टि १ ॥ अवेदी २ ॥ अकषायी ३ ॥ ए ३ मां १ त्रिजो भांगो लाभे, शेष ४१ बोल रह्या तेमां १–३ ए बे भांगा लाभे ॥ नारकीथी मांडी पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय, तथा मनुष्य वर्जिने वैमानिकमां ४ अनुत्तर विमान सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे, तेमांथी एक समामिथ्यात्व दृष्टिमां एक त्रीजो भांगो लाभे, शेष बोल रह्या तेमां १–३ ए बे भांगा लाभे ॥ पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिमां २७ बोल लाभे, तेमांथी एक तेजुलेशीमा त्रिजो भांगो लाभे, शेष २६ बोल रह्या तेमां १–३ ए बे भांगा लाभे ॥ त्रण विगलेंद्रियमां ३१ बोल लाभे, तेमांथी समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ३ ए ४ बोलमां एक त्रिजो भांगो लाभे ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमां १–३ ए २ भांगा लाभे ॥ मनु-

ण्यमां जे जे बोलमां जे जे जागा लाजे, ते समुच्चय जीवना दंमकनी परे उतारवा ॥ इति अगीयारमो अचरम उद्देशो समाप्त ॥ ११ ॥

इति बंधिशतकना बोल संपूर्ण ॥

समवसरणना बोल ॥

अथ श्री जगवती श० ३० मांथी समवसरणना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ जीवाय १ लेस्स २ पक्खि य ३, दिठ्ठि य ४ नाण ५ अनाणे ६ ॥

सणाय ७ वेय ८ कसाय ए, जोगु १० उओगे ११ एगारस ठाणाइं ॥ १ ॥

ए ११ ठाणा, बोल ४७; दंमक २४ अने समुच्चय १, ए दंमक २५, उपर उतारवा, तेनो विचार कहे छे ॥

२५ दंडकना नांम	जीव १	लेश्या ८	पक्ष २	दृष्टि ३	ज्ञान ६	अज्ञान ४	संज्ञा ५	वेद ५	कषाय ६	जोग ५	उपयोग २	सर्व ४७
समुच्चय जीवमां	१	८	२	३	६	४	५	५	६	५	२	४७
७ नारकीमां	१	४	२	३	४	४	४	२	५	४	२	३५
१० भवनपति, १६ वाणव्यंतरमां	१	५	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३७
ज्योतिषीथी, पहेला २ देवलोक सुधी	१	२	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३४
३ जाथी १२ देवलोक सुधी	१	२	२	३	४	४	४	२	५	४	२	३३
९ ग्रैवेयकमां	१	२	२	२	४	४	४	२	५	४	२	३२
५ अनुत्तर विमानमां	१	२	१	१	४	०	४	२	५	४	२	२६
पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिमां	१	५	२	१	०	३	४	२	५	२	२	२७
तेउ वाउमां	१	४	२	१	०	३	४	२	५	२	२	२६
३ विगलेंद्रियमां	१	४	२	२	३	३	४	२	५	३	२	३१
तिर्यच पंचेंद्रियमां	१	७	२	३	४	४	४	४	५	४	२	४०

[illegible] उपर ४७ बोल उतारवा ॥ [illegible] वर्जीने २ समकित [illegible]

हवे समवसरण ४ ॥ क्रियावादी १ ॥ अक्रियावादी २ ॥ अज्ञानवादी ३ ॥ विनयवादी ४ ॥ ए ४ समवसरण उपर ४७ बोल उतारवा ॥ समुच्चय जीवमां बोल ४७ लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ७ बोलमां क्रियावादी वर्जिने ३ समवसरण लाभे, अने अलेशी १ ॥ समदृष्टि २ ॥ ज्ञान ६ ॥ एवं ८ ॥ नोसन्नावउत्ता ९ ॥ अवेदी ॥ १० ॥ अकषायी ११ ॥ अजोगी १२ ॥ ए १२ बोलमां समवसरण १ क्रियावादीनुं लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ शेष बोल २८ मां समवसरण ४ लाभे ॥ ए पहेलुं समुच्चयनुं द्वार थयुं ॥ १ ॥ हवे नारकीमां ३५ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां क्रियावादी वर्जिने ३ समवसरण लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमां समवसरण एक क्रियावादीनुं लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ शेष बोल २३ रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे ॥ ए नारकीनुं बीजुं द्वार थयुं ॥ २ ॥ हवे भवनपति वाणव्यंतरमां ३७ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यात्व

तेमां समवसरण ४ लाभे ॥ ए १२ मुं द्वार थयुं ॥ हवे आयुष्यना बंध आश्रि कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां समवसरण ३ लाभे ॥ ते ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ अलेशी १ ॥ अकषायी २ ॥ समामिथ्यादृष्टि ३ ॥ केवलनाणी ४ ॥ अवेदी ५ ॥ अजोगी ६ ॥ ए ७ बोलवाळा आयुष्य बांधे नहि ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलवाळा बे गतिनुं आयुष्य बांधे ते मनुष्य ने देवनुं ॥ मनःपर्यवज्ञानी १ ॥ नोसन्नावउत्ता २ ॥ ए २ बोलवाळा १ देवगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ कृष्ण १ ॥ नील २ ॥ कापोत ३ ॥ ए ३ लेश्यामां समवसरण ४ लाभे तेमां क्रियावादी एक मनुष्य गतिनुं आयुष्य बांधे ने शेष ३ समवसरणवाळा ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ तेजु १ ॥ पद्म २ ॥ शुक्ल ३ ॥ ए ३ लेशीमा समवसरण ४ लाभे ॥ तेमां क्रियावादी मनुष्य ने देव ए बे गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा एक नारकी वर्जिने त्रण गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष २२ बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे तेमां क्रियावादी मनुष्य ने देव ए बे गतिनुं आयुष्य बांधे अने नारकी देवता क्रियावादी होय ते मनुष्यनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष

४ गतिनुं आयुष्य वांधे ॥ हवे नारकी भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा पहेला देवलोकथी मांडी आठमा देवलोक सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला वोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ वोलना होय ते, मनुष्य ने तिर्यंच ए २ गतिनुं आयुष्य वांधे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ वोलना होय ते १ मनुष्य गतिनु आयुष्य वांधे ॥ समामिथ्यादृष्टिवाळा आयुष्यना अवंधक, शेष वोल जेमां जेटला जेटला लाभे ठे तेमां क्रियावादी एक मनुष्यगतिनुं आयुष्य वांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा मनुष्य ने तिर्यंच ए वे गतिनुं आयुष्य वांधे ॥ नवमा देवलोकथी मांडी सर्वार्थसिद्ध सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला वोल लाभे ठे ते सर्व समवसरणवाळा एक मनुष्यगतिनुं आयुष्य वांधे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टिवाळा आयुष्यना अवंधक जाणवा ॥ ए ७ द्वार थयां ॥ ७ ॥ हवे पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ मां २७ वोल लाभे ठे तेमां एक तेजुलेशी आयुष्यना अवंधक, शेष २६ वोलवाळा मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए वे गतिनुं आयुष्य वांधे ॥ ए ८ मुं द्वार थयुं ॥ ८ ॥ हवे तेउ १ ॥ वाउ २ ॥ ए वेमां

२६ बोल लाभे ते सर्वे १ तिर्यंच गतिनु आयुष्य बांधे ॥ ए ए मुं द्वार थयुं ॥ ए ॥ हवे त्रण विगलेंद्रियमा ३१ बोल लाभे तेमां समकितदृष्टि १ ॥ ज्ञान ३ ॥ ए ४ बोलवाळा आयुष्य न बांधे, शेष २७ बोलवाळा मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए बे गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ ए १० मु द्वार थयुं ॥ १० ॥ हवे तिर्यंच पंचेंद्रियमांहि ४० बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलवाळा ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलवाळा १ देवगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समःमिथ्यात्वदृष्टि आयुष्य न बांधे ॥ शेष २८ बोल रह्या तेमां कृष्ण १ ॥ नील २ ॥ कापोत ३ ॥ ए त्रण लेश्यामां समवसरण ४ लाभे, तेमा जे क्रियावादी होय ते आयुष्य न बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ तेजु १ ॥ पद्म २ ॥ शुक्ल ३ ॥ ए त्रण लेश्यामां समवसरण ४ लाभे, तेमा जे क्रियावादी ते १ देवगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा १ नारकीनु आयुष्य वर्जिने ३ गतिनु आयुष्य बांधे ॥ ए ११ मुं द्वार थयुं ॥ हवे मनुष्यमां ४७ बोल लाभे तेमा जे जे बोल आयुष्य बांधे न बांधे तेनो वर्णव समुच्चय जीवना आयुष्य

[illegible] जीवमां ए बोलमां मनुष्य अने देवतानुं
वांधवाना द्वारनी परे जाणवो ॥ नवरं समुच्चय जीवमां ए बोलमां मनुष्य अने देवतानुं ॥ ए १२ मुं द्वार थयुं ॥
आयुष्य वांधे ते ठेकाणे मनुष्य देवगति वैमानिकनुं आयुष्य वांधे ॥ ए १२ मुं द्वार थयुं ॥
हवे नव्य अनव्यनुं द्वार कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥
मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ए ६ बोलमां नव्य अनव्य वे होय ॥ अलेशी १ ॥ शुक्ल-
पक्षी २ ॥ समदृष्टि ३ ॥ समामिथ्यादृष्टि ४ ॥ ज्ञान ६ ॥ एवं १० ॥ नोसन्नावनत्ता ११ ॥ अ-
वेदी १२ ॥ अकषायी १३ ॥ अजोगी १४ ॥ ए १४ बोलमां एकला नव्य होय ॥ शेष २७
बोल रह्या तेमां जे क्रियावादी होय ते नव्य ज होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळामां नव्य
अनव्य वे होय ॥ नारकीथी मांडी १२ देवलोक सुधीमा कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥
अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां नव्य अनव्य वे होय ॥ समदृष्टि १ ॥ शुक्लपक्षी २ ॥
समामिथ्यादृष्टि ३ ॥ ज्ञान ४ ॥ एवं ७ बोलमां एकला नव्य ज होय ॥ शेष बोल जे जे ठेका-
णे जेटला जेटला लाभे छे तेमां समवसरण ४ लाभे, तेमां जे क्रियावादी ते निश्चये ज
नव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळामां नव्य अनव्य वे होय ॥ नव ग्रैवेयकमां ३२ बोल

लाभे तेमां शुक्लपक्षी १ ॥ समदृष्टि २ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां निश्चय भव्य होय ॥ मिथ्यादृष्टि १ ॥ कृष्णपक्षी २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां भव्य अभव्य बे होय ॥ शेष २० बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे, तेमां जे क्रियावादी ते निश्चये भव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळा ते भव्य अभव्य बे होय ॥ पांच अनुत्तर विमानमां २६ बोल लाभे ते सर्वे निश्चय भव्य होय ॥ पांच स्थावरमां शुक्लपक्षी एकला भव्य होय ॥ शेष २६ बोलमां भव्य अभव्य बे होय ॥ ३ विगलेंद्रियमां शुक्लपक्षी १ सम्यक्दृष्टि २ ज्ञान ३ ए ५ बोलमां एकला भव्य होय ॥ शेष २६ बोलमां भव्य अभव्य बे होय ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां भव्य अभव्य बे होय ॥ समदृष्टि १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ शुक्लपक्षी ३ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ७ बोलमां एकला भव्य होय ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे, तेमां क्रियावादी एकला भव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळा ते भव्य अभव्य बे होय ॥ ११ ॥ हवे मनुष्यमां ४७ बोल लाभे तेमां जेटला तेटला बोलमां भव्य अभव्यपणां जे जे ठेकाणे लाभे तेनो वर्णव समुच्चय जीवनी परे जा-

णवो ॥ ए १२ मुं द्वार थयु ॥ इति समुच्चयनो प्रथम उद्देशो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे प्रथम
समय उपन्या आश्रिना ४ उद्देशा कहे छे ॥ अणंतरोववणगा ते आंतरारहित प्रथम
समयना उपन्या १ ॥ अणंतरोगाढगा ते प्रथम समये जे क्षेत्र अवगाह्याते २ ॥ अणंतर
आहारगा ते प्रथम समय आंहार लीधाने थयो होय ३ ॥ अणंतरपज्जत्तगा ते एक समय
प्रजा वांध्याने थयो होय ४ ॥ ए ४ प्रथम समयना होय तेने अणंतर कहीए ॥ हवे २५
दंडक १२ द्वार उपर उतारवा; तेमां समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे तेमांथी १० बोल
वर्जवा ते अलेशी १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ मनःपर्यव ज्ञानी ३ ॥ केवलज्ञानी ४ ॥ नो-
सन्नावउत्ता ५ ॥ अवेदी ६ ॥ अकषायी ७ ॥ मनजोगी ८ ॥ वचनजोगी ९ ॥ अजोगी १० ॥
ए १० बोल वर्जिने शेष ३७ बोल अनंतर ४ द्वारमां लाभे ॥ १ ॥ नारकी आदि देइ
बारमा देवलोक सुधी जे जे ठेकाणे जेटला जेटला समुच्चय बोल लाभे छे तेमांथी समा-
मिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ मनजोग २ ॥ वचनजोग ३ ॥ ए त्रण त्रण बोल वर्जवा केमके ए ३
बोल उपजता प्रथम समये न होय ॥ नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमानमां समुच्चय

बोल जेटला जेटला लाभे छे तेमांथी मनजोग १ ॥ वचनजोग २ ॥ ए बे बोल वर्जवा ॥ पांच स्थावरमांथी एके बोल वर्जवो नहि ॥ त्रण विगलेंद्रियमांथी १ वचनजोग वर्जवो ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियमां ४० बोल लाभे छे तेमांथी समामिथ्यादृष्टि १ ॥ अवधिज्ञान २ ॥ विभंगज्ञान ३ ॥ मनजोग ४ ॥ वचनजोग ५ ॥ ए ५ बोल वर्जवा ॥ मनुष्यमां ४७ बोल लाभे छे तेमांथी ११ बोल वर्जवा ॥ अलेशी १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ मनःपर्यवज्ञान ३ ॥ केवलज्ञान ४ ॥ नोसन्नावउत्ता ५ ॥ अवेदी ६ ॥ अकषायी ७ ॥ मनजोग ८ ॥ वचनजोग ए ॥ विभंगज्ञान १० ॥ अजोगी ११ ॥ ए ११ बोल वर्जवा ॥ हवे अनंतर ४ बोलमांहि जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे छे तेमां समवसरण उतारवा ते समुच्चय प्रथम उद्देशामां उतार्यानी परे जाणवा ॥ अनंतर ४ बोलमांहि जेटला जेटला बोल लाभे तेटला आयुष्यना अबंधकना जाणवा ॥ अनंतर ४ बोलमांहि भव्य अभव्यपणानो वर्णव समुच्चय उद्देशानी परे करवो ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥ इति पांच उद्देशा संपूर्ण ॥ ५ ॥ हवे परंपरोववन्नगादि ४ उद्देशा कहे छे ॥ परंपरोववन्नगा ते घणा समय उपन्याने जेने थया

परंपरा-
होय ते १ ॥ परंपरोगाढगा ते घणा समय क्षेत्र अवगाह्याने जेने थया होय ते ॥ परंपरा-
हारगा ते घणा समय आहार लीधा जेने थया होय ते ३ ॥ परंपरपज्जत्तगा ते घणा
समय प्रजा वांध्याने जेने थया होय ते ४ ॥ परंपर उद्देशे समवसरण उतारवा ॥ आयुष्य
वांधवानो भव्य अभव्यपणुं उतारवानो वर्णव समुच्चय उद्देशानी परे जाणवो ॥ नेमां ए:
टलो फेर जे पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ मां तजु लेश्या कहेवो नहि ॥ ३
विगलेंद्रियमां समकित १ ॥ ज्ञान २ ॥ ए ४ वोल वर्जवा, शेष तेमज ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥
इति नव उद्देशा समाप्त ॥ ए ॥ हवे चरम अचरमना वे उद्देशा कहे छे ॥ तेमां चरमनो
उद्देशो समुच्चय उद्देशानी परे उतारवो ॥ अचरमने उद्देशे सर्वार्थसिद्ध वर्जिने तथा मनु-
ष्यमां अलेशी १ ॥ केवलज्ञानी २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ वोल वर्जिने ॥ वीजो सर्व अधिकार
समुच्चय उद्देशानी परे जाणवो ॥ ए २ उद्देशा थया ॥ इति ११ उद्देशा थया ॥

इति समवसरणना वोल संपूर्ण ॥

लब्धिना बोल ॥

अथ श्री लब्धिना बोल भगवती सूत्र शतक ८ मा ना उद्देशा बीजाथी लख्या छे ॥ ५ ज्ञानना भेद नंदीसूत्रथी जाणवा एटले पूर्वे ज्ञान तथा अज्ञान कह्या ॥ हवे ज्ञानी तथा अज्ञानी कहे छे ॥ 'जीवाणं भंते किंनाणी अन्नाणी' इत्यादि २१ द्वारे करी वर्णवीशुं ॥

गाथा ॥ जीव १ गइ २ इंदिय ३ काए ४ । सुहुम ५ पज्जत्ति ६ भवत्थे य ७ ॥
भवसिद्धिए य ८ सण्णि ९ । लद्धि १० उवओग ११ जोगे य १२ ॥ १ ॥
लेस्सा १३ कसाय १४ वेए १५ । आहारे १६ नाणगोयरे १७ ॥
काले १८ अंतर १९ अप्पाबहुयं २० । पज्जवा २१ चेव दाराइं ॥ २ ॥

हवे प्रथम जीवद्वार कहे छे ॥ २६ ॥

१ समुच्चय जीवमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ नारकीमां पहेली नारकीमां

नियमा ॥ १२ दश भवनपतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, अज्ञान २ नी भजना ॥ १९ पांच स्था-
वरमां २ अज्ञाननी नियमा ॥ २० त्रण विगलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियमां २ ज्ञान,
२ अज्ञाननी नियमा ॥ २१ संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रियमां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥
२२ सन्नि मनुष्यमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना, असंज्ञी मनुष्यमां २ अज्ञाननी नियमा ॥,
२३ वाणव्यंतरमा ३ ज्ञाननी नियमा, अज्ञान ३ नी भजना ॥ २५ ज्योतिषीथी मांडी
नव ग्रैवेयकसुधीमां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नियमा ॥ पांच अनुत्तर विमानमां त्रण ज्ञाननी
नियमा, अज्ञान नथी ॥ २६ सिद्धमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे बीजुं गतिद्वार कहे छे ॥ ५-३१ ॥

१ नरकगतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ तिर्यंचगतिमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ३ मनुष्यगतिमां ३ ज्ञाननी भजना, अज्ञान २ नी नियमा ॥ ४ देव-गतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ५ सिद्धगतिमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे त्रिजुं इंद्रियद्वार कहे छे ॥ ७-३८ ॥

१ सइंद्रियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ एकेंद्रियमां २ अज्ञाननी नियमा– मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान ॥ ५ त्रण विगलेंद्रियमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ६ पंचेंद्रियमा ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ७ अणिंदियामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे चोथुं कायद्वार कहे छे ॥ ८–४६ ॥

१ सकाइयामा पांच ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ६ पांच स्थावरमां २ अज्ञाननी नियमा ॥ ७ त्रसकाइयामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ८ अकाइयामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे पांचमुं सूक्ष्मद्वार कहे छे ॥ ३–४९ ॥

१ सूक्ष्ममां २ अज्ञाननी नियमा ॥ २ बादरमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ३ नोसूक्ष्मनोबादरमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे छठुं पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥ ५१–१०० ॥

१ समुच्चय प्रजाप्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ नारकी प्रजाप्तामां ३ ज्ञान,

३ अज्ञाननी नियमा ॥ १९ दस जवनपति प्रजाप्तामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नियमा॥ २० ५ स्थावर ने ३ विगलेंड्रिय, असज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्तामां २ अज्ञाननी नियमा ॥ २१ तिर्यंच पचेंड्रिय प्रजाप्तामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी जजना ॥ २२ मनुष्य प्रजाप्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी जजना ॥ २५ वाणव्यंतर ज्योतिषीथी मांमी नव ग्रैवेयकसुधीना प्रजाप्तामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नियमा ॥ पांच अनुत्तर विमानना पर्याप्तामां त्रण ज्ञाननो नियमा ॥ ६ समुच्चय अप्रजाप्तामां ३ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी जजना ॥ २७ पेहेली नारकीना अप्रजाप्तामां ३ ज्ञाननो नियमा, ३ अज्ञाननी जजना ॥ पांच नारकीना अपर्याप्तामां त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञाननी नियमा ॥ सातमीना अपर्याप्तामां त्रण अज्ञाननी नियमा, नाण नथी ॥ ३७ दस जवनपति अप्रजाप्तामा ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी जजना ॥ ४२ पांच स्थावर ने असंज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्तामां २ अज्ञाननी नियमा ॥ ४५ विगलेंड्रियने असंज्ञी तिर्यंच पंचेंड्रियना अप्रजाप्तामां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ४६ तिर्यंच पंचेंड्रिय प्रजाप्तामां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ४७ मनुष्य अप्रजाप्तामा ३ ज्ञाननी जजना, २ अज्ञाननो नियमा ॥

४८ वाणव्यंतर अप्रजातामा ३ ज्ञानननी नियमा, ३ अज्ञानननी जजना ॥ ५० ज्योतिषीथी मांमी नव ग्रैवेयकसुधीनां अप्रजातामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञानननी नियमा ॥ पांच अनुत्तर विमानना अपर्याप्तामां त्रण ज्ञानननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ ५१ नोप्रजातानोअप्रजातामां १ केवलज्ञानननी नियमा ॥

हवे ७ मुं जवस्थद्वार कहे छे ॥ ५–१०५ ॥

१ नारकी जवस्थामां ३ ज्ञानननी नियमा, ३ अज्ञानननी जजना ॥ २ तिर्यंच जवस्थामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञानननी जजना ॥ ३ मनुष्य जवस्थामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञानननी जजना ॥ ४ देव जवस्थामा ३ ज्ञानननी नियमा, ३ अज्ञानननी जजना ॥ ५ अजवस्थामां १ केवलज्ञानननी नियमा ॥

हवे ८ मुं जवसिद्धिकद्वार कहे छे ॥ ३–१०८ ॥

१ जवसिद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञानननी जजना ॥ २ अजवसिद्धियामां, ३ अज्ञा-

हवे ए मु संज्ञीद्वार कहे छे ॥ ३-१८८ ॥

१ संज्ञीमां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ असंज्ञीमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ३ नोसंज्ञीनोअसंज्ञीमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १० मुं लब्धिद्वार कहे छे ॥ ७०-१७१ ॥

गाथा ॥ नाणति चरित्ता चरित्ते। दाणाइं पंच लद्धिय ॥
इंदिय लद्धि दसमा। एयासिं सत्तरि भेदाय ॥ १ ॥

अर्थ–ज्ञानादि ३, ज्ञानलद्धि १, दंसण लद्धि २, चारित्र लद्धि ३, चरित्ताचरित्त लद्धि १, दानादि ५, इंदिय लद्धि ५, ए १० द्वारे करी ७० बोल वर्णवे छे ॥

प्रथम ज्ञानद्वार-बोल २० ॥

१ नाण लद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ २ तस्स अलद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ ३ मतिज्ञान लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, ज्ञानमां अज्ञान होय नहि ॥ ४ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥

५ श्रुत ज्ञान लब्धियामा ४ ज्ञाननी नजना, अज्ञान नथी ॥ ६ तस्स अलब्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी नजना ॥ ७ अवधिज्ञान लब्धियामां ४ ज्ञाननी नजना, अज्ञान नथी ॥ ८ तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नजना ॥ ९ मनःपर्यव लब्धियामा ४ ज्ञाननी नजना, अज्ञान नथी ॥ १० तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नजना ॥ ११ केवलज्ञान लब्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ १२ तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी नजना ॥ १३ अज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी नजना, ज्ञान नथी ॥ १४ तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी नजना, अज्ञान नथी॥ १५ मति अज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी नजना, ज्ञान नथी ॥ १६ तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी नजना, अज्ञान नथी ॥ १७ श्रुत अज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी नजना, ज्ञान नथी ॥ १८ तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी नजना, अज्ञान नथी ॥ १९ विनंग ज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी नियमा, ज्ञान नथी ॥ २० तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी

बीजु दर्शनद्वार–बोल ८ ॥

२१ दंसण लद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ञजना १ ॥ २२ तस्स अलद्धियामां नत्थि कोइ जीवो २ ॥ २३ समदंसण लद्धियामां ५ ज्ञाननी ञजना, अज्ञान नथी ३ ॥ तस्स अलद्धियामां ३ अज्ञाननी ञजना, ज्ञान नथी ४ ॥ २५ मिछादंसण लद्धियामां ३ अज्ञाननी ञजना, ज्ञान नथी ५ ॥ २६ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, त्रण अज्ञाननी ञजना ६॥ २७ समामिछादंसण लद्धियामां ३ अज्ञाननी ञजना, ज्ञान नथी ७ ॥ २८ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ञजना ८ ॥

त्रिजुं चारित्रद्वार–बोल १२ ॥

२९ चरित्त लद्धियामां ५ ज्ञाननी ञजना, अज्ञान नथी १ ॥ ३० तस्स अलद्धियामां ४ ज्ञान, अज्ञान ३ नी ञजना, मनःपर्यव नथी २ ॥ ३१ सामायिक चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी ञजना, अज्ञान नथी ३ ॥ ३२ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ञजना ४ ॥ ३३ छेदोपस्थापनीय चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी ञजना, अ-

ज्ञान नथी ५ ॥ ३४ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ६ ॥ ३५ परिहारविशुद्ध चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ७ ॥ ३६ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥ ३७ सूक्ष्म संपराय चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ९ ॥ ३८ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १० ॥ ३९ यथाख्यात चारित्र लद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ११ ॥ ४० तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ १२ ॥

चोथुं चारित्राचारित्र द्वार-बोल २ ॥

४१ चरित्ताचरित्त लद्धियामां ३ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १ ॥ ४२ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना २ ॥

पांचमुं दानलब्धिद्वार-बोल २ ॥

४३ दाण लद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ ४४ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा २ ॥

छठुं लाभ लब्धिद्वार-बोल २।

४६ एव लाभ लब्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

सातमुं भोग लब्धिद्वार-बोल २

४७ एवं भोग लब्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

आठमु उपभोग लब्धिद्वार-बोल २

५० एव उपभोग लब्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

नवमुं वीर्य लब्धिद्वार-बोल ८ ॥

५१ एवं वीरियलब्धियाना पूर्ववत् १ ॥ ५२ तस्स अलब्धियामां १ केवलज्ञान २ ॥ ५३ बाल वीरियलब्धियामां ३ ज्ञान, चोथा गुणस्थाने समदृष्टि आश्रि, ३ अज्ञाननी भजना ३ ॥ ५४ तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ४ ॥ ५५ पंडित वीरियलब्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ५ ॥ ५६ तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, मनःपर्यव नहि, ३ अज्ञाननी भजना ६ ॥ ५७ बालपंडित वीरिय लब्धियामां ३

ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ७ ॥ ५८ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥

दशमुं इंद्रिय लब्धिद्वार–बोल १२ ॥

५९ इंद्रिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ ६० तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा २ ॥ ६१ श्रोत्रेंद्रिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ३ ॥ ६२ तस्स अलद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, २ अज्ञाननी नियमा ४ ॥ ६३ चक्षुइंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ५ ॥ ६४ तस्स अलद्धियामां २ ज्ञाननी भजना ने १ केवलनी नियमा, एवं ज्ञान ३ ने २ अज्ञाननी नियमा ६ ॥ ६५ घ्राणेंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ७ ॥ ६६ तस्स अलद्धियामां २ ज्ञाननी भजना, ने १ केवलनी नियमा, एवं ३ ज्ञान ने २ अज्ञाननी नियमा ८ ॥ ६७ जीभेंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ९ ॥ ६८ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञान, ने २ अज्ञाननी नियमा १० ॥ ६९ फासिंद्रिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ११ ॥ ७० तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा १२ ॥

हवे ११ मु उपयोग द्वार कहे छे ॥ बोल १४–१९५

१ सागारोवउत्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ मति श्रुत सागारोवउत्तामां
४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ ४ अवधिज्ञान सागारोवउत्तामां ४ ज्ञाननी भजना ॥
५ मनःपर्यवज्ञान सागारोवउत्तामां ४ ज्ञाननी भजना ॥ ६ केवलज्ञान सागारोवउत्तामां
१ केवलज्ञाननी नियमा ॥ ७ मतिश्रुत अज्ञान सागारोवउत्तामां ३ अज्ञाननी भजना ॥
९ विभंगज्ञान सागारोवउत्तामां ३ अज्ञाननी नियमा ॥ १० अणागारोवउत्तामां ५ ज्ञान,
३ अज्ञाननी भजना ॥ १२ चक्षु अचक्षुदर्शन अणागारोवउत्तामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी
भजना ॥ १३ अवधिदर्शन अणागारोवउत्तामां ४ ज्ञाननी भजना, ३ अज्ञाननी नियमा ॥
१४ केवल दर्शन अणागारोवउत्तामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १२ मुं योग द्वार कहे छे ॥ बोल ५–२०० ॥

४ सजोगी मनजोगी वचनजोगी कायजोगीमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥
५ अजोगीमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १३ मुं लेश्याद्वार कहे ठे ॥ वोल ८–२०८ ॥

१ सलेशीमा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ज्जना ॥ ६ कृष्णादि ५ लेशीमा ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ज्जना ॥ ७ शुक्ल लेशीमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ज्जना ॥ ८ अलेशीमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १४ मुं कषायद्वार कहे ठे ॥ वोल ६–२१४ ॥

५ सकषायी, क्रोध कषायी, मान कषायी, माया कषायी, लोज कषायी, ए ५ मां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ज्जना ॥ ६ अकषायीमां ५ ज्ञानननी ज्जना ॥

हवे १५ मुं वेदद्वार कहे ठे ॥ वोल ५–२१९ ॥

४ सवेदी, स्त्री०, पुरुष०, नपुं०, ए ४ मां ४ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी ज्जना ॥ ५ अवेदीमा ५ ज्ञानननी ज्जना ॥

हवे १६ मुं आहारद्वार कहे ठे ॥ वोल २–२२१ ॥

१ आहारकमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ज्जना ॥ २ अणाहारकमां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ज्जना ॥

हवे १७ मुं नाणगोयरद्वार कहे छे ॥

नाण केहेतां ज्ञानना विषयनु परिमाण, गोयर कहेतां अर्थना ग्रहणनो विषय केटलो छे ? उत्तर–मति १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ चार प्रकारे–द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ जावथी ४ ॥ तेमां प्रथम मतिज्ञानी आदेश करीने (सामान्य प्रकारे) सर्व द्रव्य, सर्व क्षेत्र, सर्व काल, सर्व जाव, जाणे पण देखे नहीं, श्रुतज्ञानी सउपयोगी (उपयोग सहित) सर्व द्रव्य, सर्व क्षेत्र, सर्वकाल, सर्वजाव, जाणेइ पासेइ ४ ॥ २ ॥ अवधिज्ञानी उपयोग देतां द्रव्यथी जघन्य अनंता रूपी द्रव्य जाणे देखे, उत्० सर्व रूपी द्रव्य जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी उपयोग देतो ज० अंगुलनो असंख्यातमो जाग जाणे देखे; उत्० आखो लोक जाणे देखे, ते लोकना जेवडा असंख्याता खांडुआ अलोकमां जाणे देखे २ ॥ कालथी ज० आवलिकानो असंख्यातमो जाग आगलो पाछलो काल जाणे देखे, उत्० असंख्याता उत्सर्पिणीओ अवसर्पिणीओ एटलो आगलो पाछलो काल जाणे देखे ३ ॥ जावथी ज० उत्० अनंता जाव जाणे देखे, सर्व जावथी अनंतमो जाग जाणे देखे ४ ॥ ३ ॥ मनःपर्यवज्ञा

नीना २ भेद ॥ ऋजुमति १ ॥ विपुलमति २ ॥ द्रव्य थकी ऋजुमति अनंत प्रदेशीया मनना पुद्गलना स्कंध सामान्य प्रकारे जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी त्रिहुं अढिद्वीपमां अढिअंगुल ओछुं ॥ ऊंचु ज्योतिषी लगे नवसें जोजन अढिअंगुल ओछुं ॥ नीचुं हजार जोजन अढि अंगुल ओछुं एटलुं क्षेत्र जाणे देखे २ ॥ कालथी ज० उ० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग आगलो पाछलो काल जाणे देखे ३ ॥ भावथी अढिद्वीपना संज्ञी पंचेंद्रिय प्रजाप्ता मनुष्य तिर्यंचना मनना पुद्गल तेना वर्ण, गंध रस स्पर्श एना अनंता भाव छे, तेथी अनंतमे भागे जाणे देखे ४ ॥ एमज विपुलमति पण जाणे देखे ॥ नवरं एटलो विशेष अढि अंगुल अधिक पण विस्तार सहित निर्मळपणे जाणे देखे ४ ॥ केवलज्ञानी द्रव्यथी छ द्रव्य सर्व प्रकारे जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे देखे २ ॥ कालथी सर्व काल जाणे देखे ३ ॥ भावथी सर्व भाव जाणे देखे ४ ॥ ५ ॥ मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी, द्रव्यथी मति-श्रुत अज्ञानमां जेटलां द्रव्य आवे तेटलां जाणे देखे १ ॥ एम क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, पण जाणवुं ॥ नवरं श्रुत अज्ञानीमां एटलो फेर, जेटलां द्रव्य आवे, तेटलां आगवड पन्नवइ

परूवइ, एम क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, पण जाणवुं २ ॥ विभंग ज्ञानी द्रव्यथी विभंग ज्ञानमां जेटलां द्रव्य आवे एटलां जाणे देखे १ ॥ एम क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, पण जाणवुं ३ ॥ इति १७ मुं नाणगोयरद्वार समाप्तः ॥ १७ ॥

हवे १८ मुं कालद्वार कहे छे ॥

काल केहेतां ज्ञानीनुं ज्ञान जेटला काल रहे तेना २ भेद, साइए सपज्जवसिए १ ॥ साइए अपज्जवसिए २ ॥ तेमां जे साइए सपज्जवसिए तेनी ज० स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० छासठ सागरोपम झाझेरानी ॥ एम ज मति श्रुत ज्ञाननी पण जाणवी २ ॥ अवधिज्ञाननी ज० १ समयनी, उत्० छासठ सागरोपम झाझेरानी ३ ॥ मनःपर्यव ज्ञाननी ज० १ समयनी, उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडनी ४ ॥ केवलज्ञान साइए अपज्जवसिए ५ ॥ अज्ञानना ३ भेद ॥ अणादिए अपज्जवसिए ते अभव्य १ ॥ अणादिए सपज्जवसिए ते भव्य २ ॥ सादिए सपज्जवसिए ते पडिवाइ तेनी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० अर्द्धपुद्गल देशे उणानी ३ ॥ एवं मति श्रुत अज्ञाननी स्थिति पण जाणवी २ ॥ विभंगज्ञाननी ज० १ समयनी,

उ० ३३ सागरने देशे उणी क्रोम पूर्व अधिकनी ३ ॥ इति १८ मुं कालद्वार समासः ॥१८॥

हवे १९ मुं अंतरद्वार कहे छे ॥

ज्ञानना २ भेद ॥ साइए अपज्जवसिए, १, तेनुं अंतर नथी १ ॥ साइए सपज्जवसिए तेनु अंतर ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० देशे उणा अर्द्ध पुद्गलनु ॥ एम ज ४ ज्ञाननुं पण जाणवुं ॥ ४ ॥ हवे अज्ञानना ३ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसिए एनुं अंतर नथी १ ॥ अणाइए सपज्जवसिएनु अंतर नथी २ ॥ साइए सपज्जवसिएनुं तथा मतिश्रुत अज्ञाननुं अंतर ज० अंतर्मुहूर्त्तनु, उ० छासठ सागर झाझेरानुं १ ॥ विभंग ज्ञाननुं अंतर ज० अंत०, उ० अनंतकालनुं ते वनस्पति आश्रि ३ ॥ इति १९ मुं अंतर द्वार समासः ॥ १९ ॥

हवे २० मुं अल्प बहुत्वद्वार कहे छे ॥

सर्वथी थोमा मनः पर्यवज्ञानी १ ॥ तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी मति श्रुत ज्ञानी मांहोमांहि तुल्य ने विसेसाहिया ४ ॥ तेथी केवलज्ञानी अनंतगुणा ५ ॥ त्रण अज्ञानना अल्प बहुत्व–सर्वथी थोमा विभगज्ञानी १ ॥ तेथी मतिश्रुत अज्ञानी

मांहोमाहि तुल्य ने अनंतगुण ३ ॥ हवे ८ नो अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा मनः
पर्यवज्ञानी १ ॥ तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी मतिश्रुत ज्ञानी माहो-
मांहि तुल्य ने विशेषाधिक ४ ॥ तेथी विभंगज्ञानी असंख्यातगुणा, नारकी देवता आश्रि
५ ॥ तेथी केवलज्ञानी अनंतगुण ६ ॥ तेथी मतिश्रुत अज्ञानी मांहोमांहि तुल्य ने अनं-
तगुणा ८ ॥ इति २० मुं अल्प बहुत्वद्वार समाप्तः ॥ २० ॥

हवे २१ मुं पर्यवद्वार कहे छे ॥

पांच ज्ञानमां एकेकना अनंता २ पर्यव छे तेनो अल्प बहुत्व–सर्वथी थोडा मनःपर्यव
ज्ञानना पर्यव १ ॥ तेथी अवधिज्ञानना पर्यव अनंतगुणा २ ॥ तेथी श्रुत ज्ञानना पर्यव
अनंतगुणा ३ ॥ तेथी मति ज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ४ ॥ तेथी केवलज्ञानना पर्यव अनं-
तगुणा ५ ॥ त्रण अज्ञानना पर्यव अनंतानंत छे, तेनो अल्प बहुत्व–सर्वथी थोडा विभं-
गज्ञानना पर्यव १ ॥ तेथी श्रुत अज्ञानना पर्यव अनंतगुणा २ ॥ तेथी मतिअज्ञानना पर्यव अन-
तगुणा ३ ॥ हवे पांच ज्ञान त्रण अज्ञान ए ८ ना पर्यवनो अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा मनः

पर्यव ज्ञानना पर्यव १ ॥ तेथी विभंगज्ञानना पर्यव अनंतगुणा २ ॥ तेथी अवधिज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ३ ॥ तेथी श्रुत अज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ४ ॥ तेथी श्रुतज्ञानना पर्यव विसेसाहिया ५ ॥ तेथी मतिअज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ६ ॥ तेथी मतिज्ञानना पर्यव विसेसाहिया ७ ॥ तेथी केवलज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ८ ॥ इति २१ मुं पर्यवद्वार समाप्तः ॥२१॥

॥ इति लब्धिना बोल संपूर्ण ॥

मोटी कर्मप्रकृतिना बोल ॥

अथ श्री पन्नवणा पद २३ मांथी आठ कर्मनी उत्तरप्रकृति १४८ ना बंधनी जघन्योत्कृष्ट स्थितिना बोल लिख्यते ॥ पांच ज्ञानावरणीयनी, चार दर्शनावरणीयनी ए ९ प्रकृतिनी जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्तनी ते दशमा गुणठाणा आश्रि, उत्कृष्टी त्रीस कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ ९ ॥ पांच निद्रा, ने १ अशातावेदनीय, ए ६ प्रकृतिनी स्थिति

जघन्य १ सागरना सात भाग करीए तेवा ३ भाग पल्योपमने असंख्यातमे भाग उणानी, उत्० त्रिश कोमाकोमी सागरोपमनी १५ ॥ शातावेदनीयना २ भेद ॥ इरियावहीना बंध आश्रि जo उत्० २ समयनी ॥ संपरायना बंध आश्रि जo १२ मुहूर्त्तनी ते दशमा गुण-ठाणा आश्रि, उत्० पंदर कोमाकोमी सागरोपमनी १६ ॥ सम्यक्त्व मोहनीयनी जo स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० छासठ सागरोपम जाजेरानी १७ ॥ मिथ्यात्व मोहनीयनी जo १ सागरोपमनी पल्योपमना असंख्याता भागे उणानी, उत्० सीत्तेर कोमाकोमी सागरोपमनी १७ ॥ मिश्रमोहनीयनी जo उत्० अंतर्मुहूर्त्तनी १९ ॥ अनंतानु-बंधीनी ४ ॥ अप्रत्याख्यानावरणीयनी ४ ॥ प्रत्याख्यानावरणीयनी ४ ॥ ए १२ कषायनी स्थिति जo १ सागरना ७ भाग करीए तेवा ४ भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० चालीश कोमाकोमी सागरोपमनी ३१ ॥ संज्वलनना क्रोधनी जo स्थिति २ मासनी ॥ माननी जo १ मासनी ॥ मायानी जo १५ दिननी ॥ लोभनी जo अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ए ४ नी उत्कृष्ट स्थिति ४० कोमाकोमी सागरोपमनी ३५ ॥ हास्य १ ॥ रति

२ ॥ ए २ प्रकृतिनी स्थिति ज० १ सागरोपमना सात नाग करीए तेवो, एक नाग पल्यो-
पमना असंख्यातमा नागे उणानी, उत्० दश कोमाकोमी सागरोपमनी ३७ ॥ अरति
१ ॥ नय २ ॥ शोक ३ ॥ डुगंछा ४ ॥ ए४ प्रकृतिनी स्थिति ज० १ सागरना ७ नाग करीए
तेवा २ नाग पल्योपमने असंख्यातमे नागे उणानी, उत्० वीश कोमाकोमी सागरोपमनी
४१ ॥ स्त्रीवेदनी, स्थिति ज० १ सागरना ७ नाग करीए तेवा दोढ नाग पल्योपमना
असंख्यातमे नागे उणानी, उत्० पंदर कोमाकोमी सागरोपमनी ४२ ॥ पुरुषवेदनी
स्थिति ज० ८ वर्षनी, उत्० १० कोमाकोमी सागरोपमनी ४३ ॥ नपुंसकवेदनी स्थिति
ज० १ सागरना ७ नाग करीए तेवा २ नाग पल्योपमने असंख्यातमे नागे उणानी, उत्०
२० कोमाकोमी सागरोपमनी ४४ ॥ नारकी १ ॥ देवता २ ॥ ए बेना आयुष्यना बंधनी
स्थिति ज० १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी, उत्० तेत्रीश सागरोपमने पूर्व कोमीनो
त्रिजो नाग अधिकनी ४६ ॥ मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए २ ना आयुष्यना बंधनी स्थिति
ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० त्रण पल्योपम ने पूर्व कोमीनो त्रिजो नाग अधिकनी ४७ ॥ हवे

नामकर्मनी ए३ प्रकृतिना बंधनी स्थिति कहे छे ॥ नरकगति १ ॥ [illegible]
क्रेय शरीर ३ ॥ वैक्रेयनां अंगोपांग ४ ॥ वैक्रेय बंधन ५ ॥ वैक्रेय संघातन ६ ॥ ए ६
प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक हजार सागरना ७ भाग करीए तेवा २ भाग पल्यने
असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० वीश कोमाकोमी सागरोपमनी ५४ ॥ तिर्यंचगति १ ॥
तिर्यंचानुपूर्वि २ ॥ एकेंद्रियनी जाति ३ ॥ पंचेंद्रियनी जाति ४ ॥ उदारिक शरीर ५ ॥
उदारिकनां अंगोपांग ६ ॥ उदारिक बंधन ७ उदारिक संघातन ८ ॥ तेजस् शरीर ए ॥
तेजस् बंधन १० ॥ तेजस् संघातन ११ ॥ कार्मण शरीर १२ ॥ कार्मण बंधन
१३ ॥ कार्मण संघातन १४ ॥ छेवट्ठ संघयण १५ ॥ हुंम संठाण १६ ॥ दुर्भि गंध १७ ॥ खर-
खरो स्पर्श १८ ॥ गुरु १ए ॥ लुखो २० ॥ शीत २१ ॥ अगुरुलघुनाम २२ ॥ उपघात नाम
२३ ॥ पराघात नाम २४ ॥ उश्वास नाम २५ ॥ आताप नाम २६ ॥ उद्योत नाम २७ ॥
अप्रशस्त विहायगति २८ ॥ कालो वर्ण २ए ॥ तीखो रस ३० ॥ त्रस नाम ३१ ॥ स्थावर
नाम-३२ ॥ बादर नाम ३३ ॥ पर्याप्ति नाम ३४ ॥ प्रत्येक नाम ३५ ॥ अस्थिर नाम ३६ ॥

अशुन्न नाम ३७ ॥ दौर्जाग्य नाम ३ए ॥ डुःस्वर नाम ३ए ॥ अनादेय नाम ४० ॥ अयशो-
कीर्त्तिनाम ४१ ॥ निर्माण नाम ४२ ॥ ए ४२ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक साग-
रना सात जाग करीए तेवा बे जाग पल्योपमना असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० २०
कोमाकोमी सागरोपमनी ए६ ॥ मनुष्यगति १ ॥ मनुष्यानुपूर्वि २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी
स्थिति ज० एक सागरना सात जाग करीए तेवो दोढ जाग पल्योपमना असंख्यातमे
जागे उणानी, उत्० १५ कोमाकोमी सागरोपमनी ए७ ॥ देवगति १ ॥ देवानुपूर्वि २ ॥
ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ हजार सागरोपमना सात जाग करीए तेवो एक
जाग पल्योपमना असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० १० कोमाकोमी सागरोपमनी १०० ॥
बेइंडियनी जाति १ ॥ तेइंडियनी जाति २ ॥ चउरिंडियनी जाति ३ ॥ किलकासंघ-
यण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ सूक्ष्म नाम ६ ॥ अपर्याप्त नाम ७ ॥ साधारण नाम ७ ॥ ए
७ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ जाग करीए तेवा ए जाग पल्योपमने
असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० अढार कोमाकोमी सागरोपमनी १०७ ॥ [illegible]

राच संघयण १ ॥ समचउरंस संठाण २ ॥ शुक्लवर्ण ३ ॥ मधुर रस ४ ॥ सुरभि गंध ५ ॥
सुंहालो स्पर्श ६ ॥ लघु ७ ॥ उष्ण ८ ॥ स्निग्ध ए ॥ प्रशस्त विहायोगति १० ॥ स्थिर नाम
११ ॥ शुभ नाम १२ ॥ सौभाग्य नाम १३ ॥ सुस्वर नाम १४ ॥ आदेय नाम १५ ॥ ए १५
प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना सात भाग करीए तेमां १ भाग पल्यना अ-
संख्यातमे भागे उणानी, उत्० दश कोडाकोडी सागरोपमनी १२३ ॥ ऋषभनाराच संघ-
यण १ ॥ निग्रोध परिमंडल संस्थान २ ॥ ए बे प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना
३५ भाग करीए तेवा ८ भाग पल्योपमने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० बार कोडाकोडी सा-
गरोपमनी १२५ ॥ नाराचसंघयण १ ॥ सादि संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सा-
गरना ३५ भाग करीए तेवा ७ भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० १४ कोडा-
कोडी सागरोपमनी १२७ ॥ अर्द्धनाराच संघयण १ ॥ वामन संठाण २ ॥ ए २ नी स्थिति ज०
१ सागरना ३५ भाग करीए तेवा ८ भाग पल्यना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० १६
कोडाकोडी सागरोपमनी १२९ ॥ पीळो वर्ण १ ॥ खाटो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज०

एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ५ भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० सामाचार कोमाकोमी सागरोपमनी १३१ ॥ आहारक शरीर १ ॥ आहारकनां अंगोपांग २ ॥ आहारक बंधन ३ ॥ आहारक संघातन ४ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म ५ ॥ ए ५ नी स्थिति ज० अंतो कोमाकोमी सागरोपमनी, उत्० एमज जाणवी १३६ ॥ रातो वर्ण १ ॥ कषायलो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ६ भाग ने पल्योपमने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० १५ कोमाकोमी सागरोपमनी १३८ ॥ नीलो वर्ण १ ॥ कमवो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा सात भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० साडासत्तर कोमाकोमी सागरोपमनी १४० ॥ यशोकीर्ति नाम कर्मनी स्थिति ज० ८ मुहूर्त्तनी, उत्० १० कोमाकोमी सागरोपमनी १४१ ॥ उंच गोत्रनी स्थिति ज० ८ मुहूर्त्तनी, उ० १० कोमाकोमी सागरोपमनी १४२ ॥ नीच गोत्रनी स्थिति ज० एक सागरना ७ भाग करीए तेवा २ भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० २० कोमाकोमी सागरनी १४३ ॥ असाता क-

मेंनी ५ प्रकृति दानांतरायादिनी स्थिति ज० अंतमुहूर्त्तनी ते दशमा गुणठाणा आश्रि,
उत्० ३० कोडाकोडी सागरोपमनी १४८ ॥ ए ८ कर्मनी उत्तर प्रकृत्ति १४८ नी वंध-
स्थिति समुच्चय आश्रि कही १ ॥ हवे जे जे कर्मनी जे जे उत्तर प्रकृतिनी जेटला जे-
टला सागरोपमनी स्थिति कही छे तेटला तेटला सो वर्षनो ते ते प्रकृतिनो अबाधाकाल
जाणवो ॥ ए समुच्चय प्रकृति १४८ ना बंधनो अबाधाकाल कह्यो ॥ हवे एकेंद्रिय जेटली
प्रकृति बांधे तेना बंधनी स्थिति कहे छे ॥ ५ ज्ञानावरणीय ॥ ए दर्शनावरणीय ॥ १
अशाता वेदनीय ॥ ए १५ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ७ भाग करीए तेवा
३ भाग ते पल्योपमने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना $\frac{3}{7}$ भागनी
बांधे १५ ॥ शातावेदनीयना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ७ भाग करीए तेवो दोढ
भाग ते पल्योपमना असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना $\frac{1}{7}$ भागनी
१६ ॥ मिथ्यात्व मोहनीयना बंधनी स्थिति ज० एक सागरोपमनी ते पल्यने असंख्या-
तमे भागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरोपमनी १७ ॥ सोल कषायना बंधनी स्थिति

ज० १ सागरना ⁴ नागनी ते पल्यने असंख्यातमे नागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ; नागनी ३३ ॥ हास्य १ ॥ रति २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ; नागनी ते पल्यने असंख्यातमे नागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ; नागनी ३५ ॥ अरति १ ॥ नय २ ॥ शोक ३ ॥ दुगंछा ४ ॥ ए ४ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ² नागनी ते पल्यने असंख्यातमे नागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ; नागनी ३९ ॥ स्त्रीवेदना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ; नागनी ते पल्यना असंख्यातमे नागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ; नागनी ४० ॥ पुरुषवेदना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ; नागनी ते पल्यने असंख्यातमे नागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ; नागनी ४१ ॥ नपुंसक वेदनी ज० १ सागरना ; नागनी ते पल्यने असंख्यातमे नागे ऊणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ; नागनी ४२ ॥ तिर्यंचनुं आयुष्य १ ॥ मनुष्यनुं आयुष्य २ ॥ ए २ प्रकृतिनी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० पूर्व क्रोडी ने ४४ हजार वर्षना त्रीजा नागे अधिकनी ४४ ॥ मनुष्यनी गति १ ॥ मनुष्यानुपूर्वि २ ॥ ए २ प्रकृ-

तिनी स्थिति ज० १ सागरना १/७ भाग ते पल्यने असख्यातमे भागे उणानी, उ० प्रति-
पूर्ण १ सागरना दोढ सातिया भागनी ४६ ॥ वज्रऋषभनाराच संघयण १ ॥ समचउरंस
संठाण २ ॥ शुक्ल वर्ण ३ ॥ मधुर रस ४ ॥ सुरभि गध ५ ॥ सुंहालो स्पर्श ६ ॥ लघु ७ ॥
उष्ण ८ ॥ स्निग्ध ए ॥ प्रशस्त विहायोगति १० ॥ स्थिर नाम ११ ॥ शुभ नाम १२ ॥
सौभाग्य नाम १३ ॥ सुस्वर नाम १४ ॥ आदेय नाम १५ ॥ यशोकीर्त्ति नाम १६ ॥ ए
१६ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना सात भाग करीए तेवो १ भाग ते पल्यने अस-
ख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण २/७ भागनी ६२ ॥ तिर्यचनी गति १ ॥ एकेंद्रियनी जाति
२ ॥ पंचेंद्रियनी जाति ३ ॥ तिर्यचानुपूर्वि ४ ॥ उदारिक शरीर ५ ॥ उदारिकना अंगोपांग
६ ॥ उदारिक बंधन ७ ॥ उदारिक सघातन ८ ॥ तेजस् शरीर ए ॥ कार्मण शरीर १० ॥
तेजस् बंधन ११ ॥ कार्मण बंधन १२ ॥ तेजस् संघातन १३ ॥ कार्मण संघातन १४ ॥
छेवटु संघयण १५ ॥ हुंडक संठाण १६ ॥ कालो वर्ण १७ ॥ तीखो रस १८ ॥ दुर्भि गध
१ए ॥ खरखरो स्पर्श २० ॥ शीत २१ ॥ गुरु २२ ॥ लुखो २३ ॥ अगुरुलघुनाम

२४ ॥ उपघात नाम २५ ॥ पराघात नाम २६ ॥ उच्छ्वास नाम २७ ॥ उद्योत नाम २८ ॥ आताप नाम २९ ॥ अप्रशस्त विहायोगति ३० ॥ त्रस नाम ३१ ॥ स्थावर नाम ३२ ॥ बादर नाम ३३ ॥ पर्याप्ति नाम ३४ ॥ प्रत्येक नाम ३५ ॥ अस्थिर नाम ३६ ॥ अशुभ नाम ३७ ॥ दुर्भाग्य नाम ३८ ॥ दुःस्वर नाम ३९ ॥ अनादेय नाम ४० ॥ अयशोकीर्ति नाम ४१ ॥ निर्माण नाम ४२ ॥ ए ४२ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ७ भाग करीए तेवा २ भाग ते पल्यना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण एक सागरना २ भागनी १०४ ॥ बेइन्द्रिय १ ॥ तेइन्द्रिय २ ॥ चउरिंद्रिय ३ ॥ कीलक संघयण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ सूक्ष्म नाम ६ ॥ अपर्याप्ति नाम ७ ॥ साधारण नाम ८ ॥ ए ८ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ९ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ९ भागनी ११२ ॥ ऋषभनाराच संघयण १ ॥ निग्रोध परिमंडल संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ६ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उ०

प्रतिपूर्ण एक सागरना $\frac{६}{३५}$ भागनी ११४ ॥ नाराच संघयण १ ॥ सादि संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ७ भाग ते पल्यने अ-संख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण $\frac{७}{३५}$ भागनी ११६ ॥ अर्द्धनाराच संघयण १ ॥ वामन संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ८ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्र-तिपूर्ण $\frac{८}{३५}$ भागनी ११८ ॥ रातो वर्ण १ ॥ कषायलो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ६ भाग ते पल्य ने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण $\frac{६}{२८}$ भागनी १२० ॥ पीलो वर्ण १ ॥ खाटो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ५ भाग ते पल्यने अ-संख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण $\frac{५}{२८}$ भागनी १२२॥ नीलो वर्ण १ ॥ कडवो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ७ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण $\frac{७}{२८}$ भागनी

१२४ ॥ यशोकीर्ति १ ॥ उंच गोत्र २ ॥ तेनी स्थिति ज० एक सागरना ७ जाग करीए तेवो एक जाग ते पल्यने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण १ जागनी १२६ ॥ दानांतरायादि ५ प्रकृतिना बंधनी स्थिति एक सागरना ७ जाग करीए तेवा ३ जाग ते पल्यनें असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण एक सागरना ३ जागनी १३१ ॥ ए एकेंडियना कर्मबंधनी स्थिति कही ॥ एकेंडिय १३१ प्रकृति बांधे ते १४८ मांथी सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्वमोहनीय २ ॥ नरकायु ३ ॥ देवायु ४ ॥ नरकगति ५ ॥ देवगति ६ ॥ वैक्रेय शरीर ७ ॥ वैक्रेयना अंगोपांग ८ ॥ वैक्रेयबंधन ९ ॥ वैक्रेय संघातन १० ॥ आहारक शरीर ११ ॥ आहारकनां अंगोपांग १२ ॥ आहारक बंधन १३ ॥ आहारक संघातन १४ ॥ नरकानुपूर्वि १५ ॥ देवानुपूर्वि १६ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म १७ ॥ ए १७ वर्जि ॥ ए एकेंडियना प्रकृतिना बंधनी स्थिति कही ॥ अबाधाकाल पूर्ववत् २ ॥ हवे बेइंडिय १ ॥ तेइंडिय २ ॥ चउरिंडिय ३ ॥ ए ३ विगलेंडियना प्रकृतिना बंधनी स्थिति कहे छे ॥ त्रणे विगलेंडिय १३१ प्रकृति बांधे, तेमां बेइंडियना प्रकृति-

वंधनी स्थिति एकेंद्रियवत् ॥ नवर एटलो फेर, जेम एकेंद्रियमा एक सागरना भाग कीधा, तेम, बेइंद्रियमां २५ सागरना भाग करवा ३ ॥ तेइंद्रियमां ५० सागरना भाग करवा, शेष पूर्ववत् ४ ॥ चउरिंद्रियमां १०० सागरना भाग करवा शेष पूर्ववत् ५ ॥ ए ३ विगलेंद्रियना प्रकृतिवंधनी स्थिति कही ॥ अबाधाकाल पूर्ववत् ५ ॥ हवे असंज्ञी पंचेंद्रिय १४१ प्रकृति वांधे, ते १४८ मांथी ७ प्रकृति वर्जि ॥ सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीय २ ॥ आहारक शरीर ३ ॥ आहारकनां अंगोपांग ४ ॥ आहारक वंधन ५ ॥ आहारक संघातन ६ ॥ तीर्थंकर नाम ७ ॥ ए ७ वर्जे ॥ हवे मिथ्यात्व मोहनीयनी ज० १००० सागर ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० १००० सागर प्रतिपूर्णनी ॥ नरकायु १ ॥ देवायु २ ॥ ए २ नी ज० १०,००० वर्ष ने अंतर्मुहूर्त अधिकनी, उ० पल्यनो असंख्यातमो भाग ने पूर्व क्रोडनो त्रीजो भाग अधिकनी ॥ नरकगति १ ॥ तिर्यंचगति २ ॥ ए २ नी ज० १००० सागरना ७ भाग करीए तेना २ भागनी ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उ० प्रतिपूर्ण २ भागनी ॥ मनुष्यनी गतिनी ज०

एक हजार सागरना ३ भाग करीए तेवो दोढ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानो, उ० प्रतिपूर्ण दोढ भागनी ॥ एवं देवगतिनी पण जाणवी ॥ नवरं एक भाग कहेवो, एवं वैक्रेय शरीरनी पण जाणवी ॥ नवरं बे भाग कहेवा ॥ शेष एकेंद्रियवत् ॥ नवरं एटलो फेर जे एक सागरना भाग करवा, ते ठेकाणे १००० सागरना भाग करवा कह्या ॥ अबाधाकाल पूर्ववत् ॥ ए असंज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कही ॥ ६ ॥ हवे संज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कहे छे ॥ ५ ज्ञानावरणीय ॥ ४ दर्शनावरणीय ॥ ए ए प्रकृतिनी स्थिति ज० अंत०, उ० ३० कोडाकोडी सागरोपमनी ए ॥ शातावेदनीयनी स्थिति इरियावहियाने आश्रि तथा संपरायने आश्रिने औधिक समुच्चयवत् जाणवी ॥ अशातावेदनीयनी स्थिति ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उत्० ३० कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीयनी स्थिति समुच्चयवत् ॥ मिथ्यात्व मोहनीयनी ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उ० सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ कषाय १२ नी स्थिति ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उत्० ४० कोडाकोडी साग-

रोपमनी ॥ संज्वलनना ४ कषायनी ओघिक समुच्चयवत् ॥ आयुष्य ४ नी स्थिति ओ-
घिक समुच्चयवत् ॥ आहारक नाम १ ॥ तीर्थंकर नाम २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० उ०
अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ पुरुषवेदनी ज० ८ वर्षनी, उ० १० कोडाकोडी सागरो-
पमनी ॥ यशोकीर्त्ति १ ॥ उंच गोत्र २ ॥ ए २ नी ज० ८ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० कोडा-
कोडी सागरोपमनी ॥ दानांतरायादि ५ अंतरायनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३० कोडाकोडी
सागरोपमनी ॥ शेष प्रकृतिनी स्थिति ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उत्कृष्टी जेनी
जे स्थिति ओघिक समुच्चयमां कहेल छे तेटली तेटली बांधे ॥ संज्ञी पचेंद्रिय जीव ॥
१४८ प्रकृति बांधे ॥ ए संज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कही ॥ इति कर्मप्रकृ-
तिबंध स्थितिना बोल संपूर्ण ॥

४४ बोलनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री भगवती शतक १९ मे उद्देशा त्रीजायी २२ एकेंद्रियनो जघन्योत्कृष्ट अवगाहना आश्री ४४ बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोडा सूक्ष्म निगोदना अपर्याप्तानी जघन्य अवगाहना १ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकायना अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी २ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउ अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकायना अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ४ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ५ ॥ तेथी बादर वाउकाय अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ६ ॥ तेथी बादर तेउकाय अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ७ ॥ तेथी बादर अपकाय अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ८ ॥ तेथी बादर पृथ्वी अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ९ ॥ तेथी बादर निगोद अने बादर प्रत्येक वनस्पति अपर्याप्तानी ज० अ० माहोमांहि तुल्य ने असंख्यातगुणी १०–११ ॥

तेथी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणा १२ ॥ तथा सूक्ष्मनिगोद अप-
र्याप्तानी उत्कृष्ट अ० विसेसाहिया १३ ॥ तेथी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्तानी उ० अ० विसेसा-
हिया १४ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी १५ ॥ तेथी सूक्ष्म
वाउकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया १६ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकाय पर्या-
प्तानी उ० अ० विसेसाहिया १७ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्तानी ज० अ०
असंख्यातगुणी १८ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया १९ ॥ तेथी
सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २० ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय पर्याप्तानी
ज० अ० असंख्यातगुणी २१ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया
२२ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २३ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय
पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी २४ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसा-
हिया २५ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २६ ॥ तेथी बादर वाउकाय
पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी २७ ॥ तेथी बादर वाउकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसे-
साहिया २८ ॥ तेथी बादर वाउकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २९ ॥ तेथी बादर

तेउकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३० ॥ तेथी बादर तेउकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३१ ॥ तेथी बादर तेउकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३२ ॥ तेथी बादर अपकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३३ ॥ तेथी बादर अपकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३४ ॥ तेथी बादर अपकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३५ ॥ तेथी बादर पृथ्वीकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३६ ॥ तेथी बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३७ ॥ तेथी बादर पृथ्वीकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३८ ॥ तेथी बादर निगोद पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३९ ॥ तेथी बादर निगोद अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ४० ॥ तेथी बादर निगोद पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ४१ ॥ तेथी बादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ४२ ॥ तेथी बादर प्रत्येक वनस्पतिकाय अपर्याप्तानी उ० अ० असंख्यातगुणी ४३ ॥ तेथी बादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्याप्तानी उ० अ० असंख्यातगुणी ४४ ॥ इति ४४ बोलनो अल्पाबहुत संपूर्ण ॥

२८ बोलनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री भगवती शतक २५ मां उद्देशा पहेलाथी जीवना १४ भेदना जघन्योत्कृष्ट योगना आश्री २८ बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोडा सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य योग १ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असंख्यातगुणो २ ॥ तेथी बेइंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ३ ॥ तेथी तेइंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ४ ॥ तेथी चउरिंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ५ ॥ तेथी असंज्ञी पचेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ६ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ७ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्तानो ज० यो० असं० ८ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय पर्याप्तानो ज० यो० असं० ९ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानो उ० यो० असं० १० ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानो उ० यो० असं० ११ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्या-

तानो ज० यो० असं० १२ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय पर्यातानो ज० यो० असं० १३ ॥ तेथी बेइंद्रिय पर्यातानो ज० यो० असं० १४ ॥ तेथी तेइंद्रिय पर्यातानो ज० यो० असं० १५ ॥ तेथी चउरिंद्रिय पर्यातानो ज० यो० असं० १६ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यातानो ज० यो० असं० १७ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय पर्यातानो ज० यो असं० १८ ॥ तेथी बेइंद्रिय अपर्यातानो उ० यो० असं० १९ ॥ तेथी तेइंद्रिय अपर्यातानो उ० यो० असं० २० ॥ तेथी चउरिंद्रिय अपर्यातानो उ० यो० असं० २१ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय अपर्यातानो उ० यो० असं० २२ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्यातानो उ० यो० असं० २३ ॥ तेथी बेइंद्रिय पर्यातानो उ० यो० असं० २४ ॥ तेथी तेइंद्रिय पर्यातानो उ० यो० असं० २५ ॥ तेथी चउरिंद्रिय पर्यातानो उ० यो० असं० २६ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यातानो उ० यो० असं० २७ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय पर्यातानो उ० यो० असं० २८ ॥ इति २८ बोलनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

२४ दंडकना जीवोनो अल्पबहुत्व ॥

अथ २४ दंडकना जीवोनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोडा मनुष्य १ ॥ तेथी तेउकाय असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी वैमानिक असं० गु० ३ ॥ तेथी १० भवनपति मांहोमांहि तुल्य ने असं० गु० १३ ॥ तेथी नारकी असं० गु० १४ ॥ तेथी वाणव्यंतर असं० गुणा १५ ॥ तेथी ज्योतिषी संख्यात गु० १६ ॥ तेथी तिर्यंच पंचेंद्रिय असंख्यातगुणा १७ ॥ तेथी चउरिंद्रिय विसेसाहिया १८ ॥ तेथी तेइंद्रिय विसेसाहिया १९ ॥ तेथी बेइंद्रिय विसेसाहिया २० ॥ तेथी पृथ्वीकाय असं० गु० २१ ॥ तेथी अपकाय असं० गु० २२ ॥ तेथी वाउकाय असं० गु० २३ ॥ तेथी वनस्पति कायना दंडके जीवो अनंतगुणा २४ ॥ इति २४ दंडकना जीवोनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

१८ योगना ३० बोलनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री भगवती शतक २५ माना उद्देशा पहेलाथी १५ योगना जघन्योत्कृष्ट योग आश्री ३० बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोडो कार्मण काययोगनो जघन्य योग १ ॥ तेथी उदारिक मिश्रनो ज० यो० असंख्यातगुणो २ ॥ तेथी वैक्रियमिश्रनो ज० यो० असं० ३ ॥ तेथी उदारिकनो ज० यो० असं० ४ ॥ तेथी वैक्रियनो ज० यो० असं० ५ ॥ तेथी कार्मणनो उ० यो० असं० ६ ॥ तेथी आहारकनो मिश्र ज० यो० असं० ७ ॥ तेथी आहारकनो मिश्र उ० यो० असं० ८ ॥ तेथी उदारिकनो मिश्र अने वैक्रियनो मिश्र उ० यो० मांहोमांहि तुल्य ने असं० ९-१० ॥ तेथी आहारकनो ज० यो० असं० ११ ॥ तेथी आहारकनो ज० यो० असं० १२ ॥ तेथी सत्य मन १, असत्य मन २ मिश्र मन ३, व्यवहारना ४, ए ३ योगनो ज० यो० मांहोमांहि तुल्य ने असं० १९ ॥ तेथी आहारक शरीरनो उ० यो० असं० २० ॥ तेथी उदारिक

१ वैक्रेय २ चार मन ६ चार वचन १० ॥ ए १० नो ज० योग मांहोमांहि तुल्य ने असंख्यातगुणो २० ॥ इति योगना ३० बोलनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

जीवना १४ भेदनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री सूक्ष्मादि जीवोना १४ भेदनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोडा संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता १ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता असंख्यात गुणा २ ॥ तेथी चउरिंद्रिय प० सं० गुणा ३ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय प० विशेषाहिया ४ ॥ तेथी बेइंद्रिय प० वि० ५ ॥ तेथी तेइंद्रिय प० वि० ६ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय अप० असं० ७ ॥ तेथी चउरिंद्रिय अप० वि० ८ ॥ तेथी तेइंद्रिय अप० वि० ९ ॥ तेथी बेइंद्रिय अप० वि० १० ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय प० अनंतगुणा ११ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अप० असं० १२ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय अप० असं० १३ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय प० संख्या० १४ ॥

॥ इति सूक्ष्मादि जीवोना १४ भेदनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

इति श्री प्रकरण संग्रह

भाग बीजो

समाप्त.